a Samaj Foundation Chennai

AGINISHIKHA 1949 G.K.V.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
COMPILED
Stock Verification-20[illegible]
Stock Verification-20[illegible]
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079502
COMPLETE

079502
179

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जनवरी १९७९ • वर्ष ९, अंक ६, पूर्णांक १०२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

नव वर्षका उपहार १

महाभारतकी सूक्तियां (वन्दे मातरम्) श्रीअरविन्द २

श्रीमातृवाणीसे :

जीवनका लक्ष्य ४

मृत्युके बाद सुरक्षा ६

विरोधी शक्तियां ७

वियतनाम ९

कूएका आशावाद ११

भागवत शक्तिके साथ सामंजस्य १५

आश्रमके कर्मचारियोंके नाम माताजीका संदेश १७

कुछ प्रश्न और उनके उत्तर (अध्यात्म और चैत्य भूमिका, भगवान्के काममें विरोधी शक्तियां, बाहरी दौड़-धूप, नीरवतामें ही काम हो सकता है) २०

प्रेमके बारेमें प्रश्नोत्तर २७

सोसायटी समाचार आ० ३

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव वर्षका उपहार

जो मिथ्यात्वसे पिंड छुड़ानेके लिये उत्सुक हैं उनके लिये एक उपाय :

अपने-आपको खुश करनेकी कोशिश न करो, औरोंको खुश करनेकी भी कोशिश न करो। केवल परम प्रभुको खुश करनेकी कोशिश करो क्योंकि केवल वे ही सत्य हैं। हममेंसे हर एक और हम सभी मनुष्य, अपने भौतिक शरीरमें, भगवान्पर पड़ा हुआ मिथ्यात्वका लबादा है जो उन्हें ढके हुए है।

केवल वे ही अपने प्रति सच्चे हैं इसलिये हमें केवल उन्हींपर एकाग्र होना चाहिये, मिथ्यात्वके लबादेपर नहीं।

*

सारी संकुचितता, सारे स्वार्थ और सभी सीमाओंसे पीछा छुड़ाकर मानव एकताकी चेतनाके प्रति जागो। शांति और सामंजस्य पानेका यही एक तरीका है।

— माताजी

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारतकी सूक्तियां

[१९०६ में श्रीअरविन्दने एक छोटी-सी टिप्पणीके साथ महाभारत-की कुछ सूक्तियोंका अंगरेजी अनुवाद छापा था। उसीका हिन्दी रूप पाठकोंकी भेंट है——सं]

प्रज्ञाके अक्षय भंडार महाभारतमें गहरी-से-गहरी बुद्धिमत्ताकी सूक्तियां बड़ी उदारताके साथ बिखरी हुई हैं। कुछमें व्यावहारिक बुद्धि है, कुछसे यह पता लगता है कि सत्यका क्या मूल्य था, कुछ कोमलता और क्षमा-भावसे भरी हैं। ये दुनिया-भरकी किसी भी भाषाके नीति वाक्योंके सामने सिर ऊंचा रख सकती हैं। हम यहां इधर-उधरसे चुनी कुछ सूक्तियोंका अनुवाद दे रहे हैं:

छल-कपटसे भरे लोग और निष्कपट लोग, अच्छे और बुरे आदमी मित्र बन सकते हैं। मित्रता समानताका माप नहीं है।

कामनाका कहीं अंत नहीं। संतोष ही सबसे बड़ा सुख है।

मेरे लिये असत्यकी अपेक्षा मृत्यु कम भयावह है।

चारों वेदोंका सम्यक् अध्ययन एक सत्यके बराबर है।

धरती और आकाश जीवनसे भरे हैं। ऐसी कोई जगह नहीं जहां जीवित प्राणी न हों।

इंद्रियोंका संयम बहुत अच्छा उपवास है।

अज्ञानी लोग क्रोधको बल मान लेते हैं। जो अपने-आपको क्रोध-से बिलकुल मुक्त रख सके वह सचमुच बलवान् है।

बिना रुके खर्च करते चले जाओ तो हिमालय भी चुक जायगा।

संदेह सभी शरारतोंकी जड़ है। संकोच और संदेहके बिना हाथमें लिया गया हर एक काम जरूर सफल होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर कोई आदमी किसी ऐसेको मार डालता है जिसने उसे धोखा दिया है और इस पापके कारण उसे नरक जाना पड़ता है तो उसके लिये नरक भी स्वर्ग होगा।

पागलकी बकवाससे और बच्चोंके तुतलानेसे भी बुद्धिकी बातें इकट्ठी करो जैसे पथरीली कच्ची धातुसे सोना इकट्ठा किया जाता है।

जो अपने दोषोंको जानता है और उनके लिये लज्जित है वह संसारका शिक्षक होने योग्य है।

जैसे बुढ़ापा स्त्रीको सौंदर्यसे वंचित कर देता है वैसे ही विनयका अभाव मनुष्यको आकर्षणहीन बना देता है।

अगर एक ही आदमी सारे संसारका सारा अन्न, सारा सोना, सारे गाय-बैल और सभी स्त्रियां पा जाय तो भी वह संतुष्ट न होगा।

भ्रांति मृत्यु है और भ्रांतिसे छुटकारा जीवन।

जैसे कुत्ते मांसपर झगड़ते हैं वैसे ही राजा संसारपर अधिकार पानेके लिये लड़ते हैं।

बुद्धिमान् न जीवितोंके लिये रोते-धोते हैं, न मृतकोंके लिये।

जबतक मनुष्य अपने अच्छे कामोंके लिये धरतीपर याद किया जाता है, तभीतक स्वर्गमें भी उसकी पूछ होती है।

हर छोटी-मोटी आगसे धुंआ निकलता है। उन्हें इकट्ठा कर दो तो लपटें उठने लगेंगी।

बालकों, वृद्धों और कष्टमें पड़े लोगोंके प्रति क्रोधको संयत रखो।

अगर संपत्तिका स्वामी अपनी इंद्रियोंका दास है तो वह अपनी संपत्तिसे शीघ्र बिछड़ जायगा।

ईर्ष्या दुष्टोंका बल है, बुरा काम करनेवालेको दंड देना राजाओंका बल है, पीड़ितोंकी देख-भाल नारियोंका बल है और क्षमा बुद्धिमानोंका बल है।

जब किसी व्यक्तिकी संपत्ति, सुंदरता, वीरता, कुटुम्ब, सुख, सौभाग्य और अतिथि-सेवा किसीमें ईर्ष्या जगाएं तो ईर्ष्यालुके दुःख और कष्टका कोई अंत नहीं होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखार्थीको विद्या त्याग देनी चाहिये और विद्यार्थीको सुख।

मनुष्यका स्वभाव है कि वह यह मानता है कि सब उसका आदर करते हैं।

कोई आलस्यको निद्रासे, आगको ईंधनसे और प्यासको मदिरासे संतुष्ट नहीं कर सकता।

इससे बढ़कर आश्चर्यकी बात क्या हो सकती है कि हर रोज अपनी आंखोंके आगे मौत देखते हुए भी जीनेवाले यही समझते हैं कि मौत उनके लिये नहीं है!

धर्मके बहुत-से द्वार हैं। तुम किसी भी रास्तेसे धर्म-पथपर सचाईसे चलो वह तुम्हें उसी परिणामपर पहुंचा देगा।

जो आदमी मेरे दाहिने हाथपर चंदनका लेप करता है और जो कुल्हाड़ीसे मेरे बाएं हाथको काट डालता है, मेरी दृष्टिमें वे दोनों समान हैं।

(वंदे मातरम्, १ सितंबर, १९०६)

श्रीमातृवाणीसे :

जीवनका लक्ष्य

सदियोंसे मानवजाति इस समयकी प्रतीक्षा करती आयी है। समय आ गया है, लेकिन है कठिन।

मैं तुमसे यह नहीं कहती कि हम धरतीपर आराम करने या मौज करनेके लिये आये हैं। अभी इन चीजोंका समय नहीं है। हम यहां . . . हम यहां . . . एक नयी सृष्टिका मार्ग तैयार करनेके लिये हैं।

शरीरकी कुछ कठिनाइयां हैं, इसलिये खेद है मैं सक्रिय नहीं हो सकती। इसका कारण यह नहीं है कि मैं बूढ़ी हूं — मैं बूढ़ी नहीं हूं। मैं बूढ़ी नहीं हूं। मैं तुममेंसे अधिकतर लोगोंसे ज्यादा जवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं। अगर मैं निष्क्रिय हूं तो इसका कारण यह है कि शरीरने अपने-आपको रूपांतरकी तैयारीके लिये सौंप दिया है। लेकिन चेतना स्पष्ट है। हम यहां कामके लिये हैं — आराम और मौजकी बारी बादमें आयेगी। हम अपना काम करें।

मैंने यही कहनेके लिये तुम्हें बुलाया है। तुम जो ले सकते हो ले लो, जो कर सकते हो करो, मेरी सहायता तुम्हारे साथ होगी। सभी सच्चे प्रयासकी अधिक-से-अधिक सहायता की जायगी।

यह वीर होनेका समय है।

वीरता वह नहीं है जो साधारणतः मानी जाती है। वीरता है पूरी तरह एक होना और जो पूरी सचाईके साथ वीर बननेका निश्चय करेंगे उन्हें भगवान्‌की सहायता हमेशा मिलेगी।

तुम इस समय धरतीपर इसलिये हो क्योंकि एक बार तुमने यह चुनाव किया था — तुम्हें यह बात अब याद नहीं है, लेकिन मुझे मालूम है — और इसीलिये तुम यहां हो। हां, तुम्हें कार्यकी ऊंचाई-तक उठना चाहिये, तुम्हें कोशिश करनी चाहिये, तुम्हें सभी कम-जोरियों और सीमाओंको जीतना चाहिये और, सबसे बढ़कर, तुम्हें अपने अहंसे कहना चाहिये, 'तुम्हारा समय बीत गया।' हम एक नयी जाति चाहते हैं जिसमें अहं न होगा, जिसमें अहंके स्थानपर दिव्य चेतना होगी। हम वही चाहते हैं: दिव्य चेतना जो जातिको अपने-आपमें विकसित होने दे और अतिमानस सत्ताको जन्म लेने दे।

अगर तुम यह समझते हो कि मैं यहां इसलिये हूं क्योंकि मैं बंधी हुई हूं — तो यह असत्य है। मैं बंधी नहीं हूं। मैं यहां इसलिये हूं कि मेरा शरीर रूपांतरके पहले प्रयासके लिये दिया गया है। श्रीअरविन्दने मुझसे यह कहा था। हां, तो मैं यह कर रही हूं। मैं और किसीसे अपने लिये यह नहीं करवाना चाहती . . . क्योंकि यह बहुत सुखकर नहीं है। लेकिन मैं इसे खुशीसे कर रही हूं, इसके परिणामके लिये, उससे हर एक लाभ उठा सकेगा। मैं केवल एक चीज चाहती हूं — अहंकी बात मत सुनो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम्हारे हृदयोंमेंसे सच्ची 'हां' निकलती है तो तुम मुझे पूरी तरह संतुष्ट करोगे। मुझे शब्द नहीं चाहिये। मैं तुम्हारे हृदयोंकी सच्ची निष्ठा चाहती हूं। और बस।

(अगस्त ७२ के बुलेटिनमें छपी माताजीकी २-४-७२ की एक बातचीतपर आधारित)

मृत्युके बाद सुरक्षा

जीवनके अंतमें, या ठीक मृत्युके क्षण भी, जिस किसीके अंदर अभीप्सा होती है वह आश्रय और सहायताके लिये मेरे पास आता है। मृत्युके तुरंत बाद चैत्यलोकमें पहुंचनेसे पहले, जो शांति और विश्रामका स्थान है, प्राणमय जगत्को पार करते हुए एक कठिन और बहुतोंके लिये संकटमय काल आता है। इस प्राणमय लोकको पार करनेके लिये बहुत-से लोग मेरे पास आते हैं, ऐसे लोग भी जो भौतिक रूपमें मुझे नहीं जानते। वे सहज रूपमें उस ज्योतिको देखते हैं जो मार्गदर्शन और रक्षा करती है।[1]

---

[1]रेमों मूडीने हालमें एक पुस्तक लिखी है जिसका नाम है 'लाइफ आफटर डेथ' (मृत्युके बाद जीवन)। उसमें ऐसे लोगोंके अनुभव दिये गये हैं जिन्हें मुरदा मान लिया गया था परंतु वे फिरसे जी उठे। उनमेंसे प्रायः सभीका अनुभव है कि उस पार उन्हें एक ज्योतिर्मय सत्ता मिली थी। यह सत्ता सहायता और मार्गदर्शनके लिये आती है और उन्होंने अपने-अपने विश्वासके अनुसार उसे अलग-अलग नाम दे दिये। —सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर रोज लाखों आदमी मरा करते हैं, क्या वे सब-के-सब आपके पास आते हैं ?

नहीं, लाखों नहीं। केवल मानवजातिका कुलीन वर्ग जो सचेतन रूपसे चैत्य लोकमें जानेके लिये तैयार है, और आखिर कुलीन लोगोंकी संख्या हमेशा कम ही होती है।

मेरा एक निर्गत अंश है जो खास तौरपर इस कामके लिये रखा गया है और वह इस कामको बहुत सचेतन रूपसे करता है। केंद्रीय चेतना किसी भी समय जरा-सी एकाग्रताके द्वारा इस कामसे परिचित हो सकती है। रातका वातावरण ज्यादा शांत और इस तरहके क्रिया-कलापके ज्यादा अनुकूल होता है।

जो मेरे साथ सीधा संबंध रखते हैं वे हमेशा मेरी चेतनामें रहते हैं और मेरे जाने बिना उन्हें कुछ नहीं हो सकता।

(१२-१२-१९३५)

विरोधी शक्तियां

माताजी, पिछली बार आपने कहा था कि इस वर्ष विरोधी शक्तियां अंतिम प्रहार करेंगी। अगर धरती विजय प्राप्त करनेमें असमर्थ हो . . .।

धरती ? मैंने धरती कहा था ?

जी, धरती, भारत और व्यक्ति।

हां, हो सकता है, यह कहनेका एक तरीका है। हां, तो फिर, अगर हम विजय पानेमें असमर्थ हों तो. . . ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो क्या इसका यह मतलब होगा कि रूपांतरकी संभावनामें देर लग जायगी ?

शायद कई सदियोंकी देर लग जाय। विरोधी शक्तियां ठीक यही तो करना चाहती हैं। और उन्हें अभीतक हमेशा इसमें, चीज-को धकेल देनेमें, सफलता मिली है। हमेशा उन्हें सफलता मिली है; "यह फिर कभी होगा", और फिर कभी. . . शायद सैंकड़ों या हजारों बरसके बाद। और वे फिरसे यही करनेकी कोशिशमें हैं। शायद यह सब कहींपर निश्चित हो चुका है, यह संभव है। लेकिन यह भी संभव है कि यद्यपि सब कुछ निश्चित हो चुका है, फिर भी, जो कुछ निश्चित हुआ है उसे प्रकट करना ठीक नहीं है, ताकि चीजें उस तरह हो सकें जैसे कि उन्हें होना चाहिये। ऐसी बहुत-सी चीजें हैं। क्योंकि लोग न तो इतने सचेतन हैं और न इतने शुद्ध हैं कि उन्हें जो करना चाहिये वही करें, ठीक उसी तरह करें जैसे करना चाहिये, और परिणामकी पूरी अभिज्ञताके साथ करें; क्योंकि सौमेंसे निन्नानवे बार परिणाम वही नहीं होता जो वे चाहते हैं — और अगर हो भी तो परिणाम कुछ बदल-सा जाता है, कुछ मिला-जुला होता है, कुछ फरक होता है, उसमें कुछ अंतर होता है, इतना पर्याप्त अंतर कि वे पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो सकते। तो, अगर आदमी-को पहलेसे पता हो कि ठीक क्या होनेवाला है, तो वह चुपचाप बैठा रहेगा और कुछ भी न करेगा। वह कहेगा: "अच्छा, अगर यह होना ही है, तो ठीक है, मुझे कुछ नहीं करना-धरना।" इसीलिये आदमी नहीं जानता। लेकिन वह व्यक्ति जान सकता है जो सभी परिस्थितियोंमें, कारणके भरपूर ज्ञानके साथ, अपने कर्मके परिणामको जानते हुए कभी-कभी परिणामसे विपरीत कार्य कर सकता है, केवल वही जान सकता है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसे बहुत हैं। मैंने सामान्य जीवनमें सुना है कि अगर कोई कुछ प्राप्त करना चाहता है, तो उसे अपनी नजर लक्ष्यसे बहुत आगे रखनी चाहिये; कि जिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगोंने जीवनमें कुछ प्राप्त किया है, सभी बड़े लोग जिन्होंने कुछ सृजन किया है, कोई चीज प्राप्त की है, उनका लक्ष्य, उनकी महत्त्वाकांक्षा, उनकी योजना जितना वे कर पाये उनसे बहुत ज्यादा बड़ी, ज्यादा विशाल, ज्यादा पूर्ण, ज्यादा समग्र रही है। वे हमेशा अपनी प्रत्याशा और आशासे नीचे ही रहे हैं। यह एक कमजोरी है, लेकिन यह मैंने जो कहा उसे प्रमाणित करती है, यानी, जबतक तुम्हारे आगे एक बहुत बड़ा आदर्श न हो, और उसे पानेकी आशा न हो, तबतक तुम अपनी सत्ताकी सारी ऊर्जाको गतिमें नहीं लाते। अतः, तुम उतना नहीं करते जितना अगले लक्ष्यको पानेके लिये जरूरी है। जैसा कि मैंने कहा, इसमें अपवाद हैं वे जो स्पष्ट दृष्टिके साथ परिणाम और निष्कर्षके बारेमें जरा भी संदेह किये बिना "कर्तव्य कर्म" किये चले जाते हैं। लेकिन यह है कठिन।

(प्रश्न और उत्तर, १९५५)

वियतनाम

(१९६६ में जब वियतनाम युद्ध जोरोंपर था तो किसीने माताजीसे पूछा) :

क्या वियतनाममें अमरीकियोंकी उपस्थिति और हस्तक्षेप उचित है ?

तुम किस दृष्टिकोणसे यह प्रश्न पूछ रहे हो ?

यदि तुम्हारा दृष्टिकोण राजनीतिक है, और राजनीति मिथ्यात्वमें डूबी हुई है, तो इसमें मेरी रुचि नहीं है।

यदि तुम इसे नैतिक दृष्टिसे पूछ रहे हो तो नैतिकता एक ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढाल है जिसका प्रयोग सामान्य जन सत्यसे अपनी रक्षा करनेके लिये करते हैं।

यदि तुम्हारा दृष्टिकोण आध्यात्मिक है तो एकमात्र भागवत इच्छा ही का औचित्य है, पर मनुष्य इसे अपने कार्योंमें हास्यास्पद और विकृत बना देते हैं।

६-७-१९६६

मैंने अपना पिछला प्रश्न आध्यात्मिक दृष्टिकोणसे ही पूछा था। आपके उत्तरसे मैं इस नतीजेपर पहुंचा हूं कि अमेरिकाका यह कार्य नितांत अनुचित है। किन्तु, मां, क्या संसारको यह डर नहीं है कि साम्यवादी उसे निगल ही न जायं और क्या इसीलिये अमरीका और उसके मित्र मनुष्यमात्रकी स्वतंत्रताकी सुरक्षामें संलग्न नहीं हैं? क्या यही भागवत इच्छा है?

जिस विचारको तुम अभिव्यक्त कर रहे हो वह अमरीकन विचार है, और अन्य बहुतोंका भी जो उन्हींकी तरह सोचते हैं। किंतु साम्यवादियोंका और उन सबका भी, जो साम्यवादी आदर्शमें विश्वास करते हैं, मत इससे उल्टा है। हम सामाजिक और राजनीतिक विषयोंपर ढेरों और विभिन्न प्रकारके मतोंको यहां छोड़ देते हैं। ये सब केवल "मत" हैं। भागवत दृष्टिकोणसे इनका तनिक भी महत्व नहीं है; भगवान्‌का कोई "मत" नहीं होता, उनमें प्रत्येक वस्तुकी, उसकी समग्रतामें, एक पूर्ण अंतर्दृष्टि होती है, उस लक्ष्यकी भी जिसे प्राप्त करना है। यही वस्तु महत्व रखती है।

जो कुछ भी मानसिक है वह आवश्यक रूपमें एक मत होता है जो सत्यका एक बहुत छोटा-सा अंश ही व्यक्त करता है।

१३-७-१९६६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूएका आशावाद

[डा. कूए एक प्रसिद्ध फ्रेंच डाक्टर थे। उनका कहना था कि अधिकतर रोग आशा और श्रद्धाकी सहायतासे ठीक किये जा सकते हैं। यहां उनके बारेमें प्रश्न किया गया है। –सं०]

मधुर मां, "कूएका आशावाद" का क्या मतलब है?

ओ, कूए! तुम्हें कूएकी कहानी नहीं मालूम? कूए एक डाक्टर था। वह मनोवैज्ञानिक चिकित्सा-पद्धतिसे, आत्म-सुझावके द्वारा इलाज करता था। उसका कहना था कि यह कल्पनाका सच्चा कार्य है; लेकिन जिसे वह कल्पना कहता था वह असलमें श्रद्धा थी। अतः, वह अपने सभी बीमारोंका इसी तरह इलाज करता था: बीमारोंको एक ऐसी कल्पनाशील रचना बनानी पड़ती थी जिसमें उन्हें अपने-आपको रोगमुक्त, या कम-से-कम रोगमुक्तिके पथपर, मानना पड़ता था, रोग-मुक्त करनेवाले विचारसे निर्मित रचनाको, और उसे प्रभावशाली होनेके लिये काफी अध्यवसायके साथ दोहराया जाता था। इसके परिणाम बहुत विलक्षण होते थे। उसने बहुत-से लोगोंको ठीक किया था; हां, उसे असफलता भी मिली और शायद ये चिरस्थायी रोगमुक्ति-उपचार न थे। मुझे पता नहीं। लेकिन, बहरहाल, उसने बहुत-से लोगोंको एक बिलकुल सच्चे तथ्यके बारेमें सोचनेके लिये बाधित किया, और जिसका बहुत महत्व है, वह है कि मन एक रचना करनेवाला यंत्र है, और अगर उचित रूपमें उपयोगमें लाना जानें तो उससे अच्छा परिणाम आता है। इससे यह सिद्ध होता है — और मेरा ख्याल है कि यह सच है, मेरा अवलोकन इससे सहमत है — कि लोग गलत तरीकेसे सोचनेमें अपना समय बिताते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका मानसिक क्रिया-कलाप प्रायः हमेशा ही, आधा निराशाजनक और आधा विनाशक भी होता है। वे प्रायः हमेशा उन बुरी चीजोंके बारेमें सोचते और अनुमान लगाते रहते हैं जो हो सकती हैं, अपनी करनीके कष्टकर परिणामस्वरूप वे उमड़ती हुई कल्पनाद्वारा सब प्रकारके संकटोंका निर्माण कर लेते हैं। अगर इसी कल्पनाका और तरहसे उपयोग किया जाता तो इससे उल्टे और अधिक संतोषजनक परिणाम आते।

अगर तुम अपना अवलोकन करो, अगर तुम... कैसे कहूं ? ... अगर तुम अपने-आपको सोचते हुए पकड़ लो, तुम अगर अचानक पकड़ो, तुम अगर अपने-आपको सोचते हुए अचानक ही देखो, सहज रूपसे, बिना किसी तैयारीके देखो, तो तुम देखोगे कि दसमेंसे नौ बार तुम कोई हानिकर चीज सोचनेमें लगे हो। यह बहुत ही कम, विरल होता है कि तुम सामंजस्यपूर्ण, सुंदर, रचनात्मक, अनुकूल, आशा, प्रकाश और आनंद-भरी चीजें सोचनेमें लगे हो; तुम देख लो, परीक्षण कर देखो। अचानक रुक जाओ, अपने-आपको सोचते हुए देखो, वह रहा, यूं: अपने विचारके सामने एक परदा रखो, और तुम अपने-आपको, बिना किसी तैयारीके सोचते पाओगे। दसमेंसे नौ बार तो तुम ऐसा ही पाओगे, शायद ज्यादा भी। यह बहुत ही विरल है, बहुत ही विरल, अचानक, अपनी वर्तमान अवस्थाके बारेमें या तुम जो करना चाहते हो उसके बारेमें, या अपने जीवन-पथके बारेमें या संसारकी स्थितिके बारेमें (यह तुम्हारी तन्मयतापर निर्भर है), कोई चौंधियानेवाला, चकित करनेवाला विचार आये। तुम देखोगे, प्रायः हमेशा ही तुम देखोगे यह छोटे या बड़े, कम या अधिक विस्तृत अनर्थका पूर्वदर्शन होता है।

तुम्हारे अंदर कोई छोटी-सी चीज है जो बिलकुल ठीक-ठीक नहीं चल रही; अगर तुम अपने शरीरके बारेमें सोचते हो, तो हमेशा यही कि उसमें कोई अप्रिय चीज होनेवाली है, क्योंकि जब सब कुछ ठीक-ठीक चल रहा हो तो तुम उसके बारेमें सोचते ही नहीं! तुमने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा होगा कि तुम शरीरके बारेमें जरा भी सोचे बिना काम करते रहते हो, तुम्हें जो कुछ करना हो करते रहते हो। लेकिन जब अचानक तुम पूछ बैठते हो : "कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं हो रही, कहीं कोई बीमारी तो नहीं है, कोई कठिनाई तो नहीं है, कोई भी चीज है क्या ?" तो तुम अपने शरीरके बारेमें सोचने लगते हो और सोचते भी हो चिंताके साथ, और तुम अशुभ रचना बनाना शुरू कर देते हो।

जब कि कूए कहता है . . . वह डाक्टर था और अपने रोगियोंको इसी तरह ठीक किया करता था, वह उनसे कहता था : "तुम यह दोहराते जाओ : 'मैं अच्छा होने लगा हूं, थोड़ा-थोड़ा करके मैं स्वस्थ हो रहा हूं,' और फिर, है न, 'मैं मजबूत भी हूं, मैं काफी स्वस्थ हूं, मैं यह कर सकता हूं, मैं वह कर सकता हूं।' "

मैं एक स्त्रीको जानती थी, उसके मुट्ठी भर-भर बाल बहुत बुरी तरह झड़ रहे थे। उसपर यह परीक्षण किया गया। उसे कंघी करते समय यह विचार करना पड़ता था : "मेरे बाल नहीं झड़ेंगे।" पहली बार, दूसरी बार कोई परिणाम नहीं आया। लेकिन वह लगी रही और कंघी करनेसे पहले हर बार वह आग्रहके साथ कहती थी : "मैं कंघी करनेवाली हूं; परंतु मेरे बाल नहीं झड़ेंगे।" और एक महीनेमें बालोंका झड़ना बंद हो गया। उसके बाद, उसने यह सोचना शुरू किया : "अब मेरे बाल उगेंगे," और वह पूरी तरह सफल हो गयी। मैंने उस स्त्रीको सुंदर बड़े-बड़े बालोंके साथ देखा है। उसीने मुझे बताया था कि गंजे होनेकी स्थितितक पहुंचनेके बाद उसने इस तरह किया था। यह बहुत, बहुत लाभदायक है। केवल यह न होना चाहिये कि जब तुम यह रचना करते हो, उस समय तुम्हारे मनका कोई और भाग कहे : "मैं एक रचना बना तो रहा हूं लेकिन यह सफल न होगी," क्योंकि इससे तुम अपने मुख्य कामको निष्फल कर देते हो।

कूए — मेरा ख्याल है कि कूए इस शताब्दीके आरंभमें हुआ था . . . (माताजी पवित्रकी ओर मुड़ती हैं)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवित्र — मैंने उन्हें १९१७ या १९१८ में पैरिसमें देखा था।

हां, ठीक है, शताब्दीके आरंमें। शताब्दीके पहले चरणमें, तुम उन्हें जानते थे?

पवित्र — जी हां, पैरिसमें।

आहा, तो हमें सुनाओ।

पवित्र — मैंने उनके दो-एक भाषण सुने थे। वे रोगियोंको जो उपाय बताते थे, वह यह था: पहले, रोज सवेरेके समय और दिन-में कई बार यह दोहराओ: "मैं अच्छा, और अधिक अच्छा हो रहा हूं, हर रोज मैं अच्छा और अधिक अच्छा हो रहा हूं, हर रोज मैं ज्यादा स्वस्थ हो रहा हूं।" हर रोज सवेरे, शाम और दिनमें कई बार, विश्वासके साथ, अपने हाथोंको यूं दबाते हुए कहो...

आहा, और अगर किसीको गुस्सा आता है तो: "मैं ज्यादा-ज्यादा अच्छा होता जा रहा हूं, मैं अब और गुस्सा नहीं करता।" (हंसी)

पवित्र — हर रोज मैं ज्यादा-ज्यादा बुद्धिमान् हो रहा हूं।

यह अच्छा है। और अगर तुम किसी बच्चेके सामने यह दोहराओ, उससे दोहरानेके लिये कहो: "मैं ज्यादा-ज्यादा अच्छा बन रहा हूं।" "मैं ज्यादा-ज्यादा अच्छा बन रहा हूं, मैं ज्यादा-ज्यादा आज्ञाकारी हूं।" ओह, तो यह बहुत अच्छा है। (एक शिष्यसे) तुमने उस दिन पूछा था कि जिन बच्चोंको संभालना मुश्किल हो उनके साथ क्या किया जाय? लो, यह परीक्षण कर सकते हो। "मैं विद्यालयमें अधिकाधिक नियमित हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फिर, "मैं अब झूठ नहीं बोलता, मैं अब कभी झूठ न बोलूंगा।"

पवित्र — पहले बात भविष्यमें कही जाती है, फिर भविष्यको नजदीक लाते हैं और वर्तमानके साथ अंत करते हैं।

आह! वर्तमानके साथ अंत करते हैं। और इसमें कितना समय लगता है?

पवित्र — यह व्यक्तिपर निर्भर है।

यह व्यक्तिपर निर्भर है। "मैं झूठ न बोलूंगा, यह मेरा आखिरी झूठ है।" (हंसी)

अच्छा, अब खतम।

(प्रश्न और उत्तर, १९५५)

भागवत शक्तिके साथ सामंजस्य

मधुर मां, "भागवत शक्ति, ज्योति और क्रियाके साथ प्रकृतिका सामंजस्य" कैसे स्थापित किया जा सकता है?

कैसे किया जा सकता है? कोशिश करो।

पहले तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि तुम किस प्रकारका सामंजस्य प्राप्त करना चाहते हो। तुम्हें यह देखना चाहिये कि किन-किन बातोंमें यह सामंजस्य नहीं है; तुम्हें इसका अनुभव करना चाहिये और आंतरिक चेतना और कुछ बाहरी गतियोंके बीच विरोध-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को समझना चाहिये। पहले इसके बारेमें सचेतन होना चाहिये, और एक बार सचेतन हो जाओ तो बाहरी कार्यको, बाहरी गतिविधिको आंतरिक आदर्शके अनुसार बनानेका काम हाथमें ले लो। लेकिन पहले विसंगतिका पता लगाना चाहिये। एक बार उसके बारेमें सचेतन हो जानेपर तुम्हें अपनी बाह्य क्रिया और बाह्य गतिविधिको आंतरिक आदर्शके अनुसार बनानेमें लग जाना चाहिये। लेकिन सबसे पहले विसंगतिका पता करना चाहिये, क्योंकि ऐसे बहुत-से लोग हैं जो सोचते हैं कि सब कुछ ठीक चल रहा है; और अगर तुम उनसे कहो: "नहीं, तुम्हारी बाह्य प्रकृति तुम्हारी आंतरिक अभीप्साके विपरीत है," तो वे विरोध करेंगे। उन्हें पता ही नहीं होता। अतः, पहला पग है जानना, यानी, ऐसी चीजोंके बारेमें सचेतन होना जो मेल नहीं खातीं।

पहले तो अधिकतर लोग कहेंगे: "यह आंतरिक चेतना है क्या जिसके बारेमें आप बात कह रहे हैं? इसका हमें पता ही नहीं है।" अतः स्पष्ट है कि अगर वे किसी ऐसी आंतरिक चीजके बारेमें सचेतन ही नहीं हैं जो उनकी साधारण चेतनासे श्रेष्ठ है तो वे कोई मेल नहीं बिठा सकते। इस सामंजस्यके लिये तैयार होनेसे पहले बहुतसी प्रारंभिक चीजें करनी जरूरी हैं, प्रारंभिक चेतना प्राप्त करना जरूरी है।

पहले यह जानना जरूरी है कि सत्ताका, अभीप्साका, उतरनेवाली शक्तिका और उसे ग्रहण करनेवाली चीजका आंतरिक लक्ष्य क्या है — सभीको सचेतन होना चाहिये। और फिर, बादमें, इस आंतरिक चेतनाके प्रकाशमें बाह्य गतिविधिका निरीक्षण करना चाहिये कि कौन-सी चीजें मेल खाती हैं और कौन-सी मेल नहीं खातीं। फिर, जब तुम यह देख लो कि कौन-सी चीज मेल नहीं खाती तो उसे बदलनेके लिये अपनी इच्छा और अभीप्साको इकट्ठा करो और सबसे सरल छोरसे शुरू करो। सबसे कंठिन चीजके साथ शुरू न करना चाहिये। सबसे अधिक सरल चीजके साथ शुरू करना चाहिये, जिसे तुम अच्छी तरहसे, आसानीसे समझ सकते हो; ऐसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विसंगतिसे शुरू करो जो स्पष्ट दिखायी देती हो। फिर, धीरे-धीरे ज्यादा कठिन और ज्यादा केंद्रीय चीजोंकी ओर जा सकते हो...। पांवमें मोच क्यों आती है? ....

(प्रश्न और उत्तर, १९५५)

आश्रमके कर्मचारियोंके नाम माताजीका संदेश

१९५४

मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूं कि मैं तुम्हारी व्यक्तिगत और सामूहिक समस्याओंका क्या हल देखती हूं। और यह भी कि हमारे आपसी संबंधका सत्य क्या है।

लेकिन मेरी योजनाके पूरे होनेके लिये दो चीजें जरूरी हैं: पहली यह कि मेरे पास इसे पूरा करनेके लिये पर्याप्त आर्थिक साधन हों। दूसरी बात यह है कि तुम्हारे अंदर कुछ तो सचाई और ईमानदारी हो तथा मेरे और अपने कामके प्रति सद्भावना हो। तुम्हें मुझे धोखा देनेकी कोशिश करनेकी बहुत बुरी आदत है। बुरी सलाहके अनुसार तुमने यही सीखा है कि मालिकके साथ ऐसे ही व्यवहार किया जाय। संभव है कि जहां मालिक तुम्हारा शोषण करना चाहते हों या तुम्हें धोखा देनेकी कोशिश करते हों वहां यह वृत्ति न्यायसंगत कही जा सके, लेकिन जहांतक मेरा संबंध है यह एक मूर्खता और फूहड़पन है। सब से पहले, क्योंकि मुझे धोखा देना संभव नहीं है, और मेरे आगे तुम्हारी दुर्भावना तुरंत स्पष्ट हो जाती है और उसे देखकर तुम्हारी सहायता करनेकी तनिक भी इच्छा नहीं रहती। दूसरे, मैं कोई "संरक्षक" नहीं हूं और न ही मैं तुमसे अनुचित लाभ उठानेकी कोशिश करती हूं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहांतक संसारकी परिस्थितियोंमें संभव है, मैं सत्यको प्रकट करनेके लिये पूरा प्रयास कर रही हूं। और सत्यकी वृद्धिके साथ-साथ सबकी सद्भावना और सबका कल्याण निश्चित रूपसे बढ़ना चाहिये।

जहांतक मेरी बात है, जात-पांत और वर्ग-भेदका मेरे लिये कोई मूल्य नहीं है, व्यक्तिके मूल्यका ही महत्त्व है। मेरा उद्देश्य एक बहुत बड़ा परिवार बनाना है, ऐसा परिवार जिसमें प्रत्येक सदस्यको अपनी क्षमताओंको पूरी तरह विकसित करनेका अवसर मिले। सबके साथ भाईचारेका भाव तथा सद्भावना रखते हुए प्रत्येक सदस्यका उसकी क्षमताओंको ध्यानमें रखते हुए उसका अपना स्थान और पेशा होगा।

इस पारिवारिक संगठनके परिणामस्वरूप न किसी पुरस्कारकी आवश्यकता होगी, न किसी वेतनकी। काम आजीविका कमानेका साधन नहीं होना चाहिये। इसके दो लक्ष्य होने चाहिये: (१) प्रत्येककी कार्य करनेकी क्षमता तथा उसके स्वभावका विकास; (२) अपनी शारीरिक, नैतिक और बौद्धिक क्षमताओंसे उस बड़े परिवारकी यथासंभव सेवा जिसके तुम सदस्य हो। दूसरी ओर, वह परिवार अपने प्रत्येक सदस्यकी वास्तविक आवश्यकताएं पूरी करेगा तथा उसकी देखभाल करेगा। इसी तरह, प्रत्येक सदस्यका कर्तव्य होगा कि वह परिवारकी देखभालमें सहयोग दे।

जीवनकी वर्तमान परिस्थितियोंमें इस आदर्शको ठोस रूप देनेके लिये मैं एक ऐसी नगरकी कल्पना करती हूं जिसमें लगभग दो हजार व्यक्ति रह सकेंगे। इस नगरका निर्माण अत्यधिक आधुनिक योजनाओंके अनुसार होगा और इसमें सारी आधुनिक सुख-सुविधाओंकी व्यवस्था होगी और निर्माणके समय सार्वजनिक स्वास्थ्यका ख्याल रखा जायगा। इस नगरमें सिर्फ रहनेके घर ही नहीं होंगे, बल्कि बगीचे और शारीरिक शिक्षाके लिये खेल-कूदके मैदान भी होंगे। हर एक परिवारको एक अलग घर मिलेगा, अविवाहितोंके लिये उनके रोजगार और उनकी अनुकूलताको देखकर व्यवस्था की जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनकी कोई आवश्यकता भुलाई नहीं जायगी। रसोईघरमें भी स्वास्थ्यका ध्यान रखते हुए, आधुनिक साधन जुटाए जायंगे। यहां से सबको एक-सा, स्वास्थ्यप्रद और सादा भोजन दिया जायगा, ऐसा भोजन जो शरीरको स्वस्थ बनाये रखनेके लिये आवश्यक शक्ति दे। ये रसोईघर भी सहकारी भावनापर आधारित होंगे, सब मिल-जुलकर एक-दूसरेके सहयोगसे काम करेंगे।

जहांतक शिक्षाका सवाल है, सबके बौद्धिक तथा नैतिक विकास और शिक्षणके लिये आवश्यक व्यवस्था की जायगी। यानी, विभिन्न, स्कूल होंगे जहां तरह-तरहके कामों और व्यवसायोंकी तकनीक-सिखायी जायगी; संगीत तथा नृत्यकी कक्षाएं होंगी; सिनेमा-घर भी होगा जिसमें शिक्षा-संबंधी चित्र दिखाये जायंगे: सम्मेलन-कक्ष, पुस्तकालय, अध्ययन-कक्ष होंगे, विभिन्न प्रकारकी शारीरिक शिक्षा होगी और खेलका मैदान होगा।

प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वभावके अनुकूल कोई भी क्रिया-कलाप चुन सकेगा, और फिर, उसके अनुसार उचित शिक्षा पायेगा। हां, इसका भी ख्याल रखा जायगा कि छोटे-छोटे बगीचे हों जहां कृषि या बागबानीके प्रेमी फल-फूल या तरकारियां उगा सकें।

स्वास्थ्यकी दृष्टिसे नियमित रूपसे डाक्टरी जांच हुआ करेगी। एक अस्पताल और दवाखाना होगा, छूतकी बीमारियोंके लिये एक अलग मकान होगा जहां रोगी सबसे अलग, दूर रह सकेंगे। स्वास्थ्य-की ही दृष्टिसे समय-समयपर सारे मकानों व घरोंकी जांच की जायगी कि सब लोग सफाई रखते हैं या नहीं। सार्वजनिक स्नान-घर और धोबीखाने सर्व-सुलभ होंगे।

और, अंतमें, ऐसी दुकानें भी रखी जायंगी जहां हर तरहकी छोटी-से-छोटी चीज मिल जायगी जो जीवनको विविधता और सुख प्रदान करती है; यहां हर चीज रुपये-पैसेसे नहीं खरीदी जायगी, बल्कि तुम्हारे स्वभाव और कार्यकुशलताके अनुपातमें पुरस्कारस्वरूप दी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस नगरकी व्यवस्था और उसकी क्रियाशीलताका मैं लंबा-चौड़ा वर्णन नहीं करूंगी। लेकिन प्रत्येक चीजका बारीकीसे पहलेसे ही ख्याल रखा जायगा।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि इस आदर्श नगरमें रहनेके लिये आवश्यक शर्तें हैं: अच्छा आचरण, अच्छा व्यवहार, सचाई, नियमितता तथा कुशलतासे किया गया काम, और, कुल मिलाकर, सबके प्रति सद्भावना।

फिलहाल, मैं तुमसे फिर एक बार कहती हूं कि आर्थिक दृष्टिसे इस योजनाको चरितार्थ करना, जहांतक मेरे लिये संभव है, मैं हमेशा करती रहती हूं, उदाहरणार्थ, मैंने 'आनेस्टी सोसायटी'के साथ व्यवस्था की है कि वह तुम्हें सस्ते दामोंमें खानेकी नितांत आवश्यक वस्तुएं दे, और मुझे विश्वास है कि यह 'सोसायटी' धीरे-धीरे तुम्हारी आवश्यकताओंके अनुसार विकसित होगी। अतः, तुम देखते हो कि तुम्हें शिकायत करनेका मौका नहीं मिलेगा, क्योंकि तुम्हारे लिये जो मेरी सद्भावना है उसकी वजहसे शिकायतें निरर्थक और तर्कहीन हो जायंगी।

कुछ प्रश्न और उनके उत्तर

(अध्यात्म और चैत्य भूमिकामें भेद; भगवान्के महान् कार्यमें विरोधी शक्तियोंका स्थान; बाह्य दौड़-धूप, कूद-फांदका मूल्य नहीं; क्रियाओंके परे आत्माकी नीरवतामें ही कार्य किया जा सकता है)

क्या अध्यात्म-भूमिका और चैत्य भूमिकामें कोई भेद है? क्या ये अलग-अलग हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां, चैत्य भूमिका व्यक्तिगत अभिव्यक्तिसे संबंध रखती है, तुममें जो दिव्य है, जो लीलामें गतिशील होनेके लिये आविर्भूत हुआ है, वह है चैत्य पुरुष। परन्तु जब हम अध्यात्मके विषयमें बोलते हैं तो हमारे ध्यानमें कोई ऐसी चीज होती है जो बाह्य अभिव्यक्ति-करणमें नहीं, भगवान्में केन्द्रित है। आध्यात्मिक भूमिका बाहरी लीलाके पीछे और ऊपर स्थितिशील रूपमें विद्यमान है। यह प्रकृतिके उपकरणोंको सहारा देती है, किन्तु यहांकी बाह्य अभिव्यक्तिमें यह अपने-आपको सम्मिलित या लीन नहीं करती।

परन्तु इन विषयोंकी चर्चा करते हुए हमें यह सावधानी रखनी चाहिये कि हम जिन शब्दोंका उपयोग करते हैं, उनके बन्दी न बन जायं। मैं जब चैत्यपुरुष अथवा अध्यात्मके विषयमें कुछ कहती हूं तो मेरा अभिप्राय उन वस्तुओंसे होता है जो शब्दोंके नीरव तलके पीछे अत्यंत गंभीर और वास्तविक हैं, और अपनी पृथक्तामें भी अंतरंग संबंध रखती हैं। बौद्धिक व्याख्याएं और विवेचन इतने अधिक बाह्य और कठोर होते हैं कि वे वस्तुओंके वास्तविक सत्यको नहीं पकड़ सकते। फिर भी, यदि तुम्हें आपसमें बातचीत करनेका काफी अभ्यास न हो तो एक-दूसरेकी बात समझनेके लिये अपने शब्दोंके भावकी व्याख्या जरूरी होती है। किसी वार्तालापके लिये आदर्श अवस्था वह होती है जब मन परस्पर इतनी अच्छी तरह मिले हुए हों कि शब्द उनके अनायास होनेवाले पारस्परिक बोधके लिये केवल सहारामात्र हों और तुम्हें अपने शब्दोंकी पद-पदपर व्याख्या करनेकी आवश्यकता न पड़े। जब तुम हर बार उन्हीं लोगोंसे बातचीत करते हो तो यह लाभ रहता है, उनके मनोंमें एक समस्वर सामंजस्यकी स्थापना हो जाती है और कही हुई बातका मर्म उनके अन्दर तुरन्त पैठ जाता है।

बिना आकारके विचारों और भावोंका एक जगत् है और अगर तुम शब्दोंके पीछेके सत्यको ग्रहण करना चाहते हो तो तुम्हें इसमें प्रवेश करना होगा। जबतक तुम्हारी समझ शब्दोंके बाह्य रूपोंपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रित है तबतक तुम्हें सत्य-भावको समझनेके लिये बड़ी उलझनमें पड़ना पड़ सकता है। परन्तु यदि तुम अपने मनकी नीरवतामें उस जगत्‌में उठ सको जहांसे भाव रूप ग्रहण करनेके लिये उतरते हैं तो तुम्हें तुरत सत्यबोध हो जायगा। यदि तुम असंदिग्ध रूपसे एक-दूसरेको समझना चाहो, तो तुम्हें नीरवतामें समझना चाहिये। एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें तुम्हारे मन इतने अधिक समस्वर और सामंजस्यमय हो जाते हैं कि शब्दोंकी आवश्यकता नहीं रह जाती और एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिके विचारको अनुभव कर लेता है। परन्तु यह समस्वरता न हो तो तुम्हारे अभिप्रायमें सदा कुछ-न-कुछ विकार आ ही जायगा, तुम जो कुछ कहोगे उसमें दूसरेका मन अपना ही कुछ अभिप्राय जोड़ देगा। मैं एक शब्दका प्रयोग उसके किसी विशिष्ट अर्थमें या उस अर्थकी किसी विशिष्ट छायामें करती हूं, तुम उस शब्दको दूसरे ही अर्थ या छायामें लेनेके अभ्यासी हो। अब यह स्पष्ट है कि उस शब्दमें मेरा ठीक अभिप्राय नहीं, बल्कि अपना ही अर्थ समझोगे। यह बात केवल वाणीके बारेमें ही नहीं, किन्तु पढ़नेके सम्बन्धमें भी सच्ची है। यदि तुम किसी गभीर शिक्षाकी पुस्तकको समझना चाहते हो तो तुम्हें उसे मनकी नीरवतामें पढ़ सकना चाहिये। तुम्हें प्रतीक्षा करनी चाहिये, उस पुस्तकके कथनकों अपने अन्दरकी गहराईमें उतरकर उस क्षेत्रतक पहुंच जाने देना चाहिये जहां शब्द नहीं होते, और फिर वहांसे शनैः-शनैः अपनी बाह्य चेतना और उसके ऊपरी तलतक वापस लौट आने देना चाहिये। परन्तु यदि शब्दोंको अपने बाह्य मनतक एक ही छलांगमें पहुंचने दोगे और इन दोनोंको परस्पर जोड़ने और इनका मेल मिलानेकी चेष्टा करोगे तो तुम शब्दोंके वास्तविक अभिप्राय और शक्तिको पूरी तरह गंवा दोगे। जबतक तुब अपने अव्यक्त मनके साथ, जो अभिव्यक्ति-केन्द्रके पीछे रहता है, एकता प्राप्त न कर लो तबतक समझको निर्भ्रांत नहीं कहा जा सकता।

एक बार हम वैयक्तिक मनकी इस तरह चर्चा कर चुके हैं, मानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्येक मन एक स्पष्ट रूपसे अलग जगत् है, हर एक अपने-आपमें बन्द है, उनमें एक-दूसरेके साथ किसी प्रकारका कोई सीधा संबंध नहीं के बराबर है। परन्तु यह अवस्था मनके हीनतर क्षेत्रमें ही है। वहां तुम्हारी अपनी रचनाएं ही तुम्हें बन्द कर लेती हैं और तुम इनमेंसे या अपने-आपसे बाहर नहीं निकल सकते। तुम अपने-आपको ही अथवा वस्तुओंमें अपने प्रतिविम्बको ही समझ सकते हो। परन्तु यहां अनभिव्यक्त मनके उच्चतर क्षेत्रों और उसकी पवित्रतर ऊंचाइयोंमें तुम स्वतंत्र हो। इसमें घुसते ही तुम अपने आपमेंसे बाहर निकल जाते हो और एक ऐसे विश्वव्यापी मनोमय लोकमें प्रवेश करते हो जिसमें प्रत्येक व्यष्टिगत मनोमय जगत् इस प्रकार निमग्न हो जाता है मानों किसी विशाल समुद्रमें समा गया हो। वहां, दूसरेके अन्दर जो कुछ हो रहा हो उसे तुम पूरी तरह समझ सकते हो तथा उसके मनको इस प्रकार पढ़ सकते हो मानों वह तुम्हारा अपना मन हो, क्योंकि वहां कोई पृथक्ता एक मनको दूसरे मनसे अलग नहीं करती। इस क्षेत्रमें पहुंचकर जब तुम दूसरोंके साथ एक हो जाते हो, तभी उन्हें समझ सकते हो, अन्यथा तुम उनके साथ एकस्वर नहीं हो पाते, तुम उन्हें स्पर्श नहीं कर पाते, तुम्हारे पास ऐसा कोई साधन नहीं होता जिसके द्वारा तुम अपने मनके अतिरिक्त किसी और मनमें जो कुछ हो रहा है उसे ठीक-ठीक जान सको। प्रायः, जब तुम किसी दूसरेके सामने होते हो तो तुम्हें इस बातका कोई ज्ञान नहीं होता कि वह क्या सोच या अनुभव कर रहा है। किन्तु यदि तुम अभिव्यक्तिकी इस बाह्य भूमिकाके परे और ऊपर जा सको, यदि तुम उस भूमिकामें प्रवेश कर सको जहां नीरव संपर्क संभव है तो तुम दूसरेके मनको अपने मनकी तरह जान सकोगे। तब अपने-आपको व्यक्त करनेके लिये शब्दोंका महत्त्व बहुत कम हो जायगा, क्योंकि समझ तो शब्दोंके परे किसी दूसरी ही वस्तुमें रहती है और कम-से-कम शब्द तुम्हारे प्रयोजनके लिये पर्याप्त होते हैं। वहां लम्बी-लम्बी व्याख्याओंकी आवश्यकता नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती, विचारको पूरे विस्तारसे व्यक्त करनेकी आवश्यकता नहीं होती क्योंकि वहां आशयका तुम्हें प्रत्यक्ष दर्शन होता है।

क्या ऐसा समय भी आयेगा जब विरोधी शक्तियां रहेंगी ही नहीं ?

जब जगत्‌में उनकी उपस्थितिका कोई उपयोग न रह जायगा तो वे लुप्त हो जायंगी। उनकी क्रिया हमारी जांचकी प्रक्रियाके तौरपर उपयोगमें लायी जाती है, ताकि कोई भी त्रुटि छूट न जाय, रूपान्तरके कार्यमें कोई भी चीज बाकी न बच जाय। वे किसी भूलको न रहने देंगी। अगर तुमने अपनी सत्ताकी, किसी मामूली-से ब्योरेकी भी, अवहेलना की तो वे झट आ पहुंचेगी और उस उपेक्षित स्थानको छू देंगी और उसे तुम्हारे लिये इतने दुःखद रूपमें स्पष्ट बना देंगी कि तुम परिवर्तन करनेके लिये बाध्य हो जाओगे। जब इस प्रक्रियाके लिये उनकी आवश्यकता न रहेगी तब उनका रहना निरर्थक हो जायगा और वे लुप्त हो जायंगी। उन्हें यहां रहने दिया गया है क्योंकि भगवान्‌के महान् कार्यमें उनकी आवश्यकता है, जब वे अनिवार्य न रहेंगी तब या तो वे बदल जायंगी या चली जायंगी।

क्या इसमें बहुत समय लगेगा ?

सब कुछ तुम्हारे दृष्टिकोणपर निर्भर है। काल सापेक्षिक है, तुम उसके बारेमें साधारण बाह्य मानव दृष्टिकोणसे, आन्तर चेतनाके गभीरतर दृष्टिकोण से या भगवान्‌की दृष्टिसे चर्चा कर सकते हो। यदि तुम भागवत चेतनाके साथ एक हो तो फिर किसी कार्यमें, चाहे मनुष्यकी कालगणनाके हिसाबसे एक हजार वर्ष लगें या केवल एक वर्ष लगे, इसका कुछ भी महत्त्व नहीं रहता ; क्योंकि, उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्थामें तुम मानव-प्रकृतिकी अवस्थाओंका अतिक्रमण कर भागवत प्रकृतिकी अनन्तता और शाश्वततामें प्रवेश कर जाते हो। तब तुम जल्दबाजीकी व्याकुलतासे बच जाते हो जिससे मनुष्य जकड़े रहते हैं क्योंकि, वे कामको पूरा होते हुए देखना चाहते हैं। उद्वेग, उतावलेपन और बेचैनीसे कुछ नहीं बनता। ये समुद्रपर फेन हैं, यह एक महान् आडम्बर है जो अपने-आपमें समाप्त हो जाता है। मनुष्योंको लगता है कि निरन्तर दौड़-धूप और कूद-फांद किये बिना, कर्मण्यताके आवेशमें उन्मत्त होकर कुछ-न-कुछ जोड़-तोड़ लगाये बिना वे कुछ कर ही नहीं सकते। परन्तु यह समझना एक भ्रम है कि इन तथाकथित हलचलोंसे चीजें बदल सकती हैं। यह एक ऐसी बात है जैसे कोई एक कटोरेको हाथमें उठाकर उसमें जलको थपेड़ता रहे। इस क्रियासे जल इधर-उधर अवश्य हिलेगा, किन्तु तुम्हारे इतने थपेड़े खाकर भी वह बदलेगा नहीं। कर्मका यह भ्रम मानव-प्रकृतिके सबसे बड़े भ्रमोंमेंसे है। इससे प्रगतिमें बाधा पहुंचती है, क्योंकि इस भ्रममें पड़कर तुम सदा किसी उत्तेजित गतिसे दौड़ पड़नेकी आवश्यकताका अनुभव करने लगते हो। काश, तुम इस भ्रमको जान जाओ, इसकी निरर्थकता समझ लो और तुम्हें यह दिखायी देने लगे कि तुम्हारी इस दौड़-धूपसे संसारमें कुछ भी परिवर्तन नहीं होता; इसके द्वारा तुम्हें कहीं कुछ नहीं प्राप्त हो सकता, जो इस प्रकार दौड़-धूप करते हैं वे ऐसी शक्तियोंके खिलौने होते हैं जो उन्हें अपने आमोदके लिये नचाया करती हैं। और ये शक्तियां भी उत्तम कोटिकी नहीं होतीं।

जगत्में जो कुछ भी किया गया है वह उन थोड़े-से लोगोंके द्वारा ही किया गया है जो क्रियाओंके परे आत्माकी नीरवतामें स्थित रह सके हैं, ऐसे लोग भागवत शक्तिके उपरकण होते हैं। ये गतिशील प्रतिनिधि और सचेतन उपकरण हैं जो उन शक्तियोंको उतार लाते हैं जो जगत्का परिवर्तन करती हैं। कार्य इसी प्रकार किया जा सकता है, न कि चंचल कर्मण्यताद्वारा। शान्ति, स्थिरता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीरवताकी अवस्थामें ही जगत्का निर्माण हुआ था और जब कभी किसी सच्ची चीजकी रचना करनी होगी तो उसे शान्ति, नीरवता और स्थिरताकी अवस्थामें ही करना होगा। यह समझना अज्ञान है कि जगत्में कुछ कर सकनेके लिये तरह-तरहकी निरर्थक बातोंके लिये परिश्रम करना और सुबहसे शामतक दौड़-धूप करना आवश्यक है।

एक बार तुम इन चक्कर खाती हुई शक्तियोंसे पीछे हटकर शान्त क्षेत्रोंमें पहुंच जाओ तो देखोगे कि यह कितना बड़ा भ्रम है। तब तुम्हें मानवजाति अंधे प्राणियोंके समूह-सी लगेगी जो यह जाने बिना कि वे क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं, इधर-उधर दौड़-धूप करते फिरते हैं और एक-दूसरेके साथ केवल टकारते और ठोकरें खाते रहते हैं। और लोग इसीको कर्म और जीवन कहते हैं। यह थोथी हलचल है, कर्म नहीं, सत्य जीवन भी नहीं।

मैंने एक बार कहा था कि दस मिनटतक सार्थक रूपसे बोलनेके लिये तुम्हें दस दिनतक मौन रहना चाहिये। मैं यह और जोड़ सकती हूं कि एक दिन सार्थक रूपसे कार्य करनेके लिये एक वर्षतक शान्त रहना चाहिये। अवश्य ही, यह बात मैं साधारण बाह्य जीवनके लिये आवश्यक, नित्यकी दिनचर्या-सम्बन्धी सामान्य कार्योंके विषयमें नहीं कह रही, बल्कि उनके लिये कह रही हूं जिन्हें संसारमें कुछ करना है अथवा जिनका यह विश्वास है कि उन्हें कुछ करना है। और नीरवतासे मेरा अभिप्राय आन्तरिक शांतिसे है और यह उन्हींको प्राप्त हो सकती है जो अपने कर्मोंसे अपने-आपको तदाकार किये बिना, उनमें सराबोर हुए बिना तथा अपनी ही प्रवृत्तियोंके कोलाहल और रूपसे अन्धे और बहरे हुए बिना कर्म कर सकते हों। अपने कर्मोंसे अपने-आपको अलग कर लो और इन सांसारिक प्रवृत्तियोंके परे जो दृष्टि है उसमें ऊपर उठो, शाश्वतकी चेतनामें प्रवेश करो। तभी तुम जान पाओगे कि सच्चा कर्म क्या है।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमके बारेमें प्रश्नोत्तर

[प्रेम विश्वव्यापी और सनातन; इसकी अभिव्यक्ति वनस्पतियों तथा पत्थरोंमें भी है; भागवत प्रेम अपने-आपको देता है; जगत्‌में भागवत प्रेमकी अभिव्यक्ति — उनका परम आत्मदान था; विशेष रूपसे शामके समय वृक्षोंमें अभीप्सा]

मानव प्रेमका भावगत प्रेमके साथ क्या संबंध है? क्या मानव प्रेम भागवत प्रेममें बाधक है? क्या यह ठीक नहीं है कि मानव-प्रेमको धारण करनेकी योग्यता भागवत प्रेमको धारण करनेके सामर्थ्यका सूचक है? क्या ईसामसीह, रामकृष्ण और विवेकानन्द जैसे महान् आध्यात्मिक व्यक्ति स्वभावतः अत्यन्त प्रेमी और स्नेही नहीं थे?

प्रेम विश्वव्यापी महान् शक्तियोंमेंसे एक है। यह अपने-आपमें स्थित है और जिन पदार्थोंमें यह प्रकट होता है अथवा जिनके द्वारा अपने-आपको प्रकट करता है, उनसे पूरी तरह स्वतंत्र रहता है। इसे जहां कहीं अभिव्यक्त होनेकी संभावना दीखती है, जहां कहीं ग्रहण-शीलता होती है और जहां कहीं द्वार खुला होता है, वहीं यह अभि-व्यक्त हो जाता है। तुम जिसे प्रेम कहते हो, जिसे तुम निजी या व्यक्तिगत वस्तु समझते हो वह इस विश्वव्यापी शक्तिको ग्रहण करने और अभिव्यक्त करनेकी तुम्हारी क्षमता मात्र है। परन्तु विश्वव्यापी होनेके नाते यह कोई अचेतन शक्ति नहीं है, यह एक परम सचेतन दिव्य शक्ति है। यह सचेतन रूपमें धरतीपर अपनी अभिव्यक्ति और सिद्धिके लिये प्रयत्न करती है, सचेतन होकर अपने उपकरण चुनती है; जो लोग इसके आवाहनका उत्तर दे सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें यह अपनी तरंगोंके प्रति जागृत करती है और अपने शाश्वत लक्ष्यको उनके अन्दर सिद्ध करनेका प्रयास करती है और जब कोई उपकरण अनुपयुक्त होता है तो उसे छोड़कर दूसरोंको ढूंढती है। मनुष्य सोचते हैं कि वे एकाएक प्रेम-पाशमें बंध गये हैं, वे अपने प्रेमको उत्पन्न होते, बढ़ते और फिर मुरझाते देखते हैं — अथवा हो सकता है कि कुछ लोगोंमें, जो उसकी अधिक स्थायी क्रियाके लिये विशेष रूपसे उपयुक्त हैं, यह कुछ अधिक टिके। परन्तु यह समझना भ्रम है कि यह उनका अपना व्यक्तिगत अनुभव था। वह तो विश्वव्यापी प्रेमके सनातन समुद्रकी एक लहरमात्र थी।

प्रेम विश्वव्यापी और सनातन है, यह अपने-आपको सदा अभिव्यक्त करता रहता है और अपने सार-रूपमें सदा समरूप रहता है। यह एक भागवत शक्ति है, इसकी बाह्य क्रियाओंमें जो विकार दिखायी देते हैं वे इसके उपकरणोंके होते हैं। प्रेम केवल मानव-प्राणियोंमें ही अभिव्यक्त नहीं होता, यह सर्वत्र है। इसकी गति वनस्पतियोंमें भी है, शायद पत्थरोंतकमें भी है। पशु-पक्षियोंमें इसकी उपस्थितिका पता लगाना सरल है। इस महान् और दिव्य शक्तिके विकार इसके परिमित उपकरणकी मलिनता, अज्ञान और स्वार्थसे आते हैं। शाश्वत शक्ति — यानी, प्रेममें कोई चिपटनेकी वृत्ति नहीं होती, न कोई इच्छा, न स्वत्वकी भूख और न स्वार्थभरी आसक्ति होती है। अपनी विशुद्ध गतिमें वह परमात्माके साथ एक होनेके लिये आत्माकी खोज है, यह एक ऐसी खोज है जो अन्य समस्त वस्तुओंसे निरपेक्ष और निर्लिप्त रहती है। भागवत प्रेम अपने-आपको देता है, कोई मांग नहीं करता। मनुष्योंने इसको क्या बना डाला है यह कहनेकी आवश्यकता नहीं। उन्होंने इसे एक भद्दी और वीभत्स वस्तु बना दिया है। फिर भी, मनुष्योंमें भी, प्रेमका प्रथम संस्पर्श अपने पवित्रतर सारका कुछ अंश ले आता है। क्षण-भरके लिये वे अपने-आपको भुला देनेमें समर्थ हो जाते हैं, क्षण-भरके लिये इसका दिव्य स्पर्श, सभी सुन्दर और मनोहर चीजोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगाता और बढ़ाता है। परन्तु बादमें, अपनी अपवित्र मांगोंसे भरी, बदलेमें किसी चीजकी याचना करती, जो कुछ देती है उसके बदलेमें कुछ चाहती, अपनी निकृष्ट तृप्तियोंके लिये शोर मचाती और जो दिव्य था उसे विकृत और कलुषित करती हुई मानव-प्रकृति ऊपरी तलपर उठ आती है।

भागवत प्रेमको अभिव्यक्त करनेके लिये तुम्हें उसे ग्रहण करने योग्य होना चाहिये। क्योंकि, उसे वे ही अभिव्यक्त कर सकते हैं जो इसकी नैसर्गिक प्रवृत्तिके लिये स्वभावतः खुले हों। उनमें यह उद्‌घाटन जितना विशाल और अबाध होगा उतना ही वे दिव्य प्रेमको उसकी मौलिक पवित्रताके साथ अभिव्यक्त कर सकेंगे। और, जितना ही यह निम्नतर मानव-भावोंसे मिश्रित होता है, उतना ही अधिक विकार इसकी अभिव्यक्तिमें आ जाता है। जो प्रेमको उसके असली और सत्य रूपमें ग्रहण करनेके लिये खुला हुआ नहीं है वह भगवान्‌के समीप नहीं पहुंच सकता। ज्ञान-मार्गके अनुयायी भी एक समय ऐसे स्थलपर जा पहुंचते हैं, जहांसे यदि वे आगे बढ़ना चाहें तो वे अपने-आपको ज्ञानके साथ प्रेममें प्रवेश करते हुए पाते हैं और अनुभव करते हैं कि दोनों एक ही हैं। ज्ञान भगवत्-मिलनकी ज्योति है और प्रेम ज्ञानका हृदय। आत्माकी प्रगतिमें एक ऐसा स्थान आता है जहां ये दोनों मिल जाते हैं और तुम एकको दूसरेसे अलग नहीं कर सकते। आरंभमें, इन दोनोंके बीच तुम जो विभाजन करते हो वह मनकी रचना है, किन्तु उच्चतर भूमिकापर उठते ही ये भेद गायब हो जाते हैं।

जो लोग इस जगत्‌में भगवान्‌को प्रकट करने और पार्थिव जीवनको रूपान्तरित करनेके लिये आये हैं उनमें कुछने दिव्य प्रेमको अधिक पूर्णताके साथ अभिव्यक्त किया है। कुछमें इस अभिव्यक्तिकी पवित्रता इतनी अधिक थी कि समग्र मानवजातिने उन्हें गलत समझा; यहांतक कि उनपर कठोर और प्रेमशून्य होनेका दोष लगाया गया है, यद्यपि उनमें दिव्य प्रेम विद्यमान है। परन्तु उनमें इसका रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी इसके तत्त्वकी तरह मानव नहीं, दिव्य होता है। मनुष्य जब प्रेमकी बात करता है तो वह इसे भावावेश और भावुकतापूर्ण दुर्बलताके साथ जोड़ देता है। परन्तु मनुष्य आत्म-विस्मृतिकी दिव्य प्रगाढ़तासे, बिना संकोच अपने लिये कुछ भी बचाकर रखे बिना, बदलेमें कुछ भी मांगे बिना, भेंटके तौरपर अपने-आपको पूर्ण रूपसे न्योछावर कर देनेकी शक्तिसे — अपरिचित-सा है। और, जब यह भागवत प्रेम दुर्बल भावुक़ता-भरे भावावेशोंके बिना, अपने सत्य स्वरूपमें आता है तो लोग इसे निष्ठुर और नीरस पाते हैं, वे इसमें प्रेमकी उच्चतम और तीव्रतम शक्तिको नहीं पहचान पाते।

जगत्में भगवान्के प्रेमकी अभिव्यक्ति उनकी महान् आहुति थी, उनका परम आत्म-दान था। पूर्ण चेतनाने जड़-प्रकृतिकी अचेतनामें निमग्न और विलीन होना स्वीकार किया ताकि अंधकारकी गहराइयोंमें भी चेतना जागृत की जा सके और उनमें शनैः-शनैः दिव्य शक्ति उदित हो सके तथा सारे अभिव्यक्त विश्वको दिव्य चेतना और भागवत प्रेम की सर्वोत्कृष्ट प्रतिमा बनाया जा सके। अपनी परम दिव्यपूर्ण अवस्थाको, उसकी निरपेक्ष चेतनाको, उसके अनन्त ज्ञानको खोना स्वीकार करके, अचेतनाके साथ एक होकर अज्ञान और अन्धकारसे भरे जगत्में वास करना ही परम प्रेम था। फिर भी, शायद कोई भी इसे प्रेम नहीं कहेगा, क्योंकि यह अपने-आपको ऊपरी भावनाओंसे नहीं मढ़ता, इसने जो कुछ किया है उसके बदलेमें कोई मांग नहीं रखता, अपने बलिदानका प्रदर्शन नहीं करता। जगत्में प्रेम-शक्ति उन चेतनाओंकी खोजमें है जो इस भागवत गतिको उसके विशुद्ध रूपमें ग्रहण करने और उसे अभिव्यक्त करने योग्य हों। समस्त जीवोंकी प्रेमके लिये यह दौड़, समस्त जीवोंके तथा जगत्के हृदयमें प्रेमके लिये अदम्य आवेग, उस भागवत प्रेमकी प्रेरणाके कारण ही है जो मनुष्यकी समस्त कामना और चाहके पीछे वर्तमान है। प्रेम-शक्ति करोड़ों उपकरणोंका स्पर्श करती है, सदा परीक्षण करती है, सदा असफल होती है, किन्तु इसका यह बार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारका स्पर्श उपकरणोंको तैयार कर रहा है और एक दिन आयेगा जब सहसा उनमें आत्म-दान और प्रेमकी शक्ति जाग उठेगी।

प्रेमकी गति मनुष्योंतक ही परिमित नहीं है और संभवतः मानव-जातिकी अपेक्षा अन्य सृष्टियोंमें कम विकृत है। पुष्पों और वृक्षों-को देखो। जब सूर्य अस्त होता और सब कुछ नीरव हो जाता है, तब क्षण-भरके लिये शान्त होकर बैठो और अपने-आपको प्रकृतिके साथ एक कर दो, तुम अनुभव करोगे कि पृथ्वीसे, वृक्षोंकी जड़के नीचेसे, प्रगाढ़ प्रेम और कामनासे पूर्ण एक अभीप्सा ऊपर उठ रही है और यह अभीप्सा ऊपरकी ओर बढ़ती हुई तथा वृक्षोंके तंतुओंमेंसे संचार करती हुई उनकी उच्चतम शाखाओंतकमें उठ रही है—उस वस्तुके लिये कामना जो प्रकाश लाती और सुख फैलाती है, उस प्रकाशके लिये जो चला गया है, जिसे वे वापस चाहते हैं। उनमें यह चाह इतनी पवित्र और तीव्र होती है कि यदि तुम वृक्षोंमें-होनेवाली गतिको अनुभव कर सको, तो तुम्हारी अपनी सत्ता भी उस शांति, उस प्रकाश और प्रेमके लिये हार्दिक प्रार्थना करने लगेगी जो अभीतक यहां अभिव्यक्त नहीं है। एक बार भी यदि तुम इस विशाल, विशुद्ध और सत्य दिव्य प्रेमके संस्पर्शमें आ जाओ, यदि तुम थोड़ी देरके लिये भी इसके लघुतम रूपका ही अनुभव कर पाओ, तो तुम यह अनुभव कर लोगे कि मनुष्यकी वासनाने इसके स्वरूपको कितना नीच बना डाला है। मानव-प्रकृतिमें यह क्षुद्र, पाशविक, स्वार्थमय, हिंसात्मक और कुरूप हो गया है, या फिर यह दुर्बल और भावुक, अत्यन्त तुच्छ भावोंसे भरा हुआ, क्षणभंगुर, बाहरी और शोषक बन गया है। और इस नीचता और पशुताको अथवा इस स्वार्थसे भरी दुर्बलताको लोग प्रेम कहते हैं।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

नवंबर और दिसंबरके महीने आश्रममें विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। १७ नवंबरको माताजीको शरीर त्यागे पांच पूरे हो गये। उस दिन माताजीके कक्षके दरवाजे दर्शनार्थियोंके लिये खोले जाते हैं। २० नवंबरको जब माताजीका शरीर समाधिस्थ किया गया था, दोनों दिन समाधिके चारों ओर ध्यान हुआ करता है। २४ नवंबर सिद्धि दिवस है। २३ नवंबरको तो आश्रमकी फिल्म भी दिखायी गयी थी।

दिसंबरकी पहली और दूसरी तारीखको 'श्रीअरविंद अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र'का जन्म दिन मनाया जाता है। पहलीको 'सावित्री' पर आधारित नृत्य नाटिका हुई और दूसरीको स्पोर्टस ग्राउंडमें शारीरिक शिक्षा विभागका प्रदर्शन।

फिर ५ दिसंबर श्रीअरविंदके शरीर-त्यागका दिन है। इस दिन श्रीअरविंदके कक्षके दर्शन होते हैं और ९ को समाधिके चारों ओर ध्यान (५ को भी)। इन अवसरोंपर क्रीड़ांगणमें विशेष ध्यान होता है।

श्रीअरविंद सोसायटीके 'न्यू स्कूल' में भारत सरकारके संस्कृति विभागकी ओरसे २२ नवंबरसे १६ दिसंबर तक विशेष प्रशिक्षणका कार्यक्रम रखा गया था जिसमें ६० अध्यापकोंने भाग लिया। हम आशा करते हैं कि अगले अंकमें उसके बारेमें अधिक जानकारी दे सकेंगे।

श्रीअरविंद सोसायटीके **बंबई केंद्र** (सहकार) में श्रीअरविंदके पुण्यावशेषोंकी स्थापनाकी गयी (१९.१०.७८)। इस अवसरके लिये आश्रमसे चंपकलालजी पधारे थे।

शेरा (गुजरात) में श्रीअरविंद कृषि विकास मण्डलकी ओरसे श्रीअरविंदकी 'सावित्री'के अध्ययनका कार्यक्रम एक सप्ताहतक चला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70

REGD. No. M. 8731

अहमदाबादमें ५ से १४ नवंबरतक श्री रामभाई अमीनने माताजी और साधना के बारेमें ९ भाषणोंकी व्यवस्था की।

पश्चिम बंगालमें सोसायटीके कई केंद्रोंने बाढ़ पीड़ितोंकी सहायता-का काम हाथमें लिया था।

नागपुरमें श्रीअरविंद सोसायटी केंद्रमें ११ नवंबरको सोसायटीके सभापति नवजातजीका भाषण हुआ।

उत्तर प्रदेशके सभी सोसायटी केंद्रोंका वार्षिक सम्मेलन **नैमिषा-रण्यमें** २२ से २४ अक्तूबर तक हुआ जिसमें अगले वर्षके कार्यक्रमके बारेमें विचार-विमर्श हुआ।

घोषणा : फरवरी १९७९में स्वाध्याय शिविरमें जो लोग भाग लेना चाहें वे अभीसे डा. महेश्वरी, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी, को पत्र लिखकर जरूरी जानकारी भेज सकते हैं।

नये केंद्र :

१) श्रीअरविंद सोसायटी शाखा, अहमदाबाद।

२) श्रीअरविंद सोसायटी केंद्र, तिरुपति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

फरवरी १९७९ वर्ष ९, अंक ७, पूर्णांक १०३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

माताजीके वचन :

- कुछ संदेश ... १
- दुःख झेलना जानो ... ३
- वैश्व कार्यमें मेरा स्थान ... ७
- समर्पणके बारेमें ... १०
- विरोधी शक्तियोंके बारेमें ... १६
- बंधनोंका त्याग ... १९
- यादें ... २३

माताजी और भारत ... २४

कुछ आत्माके बारेमें — अनुवेन ... २९

सोसायटी समाचार ... ३०

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ संदेश

[माताजीने श्रीअरविंदके बारेमें जो कुछ कहा था वही उनके अपने बारेमें कहा जा सकता है। —सं०]

श्रीअरविंद धरापर सिद्धांतों और शिक्षाओंके साथ प्रतियोगिता करनेके लिये एक नया सिद्धांत या शिक्षा लेकर नहीं आये हैं, बल्कि अतीतको पार करनेका मार्ग दिखानेके लिये और एक सन्निकट और अनिवार्य भविष्यके प्रति ठोस रूपसे मार्ग खोलनेके लिये आये हैं।

२३-२-१९६७

*

श्रीअरविंद न अतीतके हैं, न ही इतिहासके।

श्रीअरविंद हैं वह भविष्य जो अपनी सिद्धिके मार्गपर बढ़ रहा है।

इसलिये आवश्यक शीघ्रताके साथ आगे बढ़ सकनेके लिये और मार्गपर फिसड्डी बनकर पीछे न रह जानेके लिये हमें चिर यौवनको धारण किये रहना चाहिये।

१९६७

*

जब श्रीअरविंदने अपना शरीर छोड़ा तो उन्होंने कहा था कि वे हमें छोड़ नहीं देंगे। और, सच पूछो तो, इन इक्कीस वर्षोंमें वे सदा हमारे साथ रहे हैं, वे उन सबकी, जो ग्रहणशील थे तथा उनके प्रभावकी ओर खुले थे, सहायता करते रहे हैं और उन्हें मार्ग दिखाते रहे हैं।

उनकी जन्मशताब्दीके इस वर्षमें उनकी सहायता और भी अधिक शक्तिशाली होगी। यह हमारा काम है कि हम उसके प्रति खुले रहें और यह जानें कि उससे कैसे लाभ उठायें। भविष्य उनके

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये हैं जिनमें वीर आत्मा है। हमारा विश्वास जितना अधिक दृढ़ और सच्चा होगा, उतनी ही अधिक शक्तिशाली और प्रभावकारी सहायता उनसे प्राप्त होगी।

२-१-१९७

*

श्रीअरविंद भविष्यके हैं। वे भविष्यके संदेशवाहक हैं। वे अब भी हमें वह मार्ग दिखा रहे हैं जिसका अनुसरण करना है ताकि भागवत संकल्पके बनाये हुए भव्य भविष्यकी सिद्धि जल्दी हो सके।

जो लोग मानवजातिकी प्रगतिके लिये और भारतकी देदीप्यमान नियतिके लिये सहयोग देना चाहते हैं, उन सबको एक आंतरिक अभीप्सा और प्रदीप्त काममें एक होना चाहिये।

*

१९७२

नया वर्ष शुभ हो।

यह वर्ष श्रीअरविंदको निवेदित है।

उनकी शिक्षाको अधिक अच्छी तरह समझना और उसे कार्यान्वित करनेका प्रयास करना निश्चय ही उनकी ओर कृतज्ञता प्रकाशन करनेका सर्वश्रेष्ठ ढंग है, उस समस्त प्रकाश, ज्ञान और शक्तिके लिये कृतज्ञता जिसे वे उदारतापूर्वक पृथ्वीपर लाये हैं।

हमारी यही प्रार्थना है कि उनकी शिक्षा हमें आलोकित करे और हमारा पथ-प्रदर्शन करे। जो कुछ हम आज नहीं कर सकते उसे कल कर सकें।

आओ, हम पूरी सच्चाईके साथ ठीक वृत्ति अपनाएं, तभी यह वर्ष सचमुच शुभ वर्ष होगा।

३१-१२-१९७१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुःख झेलना जानो

कौन है जिसे पीड़ा, यंत्रणा और दुःखका सामना नहीं करना पड़ता? माताजीने अपने निबन्ध 'दुःख झेलना जानो' में लिखा है:

"मेरे हृदयने भी दुःख झेला है और कातर पुकार की है, दुःख-के भारी बोझसे टूटने-टूटनेको होकर, अत्यधिक यंत्रणासे दलित होकर ... पर, हे शांतिदायक भगवान्, मैंने तुझे पुकारा, उत्कंठासे तेरी प्रार्थना की, और तेरी दीप्तिमान ज्योतिकी प्रभा प्रकट हुई और उस-ने मुझे नव जीवन दान दिया।

"जब तुम्हारी महिमाकी किरणोंने मेरी संपूर्ण सत्ताके भीतर प्रवेश कर उसे प्रकाशित कर दिया तो मैंने स्पष्ट देखा कि मुझे किस पथ-पर चलना है और दुःखकी क्या उपयोगिता हो सकती है। जिस दुःखने मुझे निचोड़ डाला था वह इस पृथ्वीके दुःख, अतल वेदना और यातनाकी कितनी हल्की-सी परछाईंमात्र है, यह मैंने समझा है।" ...

(श्रीमातृवाणी, खंड २, पहलेकी बातें, भाग १)

अपने एक अत्यधिक सुन्दर और हृदय-स्पर्शी निबंध 'सर्वोत्तम आविष्कार' में माताजीने कहा है:

"अपनी बात पूरी करनेसे पहले कुछ पृष्ठ उन लोगोंके लिये जोड़ देना चाहती हूं जो बाहरसे निष्फल दीखनेवाले अनेक प्रयत्न कर चुके हैं, जो इस मार्गमें आनेवाले फंदोंसे परिचित हो चुके हैं, जो अपनी दुर्बलताको माप चुके हैं, जो विश्वास और साहस खो देनेके संकटमें पड़े हैं। आर्त्तजनोंमें पुनः आशाका संचार करनेके लिये ये पृष्ठ एक साधकने उस समय लिखे थे जब कि सब प्रकारकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नि-परीक्षाओंकी पावनकारी लपटें उसके ऊपर टूटी पड़ती थी।

"तुम जो थके हुए, आहत, क्षत-विक्षत हो, तुम जो गिर पड़े हो शायद हार मान बैठे हो, एक मित्रकी बात सुनो। वह तुम्हारे दुःख जानता है, वह उन्हें भोग चुका है, वह तुम्हारी ही तरह पृथ्वीके दुःख-संताप झेल चुका है, तुम्हारी ही तरह दिनका बोझ उठाए कितने रेगिस्तान पार कर चुका है। भूख और प्यास क्या है, वह जानता है, निर्जनता और परित्यक्त अवस्थाको पहचानता है, और सबसे अधिक क्रूर वस्तु हृदयकी रिक्तताको भी वह जानता है। आह! उसने संशयकी घड़ियां भी जानी हैं, वह कितनी भूलों, त्रुटियों, हिचकिचाहटों और सब प्रकारकी दुर्बलताओंके बीचसे गुजर चुका है।

"पर वह तुमसे कहता है: साहस रखो! उस पाठको ध्यानसे सुनो जो उदीयमान सूर्य हर सुबह अपनी प्रथम किरणोंके साथ पृथ्वीके लिये लाता है। यह आशाका पाठ है, सांत्वनाका संदेश है।

"तुम जो रोते हो, कष्ट पाते हो, भयसे कांपते हो, तुम जिनमें यह जाननेका साहस नहीं कि तुम्हारे दुःखोंकी अवधि कितनी है, और तुम्हारे दुःखका क्या परिणाम है, देखो, ऐसी कोई रात नहीं जिसके बाद प्रभात न आए। जब अन्धकार घना हो जाता है तभी ऊषा तैयार रहती है। ऐसा कोई कुहासा नहीं जिसे सूर्य दूर न कर सके, ऐसी कोई बदली नहीं जिसे वह स्वर्णिम न कर दे, ऐसा कोई आंसू नहीं जिसे एक दिन वह सुखा न दे, ऐसा कोई तूफान नहीं जिसके बाद उसका विजय-धनु चमक न उठे, ऐसा कोई हिम नहीं जिसे वह पिघला न दे, ऐसा कोई शीत नहीं जिसे वह रंगीन वसन्तमें न बदल दे।

"और इसी प्रकार तुम्हारे लिये भी कोई ऐसी विपत्ति नहीं जो प्रतिदानमें अपने बराबर ऐश्वर्य न लाए, कोई वेदना नहीं जो आनन्दमें रूपान्तरित न हो सके, ऐसी कोई पराजय नहीं जो विजयमें न बदल जाए, ऐसा कोई पतन नहीं जो उच्चतर उत्थानमें परिणत न हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी कोई निर्जनता नहीं जो जीवनका नीड़ न बने, ऐसी कोई असंगति नहीं जो संगतिमें न बदल सके। कभी-कभी दो मनोंका मतभेद ही दो हृदयोंको मिलनेके लिये बाधित करता है। संक्षेप-में, ऐसी असीम कोई दुर्बलता नहीं जो शक्तिमें परिणत न हो सके। वरन् चरम दुर्बलताके अन्दर ही सर्वशक्तिमान भगवान् प्रकट होना पसन्द करते हैं।

"सुनो, मेरे नन्हें बालक! तुम जो अपनेको इतना टूटा हुआ और पतित अनुभव करते हो, जिसके पास कुछ भी बाकी नहीं रहा, अपनी दरिद्रता ढकनेके लिये, अपने गर्वका पोषण करनेके लिये कुछ भी नहीं रहा, ऐसे तुम इतने महान् कभी नहीं थे! जो गहराईमें जागता है, वह शिखरके कितने समीप होता है! कारण, खाई जितनी अधिक गहरी होती है, उतनी ही अधिक ऊंचाई प्रकट होती है!

"क्या तुम नहीं जानते कि विश्व-सृष्टिकी महत्तम शक्तियां अपने-आपको जड़त्वके गाढ़तम आवरणसे ढकना चाहती हैं? कितना भव्य है यह गठबन्धन, एक ओर परम प्रेम, दूसरी ओर अत्यन्त तमोग्रस्त मिट्टी, एक ओर अन्धकारकी कामना, दूसरी ओर ऐश्वर्यशाली प्रकाश!

"यदि अग्नि-परीक्षाओं या त्रुटियोंने तुम्हें पछाड़ दिया है, यदि तुम दुःखके अथाह गर्तमें डूब गए हो, तो जरा भी शोक न करो, क्योंकि वहींपर तुम्हें मिलेगा भगवान्का स्नेह, उनकी परम आशिष। तुम पावनकारी दुःखोंकी अग्निमें तप चुके हो, इसलिये अब तुम्हें गौरवमय शिखर मिलेंगे।

"तुम बंजर-बीहड़में हो तो सुनो नीरवताकी वाणी। बाहरकी स्तुति और प्रशंसाका कलरव ही तुम्हारे कानोंको सुख देता रहा है, अब नीरवताकी वाणी तुम्हारी आत्माको सुख देगी, तुम्हारे अन्दर जाग्रत करेगी गहराइयोंकी प्रतिध्वनि, दिव्य स्वरसंगतियोंका नाद।

"तुम गहन रात्रिमें चल रहे हो तो अन्धेरेकी अमूल्य संपदा संग्रह करते चलो। सूर्यका उज्ज्वल प्रकाश बुद्धिके मार्गको आलोकित कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता है, किन्तु रात्रिकी श्वेत प्रभामें पूर्णताके गुप्त पथ दृष्टिगोचर होते हैं, आध्यात्मिक संपदाओंका रहस्य खुलता है।

"तुम नग्नता और अभावके मार्गपर हो, यह प्रचुरताका मार्ग है। जब तुम्हारे पास कुछ न बचेगा तो तुम्हें सब कुछ दिया जायगा। क्योंकि जो सच्चे और सीधे हैं उनके लिये बुरे-से-बुरेमें से सदा भले-से-भला निकल आता है।

"जमीनमें बोया हुआ एक दाना हजारों दाने पैदा करता है। दुःखके पंखोंका प्रत्येक स्पन्दन गौरवकी ओर ले जानेवाली उड़ान बन सकता है।

"और जब शत्रु मनुष्यपर क्रुद्ध हो टूट पड़ता है, तो वह उसके नाशके लिये जो कुछ करता है, वही उसे महान् बनाता है।

"नाना लोकोंकी कहानी ध्यानसे सुनो, देखो: प्रचण्ड शत्रु विजयी होता दिखायी देता है। वह प्रकाशकी सत्ताओंको रात्रिके अन्धकारमें फेंकता है और रात्रि तारोंसे भर जाती है। वह विश्वकी गति-विधिके विरुद्ध घोर युद्ध ठान लेता है, आदि मण्डलके साम्राज्यकी अखण्डतापर आक्रमण करता है, उसकी समस्वरताको तोड़-फोड़ देता है, उसका विभाजन करता और छोटे-छोटे टुकड़े कर डालता है, उसकी धूलको अनन्तकी चारों हवाओंमें बिखेर देता है। और लो देखो! वही धूल सुनहले बीजोंमें परिणत हो जाती है, अनन्तको उर्वर बनाती है और उसे नाना भुवनोंसे भर देती है, ये भुवन अब अपने शाश्वत केन्द्रके चारों ओर विशालतर व्योम-मण्डलमें घूमते रहेंगे। इस प्रकार विभाजन ही एक अधिक समृद्ध और अधिक गभीर एकत्व लाता है और भौतिक जगत्के धरातलोंको बढ़ाता हुआ उसी साम्राज्यको विस्तृत कर देता है जिसे वह नष्ट करने चला था।

"निःसंदेह असीमके वक्षस्थलपर झूलते आदि मण्डलका गान सुन्दर था। पर उससे भी कितना अधिक सुन्दर और विजयोल्लासपूर्ण है ग्रह नक्षत्रोंका समवेत राग, भुवनोंकी संगीत-लहरी, उनकी विराट् सहगान-ध्वनि जो आकाशमें विजयका शाश्वत संगीत गुंजायमान कर रही है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और सुनो : जिस मुहूर्त मनुष्य पृथ्वीपर अपने भागवत उद्गमसे अलग हो गया था उससे अधिक संकटापन्न स्थिति नहीं हो सकती। उसके ऊपर फैली हुई थी उसपर बलपूर्वक अधिकार जमानेवाले शत्रुकी राज्य-सीमा, और क्षितिजके द्वारपर भड़कती तलवारें लिये खड़े थे कारा-प्रहरी। उस समय मनुष्य जीवनके आदि-स्रोततक न चढ़ सकता था, अतः, वह स्रोत ही उसके भीतर फूट निकला; वह ऊपरसे प्रकाश नहीं ग्रहण कर सकता था, अतः, वह प्रकाश उसके अन्तःस्थलमें ही जगमगा उठा; वह परात्पर प्रेमके साथ सम्बन्ध रखनेमें असमर्थ हो गया था, अतः, उस प्रेम ही ने अपनी आहुति दी, अपने-आपको अर्पित कर डाला, प्रत्येक पार्थिव प्राणी, प्रत्येक मानवीय अहंको अपना निवास स्थान, अपना मन्दिर बना लिया।

"इसी तरह, इस तिरस्कृत पर उर्वर, परित्यक्त पर धन्य जड़-तत्त्वके प्रत्येक परमाणुके अन्दर दिव्य भाव विद्यमान है, प्रत्येक जीवमें भगवान्का निवास है। और यदि सारे विश्वमें मनुष्य जैसा दुर्बल और कोई नहीं है तो उस जैसा दिव्य भी नहीं है।

"सच है, सच है, मान-मर्दनमें ही महिमाका पालना है।"

२३ अप्रैल, १९१२

(श्रीमातृवाणी, खण्ड २, पहलेकी बातें, भाग १)

वैश्व कार्यमें मेरा स्थान

एक प्रश्न था : "वैश्व कार्यमें मेरा क्या स्थान है?" उसका उत्तर देते हुए माताजीने लिखा है :

"हममेंसे प्रत्येक व्यक्तिको एक भूमिका निभानी है, एक कार्य करना है; प्रत्येकका एक अपना स्थान है जिसे केवल वही भर सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु चूंकि यह कार्य हमारी सत्ताकी सबसे अधिक केंद्रीय गहराईकी बाह्य अभिव्यक्ति है, इसका निश्चित रूप हम तभी जान सकते हैं जब हम अपने अंदरकी इस गहराईके प्रति सचेतन हो जायें।

"सच्चे परिवर्तनकी दशामें कभी-कभी ऐसा होता है। जिस क्षण रूपान्तरकारी प्रकाश हमें दिखाई देता है और उसके प्रति निर्बाध रूपसे हम अपने-आपको अर्पित कर देते हैं उसी समय अत्यंत अकस्मात् किन्तु बिलकुल स्पष्ट रूपसे हम यह भी जान जाते हैं कि हमें क्यों बनाया गया है और पृथ्वीपर हमारे अस्तित्वका क्या उद्देश्य है।

"पर यह प्रकाश दुर्लभ है। यह हमारे अन्दर प्रयत्नों और मनोभावोंकी पूरी श्रृंखलासे निर्धारित होता है। इन मनोभावोंको, इन आत्मिक अवस्थाओंको प्राप्त करने तथा बनाए रखनेके आवश्यक साधनोंमेंसे एक यह है कि हम प्रतिदिन अपने समयका कुछ भाग निःस्वार्थ कार्यमें लगायें। प्रतिदिन हम कोई-न-कोई ऐसा काम करें जो दूसरोंके लिये उपयोगी हो।. . ."

१४ मई, १९१२

(श्रीमातृवाणी, खण्ड २, पहलेकी बातें, भाग २, दूसरी सभा)

हममेंसे हरएकके जीवनमें कुछ विशेष कठिनाइयां आती हैं। ऐसा लगता है कि वे हमारी अपनी हैं और उनके साथ हमें विशेष रूपसे सिर टकराना पड़ता है। हमें उसका कोई प्रयोजन नहीं दिखाई देता और बहुत बार हम उसके लिये विधाताको कोसा करते हैं। इस प्रश्नपर भी माताजीने २८ मई, १९१२ की सभामें प्रकाश डाला है :

"हममें प्रत्येकके अन्दर एक कठिनाई अन्य सब कठिनाइयोंसे अधिक केन्द्रीय होती है। यह संसारमें हमारी भूमिकाओंके संबंधमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती है, मानों उस प्रकाशकी छाया हो, जैसे-जैसे यह प्रकाश अधिक तेज, उज्ज्वल और प्रबल होता जायगा और सारी सत्ताको अधिकृत करेगा, यह छाया क्रमशः क्षीण तथा विलीन होती जायगी।

"प्रत्येक व्यक्तिकी एक विशेष कठिनाई होती है जिसपर उसे सारे ध्यान और उद्योगको केंद्रित करनेकी आवश्यकता होती है, क्योंकि यदि हम अपना निरीक्षण करना जानें तो देखेंगे कि इसी कठिनाईमेंसे वे सब कठिनाइयां निकलती हैं जो हमारा रास्ता रोककर खड़ी हो सकती हैं।..."

(श्रीमातृवाणी, खंड २, पहले की बातें, भाग २, चौथी सभा)

इतना ही नहीं, कई बार हम देखते हैं कि बड़े आदमियोंके अंदर ज्यादा बड़ी कठिनाइयां होती हैं। इसके बारेमें श्रीअरविन्द अपने एक पत्रमें कहते हैं:

"तुम 'अशुभ व्यक्ति'के बारेमें जो कहते हो वह मुझे बहुत मजेदार लगा, क्योंकि यह मेरे सतत अनुभवका उत्तर है कि जो व्यक्ति कामके लिये विशेष रूपसे संपन्न है उसके साथ हमेशा या प्रायः हमेशा — शायद तुम्हें इन चीजोंके बारेमें कठोर नियम नहीं बनाने चाहिये — एक ऐसी सत्ता लगी रहती है जो देखनेमें उसीका भाग लगती है, लेकिन जो, वह व्यक्ति कार्यमें जिस चीजका प्रतिनिधित्व करता है, उसका ठीक प्रतिवाद होती है। और अगर शुरूमें वह न भी हो, उसके व्यक्तित्वके साथ बंधी न हो, तो जैसे ही वह अपनी उपलब्धिके लिये कार्य शुरू करता है वैसे ही, इस प्रकारकी शक्ति उसके वातावरणमें घुस जाती है। मालूम होता है कि उसका काम है विरोध करना, रोड़े डालना, गलत परिस्थितियां पैदा करना, एक शब्दमें कहें तो उसने जो काम शुरू किया है उसकी सारी समस्याको उसके सामने ला खड़ा करना। ऐसा लगता है कि गुह्य मितव्ययताकी दृष्टिसे समस्याको सुलझानेका इसके सिवाय कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और तरीका नहीं है कि पूर्व निर्दिष्ट यंत्र कठिनाइयोंको स्वयं अपनी कठिनाइयां बना ले। इससे बहुत-सी ऐसी बातें स्पष्ट हो जाती हैं जो ऊपरी तलपर बहुत घबरानेवाली प्रतीत होती हैं।"

समर्पणके बारेमें

[समर्पण, बलिदान और आत्मदान; मानव-मन और भागवत विराट्—पानीकी एक बूंद और समुद्र; कामनाएं दुर्बलता और अज्ञानकी गतियां; ये उस अंधकारमय समुद्रकी उपज हैं जिसमें निम्न शक्तियां विचरती हैं।]

क्या समर्पण और बलिदान एक ही नहीं हैं?

हमारे योगमें बलिदानके लिये कोई स्थान नहीं है। परंतु सब कुछ इसपर निर्भर करता है कि तुम बलिदान शब्दका क्या अर्थ करते हो। उसके विशुद्ध भावके अनुसार इसका अर्थ है पवित्र उत्सर्ग, भगवान्‌के अर्पणद्वारा पवित्रीकरण। परंतु आजकल इसके अनुसार बलिदान ऐसी वस्तु है जो विनाशके लिये प्रवृत्त है; यह अपने साथ एक अभावात्मक वातावरण लिये हुए है। इस प्रकारका बलिदान यज्ञ नहीं है, यह तो आत्म-वंचना है, आत्म-वध है। तुम अपनी संभावनाओंका, अपने व्यक्तित्वकी अत्यंत जड़ प्राकृतिक भूमिकासे लेकर अत्यंत आध्यात्मिक भूमिकाओंतककी संभावनाओं और सिद्धियोंका बलिदान करते हो। बलिदान तुम्हारी सत्ताको क्षीण करता है। भौतिक रूपसे, यदि तुम अपने जीवनका, अपने शरीरका बलिदान करते हो, तो तुम पार्थिव भूमिकाकी अपनी समस्त संभावनाओंको त्याग देते हो; तुम अपने पार्थिव जीवनकी सफलताओंसे हाथ धो लेते हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार नैतिक दृष्टिसे तुम अपने जीवनकी बलि दे सकते हो; तुम अपने आंतरिक जीवनकी विशालता और स्वतंत्र चरितार्थताको त्याग देते हो। आत्म-बलिकी इस भावनाके अंदर सदा ही एक प्रकारके बलात्कारका, किसी तरहकी बनावटका, किसी अध्यारोपित आत्म-त्यागका भाव रहता है। यह एक ऐसा आदर्श है जो आत्माकी गभीरतर और विशालतर स्वतःस्फूर्तियोंको कोई स्थान नहीं देता।

समर्पणसे हमारा ऐसा आशय नहीं, बल्कि स्वतःस्फूर्त आत्मदानसे है, अपने-आपको पूरी तरह भगवान्‌को, एक उच्चतर चेतनाको दे देना जिसके कि तुम एक अंग हो। समर्पण तुम्हारा ह्रास नहीं करेगा, बल्कि तुम्हारी वृद्धि करेगा, वह तुम्हारे व्यक्तित्वको घटायेगा नहीं, न उसे दुर्बल करेगा, न उसका नाश ही करेगा, बल्कि वह उसको सुदृढ़ बनायेगा, उसका उत्कर्ष करेगा। समर्पणका अर्थ है देनेके पूर्ण आनंदके साथ मुक्त भावसे और पूर्ण रूपसे देना, इसमें बलिदानका कोई भाव नहीं है। यदि तुममें जरा-सा भी ऐसा भाव होता है कि तुम बलिदान कर रहे हो तो फिर वह समर्पण नहीं रहता। क्योंकि इसका तो यह अर्थ हुआ कि तुम अपने-आपको बचाये रखना चाहते हो अथवा यह कि तुम अनिच्छापूर्वक या कष्ट और प्रयासके साथ देनेकी चेष्टा कर रहे हो, तुम्हें देनेका आनंद नहीं मिलता, शायद तुम्हारे अंदर देनेका भावतक नहीं होता। जब कभी तुम किसी कामको अपनी सत्तापर दबाव डालकर करते हो तभी तुम यह निश्चयपूर्वक जान लो कि तुम उस कामको गलत तरीकेसे कर रहे हो। सच्चा समर्पण तुम्हें विशाल बनाता है, तुम्हारी क्षमताकी वृद्धि करता है, वह तुम्हारे गुण और मात्राके परिमाणको इतना बढ़ाता है जितना तुम अपने-आप न बढ़ा पाते। गुण और मात्राकी यह नयी वृद्धि पहले जो कुछ तुम प्राप्त कर सकते थे उससे भिन्न प्रकारकी है। तुम किसी दूसरे ही जगत्‌में प्रवेश करते हो, किसी विशालतामें, जिसमें समर्पण किये बिना न पहुंच पाते। यह तो ऐसे ही है जैसे समुद्रमें जलकी एक बूंद गिरती है। अगर उसने अपना पृथक अस्तित्व बनाये रखा तो वह मात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलकी बूंद रहेगी, इससे अधिक् कुछ नहीं, एक छोटी-सी बूंद जो अपने इर्द-गिर्दकी विशालतासे कुचली गयी, क्योंकि उसने समर्पण नहीं किया है। परंतु समर्पण कर देनेपर वह उस समुद्रके साथ एक हो जाती है और समग्र समुद्रकी प्रकृति और शक्ति और विशालताका अंग बन जाती है।

इस गतिमें किसी तरहकी संदिग्धता या अस्पष्टता नहीं होती, यह स्पष्ट, बलवान् और निश्चित होती है। यदि कोई छोटा-सा मानव-मन भागवत विराट् मनके सामने खड़ा हो और फिर भी अपने पृथक्-त्वसे चिपका रहे, तो वह जो कुछ है वही बना रहेगा, एक छोटा-सा परिसीमित पदार्थ जो उच्चतर सद्वस्तुके स्वभावको नहीं जान सकता, उसके संपर्कमें नहीं आ सकता। ये दोनों एक-दूसरेसे अलग बने रहते हैं और गुण तथा मात्राकी दृष्टिसे एक-दूसरेसे सर्वथा भिन्न रहते हैं। परंतु यदि वह छोटा-सा मानव-मन समर्पण करे तो वह भागवत विराट् मनमें निमग्न हो जायगा, गुण और मात्रामें भी उसके साथ एक हो जायगा। इस तरह वह केवल अपनी सीमाओं और विकृतियोंके सिवाय कुछ न खोयेगा और इससे पा लेगा अपनी विशालता और प्रकाशमान विमलताको। उसके छोटे-से अस्तित्वका स्वभाव बदल जायगा और वह जिस महत्तर सत्यको समर्पण करता है उसके स्वभावको धारण कर लेगा। परंतु यदि वह विराट् मनका प्रतिरोध करे, उसके साथ युद्ध करे, उसके विरुद्ध विद्रोह करे, तो दोनोंके बीच एक लड़ाई अनिवार्य हो जायगी और विराट् मनका मानव मनपर दबाव पड़ेगा और जो निर्बल और छोटा है वह बलवान् और बड़ेकी शक्तिमत्ता और अमिततामें समा जायगा। यदि वह समर्पण न करे तो उसकी एकमात्र गति यही है कि वह चूस लिया जाय और उसका अंत हो जाय। जो मानवप्राणी भागवत मनके स्पर्श में आयगा और समर्पण करेगा वह देखेगा कि उसका अपना मन अपने अज्ञान और अंधकारसे तुरंत शुद्ध होने लगा है और वह भागवत विराट् मनकी शक्ति और ज्ञानमें भाग लेने लगा है। और यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह सामने खड़ा रहे, किंतु पृथक् भावसे, बिना किसी संस्पर्शके, तो वह जो कुछ है वही बना रहेगा, उस अपरिमेय विशालतामें जलकी एक बूंद। और यदि वह विद्रोह करे तो वह अपने मनको गंवा देगा, उसकी शक्तियां क्षीण होने लगेंगी और लुप्त हो जायंगी। और जो बात मनके लिये सत्य है वही प्रकृतिके अन्य सब भागोंके लिये भी सत्य हैं। यह ऐसा है जैसे तुम किसी ऐसे मनुष्यके साथ लड़ो जो तुमसे अधिक तगड़ा हो, तो तुम्हें बस, सिर फुड़वानेका ही लाभ होगा। तुम उस चीजसे क्योंकर लड़ सकते हो जो तुमसे लाखों गुनी बलवान् है? प्रत्येक बार जब तुम विद्रोह करोगे तब तुम्हें एक आघात पहुंचेगा और प्रत्येक आघात तुम्हारी शक्तिके एक भागको हर लेगा, यह वैसी ही बात है जैसे कोई अपनेसे बहुत अधिक बलवान् प्रतिद्वंद्वीके साथ मुष्टियुद्धमें उतरे और घूंसे-पर-घूंसा खाता जाय और हर घूंसा उसे अधिकाधिक कमजोर बनाता जाय और अंतमें वह पछाड़ खा जाय। इसमें किसी संकल्प-शक्तिके हस्तक्षेपकी आवश्यकता नहीं होती, यह काम आप-से-आप हो जाता है। यदि तुम विशालताके विरुद्ध विद्रोह करके उससे टकराओ तो इसके सिवाय और कोई परिणाम हो ही नहीं सकता।

जबतक तुम अपने कोनेमें पड़े रहो और साधारण जीवन बिताते रहो तबतक तुम्हें कोई नहीं छूता या कोई तुमपर चोट नहीं करता, किंतु जहां तुम भगवान्‌के संस्पर्शमें आये कि तुम्हारे लिये केवल दो ही मार्ग रह जाते हैं। या तो तुम समर्पण करो और उसमें अपने-आपको मिला दो — तुम्हारा समर्पण तुम्हें विशाल और महिमान्वित करेगा; या फिर तुम विद्रोह करो — तब तुम्हारी सब संभावनाएं समाप्त हो जायंगी और तुम्हारी शक्तियां क्षीण होकर नष्ट होने लगेंगी और तुममेंसे खिचकर उस देवमें समा जायंगी जिसका तुम विरोध कर रहे हो।

समर्पणके विषयमें बहुत-से भ्रांत विचार फैले हुए हैं। ऐसा लगता है कि अधिकांश लोग समझते हैं कि समर्पण करनेका अर्थ है व्यक्तित्वका विसर्जन, किंतु यह एक गहरी भूल है, कारण व्यक्तिके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्वका प्रयोजन है भागवत चेतनाके एक पहलूकी अभिव्यक्ति, और इस पहलूके स्वभावगत धर्मके प्रकाशनसे ही उसके व्यक्तित्वकी रचना होती है। इसलिये भगवान्‌की ओर उचित भाव रखनेसे यह व्यक्तित्व क्षीण और विकृत करनेवाले निम्न-प्रकृतिके प्रभावोंसे मुक्त हो जाता है और अधिक शक्ति-संपन्न होकर, अपने स्वरूपमें अधिक प्रतिष्ठित होता है और अधिक पूर्ण बन जाता है। उसके व्यक्तित्वका सत्य और सामर्थ्य अपने अधिक विशिष्ट रूपमें चमकने लगता है, उसका चरित्र अधिक यथार्थ रूपमें प्रत्यक्ष होता है जैसा कि उस समय संभव न होता जब वह सारे अज्ञान और अंधकारसे, निम्न-प्रकृतिकी सारी गंदगी और खोटसे मिला हुआ था। अब उसका व्यक्तित्व ऊंचाईमें और महिमामें बढ़ने लगता है, उसकी क्षमतामें वृद्धि हो जाती है तथा उसकी अधिकांश संभावनाएं सिद्ध होने लगती हैं। यह उदात्त करनेवाला परिवर्तन लानेके लिये व्यक्तित्वको पहले उस सबका त्याग करना होगा जो सत्य स्वभावको विकृत, सीमित और तमोग्रस्त करके उसके सच्चे व्यक्तित्वको बंधनमें डालता है, नीचे-की ओर गिराता तथा विरूप बनाता है; उसे अपने-आपमेंसे उन सब तत्त्वोंको निकाल फेंकना होगा जो साधारण मनुष्यकी अज्ञानमयी निम्न क्रियाओंसे तथा उसके अंधे-लंगड़े साधारण जीवनसे संबंध रखते हैं। सबसे पहले उसे अपनी कामनाओंका त्याग करना होगा, कारण, कामना, निम्न-प्रकृतिकी सबसे अधिक तमसाच्छन्न क्रिया है और यह मनुष्यको सबसे अधिक तमसाच्छन्न करती है। कामनाएं दुर्बलता और अज्ञानकी गतियां हैं और ये तुम्हें अपनी दुर्बलता तथा अज्ञानसे बांधे रखती हैं। लोगोंकी धारणा है कि कामनाएं उनके अपने अंदर उत्पन्न होती हैं, वे महसूस करते हैं कि ये या तो उनके अपने-आपमेंसे पैदा होती हैं या उनके अपने अंदरसे उठती हैं, किन्तु यह एक भूल है। कामनाएं अंधकारग्रस्त निम्न-प्रकृतिके विशाल समुद्रकी लहरें हैं और एक व्यक्तिसे दूसरे व्यक्तिमें पहुंचती रहती हैं। मनुष्य कामनाको अपने-आपमें पैदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करते, बल्कि ये लहरें उनपर चढ़ आया करती हैं और जो कोई इनके लिये खुला हो या जिसने अपने बचावका प्रबंध न किया हो वह इनकी पकड़में आ जाता है और इनके थपेड़ोंको खाता हुआ इधर-से-उधर डोलता रहता है। कामना मनुष्यको अभिभूत करके, उसपर अधिकार करके उसे विवेक करने लायक नहीं रहने देती और उसमें ऐसी धारणा जमा देती है कि इस (कामना) की अभिव्यक्ति करना भी उसके अपने स्वभावका एक अंग ही है। पर सच तो यह है कि मनुष्यके सत्य स्वभावके साथ इसका कुछ भी संबंध नहीं होता। ईर्ष्या, डाह, घृणा और हिंसा आदि सभी निम्नतर आवेगोंके संबंधमें यही बात है। ये भी वे गतियां हैं जो तुम्हें पकड़ लेती हैं, वे लहरें हैं जो तुमपर चढ़ आती हैं और तुम्हें पराजित करती हैं, इनका सत्य चरित्र या सत्य स्वभावसे कोई संबंध नहीं है, बल्कि ये तो उन्हें विरूप बनाती हैं। ये तुम्हारा वास्तविक या अविभाज्य अंग नहीं हैं, बल्कि ये इर्द-गिर्दके उस अंधकारमय समुद्रमेंसे आती हैं जिसमें निम्न-प्रकृतिकी शक्तियां विचरण करती हैं। इन कामनाओंमें, इन आवेशोंमें कोई व्यक्तित्व नहीं होता, इनमें तथा इनकी क्रियाओंमें ऐसी कोई चीज नहीं होती जो तुम्हारे लिये खास हो, ये इसी रूपमें सभीके अंदर प्रकट होती हैं। मनकी अज्ञानमय गतियां, व्यक्तित्वको ढक देनेवाली तथा उसकी वृद्धि और सार्थकताको क्षीण करनेवाली भ्रांतियां, संदेह और कठिनाइयां भी, इसी मूलसे आती हैं। ये गुजरती हुई लहरें हैं और जो कोई इनकी पकड़में आनेके लिये और अंधे उपकरणकी तरह काम आनेके लिये तैयार हो, उसे पकड़ लेती हैं। फिर भी प्रत्येक मनुष्य यह विश्वास लिये फिरता है कि ये गतियां उसका अपना अंग और उसके अपने स्वतंत्र व्यक्तित्वकी बहुमूल्य उपज हैं। इतना ही नहीं, ऐसे लोग भी हैं जो इनसे और अपनी अक्षमताओंसे चिपके रहते हैं मानों ये ही उनकी स्वतंत्रताका चिह्न या सार हैं।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधी शक्तियोंके बारेमें

[विरोधी शक्तियोंका आक्रमण रोगके रूपमें; ज्योति और शक्तिके प्रति संदेह, निरुत्साह, अविश्वास आदि रोगके मुख्य कारण; योग-मार्गमें प्रवेश करो तो समस्त भयोंसे मुक्त होना चाहिये ।]

शारीरिक व्याधियां क्या हैं? क्या वे विरोधी शक्तियोंके आक्रमण हैं जो बाहरसे होते हैं?

इस विषयमें दो बातोंपर विचार करना चाहिये। एक वह चीज जो बाहरसे आती है और दूसरी वह जो तुम्हारी आंतरिक अवस्थासे आती है। तुम्हारी आंतरिक अवस्था रोगका कारण तब बनती है जब उसमें कोई प्रतिरोध या विद्रोह हो अथवा जब तुम्हारे अंदर कोई ऐसा भाग हो जो भागवत संरक्षणका प्रत्युत्तर नहीं देता, अथवा उसमें कोई ऐसी चीज भी हो सकती है जो इच्छापूर्वक जान-बूझकर विरोधी शक्तियोंको अंदर बुलाती है। तुम्हारे अंदर इस प्रकारकी कोई मामूली-सी गति हो तो वह भी पर्याप्त है, विरोधी शक्तियां तुरत तुमपर चढ़ आती हैं और उनका आक्रमण बहुधा रोगका रूप धारण करता है।

परंतु, क्या यह ठीक नहीं है कि कभी-कभी रोगजनक कीटाणुओंके कारण ही रोग होते हैं, योग-साधनाके कारण नहीं?

योगका आरंभ कहां होता है और अंत कहां? क्या तुम्हारा सारा जीवन ही योग नहीं है? तुम्हारे शरीरमें और तुम्हारे चारों ओर रोगकी संभावनाएं सदा बनी रहती हैं, तुम्हारे अंदर या तुम्हारे चारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरफ सब प्रकारकी बीमारियोंके कीटाणु या रोग-जन्तु रहते हैं, वे तुम्हारे चारों ओर मंडराते रहते हैं। तुम्हें जो रोग वर्षोंसे नहीं हुआ उसके तुम एकाएक शिकार क्यों हो जाते हो? तुम कहोगे कि इसका कारण प्राणशक्तिका मंद पड़ जाना है। परंतु यह प्राणों-की मंदता कहांसे आती है? यह सत्तामें किसी प्रकारका असामंजस्य होनेसे भागवत शक्तियोंके प्रति ग्रहणशीलताका अभाव होनेसे आती है। जब तुम उस शक्ति और ज्योतिसे जो तुम्हारा धारण-पोषण करती है, अपने-आपको जुदा कर लेते हो तब यह मंदता आती है। तब जिसको वैद्यक-शास्त्र रोगके अनुकूल 'क्षेत्र' कहते हैं वह तैयार हो जाता है और कोई चीज इसका फायदा उठा लेती है। संदेह, निरुत्साह, विश्वासका अभाव, निजी स्वार्थके लिये भगवान्की ओरसे मुंह फेरकर पुनः अपनी ओर पलट आना — ये चीजें हैं जो ज्योति और दिव्य शक्तिसे तुम्हें अलग कर देती हैं और आक्रमणके लिये लाभकर होती हैं। तुम्हारे बीमार पड़नेका असली कारण यही है, न कि रोगके कीटाणु।

परंतु, क्या यह सिद्ध नहीं हो चुका है कि स्वच्छता और सफाई आदिमें सुधार करनेसे औसत नागरिकका स्वास्थ्य सुधरता है?

औषध और सफाई साधारण जीवनके लिये अपरिहार्य हैं, किंतु इस समय मैं औसत नागरिकोंके संबंधमें नहीं कह रही हूं, मैं तो उनके बारेमें कह रही हूं जो योग-साधना करते हैं। फिर भी सफाई आदिसे यह घाटा होता है कि जहां तुम रोगकी पकड़में आनेकी संभावनामें कमी ले आते हो वहां रोगका प्रतिरोध करनेकी अपनी स्वाभाविक शक्तिको भी क्षीण कर देते हो। अस्पतालमें काम करने-वाले, जो सदा अपने हाथ रोगाणुनाशक औषधियोंसे धोते रहते हैं, उनके हाथ औरोंकी अपेक्षा सहजमें संक्रामक जंतुओंके शिकार हो जानेवाले और कहीं अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। इसके विपरीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे लोग हैं जो स्वास्थ्य-विज्ञान आदिके बारेमें कुछ भी नहीं जानते और अत्यंत अस्वास्थ्यकर काम करते हैं, फिर भी संक्रामक रोगोंसे मुक्त रहते हैं। उनका अज्ञान ही उनकी सहायता करता है क्योंकि वह आरोग्यशास्त्र जाननेके कारण आनेवाले विचारोंके लिये दरवाजा बंद रखता है। दूसरी ओर, स्वास्थ्य-संबंधी सावधानीमें तुम्हारा विश्वास इन विचारोंको कार्य करनेमें सहायता पहुंचाता है। कारण, तुम सोचते हो कि अब मैंने रोग-नाशक औषधका प्रयोग कर लिया और मैं सुरक्षित हूं, तो उस हदतक यह विचार तुम्हें सुरक्षित रखता है।

तब हमें स्वास्थ्य-संबंधी सावधानी — जैसे कि छना हुआ पानी पीना — क्यों रखनी चाहिये ?

क्या तुममेंसे कोई भी इतना शुद्ध और बलवान् है जिसपर सुझावोंका असर न होता हो ? यदि तुम बिना छना पानी पीओ और सोचो कि अब मैं अस्वच्छ जल पी रहा हूं तो तुम्हारे बीमार पड़नेकी संभावना बढ़ जाती है। और इस प्रकारके सुझाव सचेतन मनके द्वारा भले न पहुंचें, तुम्हारी समग्र अवचेतना तो है ही जो किसी भी सुझावको ग्रहण करनेके लिये असहाय रूपसे खुली रहती है। जीवनमें अवचेतनाके कार्यका भाग अधिक होता है और सचेतन भागोंकी अपेक्षा अवचेतना सौ गुनी शक्तिके साथ कार्य करती है। साधारण मानव अवस्था भय और आशंकाओंसे भरी होती है। यदि तुम अपने मनको दस मिनटतक गहराईसे देखो तो तुम्हें पता लगेगा कि दसमेंसे नौ विचार भयसे भरे हुए हैं, उसमें छोटे-बड़े, दूर और नजदीकके, देखी हुई और बिना देखी हुई अनेक चीजोंके भय भरे रहते हैं, और, यद्यपि यह बात साधारणतया तुम्हारी सचेतन दृष्टिमें नहीं आती, फिर भी ये भय तुम्हारे अंदर होते अवश्य हैं। समस्त भयसे मुक्ति — अनवरत प्रयास और साधनाद्वारा ही संभव है।

साधना और प्रयासद्वारा यदि तुमने अपने मन और प्राणको आशंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा भयसे मुक्त कर भी लिया तो भी शरीरको मना लेना अधिक कठिन होता है। परंतु यह करना भी जरूरी है। एक बार तुम योग-मार्गमें प्रवेश करो तो तुम्हें समस्त भयोंसे मुक्त हो जाना चाहिये, — अपने मनको भयोंसे, अपने प्राणके भयोंसे, एक-एक कोषाणुमें भरे शरीरके भयोंसे मुक्त होना चाहिये। योग-मार्गमें तुम्हें जो ठोकरें खानी पड़ती हैं और आघात सहने पड़ते हैं उनका एक उपयोग यह भी है कि वे तुम्हें समस्त भयोंसे मुक्त कर दें। भयके कारण उस समयतक तुमपर बारंबार हमला करते रहते हैं जबतक तुम इस योग्य न हो जाओ कि उनके सामने स्वतंत्र, उदासीन, अनासक्त और शुद्ध होकर खड़े रह सको। किसीको समुद्रका भय होता है, कोई आगसे डरता है। हो सकता है कि जो व्यक्ति अग्निसे डरता है उसे एक के-बाद एक अनेकों भीषण अग्नि-काण्डोंका सामना करना पड़े, यहांतक कि वह इतना अभ्यस्त हो जाय कि इस काण्डसे उसके शरीरका एक कोषाणुतक न कांपे। जिस चीजसे तुम्हारे अंदर त्रास पैदा होता हो वह उस समयतक बारंबार आती रहती है जबतक कि त्रास होना बिलकुल बंद न हो जाय। जो रूपांतरित होना चाहता है और जो इस योग-मार्गका साधक है उसे पूरी तरहसे भय-मुक्त होना ही पड़ेगा, उसे ऐसा बनना पड़ेगा कि कोई, किसी प्रकारकी चीज उसे प्रकृतिके किसी भी भागमें छू या हिला न सके।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

बंधनोंका त्याग

[विरोधी अवस्थाएं क्यों आती हैं; आध्यात्मिक जीवनके लिये सुख-आरामका त्याग नहीं, मानसिक नियमों व बंधनोंका त्याग अनिवार्य है।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगसे प्रथम परिचय होते ही विरोधी अवस्थाओंकी एक फौज-सी क्यों पीछे पड़ जाती है? किसीने कहा है कि योग-साधनाका द्वार खोलते ही अनगिनत बाधाएं सामने आ खड़ी होती हैं, क्या यह ठीक है?

यह कोई सार्वभौम नियम नहीं है, बहुत कुछ व्यक्तिपर निर्भर है। बहुतोंके पास विरोधी अवस्थाएं इसलिये आती हैं कि उनकी प्रकृति-के कमजोर स्थानोंकी परीक्षा हो जाय। योग-मार्गपर स्वतंत्रतापूर्वक चल सकनेसे पहले जिस वस्तुकी तुम्हारे अंदर अच्छी तरह स्थापना हो जानी चाहिये, जो योगके लिये अनिवार्य आधार है, वह है समता या समचित्तता। स्वभावतः, इस दृष्टिसे, सभी क्षोभ परीक्षाके लिये होते हैं जिनमें तुम्हें सफल होना ही चाहिये। इसके अतिरिक्त, तुम्हारी मानसिक रचनाओंने जो सीमाएं तुम्हारे चारों ओर बना ली हैं उन्हें तोड़नेके लिये भी इनकी आवश्यकता है, ये सीमाएं दिव्य ज्योति और सत्यके प्रति तुम्हारे उद्घाटनको रोकती हैं। सारा मनोमय जगत्, जिसमें तुम रहते हो, सीमित है, तुम्हें उसकी सीमाओंका ज्ञान या अनुभव भले न हो, और यह आवश्यक है कि कोई चीज आये और इस भवनको, जिसके अंदर तुम्हारे मनने अपने-आपको बन्द कर रखा है, तोड़ डाले और बन्धन-मुक्त कर दे। उदा-हरणार्थ, तुम्हारे कुछ बंधे हुए नियम, विचार या सिद्धान्त होते हैं, जिन्हें तुम सर्वोपरि महत्त्व देते हो। अधिकतर, ये किन्हीं नैतिक सिद्धान्तों अथवा उपदेश-वचनोंके आधारपर होते हैं, जैसे: "अपने माता-पिताका आदर कर" (मातृदेवो भव, पितृदेवो भव) या: "तुझे हिंसा नहीं करनी चाहिये" (अहिंसा परमो धर्मः) इत्यादि। प्रत्येक मनुष्यकी अपनी धुन होती है अथवा वह दूसरोंकी अपेक्षा अपने संप्रदायमें कोई विशेषता मानता है। प्रत्येक मनुष्य समझता है कि दूसरे लोग जिन सांप्रदायिक रूढ़ियोंमें बंधे हुए हैं उनसे वह सर्वथा मुक्त है और वह इस प्रकारके सांप्रदायिक मताग्रहोंको बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिथ्या समझनेके लिये भी तैयार रहता है। परंतु वह सोचता है कि उसका अपना मतवाद दूसरोंकी तरह नहीं है, वह तो बिल्कुल सत्य ही है, वास्तविक सत्य। मनके बनाये हुए किन्हीं नियमोंमें आसक्ति होना इस बातका सूचक है कि अब भी कहींपर अंधापन छिपा हुआ है। उदाहरणके लिये, उस सार्वजनिक अंधविश्वासको ले लो जो समस्त जगत्में फैला हुआ है कि वैरागी-जीवन और योग एक ही है। यदि तुम किसीका योगी अथवा योगिनी कहकर वर्णन करो तो तुरत उस व्यक्तिके बारेमें लोग यही कल्पना करने लगेंगे कि वह कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो खाता नहीं, अथवा सारे दिन एक आसनपर बिना हिले-डुले बैठा रहता है, किसी कुटियामें अत्यंत दरिद्रतापूर्वक रहता है, जिसने अपना सब कुछ दे दिया है और अपने लिये कुछ भी नहीं रखता। जब किसी आध्यात्मिक मनुष्यके संबंधमें किसीसे कुछ कहा जाता है तो सौमें निन्यानवे आदमियोंके मनमें उस व्यक्तिके संबंधमें इसी प्रकारका चित्र खिंच जाता है, इनके लिये आध्यात्मिकताका एकमात्र सबूत है दरिद्रता तथा सुखद या आरामदेह चीजोंसे परहेज। यह एक मानसिक रचना है और यदि तुम आध्यात्मिक सत्यका साक्षात्कार और अनुसरण करनेके लिये स्वतंत्र होना चाहते हो तो इसे नष्ट करना होगा। कारण, आध्यात्मिक जीवनमें तुम सच्ची अभीप्साके साथ प्रवेश करते हो और चाहते हो कि तुम अपनी चेतना और जीवनमें भगवान्से भेंट करो तथा उनका साक्षात्कार करो; तब तुम एक ऐसे स्थानपर जा पहुंचते हो जिसे किसी तरह भी कुटिया नहीं कहा जा सकता और वहां तुम्हारी एक ऐसे भागवत पुरुषसे भेंट होती है जो सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं, सब कुछ खाते हैं, उनके चारों ओर सुन्दर या अमीरी चीजोंका ठाठ है, जो कुछ उनके पास है उसे वे गरीबोंको बांट नहीं देते, बल्कि लोग जो भेंट चढ़ाते हैं उसे स्वीकार करते और उसका उपभोग करते हैं। यह देखकर तुम अपने बंधे हुए मानसिक नियमके अनुसार तुरत घबड़ा जाते और चिल्ला उठते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो: "क्यों, यह सब क्या है? मैंने तो सोचा था कि मेरी किसी योगीसे भेंट होगी!" इस मिथ्या धारणाको तोड़कर गायब कर देना चाहिये। यह धारणा चली जाय तो तुम्हें कुछ ऐसी चीज प्राप्त होगी जो तुम्हारे वैराग्यके संकीर्ण सिद्धांतसे बहुत श्रेष्ठ है, तुम्हारा पूर्ण आत्मोद्घाटन हो सकेगा जिसके फलस्वरूप तुम्हारी सत्ता मुक्त रहेगी। यदि कोई चीज प्राप्त होती हो तो उसे स्वीकार करो और यदि उसी चीजको छोड़ देना हो तो उसी तत्परताके साथ छोड़ दो। अगर चीजें आयें तो उन्हें स्वीकार करो और अगर चली जायं तो जाने दो, और लेते और छोड़ते समय समताकी वही मुस्कान बनी रहे।

या फिर, मान लो कि तुमने "तुझे हिंसा नहीं करनी चाहिये" (अहिंसा परमो धर्मः) को अपना सुनहरा नियम स्वीकार कर लिया है और क्रूरता तथा हत्यासे कांप उठते हो, आश्चर्य मत करो यदि तुम अपने-आपको तुरत ही हत्याके सम्मुख पाओ और वह भी एक बार नहीं, बार-बार, उस समयतक, जबतक कि तुम यह न समझ जाओ कि तुम्हारा आदर्श केवल मानसिक सिद्धांत है, और कुछ नहीं, और यह कि आध्यात्मिक सत्यके जिज्ञासुको किसी भी मानसिक नियममें आसक्त या बंधा हुआ न रहना चाहिये। और एक बार इस आसक्ति या बंधनसे मुक्त होनेपर संभवतः, तुम देखोगे कि ये हिंसामय दृश्य जो तुम्हें दुःख देते थे — और वास्तवमें तुम्हें दुःख देकर मनोनिर्मित भवनसे निकालनेके लिये ही भेजे गये थे — अब तुम्हारे सामने नहीं आते, ये आश्चर्यजनक रीतिसे बंद हो गये हैं।

जब तुम भगवान्के पास जाते हो तो तुम्हें समस्त मानसिक धारणाओंको त्याग देना चाहिये, किंतु इसके बदले तुम अपनी धारणाओंको भगवान्पर लादना चाहते हो और चाहते हो कि वे उनका अनुसरण करें। योगीके लिये सच्चा भाव तो केवल यही है कि वह नमनशील हो और भगवान्की ओरसे जो भी आदेश मिले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका पालन करनेके लिये तैयार रहे; उसके लिये कुछ भी अनिवार्य न हो और कोई चीज भार लगे। जो लोग आध्यात्मिक जीवन बिताना चाहते हैं उनका पहला आवेश यही होता है कि उनके पास जो कुछ हो उसे फेंक दें, किन्तु अपना सब कुछ भगवान्‌के अर्पण करनेके लिये नहीं, एक बोझसे छुटकारा पा जानेके लिये। जिनके पास धन है तथा जिनके इर्द-गिर्द अमीरी और भोगकी सामग्रियां हैं, वे जब भगवान्‌की ओर मुड़ते हैं तो तुरत उनकी प्रवृत्ति इन सब चीजोंसे दूर भागनेकी ओर होती है, अथवा, जैसा कि वे कहते हैं, इनके बंधनसे बच निकलनेकी ओर होती है। परन्तु यह गलत प्रवृत्ति है, तुम्हें यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि जो चीजें तुम्हारे पास हैं वे तुम्हारी हैं — वे तो भगवान्‌की हैं। यदि भगवान् चाहते हैं कि तुम किसी चीजका भोग करो तो भोग कर लो, किन्तु दूसरे ही क्षण यदि उसे छोड़ना पड़े तो उसके लिये भी प्रसन्न चित्तसे तैयार रहो।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

यादें

हमें यादोंसे इतना स्नेह होता है क्योंकि वे वैश्वकी चीजें हैं। उनके अंदर अनंतताके रसका कुछ अंश होता है।

जिसे दैनिक घटनाओंमें बाहरी अहंकारपूर्ण और सीमित संवेदनशीलताके द्वारा देखा गया है — उस संवेदनशीलताद्वारा जो कष्ट पाती और खुश होती है — वह भ्रांतिके बादलोंकी तरह गायब हो जाता है। लेकिन उस अज्ञान-भरे बोधके पीछे — प्रायः उससे ढका हुआ — एक और बोध होता है, वास्तविक अंतरात्माका बोध जो सभी चीजोंके द्वारा उनकी वैश्व अंतरात्माके साथ नाता जोड़ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और सभीके अंदर उसके पूर्ण आनंदका अनुभव करता है।

ये बोध हमारी सत्ताकी गहराइयोंमें यादोंके रूपमें रखे रहते हैं और जब उनमेंसे कोई स्मृतिमें उभरती है तो वह भागवत परमानंदका सुनहरा चोला पहनकर आती है।

जिसे हम पहले अपने अज्ञानमय बोधमें कष्ट और पीड़ा कहते थे वही सज-धजकर, रूपांतरित और महिमान्वित होकर, भव्यताके उसी वेशसे अलंकृत होकर फिरसे आती है जिसे हम सुख और चैन कहते हैं। वास्तवमें कभी-कभी पिछली यादोंकी भव्यता, बादकी भव्यतासे कहीं अधिक तीव्र और विस्तृत होती है। उनसे जो हर्ष मिलता है वह कहीं अधिक गहरा और शुद्ध होता है।

इस तरह, थोड़ा-थोड़ा करके हम चीजोंकी वास्तविकता और अपनी अंधी इंद्रियोंकी दी हुई झूठी व्याख्यामें फर्क करना सीखते हैं।

इसीलिये यादें ऐसी मूल्यवान शिक्षिकाएं होती हैं। इसीलिये यादें हमें इतनी प्रिय होती हैं। उनके द्वारा हम शाश्वतके संपर्कमें आते हैं।

(श्रीमातृवाणी खंड २, पहलेकी बातें)

माताजी और भारत

माताजीका जन्म फ्रांसमें हुआ था पर वे प्रायः कहा करती थीं कि मैं यूरोपीय नहीं हूं। उनमें मिस्र और तुर्की उच्च घरानोंका रक्त था। फ्रांसमें रहते हुए उन्होंने भारतके बारेमें बहुत कुछ पढ़ा-सुना था। वहां रहते हुए उन्होंने गीता और कई उपनिषद् पढ़े तथा उनका फ्रेंचमें अनुवाद भी किया। उन्हें स्वप्नोंमें बहुत बार भारतीय महापुरुषोंका साक्षात्कार मिला करता था जो उन्हें भूत भविष्य और वर्तमानके बहुतसे रहस्य बताया करते थे। वे उनमेंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकको 'कृष्ण'के नामसे पहचानती थीं। १९१४ में जब वे भारत आयीं तो उन्हें पता चला कि ये 'कृष्ण' और कोई नहीं, श्रीअरविंद थे। श्रीअरविंद जो काम भारतमें बैठकर कर रहे थे वही काम माताजी फ्रांसमें कर रही थीं।

माताजीका कहना है कि फ्रांस ही यूरोपको भारतका संदेश पहुंचानेमें समर्थ होगा। एक बार इस सिलसिलेमें एक संदेश देते हुए माताजीने कहा था :

"किसी भी देशके बच्चोंको जो सबसे अच्छी शिक्षा दी जा सकती है वह यह है : उन्हें यह दिखाया जाय कि उनके देशका सच्चा स्वरूप और निजी विशेषताएं क्या हैं, जगत्में उनके राष्ट्रको कौन-सा कर्तव्य पूरा करना है और पार्थिव सामंजस्यमें उसका सच्चा स्थान क्या है, उसमें दूसरे राष्ट्रोंकी भूमिकाका विस्तृत ज्ञान भी जोड़ देना चाहिये, लेकिन उसमें न तो नकलका भाव होना चाहिये और न ही अपने देशकी प्रतिभाको आंखोंसे ओझल होने देना चाहिये।"

उदाहरणके लिये, माताजी बतलाती हैं :

"फ्रांसका मतलब है भावनाकी उदारता, विचारोंकी नूतनता और निर्भीकता और क्रियामें शौर्य। इन विशेषताओंवाला फ्रांस ही सबके आदर-सम्मान और प्रशंसाका पात्र था, इन्हीं गुणोंसे वह जगत्पर छाया हुआ था।

"व्यावहारिकतामें फंसा, मतलबी और व्यापारिक फ्रांस फ्रांस नहीं रहा। ऐसी चीजें उसके सच्चे स्वरूपके साथ मेल नहीं खातीं और इन बातोंके कारण वह संसारमें अपनी भव्य प्रतिष्ठाकी स्थिति खो रहा है।"

यूं तो समस्त विश्व माताजीका था और माताजी सबकी थीं, फिर भी यह कहा जा सकता है कि माताजीको भारतवर्ष बहुत प्रिय था। उनके लिये एक देशसे प्रेम होनेका अर्थ दूसरेसे घृणा न था। १९५४ में उन्होंने चाहा था कि भारतीय नागरिकता ले लें। इस सिलसिलेमें उनकी घोषणाके वचन सुनिये :

"१९१४ से ही, जब मैं पहली बार भारत आयी मैंने अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था कि ज्यों ही भारत स्वाधीन होगा मैं अपनी अभिलाषा पूर्ण कर लूंगी। लेकिन मुझे उसके बाद भी यहां, पांडिचेरीके आश्रमके प्रति अपने भारी उत्तरदायित्वके कारण बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ी। अब समय आ गया है, मैं अपने विषयमें यह घोषणा कर सकती हूं।

"लेकिन श्रीअरविंदके आदर्शके अनुसार मेरा ध्येय यह दिखाना है कि सत्य एकत्व में है, विभाजनमें नहीं। एक राष्ट्रीयता पानेके लिये दूसरीको छोड़ना कोई आदर्श समाधान नहीं है। मैं आशा करती हूं कि मुझे दोहरी राष्ट्रीयता अपनानेकी छूट रहेगी, यानी मैं भारतीय हो जानेपर भी फ्रेंच बनी रहूंगी।

"जन्म और प्रारंभिक शिक्षासे मैं फ्रेंच हूं, अपनी इच्छा और रुचि से भारतीय हूं। मेरी चेतनामें इन दोनों बातोंमें कोई विरोध नहीं है, इसके विपरीत, वे एक-दूसरेसे भली-भांति मेल खाती हैं और एक-दूसरेकी पूरक हैं। मैं यह भी जानती हूं कि मैं दोनों देशोंकी समान रूपसे सेवा कर सकती हूं। मेरे जीवनका एकमात्र ध्येय है श्रीअरविंदकी शिक्षाको मूर्त्त रूप देना और उन्होंने अपनी शिक्षामें यह प्रकट किया है कि सभी राष्ट्र वास्तवमें एक हैं और उनका काम है सामंजस्यपूर्ण विविधतामें एकताको प्रकट करना।"

देशने अभी इतनी प्रगति न की थी कि इस क्रांतिकारी सुझाव को स्वीकार कर पाता।

भारतके स्वाधीन होनेसे पहले माताजी कहा करती थीं : "भारतके स्वाधीन होनेकी कोई समस्या नहीं है। वह स्वाधीन तो होगा ही। मुझे चिन्ता इस बातकी है कि स्वाधीन होनेके बाद भारतीय क्या करेंगे, क्या वे इस अनुपम भेंटके योग्य सिद्ध हो सकेंगे? कहीं वे निचली वृत्तियोंके शिकार होकर इस फलको बिगाड़ न दें। दुःखकी बात यह है कि भारतमें किसीका ख्याल इस ओर नहीं जा रहा।"

हुआ भी यही, हमारी अक्षमता और अदूरदर्शिताके कारण देश के टुकड़े हो गये, इतनी मारकाट हुई और इतना खून बहा। हम उसके परिणामोंसे अभीतक मुक्त नहीं हो पाये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीने आश्रममें बहुत ही कम नियम बनाये थे। उनमेंसे एक यह है कि आश्रममें सिगरेट, शराब, सेक्स और राजनीति मना है। राजनीतिके बारेमें माताजी कहती हैं:

"श्रीअरविंद राजनीतिसे अलग हो गये थे और उनके आश्रमके महत्त्वपूर्ण नियमोंमेंसे एक यह है कि सब प्रकारकी राजनीतिसे अलग रहा जाय। यह बात नहीं है कि श्रीअरविंदको संसारकी गतिविधि-में रस नहीं था, बल्कि इसलिये कि आजकलकी राजनीति बहुत ही निम्नकोटिकी और भद्दी चीज है जो पूरी मिथ्यात्व, चालाकी, अन्याय, शक्तिके दुरुपयोग आदिसे भरी है। राजनीतिमें भाग लेने-वालोंके लिये कपट, धोखेबाजी और बेतहाशा महत्त्वाकांक्षा पैदा करने-की जरूरत है।

"हमारे योगका आधार है सचाई, ईमानदारी, अहंकारका निषेध, भागवत कार्यके लिये निःस्वार्थ आत्मदान, चरित्रकी उदात्तता और ऋजुता। जो लोग इन आधारभूत चीजोंको अपने जीवनमें नहीं उतारते वे श्रीअरविंदके शिष्य नहीं हैं और इस आश्रममें उनके लिये स्थान नहीं है।

"श्रीअरविंद हमेशा अपनी मातृभूमिसे प्रगाढ़ प्रेम रखते थे, लेकिन वे चाहते थे कि वह महान्, उदात्त और पवित्र हो, संसारमें अपने महान् लक्ष्यके अनुरूप हो। उन्हें यह स्वीकार न था कि वह गंदे, अधम, अपरिष्कृत, अंधे, स्वार्थपूर्ण और अज्ञानभरे पूर्वाग्रहोंपर उतरे। हम उनकी इच्छाके साथ चलते हुए सत्य प्रगति और मानव रूपांतर-की ध्वजा ऊंची उठाते हैं। उन सबकी परवाह किये बिना जो उस अज्ञान, मूढ़ता, ईर्ष्या और दुर्भावनाके कारण गंदा या नीचा करना चाहते हैं — उसे ऊंचे-से-ऊंचा फहराते हैं ताकि जिन्हें उससे प्रेम हो वे उसे देख सकें और उसके चारों ओर इकट्ठे हो सकें।"

जिस दिन भारत स्वाधीन हुआ उस दिन माताजीने इन शब्दोंमें भारतमाताका आवाहन किया था:

"हे हमारी मां, भारतकी आत्मशक्ति! हे जननी, तूने कभी, अत्यंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसादपूर्ण अंधकारपूर्ण दिनोंमें भी, यहांतक कि जब तेरे बच्चों तेरी वाणी अनसुनी कर दी, अन्य प्रभुओंकी सेवा की और तु अस्वीकार कर दिया, तब भी तूने उनका साथ नहीं छोड़ा। मां! आज इस महान् घड़ीमें, जब कि वे जग पड़े हैं और ते स्वतंत्रताके इस उषःकालमें तेरे मुख-मण्डलपर ज्योति पड़ रही है हम तुझे नमस्कार करते हैं। हमें पथ दिखा ताकि स्वतंत्रताका जो विशाल क्षितिज हमारे सामने खुला है वह तेरी सच्ची महानताका तथा विश्वके राष्ट्र-समाजके अंदर तेरे सच्चे जीवनका भी क्षितिज बन सके। हमें पथ दिखा ताकि हम सर्वदा महान् आदर्शोंके पक्षमें ही खड़े हों और अध्यात्म मार्गके नेता तथा सभी जातियोंके मित्र और सहायकके रूपमें तेरा सच्चा रूप मनुष्यजातिको दिखा सकें।"

१९६९ में माताजीने अपने संदेशमें कहा था :

"भारतको भविष्यके लिये कार्य करना चाहिये और राह दिखानी चाहिये। इस तरह वह जगत्में अपना सच्चा स्थान पा लेगा।

"फिरसे एक लंबे अरसेसे विभाजन और भेदके द्वारा शासन करनेकी प्रथा चली आ रही है। समय आ गया जब एकता, पारस्परिक समझौते और सहयोगके द्वारा शासन किया जाय।

"सहयोगी चुननेके लिये मनुष्यका मूल्य अधिक है, इस बातका नहीं कि वह किस दलका है; किसी राष्ट्रकी महानता किसी दलकी जीत-हारपर नहीं, सभी दलोंकी एकतापर निर्भर है।"

माताजी भारतको एक, अखंड और अविभाज्य मानती हैं। जब तक यह सत्य भौतिक रूपसे अभिव्यक्त न हो तबतक माताजीके शब्दोंमें हमारी एक ही रट होनी चाहिये :

"Let the soul of India live forever."

("भारतकी आत्मा चिरंजीवी हो।")

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ आत्माके बारेमें

श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी-६०५००२

श्री अभयकुमार जी,

आपके मित्र श्री दिलीप कुमार भट्टाचार्यकी १४-७-१९७८ की चिट्ठी मिली। आपका पहला प्रश्न है: विश्वके सभी धर्मग्रंथोंका यह कहना है कि आत्मा अमर है, केवल शरीरका नाश होता है। आत्मा अगर अमर है तो जन्म ही नहीं लेती होगी?

हां, एक ढंगसे देखें तो हम कह सकते है कि आत्माका न जन्म होता है, न मरण। लेकिन फिर प्रश्न यह उठता है कि जो ऋषि, मुनि, योगी देखते आए हैं, अनुभव करते आये हैं, वह क्या है? क्योंकि जब लाखों वर्षोंसे, असंख्य व्यक्ति एक-सी घोषणा करते हैं तो उसमें जरूर कोई तथ्य होगा। कहा जाता है कि एक बार भगवान्ने सोचा, "एकोऽस्मि बहु स्याम्" और सृष्टिका आरंभ हुआ। और हर मनुष्यमें भगवान्की एक छोटी-सी चिनगारी जा बैठी। मनुष्यका असली रूप वही है और वह भी भगवान्की तरह अमर है। जिस तरह हम एक कमरेमेंसे दूसरेमें जाते हैं, उसी तरह आत्मा एक शरीरमेंसे दूसरेमें प्रवेश करती है। साधारणतः, मनुष्यके शरीरका जन्म और मरण होता है, आत्माका नहीं। वह शरीरका उसी तरह उपयोग करता है जैसे हम किसी यंत्र या औजारका। आत्मा शरीरके द्वारा जगत्के बहुविध खेलमें भाग लेती है, वैष्णव धर्मके अनुयायी इसे भगवान्की लीला कहते हैं। आप शायद पूछें, "लीला क्यों?" आचार्योंका मत है कि मात्र आनन्दके लिये, अपने विस्तारके लिये, अपनी अभिव्यक्तिके लिये बालक जिस प्रकार अकारण खेलता है, मुस्कुराता है उसी तरह भगवान् अकारण अपनी असंख्य सत्ताओंके साथ खेलते हैं। श्रीअरविन्दने लिखा है: "भगवान् क्या हैं? एक शाश्वत वाटिकामें शाश्वत खेल खेलते हुए एक शाश्वत बालक"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका दूसरा प्रश्न है : जन-संख्या बढ़ क्यों रही है ? खासकर मान संख्या बढ़ रही है, अगर यह कहा जाय कि दूसरी योनियोंके प्रा मरकर मनुष्यका जन्म ले रहे हैं, तो यह कलियुग है, अता अधिकतर प्राणी उच्च योनिकी अपेक्षा निम्न योनिमें ही जा सकते हैं

श्रीअरविन्दका कहना है कि एक बार मानव शरीर धारण करने बाद हम पशु-पक्षीकी योनिमें नहीं लौटते। मुझे मालूम है कि शास्त्रोंमें ऐसा कहा गया है, किन्तु मैं सोचती हूं कि उनका मतल शरीरसे नहीं, चेतनासे होगा। अगर हम आजकलके कई लोगों तुलना पुराने जमानेके लोगोंसे करें तो देखेंगे कि वास्तवमें कुछ लो पशुओंके अधिक समीप हैं। उस अर्थमें कलियुगमें मनुष्यका पत अवश्य होता होगा।

रामायण-महाभारत ही नहीं, पचास वर्ष पहले भी मनुष्य अधिक सदाचारी, आदर्शवादी था। खैर, यह तो आप ज्यादा देख सकते होंगे। सचमुच आत्मा एक ही है। उसीमेंसे आगकी भांति अनेका नेक चिनगारियां निकलती रहती हैं। उनमेंसे कुछ अपना अलहद व्यक्तित्व बना लेती हैं और कुछ फिरसे मूल राशिमें जा मिलती हैं। जन-संख्याके बढ़ने-घटनेसे आत्माओंकी मूल संख्यामें — एकमे — कोई फर्क नहीं आता।

भवदीया

अनुबेन (कृते संपादक अग्निशिखा)

सोसायटी समाचार

श्रीअरविंद सोसायटीके सहसचिव श्री गोपाल भट्टाचार्य अक्तूबर नवम्बरमें माताजीकी जन्म-शताब्दीके सिलसिलेमें **दक्षिण-पूर्व एशिया** के **बारह देशोंमें** गये थे। वहां उन्होंने नये-पुराने बहुत-से लोगोंके सा संपर्क किया, उन्हें माताजी तथा श्रीअरविंदके बारेमें बतलाया। न लोगोंको सोसायटीका परिचय दिया और कुछ नये केंद्र खोले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donated by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

26th JANUARY

A Sacred Anniversary—Thrice Blessed.

This Day, 49 years ago,
we proclaimed our resolve to
achieve Purna Swaraj.

—This day, in 1950, we proclaimed ourselves a Republic and gave ourselves a Constitution enshrining the ideals of Justice, Liberty, Equality and Fraternity.

—Around this day, two years ago, we began our journey back to the democratic processes guaranteed by the Constitution.

—To mark the Anniversary—

Let us give thanks for the restoration of our liberties

Let us strive to fulfil the dreams of those who gave their lives in the cause of freedom and equality.

Let us rededicate ourselves to the early achievment of social, economic and political justice.

davp-78/394

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा-केंद्रके संस्कृतके प्राध्यापक श्री जगन्नाथ वेदालंकारने **मुजफ्फरनगरमें** श्रीअरविंदके 'सिद्धि दिवस'के समारोहमें भाग लिया।

गुजरातमें जंत्राल नामक स्थानपर तीन दिनका शिविर हुआ। श्री राजेन्द्र पुराणीने पूर्णयोगके बारेमें और श्री वसन्त भाई पारीखने नेत्रसुधारके कार्यक्रम रखे। श्री गिजूभाई त्रिवेदीकी अध्यक्षतामें 'बाल मन्दिर'का शिलान्यास हुआ।

बड़ौदामें प्रा० अश्विन भाई घापड़ियाने नवंबरमें 'सावित्री' पर सात सार्वजनिक भाषण दिये। दिसम्बरमें भी कई विद्वानोंके भाषण हुए। **इन्दौरमें** हमारे केंद्रने भाषण, संगीत, भजन आदिका एक सप्ताह मनाया।

मद्रासमें दिसंबरमें आश्रमकी फिल्म और स्लाइड दिखायी गयी।

कर्णाटकके गौरी बदनूरमें, १९६९ में श्रीअरविंद केंद्रकी स्थापना हुई थी। १९७८ में वहां एक मातृमन्दिर बनकर तैयार हो गया जिसमें सवेरे संगीत-शिक्षा होती है, दिनमें नर्सरी स्कूल चलता है और शामको माताजी और श्रीअरविंदकी पुस्तकें पढ़नेके लिये एक वाचनालय रहता है। हर बुधवारको सदस्योंका सम्मेलन होता है और हर वर्ष केंद्रकी ओरसे स्थानीय कालिजमें "श्रीअरविंद दर्शन" नामसे एक प्रदर्शनी होती है। लोग इसके आस-पासके इलाकेको श्रीअरविंद नगर कहने लगे हैं।

'लक्ष्मी हाऊस'में **कलकत्ताके** श्रीअरविंद संस्कृति-केंद्रकी ओरसे कई विद्वानोंके भाषण हुए। केंद्रकी ओरसे संस्कृत, फ्रेंच और अंगरेजीकी कक्षाएं होती हैं; संगीत, व्यायाम आदिकी भी शिक्षा दी जाती है।

माताजीकी शताब्दीके सिलसिलेमें राष्ट्रीय समितिने अनेक स्थानों-पर संस्कृत वर्कशापकी व्यवस्था की।

भारतीय संस्कृतिपर व्याख्यानमाला

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं भारतके शिक्षा मंत्रालयके संस्कृति विभागकी ओरसे श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरीके तत्त्वावधानमें २२ नवम्बरसे १६ दिसंबरतक भारतीय संस्कृति और ललित कलाओंके बारेमें एक विशेष कार्यक्रम हुआ जिसमें सारे भारतसे आये हुए लग-भग ६० अध्यापकोंने भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 873

इस कार्यक्रमके उद्घाटनके समय श्रीअरविंदका यह संदेश पढ़कर सुनाया गया :

"समय आ गया है जब भारत अपने प्रकाशको अपनेतक ही सीमित नहीं रख सकता। उसे यह प्रकाश संसारपर उंडेलना होगा, मानव-जातिको योगका परिचय देना होगा, उसके बिना मनुष्य विकासके अगले चरणतक नहीं पहुंच सकता।"

इसके बाद माताजीका ध्वन्यांकित संदेश सुनाया गया :

"हे भारत ! प्रकाश और आध्यात्मिक ज्ञानके देश ! जगत्में अपने सच्चे लक्ष्यके प्रति जागो, एकता और सामंजस्यका मार्ग दिखाओ।"

इसके बाद पांडिचेरी प्रशासनके और आश्रमके कुछ लोगोंके भाषण हुए।

श्री ग्रोवर ने कार्यक्रमका परिचय देते हुए कहा कि आज हमारे विद्यार्थियोंको यह अवसर नहीं मिलता कि वे जीवनकी सांस्कृतिक भूमिका और उसके सच्चे अर्थोंको जान सकें। हमारे इस कार्यक्रमका उद्देश्य है इसमें भाग लेनेवालोंको यह बतलाना कि भारतीय संस्कृतिकी भूमिका क्या है, उनमें ललित कलाओंके लिये रस उत्पन्न करना और उन्हें इसकी क्षमता देना कि वे अपने विद्यार्थियोंमें भारतीय संस्कृति और ललित कलाओंको समझने और उनमें रस लेने लायक बना सकें।

इस कार्यक्रममें भारतीय दर्शन, धर्म और आध्यात्मिकता, सौंदर्य-शास्त्र, वास्तुकला, स्थपत्य, चित्रकला, साहित्य, नृत्य, संगीत आदि विषयमें भाषण हुए। साथमें फिल्में और स्लाइड भी दिखायी गयीं, नृत्य और संगीतके कार्यक्रम भी हुए।

इसके अतिरिक्त महाबलिपुरम्, मद्रासके कलाक्षेत्र और संग्रहालय आदि भी दिखायी गये। और अंतिम दिनोंमें प्रशिक्षार्थियोंको अपने हाथोंसे कुछ काम करनेका अवसर दिया गया। इस कार्यक्रममें सर्वश्री शिवराम मूर्ति, कुमारी प्रेमलता पुरी, प्रभाकर माचवे, नागस्वामी, श्यामस्वरूप, मनोज दास, अरविन्द वसु आदि ने भाग लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

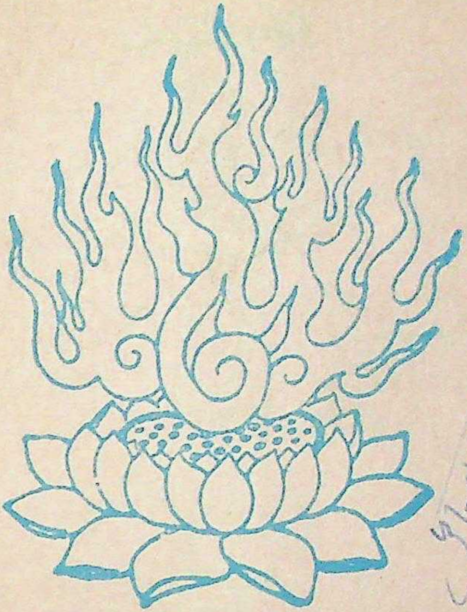

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

मार्च १९७१ वर्ष ९, अंक ८, पूर्णांक १०४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संपादकीय : आश्रमपर हमला
मातजीके वचन :
प्रकृतिका लक्ष्य : अतिमानव
सूक्ष्म शरीर
स्थूल शरीर
सबसे बड़ी कठिनाई
निःस्वार्थ कार्य
प्राणलोक और धन
श्रीरामकृष्णके वचन आ०

हमारा नवीनतम प्रकाशन
श्वेत कमल — माताजीके चरणोंमें
मू० सजिल्द २५.०० अजिल्द २०.००

	पुरोधा	अग्निशिखा
आजीवन सदस्यता :	१५०.००	१००.००
वार्षिक चंदा :	८.००	६.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

A declaration

Some people looking at things superficially, might ask how is it that the Ashram exists in this town for so many years and is not liked by the population?

The first and immediate answer is that all those in this population who are of a higher standard in culture, intelligence, good will and education not only have welcomed the Ashram but have expressed their sympathy, admiration and good-feeling. Sri Aurobindo Ashram has in Pondicherry many sincere and faithful followers and friends.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

This said, Our position is clear.

We do not fight against any creed, any religion.

We do not fight against any form of government.

We do not fight against any social class.

We do not fight against any nation or civilisation.

We are fighting division, unconsciousness, ignorance, inertia and falsehood.

We are endeavouring to establish upon earth union, knowledge, consciousness, Truth, and we fight whatever opposes the advent

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

आश्रमपर हमला

श्रीअरविंदाश्रममें बहुत ही कम नियम हैं, हर एकको अधिक-से-अधिक स्वाधीनता दी जाती है, फिर भी एक महत्त्वपूर्ण नियम यह है कि आश्रमवासी राजनीतिमें भाग नहीं ले सकते। देशमें राजनीतिक हवाएं बदलती रहती हैं, पर आश्रमके दैनिक जीवनपर उनका कोई विशेष असर नहीं पड़ता। आश्रमका संबंध सभीके साथ अच्छा रहता है।

इस बार जनवरीमें पांडिचेरीको तामिलनाडुके साथ मिलानेकी बात चली तो सारी पांडिचेरी इसके विरोधमें उठ खड़ी हुई। आश्रमने, अपनी परिपाटीके अनुसार, इस आंदोलनमें कोई सक्रिय भाग नहीं लिया। आश्रमके साथ संबंध रखनेवाले सभी जानते हैं कि माताजी प्रदेशोंके पुनर्गठन या सरकारी भाषाके बारेमें किसी प्रकारकी जबरदस्ती पसंद नहीं करती थीं, फिर भी, कुछ लोगोंने इस आंदोलनका बहाना बनाकर आश्रमपर आक्रमण किया। १९६५ के हिन्दी-विरोधी आंदोलनके समय भी ऐसा ही हुआ था।

आश्रमके बहुत-से मकानोंपर पथराव हुआ, कहीं कारखानोंमें आग लगायी गयी, गौओंको पीटा गया, सुन्दर झाड़फानूस और मूर्तियोंको तोड़कर चकनाचूर कर दिया गया। आश्रमवालोंने इस सबके बावजूद अपने-आपको अनुशासनमें शांत रखा। हां, असुविधा तो बहुत हुई।

स्वभावतः, हमारे मित्रोंके मनमें यह प्रश्न उठता है कि पांडिचेरीमें आश्रमका इतना विरोध क्यों है? १९६५ में जब आक्रमण हुआ था तब माताजीसे यही प्रश्न किया गया था। उस समय दिया गया उनका उत्तर आज भी उतना ही सत्य है। हम अपनी ओरसे कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कहकर माताजीका उत्तर उन्हींकी हस्तलिपिमें छाप रहे हैं। ... का अनुवाद यूं है:

"जो लोग चीजोंको ऊपरी दृष्टिसे ही देखते हैं वे पूछ सकते कि आश्रम इस नगरमें इतने वर्षोंसे चला आ रहा है, फिर भी ... के लोगोंको पसंद क्यों नहीं?

इसका पहला उत्तर यह दिया जा सकता है कि इस नगरमें ... सांस्कृतिक दृष्टिसे, बुद्धि, शिक्षा और सद्भावकी दृष्टिसे ऊंचे स्तर... लोग हैं उन्होंने न केवल आश्रमका स्वागत किया है, बल्कि वे उस... साथ सहानुभूति रखते हैं और उसके लिये प्रशंसा और सद्भाव ... व्यक्त करते हैं। पांडिचेरीमें श्रीअरविंदाश्रमके बहुत-से सच्चे औ... वफादार मित्र और अनुयायी हैं।

हमारी स्थिति स्पष्ट है।

हमारा किसी मत या धर्मसे कोई झगड़ा नहीं है।

हमारा सरकारके किसी रूपसे झगड़ा नहीं है।

हम किसी सामाजिक वर्गसे नहीं झगड़ते।

हम किसी राष्ट्र या संस्कृतिके विरुद्ध नहीं लड़ रहे।

हम लड़ रहे हैं विभाजन, अचेतना, अविद्या, तमस् और असत्... विरुद्ध।

हम धरतीपर ऐक्य, ज्ञान, चेतना और सत्यकी स्थापना कर... चाहते हैं और जो कुछ ज्योति, शांति, सत्य और प्रेमकी इस नवी... सृष्टिके आगमनका विरोध करता है हम उसके विरुद्ध लड़ते हैं।"

इस अवसरपर माताजीने आश्रमवासियोंको निम्नलिखित संदे... दिया:

"हृदयमें भगवान्‌की उपस्थिति रहनेपर ही सच्चा बल और संरक्ष... प्राप्त होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि तुम अपने अंदर निरंतर यह उपस्थिति बनाये रखना चाहते हो तो सावधानीके साथ अपनी वाणी, व्यवहार और कार्यमें सब प्रकारकी अशिष्टतासे दूर रहो। स्वतंत्रताका अर्थ उच्छृंखलता और स्वाधीनताका अर्थ असभ्य व्यवहार समझनेकी भूल मत करो। तुम्हारे विचार शुद्ध और तुम्हारी अभीप्सा तीव्र होनी चाहिये।"

(२६-२-६५)

हमारा ख्याल है कि इसके बाद और कुछ कहनेकी जरूरत नहीं।

माताजीके वचन :

प्रकृतिका लक्ष्य : अतिमानव

इसी प्रकार जातियों, समुदायों और व्यक्तियोंके जीवनके प्रगतिशील रूप एक-दूसरेके पीछे मानव चक्रकी तरह चलते रहते हैं, मानवजातिके पथ-प्रदर्शक उन्हें निरंतर प्रेरणा देते, उर्वर बनाते और नया करते रहते हैं। और इन सभी रूपोंका एक ही लक्ष्य होता है, प्रकृतिका महिमामय, रहस्यमय लक्ष्य।

यह कौन-सा लक्ष्य है? प्रकृति भविष्यकी किस अप्रत्याशित उपलब्धिकी ओर संधान कर रही है? वह अपने अंधेरे आरंभसे ही किसकी खोजमें है?

हर नया रूप जिसे वह रचती है उसका नया समर्थन और नयी स्वीकृति है जो उसके द्वारा, उसमेंसे उत्पन्न होगा जिसे व्यक्त करना उसका उद्देश्य है।

हर जाति, दूसरोंको तैयार करती हुई, उन्हें संभव बनाती हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकृतिके अनथक अध्यवसायकी साक्षी है, उसकी गंभीर प्रति प्रमाण है। हर एकमें जरा ज्यादा रूपांतरित द्रव्य है जो भावी उषाओंकी घोषणा करती है। उसे अनगिनत चक्रोंमेंसे हुए, मानवाकार, आदिम मानवकी अंतिम गुहातक पहुंचनेमें पथोंका अनुसरण करना पड़ा है।

इसीके सामने आत्माके सौधतक ले जानेवाले राजपथ खुले लेकिन इसे खोजे बिना कितनी जातियां, कितनी पीढ़ियां जायेंगी, प्रकृति मनुष्यके चरण-चिह्नोंपर चलते हुए कितने रास्ते अपनायेगी ! क्योंकि अपने-आपको विश्वकी श्रेष्ठतम माननेवाला मनुष्य यह नहीं जानता कि उसे एक और स्थिति गुजरना है।

क्या मनुष्यके अस्तित्वसे पहले, मनुष्यके निकटतम पूर्वज भी मनुष्य के बारेमें सोच सकते थे ? क्या अतिमानवके अस्तित्वसे पहले उसका विचार मनुष्यके मस्तिष्कमें घुस सकता है ?

फिर भी, संसारमें आनेवाले हर मनुष्यके बालकमें, हर बढ़ती हुई बुद्धिमें, उभरती हुई हर पीढ़ीके प्रत्येक प्रयासमें, मानव प्रतिभा के हर प्रयत्नमें प्रकृति वह रास्ता ढूंढती है जो उसे फिरसे आगे ले जा सके।

शायद पंद्रह सौ शताब्दियोंसे डेढ़ अरब मनुष्य इस मार्गको पा बिना भटक रहे हैं।

उन मार्गोंकी भीड़में जिनमें प्रगतिके प्रयास बिखरे पड़े हैं, इस प्रदेशमें भी और अन्य प्रदेशोंमें भी, केवल एक अच्छा है और वह है समन्वयात्मक पूर्णताओंका। उसे कहां पाया जाय ?

और मनुष्योंमें ऐसा कौन है जो सरल और घिसे-पिटे रास्तोंको छोड़कर कहीं और बढ़नेकी हिम्मत कर सकता है ? कौन है जो यह जानते हुए कि आगे जानेवाला एक और रास्ता है, शायद उसे पा सकनेके लिये सब कुछ खोनेके लिये तैयार हो, अकेले चलने के लिये सब कुछ खो सके, अकेले सोचनेके लिये, औरोंसे हमेशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग रहते हुए, इस विश्वासके बिना ही कि वह जिसे ढूंढ रहा है उसे पा ही लेगा — इन स्थितियोंमें अकेला चले ?

ऐसे आदमीको उन लोगोंमें खोजनेकी कोशिश न करो जो उत्कृष्ट हैं और चमकते हैं, क्योंकि ये केवल अपनी जातिके जैसे होनेमें ही कुछ ज्यादा पूर्णताके साथ ज्यादा अच्छे और चमकदार हैं।

सब पत्थरोंमें मूल्यवान पत्थर ज्यादा उत्कृष्ट और चमकदार होते हैं। लेकिन सुंदर-से-सुंदर मणि भी उन रासायनिक योगोंसे अलग है जिनमेंसे जीवन उत्पन्न होता है। इसी तरह रूपोंके सोपानपर चढ़ते हुए जंगलके सुंदर-से-सुंदर वृक्ष भी विकास-क्रमकी उस रेखासे अलग हैं जो जैविक प्रक्रियाको ऊपरकी ओर पशु या मनुष्यतक ले जाती है।

ठीक इसी तरह, मनुष्योंमें, सबसे अधिक प्रशंसित, सबसे बढ़कर प्रसिद्ध, सबसे बढ़कर कलाकार, सबसे बड़ा विद्वान, सबसे बढ़कर धार्मिक व्यक्ति अपने-आपको उस रास्तेसे बहुत दूर पा सकता है जो अतिमानवकी ओर ले जाता है।

हर जाति, हर सभ्यता, हर मानव समाज, हर धर्म प्रकृतिके एक नये प्रयत्नका प्रतिनिधि है। अनंत कालसे चले आ रहे बहुविध प्रयासोंके क्रममें एक औरकी वृद्धि करता है।

जैसे सभी प्रकारके पाशविक रूपोंमेंसे एक ही ऐसा था जिसमेंसे मनुष्यको विकसित होना था, उसी भांति सामाजिक और धार्मिक जातियोंमेंसे कोई एक जाति ऐसी उत्पन्न होगी जिसमेंसे किसी दिन अतिमानव प्रकट होगा।

क्योंकि प्रकृति अपने सभी निरंतर प्रयासोंमें, प्राणके पहले प्रस्फुटनसे लेकर मनुष्यतक, यही खोजती आयी है, उस देवको खोजती है जो मनुष्यसे उत्पन्न होगा।

मनुष्योंकी भीड़में वह अतिमानवकी संभावना ढूंढती है और उसमेंसे हर एकमें उसका लक्ष्य है भगवान्‌की उपलब्धि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ष्म शरीर

[भौतिक शरीरमें प्रवेश पानेके लिये आकाश-शरीरको भेदना अनिवार्य; आकाश-शरीर पूर्णतः सशक्त हो तो शरीर भयंकर छूतकी बीमारियोंसे भी अछूता रहता है; आकाश-शरीर अत्यंत संवेदनशील; योगी और दंत-रोग; रोगके खतरे अधिकतर भयसे उत्पन्न होते हैं]

...रोग चाहे किसी कारणसे क्यों न हुआ हो, वह चाहे स्थूल भौतिक हो या मानसिक, बाह्य हो या आंतरिक, उसे भौतिक शरीर पर असर करनेसे पहले सत्ताके उस स्तरमें से प्रवेश करना पड़ता है जो शरीरके चारों ओर लिपटा हुआ है और उसकी रक्षा करता है। इस सूक्ष्मतर स्तरके भिन्न-भिन्न धर्मोंमें भिन्न-भिन्न नाम हैं, — कोई उसे आकाश-शरीर कहता है तो कोई नाड़ी-कवच। यह है तो सूक्ष्म शरीर, फिर भी लगभग दृष्टिगम्य है। किसी अत्यंत ऊष्ण और उबलते हुए द्रव्यके चारों ओर जो घने कंपन दिखायी देते हैं यह उन्हींके जैसा घना होता है। यह भौतिक शरीरमेंसे ही पैदा होता है और उससे सटा हुआ रहकर उसे चारों ओरसे ढांके रहता है। बाह्य जगत्‌के साथ समस्त व्यवहार इसीके माध्यमद्वारा होता है और इस कवच-शरीरपर आक्रमण करके इसका भेदन करनेपर ही कोई चीज स्थूल शरीरतक असर पहुंचा सकती है। यदि यह कवच पूर्ण रूपसे सशक्त और अखंड हो तो तुम बुरे-से-बुरे रोगोंसे आक्रांत स्थानोंमें भी, यहांतक कि प्लेग और हैजाके स्थानोंमें जाकर भी सर्वथा रोग-मुक्त रह सकते हो। जबतक यह समग्र और पूर्ण रहता है, इसकी बनावट अखंड होती है और इसके तत्त्व पूर्ण संतुलनमें रहते हैं, तबतक यह रोगके समस्त संभावित आक्रमणोंसे हमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपूर्ण रक्षा करता रहता है। एक ओर तो यह कवच-शरीर जड़ प्रकृतिके आधारपर या यों कहें कि स्थूल-भौतिक द्रव्यके नहीं, बल्कि जड़-प्राकृतिक अवस्थाओंके आधारपर बना है; दूसरी ओर, इसके निर्माण-तत्त्व हमारी मनस्तात्त्विक अवस्थाओंके कंपन हैं। यह दूसरा पार्श्व शांति, समचित्तता और विश्वास, स्वस्थतामें श्रद्धा, क्षोभरहित विश्रांतिकी अवस्था और प्रफुल्लता तथा तेजोमय आनंद — तत्त्वों-द्वारा बना होता है, और ये ही तत्त्व इस कवच-शरीरको शक्ति और द्रव्य प्रदान करते हैं। यह कवच-शरीर अत्यंत संवेदनशील माध्यम है और इसमें प्रतिक्रियाएं सहज और तुरंत होती हैं। यह समस्त सुझावोंको तुरंत अंगीकार कर लेता है और इनके कारण इसकी अवस्थामें द्रुत परिवर्तन हो सकते हैं, इसक ढांचातक बदल सकता है। इसपर किसी बुरे सुझावका बहुत जोरका असर पड़ता है, उसी प्रकार यदि कोई अच्छा सुझाव हो तो वह उसी बलके साथ इसपर अच्छाई-की दिशामें काम करता है। उदासी और निरुत्साहका इसपर बहुत बुरा असर होता है, वे इसमें जगह-जगह छेद कर देते हैं, इसे दुर्बल और प्रतिरोधशक्ति-विहीन बना देते हैं, फलतः, विरोधी आक्रमणोंके लिये एक सहज मार्ग खुल जाता है। कवच-शरीरमें होनेवाली इस क्रियाको समझ लेनेपर अंशतः यह बात भी समझमें आ जाती है कि लोग प्रायः एक-दूसरेके प्रति अनायास और अकारण आकर्षण और हटाव क्यों अनुभव करते हैं। आकर्षण और हटाव-रूपी ये प्रतिक्रियाएं सबसे पहले इस संरक्षण-कवचमें ही होती हैं। जो लोग हमारे इस नाड़ी-कवचकी शक्तिको सुदृढ़ बनाते हैं, इसमें बल पहुंचाते हैं उनके प्रति हम सहज ही आकर्षित हो जाते हैं और जो इसको क्षुब्ध करते या इसे चोट पहुंचाते हैं उनसे हम दूर हटते हैं। जो कुछ इसे विस्तार, आराम और चैनकी अनुमति देता है, जो कुछ इसके अंदर प्रसन्नता और हर्षके प्रभावकी प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है उसके प्रति हमारे अंदर तुरंत आकर्षण हो जाता है, और जब किसीका असर विपरीत दिशामें हो तो रक्षाके लिये उस व्यक्ति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दूर रहनेकी प्रतिक्रिया होती है। जब दो आदमी मिलते हैं बहुधा यह क्रिया उन दोनोंमें ही एक-दूसरेके प्रति होती है। अ ही परस्पर-संबंध या आकर्षण अनुभव करनेका यह एकमात्र का नहीं है, किंतु यह भी एक कारण और बहुत बार होनेवाला का है।

यदि हमारी समग्र सत्ता ही, विश्वकी आंतरिक प्रगतिके साथ-सा कदम मिलाती हुई, अपने प्रगतिशील रूपांतरके कार्यमें एक संग आ बढ़ सके तो रोग होगा ही नहीं, मृत्यु होगी ही नहीं। परंतु बात सोलह आने पूरी और समग्र सत्तामें होनी चाहिये, उच्चत भूमिकाओंके अंगोंसे — जो अधिक नमनशील होते हैं और रूपांतरकारिणी शक्तियोंके प्रति आवश्यक अनुपातमें अधीन हो जा हैं — लेकर अत्यंत जड़-प्राकृतिक भूमिका — जो स्वभावसे ही कठो है, निश्चल है, किसी भी द्रुत रूपांतरकारी परिवर्तनका विरोध कर है — के अंगोंतकमें, समग्र सत्तामें एक सरीखी प्रगति होनी चाहि तभी ऐसा होगा।

शरीरके कुछ भाग यौगिक शक्तियोंकी क्रियाका अन्य भागों अपेक्षा अधिक तीव्र प्रतिरोध करते हैं, और इन भागोंमें जो रो होता है उसे ठीक करना अधिक कठिन होता है। ये आधार अत्यंत जड़-प्राकृतिक भूमिकावाले अंग होते हैं और इनमें होनेवा व्याधियां भी वैसी ही होती हैं — जैसे कि चर्मरोग या दंतरोग श्रीअरविंदने एक बार एक योगीकी चर्चा की थी जो नर्मदा तीर लगभग एक शताब्दीसे रहते थे और इतने वृद्ध होनेपर भी अत्य हट्टे-कट्टे और बहुत ही तंदरुस्त थे। एक बार उनके किसी शिष्य दांतके दर्दके लिये उन्हें कोई औषधि दी, योगीने औषध लेनेसे इनका करते हुए कहा कि उन्हें वह दांत तो प्रायः दो सौ वर्षोंसे कष्ट दे आया है। इस योगीने अपनी स्थूल प्रकृतिपर इतना वशित्व प्रा कर लिया था कि वे प्रायः २०० वर्षोंतक जी सके, किंतु इतने दीर् कालमें भी इस दांतके दर्दपर विजय प्राप्त न कर सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ रोग जो अत्यंत खतरनाक गिने जाते हैं, उन्हें ठीक करना बहुत सहज होता है और कुछ जो अति नगण्य माने जाते हैं, बहुत ही हठपूर्वक प्रतिरोध कर सकते हैं।

रोगके खतरेका नव-दशांश भाग भयसे पैदा होता है। भयके कारण किसी रोगके लक्षण प्रकट हो सकते हैं, बल्कि यहांतक हो सकता है कि इसकी वजहसे स्वयं रोगतक हो जाय। हालकी ही बात है, एक सज्जन जो इस आश्रममें बराबर आया-जाया करते हैं, उनकी धर्मपत्नीने, जो स्वयं योग नहीं करतीं, सुना कि उनका ग्वाला जिस घरमें रहता है उस घरमें किसीको हैजा हुआ है। वे भयग्रस्त हो गयीं और दूसरे ही क्षण उनके अंदर हैजेके लक्षण दिखायी देने लगे। उनको तुरत ही ठीक किया जा सका, क्योंकि उनके अंदर रोगके-से जो लक्षण दिखायी दिये उन्हें वास्तविक रोगमें परिणत नहीं होने दिया गया।

योगका दबाव पड़नेके परिणामस्वरूप शरीरमें कुछ ऐसी क्रियाएं होती हैं जिनसे कभी-कभी बिलकुल निराधार भय खड़े हो जाते हैं, और यदि इन भयोंका संकल्पपूर्वक त्याग न किया जाय तो इनसे हानि हो सकती है। उदाहरणार्थ, सिरमें एक दबाव होता है (और इसी विषयको लेकर यह चर्चा शुरू हुई है) जिसका बहुतोंको अनुभव होता है — विशेषतः साधनाके शुरू-शुरूमें — जब कि कोई चीज जो अभी बंद है, खुलनेको होती है। यह एक ऐसी असुविधा है जो कुछ नहीं बिगाड़ती और सहजमें दूर की जा सकती है, यदि तुम्हें यह मालूम हो कि जिन शक्तियोंके प्रति तुम खुल रहे हो, वे जब अपने कार्यको सफल करनेके लिये और रूपांतरकी क्रियाको तेज करनेके लिये शरीरपर जोरसे कार्य करती हैं तो उनके दबावसे इस तरहकी क्रिया होती है। यदि इसे शांत-भावसे लिया जाय तो यह एक ऐसे संवेदनमें परिवर्तित हो सकती है जो असुखकर न हो। परंतु यदि तुम डर जाओ तो अवश्य ही भयानक सिरदर्द तुम्हें आ घेरेगा, और ज्वरतक तुम्हें आ सकता है। इस तकलीफका कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है शरीरमें किसी प्रकारका प्रतिरोध; और यदि तुम इस प्रतिरोध दूर करना जानो तो तुम्हारी तकलीफ तुरत दूर हो जायेगी। डरनेसे यह तकलीफ बहुत अधिक बढ़ सकती है। ये अनुभव प्रकारके क्यों न हों, तुम्हें भयको कभी स्थान न देना चाहिये। यह अटल विश्वास होना चाहिये कि जो कुछ हो रहा है वह है जो होनेको था। एक बार तुमने इस मार्गको चुना लिया है तुम्हें इस चुनावके समस्त परिणामोंको भी बहादुरीके साथ स्वीकार करना चाहिये। परंतु यदि तुम पहले तो चुनो और फिर पीछे हटो, और फिर चुनो और फिर दुबारा पीछे हटो, सदा डगमगाते रहो, सदा संदेह करते रहो, सदा डरते रहो तो तुम अपनी सत्ता असामंजस्यकी सृष्टि कर लेते हो, और यह असामंजस्य केवल तुम्हारी प्रगतिको ही नहीं रोकता, बल्कि तुम्हारे मन और प्राणमें नाना प्रकार क्षोभ और शरीरमें तकलीफ और रोग पैदा कर सकता है।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३

स्थूल शरीर

[स्थूल-शरीर मनुष्यका रक्षा-कवच; दुःस्वप्न क्या है; प्राणमय शक्तियोंका जगत् खतरोंसे भरा एक अज्ञात-सागर; प्राणमय जगत् तरल है, फिर भी वहांके रूपों-का अपना व्यक्तित्व होता है]

किसी व्यक्तिको दूसरेपर अपनी संकल्प-शक्तिका प्रयोग क्यों कर दिया जाता है?

ऐसी बात नहीं है कि किसीको किसी और पर संकल्प-शक्ति प्रयोग करने दिया जाता है, बात यह है कि एक विश्व-व्यापक संकल्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति है और जो लोग इस शक्तिको, कम या अधिक मात्रामें, अभिव्यक्त करनेमें समर्थ होते हैं उनकी संकल्प-शक्ति कम या अधिक बलवान् होती है। यह बात प्राण-शक्ति, प्रकाश, बिजली या प्रकृतिकी अन्य किसी भी शक्तिके जैसी है, कुछ इन शक्तियोंको व्यक्त-करनेके अच्छे वाहन या करण होते हैं तो दूसरे अत्यंत मामूली। यहां नैतिकताका कोई प्रश्न नहीं है। यह प्रकृतिका तथ्य है, इस महान् लीलाका विधान है।

क्या कोई प्राणमय जगत्की सत्ताओंसे, उनके अपने देशमें भेंट कर सकता है?

प्राणमय सत्ताएं उस अतिभौतिक जगत्में भ्रमण करती हैं जहां यदि मानव प्राणी संयोगवश जा पहुंचे तो अपनेको निराधार, असहाय और रक्षाविहीन अनुभव करता है। मनुष्य तो स्थूल शरीरमें ही अपने घरकी तरह सुरक्षित रहता है; शरीर उसका रक्षा-कवच है। कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने शरीरको बुरी तरह कोसते हैं और समझते हैं कि मृत्युके बाद जब स्थूल शरीर नहीं रह जायेगा तब उनकी दशा बहुत कुछ सुधर जायेगी और उनका जीवन सहज हो जायेगा। परंतु, वास्तवमें, स्थूल-शरीर तुम्हारा किला और तुम्हारा आश्रय-स्थान है। जबतक तुम इस किलेके अंदर हो तबतक विरोधी जगत्की शक्तियोंको तुम्हारे ऊपर किसी तरहका कब्जा करनेमें कठिनाई होती है। दुःस्वप्न क्या हैं? प्राणमय जगत्में तुम्हारा भ्रमण। और इस दुःस्वप्नकी पकड़में आते ही सबसे पहले क्या करनेकी कोशिश करते हो? तुम अपने स्थूल शरीरमें दौड़ आते हो और अपनी साधारण भौतिक चेतनामें समाकर होश सम्भालते हो। परंतु प्राणमय शक्तियोंके जगत्में तुम एक अजनबी हो, यह एक अज्ञात समुद्र है और तुम्हारे पास न तो दिग्दर्शक यंत्र है, न पतवार। तुम नहीं जानते कि इसमें कैसे चलना चाहिये, न यह जानते हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि किधर चलना चाहिये और पग-पगपर वही करते हो जो नहीं करना चाहिये। जैसे ही तुम इस जगत्के किसी भी राज्यमें प्रवेश करते हो वैसे ही वहांकी सत्ताएं तुम्हारे चारों ओर जमा हो जाती हैं और तुम्हें घेरकर जो कुछ तुम्हारे पास हो उसे हथिया लेना, जो कुछ चूस सकें उसे चूस लेना और तुम्हारी संपत्तिको अपना आहार और शिकार बना लेना चाहती हैं। यदि तुम्हारे अंदरसे कोई तीव्र ज्योति और शक्ति प्रसारित न हो रही हो तो स्थूल शरीरके बिना तुम इस जगत्में इस तरह फिरते रहोगे मानों अत्यंत सर्द और ठिठुरा देनेवाले वातावरणसे अपनेको बचानेके लिये तुम्हारे पास एक कोट भी नहीं, एक मकानतक नहीं जो तुम्हें आश्रय दे सके, यहांतक कि तुम्हें ढांकनेके लिये त्वचातक न हो, तुम्हारी स्नायुएं खुली हुई और नंगी हों। कुछ लोग कहते हैं: "मैं इस शरीरमें कितना दुःखी हूं, और वे मृत्युको दुःखसे छुटकारा पानेका साधन मानते हैं! किंतु मृत्युके बाद तुम्हें वे ही प्राणमय परिस्थितियां मिलती हैं और उन्हीं शक्तियोंका खतरा रहता है जिनके कारण तुम इस जीवनमें क्लेश पाते थे। स्थूल शरीरका छूट जाना तुम्हें प्राणमय जगत्के खुले मैदानोंमें जानेके लिये बाध्य कर देता है। और तुम्हारे पास अपनी रक्षाके लिये कोई साधन नहीं रहता, स्थूल शरीर नहीं होता कि तुम सुरक्षाके लिये वहां दौड़ जाओ।

यहीं, इसी पृथ्वीपर और इसी शरीरमें तुम्हें पूर्ण ज्ञानकी प्राप्ति करनी चाहिये तथा भरपूर और संपूर्ण शक्तिका प्रयोग करना सीखना चाहिये। यह कर चुकनेपर ही तुम समस्त लोकोंमें कुशलक्षेमके साथ स्वतंत्रतापूर्वक घूम सकोगे। जब तुमपर भयका लेशमात्र भी असर न हो सके, उदाहरणार्थ, जब तुम बुरे-से-बुरे डरावने स्वप्नोंके बीच भी अविचलित रह सको, तभी तुम कह सकते हो : "अब मैं प्राणमय जगत्में जानेके लिये तैयार हूं।" परंतु इसका अर्थ है उस ज्ञान और शक्तिको पाना जो प्राण-प्रकृतिकी तृष्णाओं और कामनाओं-पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित हो जानेपर ही मिलते हैं। तुम्हें उन सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजोंसे पूर्ण रूपसे मुक्त होना चाहिये जो अज्ञान-अंधकारकी सत्ताओं-को ला सकती हों अथवा तुम्हारे ऊपर उनके शासनको संभव बनाती हों। यदि तुम इनसे मुक्त नहीं हो तो सावधान !

कोई आसक्ति न हो, कोई कामना न हो, कोई आवेग न हो, कोई पसंद न हो; पूर्ण समता हो, अचल शांति हो और भागवत संरक्षणमें अटल श्रद्धा हो, — ये सब हों तो तुम सुरक्षित हो और न हों तो तुम जोखिममें हो। और जबतक तुम सुरक्षित नहीं हो तबतक मुरगीके उन छोटे बच्चोंकी तरह रहना ही ठीक है जो अपनी मांके डैनोंके नीचे आश्रय लेते हैं।

स्थूल भौतिक शरीर हमारे संरक्षणका कार्य कैसे करता है?

स्थूल शरीर अपनी स्थूलताके कारण ही, जिस चीजके लिये हम उसको दोष देते हैं उसी चीजके द्वारा, हमारे संरक्षणका कार्य करता है। यह मंद, जड़, स्थूल, कठिन और कठोर है, एक ऐसे किलेकी तरह है, मजबूत और ठोस दीवारोंवाले किलेकी तरह है। प्राणमय जगत् तरल प्रवाहकी तरह है, वहां वस्तुएं स्वच्छंद रूपसे घूमती-फिरती, परस्पर मिलती-जुलती और एक-दूसरेमें प्रविष्ट होती रहती हैं; उसी तरह जिस तरह समुद्रकी लहरें आपसमें अनवरत प्रवाहित, परिवर्तित और एक-दूसरेमें ओत-प्रोत होती रहती हैं। यदि तुम्हारे अंदर इस प्राणमय जगत्की तरलताका सामना करनेके लिये आंतरिक प्रबल ज्योति या शक्ति न हो तो तुम निःसहाय रहोगे, और यह प्रवाह तुम्हारे अंदर आ घुसेगा और उसके आक्रामक प्रभावको रोकनेके लिये तुम्हारे पास कुछ न होगा। परंतु स्थूल शरीर बीचमें पड़कर तुम्हारी रक्षा करता है, यह तुम्हें प्राणमय जगत्से अलग कर देता है और उस जगत्की शक्तियोंकी बाढ़के सामने बांधका काम देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु प्राणमय जगत् यदि इतना तरल है तो क्या वहांके रूपोंमें कोई व्यक्तित्व होता है ?

हां, वहां व्यक्तित्व है, किंतु उसके रूप स्थूल देहधारी सत्ताओंके जितने निश्चित और कठोर नहीं होते। व्यक्तित्वका अर्थ अनमनीय कठोरता नहीं है। पत्थरका रूप बहुत ही सख्त है, शायद हमारी जानी-पहचानी चीजोंमें सबसे अधिक सख्त, किंतु उसमें व्यक्तित्व बहुत कम होता है। दस-बीस पत्थरोंको इकट्ठा कर लो और फिर यदि उनमें भेद करना चाहो तो तुम्हें बहुत ही सावधान होना होगा, परंतु प्राणमय सत्ताओंको पहली नजरमें ही एक-दूसरेसे पृथक् जाना जा सकता है। उनके आकारकी बनावटके भेदके द्वारा, वे जो वातावरण अपने साथ लिये रहती हैं उसके द्वारा और प्रत्येक सत्ता जिस ढंगसे चलती-फिरती, बातें करती तथा क्रिया करती है उसके द्वारा, तुम उन्हें पृथक्-पृथक् जान सकते हो। जैसे प्रसन्नता या क्रोधकी अवस्थामें मनुष्यके चेहरेका भाव बदल जाता है वैसे ही इनमें भी परिवर्तन आते हैं, किंतु प्राणमय जगत्में परिवर्तन अधिक तीव्र होते हैं। केवल उनके मुखका भाव ही नहीं, उनके चेहरेका आकार ही बदल जाता है।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

सबसे बड़ी कठिनाई

(२८ मई, १९१२ की सभामें माताजीका वक्तव्य)

वह कौन-सी मनोवैज्ञानिक कठिनाई है जिसका सबसे अच्छा अध्ययन अनुभवद्वारा किया जा सकता है ?

हममें प्रत्येकके अंदर एक कठिनाई अन्य सब कठिनाइयोंसे अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय होती है। यह संसारमें हमारी भूमिकाओंके संबंधमें आती है, मानों उस प्रकाशकी छाया हो, जैसे-जैसे वह प्रकाश अधिक तेज, उज्ज्वल और प्रबल होता जायगा और सारी सत्ताको अधिकृत करेगा यह छाया क्रमशः क्षीण तथा विलीन होती जायेगी।

प्रत्येक व्यक्तिकी एक विशेष कठिनाई होती है जिसपर उसे उसके सारे ध्यान और उपयोगको केंद्रित करनेकी आवश्यकता होती है, क्योंकि यदि हम अपना निरीक्षण करना जानें तो देखेंगे कि इसी कठिनाईमें-से ही वे सब कठिनाइयां निकलती हैं जो हमारा रास्ता रोककर खड़ी हो सकती हैं।

आज शाम मैं इसी प्रकारकी कठिनाईके विषयमें कुछ कहना चाहती चाहती हूं।

एक प्रकारकी अतिरिक्त संवेदनशीलता होती है जो बाहर कम प्रकट होती है और इस कारण अधिक क्रियाशील रहती है। यह वस्तु हृदयकी भावना या प्राणके आवेगोंकी श्रेणीकी होती है।

इस संवेदनशीलताका कारण एक अति-स्नायविक तत्त्व होता है, यह तत्त्व बौद्धिकतासे रंजित रहता है, किंतु जितना बौद्धिक होता है, उस अनुपातमें अध्यात्म नहीं होता।

यह विकासक्रमकी वह अवस्था होती है जिसमें व्यक्ति अपने प्रति सचेतन हो जाता है और इस नाते आत्मसमर्पणके लिये तैयार हो जाता है, परंतु साथ ही व्यक्तित्व और बौद्धिकताके विकासके कारण प्रत्येक वस्तुको अपने संबंधमें रखकर देखनेकी आदत बना लेता है और, फलस्वरूप, 'व्यक्तित्वके भ्रम' को उसकी चरम सीमातक प्रश्रय भी देता है।

कभी-कभी उसके लिये यह कल्पना करना अत्यंत कठिन हो जाता है कि वह कर्म नहीं कर रहा, अनुभव नहीं कर रहा तथा सोच नहीं रहा। इस कारण उसमें सहजता नहीं रहती, यह अवस्था कपटसे बहुत भिन्न नहीं है।

सत्ता इस उत्कट संवेदनशीलतामें रस लेती है, वह एक ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाजुक यंत्र बन जाती है जो छोटे-से-छोटे स्पंदनके प्रति भी आश्चर्यजनक रूपसे सचेत रहता है। इसका फल यह होता है कि अपने-आपको बाहर करने, अपने-आपको भूलनेके स्थानपर यह अपनी ही ओर अभिमुख हो उठता है, अपना निरीक्षण तथा विश्लेषण करने लगता है, प्रायः अपने-आपको ही ध्यानका विषय बना लेता है।

इस प्रकार साधी हुई भावुक संवेदनशीलता बढ़ती जाती है, उत्तरोत्तर सूक्ष्म और परिष्कृत होती जाती है। और चूंकि जीवनमें कष्टके अवसर हर्षके अवसरोंकी अपेक्षा अधिक आते हैं, भावकी इन सूक्ष्म गतिविधियोंका अनुभव तथा अध्ययन करनेकी आवश्यकता व्यक्तिके अंदर दुःखके प्रति एक झुकाव, एक रुचि उत्पन्न कर देती है। यह, वास्तवमें, एक सूक्ष्म विकृति है और दुःखके द्वारा अपनी आत्माकी खोजके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। यह अहंका एक परिष्कृत, किंतु अत्यंत हानिकारक रूप है।

दुःखकी इस प्रवृत्तिके व्यावहारिक परिणाम बिलकुल ही सांघातिक हो जाते हैं जब उसके साथ यह अंतःस्फूर्त, पर अस्पष्ट अनुभव भी सम्मिलित हो जाता है कि तुम्हारा काम, तुम्हारे जीवनका अर्थ ही दूसरोंके कष्ट अपनी ओर खींचना तथा अपने ऊपर ले लेना है, ताकि तुम उन्हें सुसामंजस्यमें परिवर्तित कर सको।

एक ओर तो वास्तवमें, तुम्हारा यह ज्ञान ही अधकचरा है, क्योंकि तुम यह नहीं जानते कि दूसरोंको सांत्वना देनेका, संसारका थोड़ा-सा भी दुःख दूर करनेका केवल एक उपाय है। वह यह कि किसी भी भावुकताको, चाहे वह कितनी भी कष्टप्रद क्यों न हो, अपने अंदर दुःख न पैदा करने दो, अपनी शांति और धीरता भंग न करने दो। दूसरी ओर, यह विचार कि हमें कुछ काम करना है व्यक्तित्वके भ्रममें पड़कर मिथ्या हो जाता है। सही धारणा यह नहीं है कि तुम अपने ऊपर सारे कष्ट खींच लो, और यह है भी असंभव। वरन्, ठीक यह है कि अन्य जनोंके समस्त कष्टके साथ एकात्म हो जाओ ताकि तुम उस कष्ट और उन व्यक्तियोंके अंदर प्रेम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशके बीज बन सको। इस बीजसे उपजेंगे गभीर ज्ञान, आशा, विश्वास तथा शांति।

जबतक यह बात भली-भांति समझमें नहीं आ जाती, आत्म-बलिकी रुचि व्यक्तिमें बनी रहती है। और जब-जब व्यक्तिको ऐसा अवसर मिलता है — आत्म-बलिकी कामनाके कारण वह इस विषयकी ओर-से अनासक्त तो है नहीं — यह इच्छा भाव-प्रबल हो जाती है, बुद्धि-की बात नहीं सुनती और मूर्खतापूर्ण गलतियोंका कारण बन जाती है, यहांतक कि कभी-कभी तो विनाशकारी परिणाम भी पैदा कर देती है। कार्य करनेसे पहले यदि तुम्हें सोचनेका अभ्यास है तो भी तुम्हारा सोचना अनिवार्य रूपसे पक्षपातपूर्ण होगा, क्योंकि दुःखके लिये तुम्हें जो अनुराग है, कष्टपूर्ण आत्म-बलिके लिये अवसर प्राप्त करनेकी जो कामना है, उससे तुम्हारा सोच-विचार विकृत हो जायेगा।

इस प्रकार सचेतन रूपसे हो या न हो, तुम्हारा आत्म-त्याग दूसरोंके हितके लिये न होकर तुम्हें त्यागमें जो रस मिलता है उसके लिये होता है। यह व्यर्थ होता है, इससे किसीको लाभ नहीं होता।

कोई कार्य तभी अच्छा समझा जा सकता है और हाथमें लिया जाना चाहिये जब हम उसके तात्कालिक और, संभव हो तो, दूरके परिणाम भी जान लें और हमें यह प्रतीत हो कि अंतमें ये परिणाम पृथ्वीकी भलाईमें, भले ही चाहे कितने थोड़े परिमाणमें हों, वृद्धि करेंगे। परंतु इस बातका स्वस्थ भावसे निर्णय करनेके लिये यह आवश्यक है कि उसमें किसी प्रकारकी व्यक्तिगत रुचि या अरुचिकी बाधा न पड़े — इसका अर्थ है अनासक्ति।

वह अनासक्ति नहीं जो अनुभव करनेकी शक्ति ही नष्ट कर दे, वरन् वह जिससे दुःख भोगनेकी प्रवृत्तिका उन्मूलन हो।

स्पष्ट ही, इस समय मैं इन व्यक्तियोंको गिनतीमें नहीं ले रही जो संवेदनशून्य हैं, जो अभी दुःख सहनेयोग्य ही नहीं हुए हैं, जिन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कष्ट इस कारण नहीं होता कि वे जिस तत्त्वके बने हैं वह इतना अमार्जित, इतना स्थूल कि है वह अनुभव करने योग्य नहीं।

परंतु जो व्यक्ति संवेदनशीलताकी यह ऊंची विकसित अवस्था प्राप्त कर चुके हैं, उनके विषयमें कहा जा सकता है कि उनकी कष्ट उठानेकी क्षमता उनकी अपूर्णता ही का बिलकुल सही माप है।

वास्तवमें, सत्ताके अंदर सच्चे चैत्य जीवनका प्रकट होना ही है शांति, प्रफुल्ल प्रशांति।

तो, दुःख चाहे कैसा भी हो, हमारे लिये किसी दुर्बलताका यथार्थ चिह्न है, उस दुर्बलताका जिसका प्रतिकार समस्त आध्यात्मिक प्रयत्नों-द्वारा करना बाकी है।

दुःखके प्रति अपने इस आकर्षणको दूर करनेके लिये हमें अपने दुःखोंके विविध कारणोंकी मूढ़ता और तुच्छ अहं-भावनाको समझना होगा।

आत्म-बलिदानकी इस प्रबल और हास्यास्पद कामनाका अस्तित्व अधिकांशतः स्वयं उसके अपने ही निमित्त होता है, यह कामना अपने किसी लाभकारी परिणामके लिये नहीं होती, इससे त्राण पानेके लिये हमें यह जान लेना चाहिये कि यदि हम संवेदनशीलताद्वारा समस्त मानुषी कष्टोंसे संबंध रखना चाहते हैं तो हमें इतना सतर्क और विवेकशील रहना चाहिये कि जो दुःख स्पष्टदर्शियोंके समक्ष कोरी कल्पना हैं उन्हें हम विलीन कर सकें।

इस दृष्टिकोणसे मनुष्यकी सहायता करनेका केवल यही उपाय है कि उसके दुःखके प्रतिकारमें एक ऐसी अविचल और प्रफुल्ल प्रशांति उपस्थित की जाय जो निर्वैयक्तिक प्रेमकी उच्चतम मानुषी अभिव्यक्ति होगी।

और अंतमें, अन्य क्षेत्रोंकी अपेक्षा इस क्षेत्रमें, जिसे अभी आपके सम्मुख रखा है, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि सच्ची निर्वैयक्तिकता केवल काम करते समय अपने-आपको भूल जानेमें ही नहीं है, बल्कि यह भी भूल जानेमें है कि हम अपने-आपको भूल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षेपमें, सच्चे रूपमें निर्वैयक्तिक बननेके लिये हमें यह भी अनुभव नहीं होना चाहिये कि हम निर्वैयक्तिक हैं।

तभी कोई कार्य खुलकर, सहज भावसे, और अपनी परिपूर्णतामें संपन्न हो सकता है।

(श्रीमातृवाणी, खंड २; 'पहलेकी बातें')

निःस्वार्थ कार्य

(२९ मई, १९१२ की बैठकमें माताजीका वक्तव्य)

निःस्वार्थ कार्यके प्रति आत्म-निवेदन करनेमें हममें सबसे बड़ी बाधा क्या है?

सर्वसाधारण दृष्टिसे देखा जाय तो जो कार्य करना है उसके वास्तविक हेतु और उसकी बाधामें फर्क नहीं मालूम होता। यह है स्थूल जड़ वस्तुकी वर्तमान त्रुटिपूर्ण अवस्था।

त्रुटिपूर्ण उपादानसे बने होनेके कारण हम भी त्रुटिमें साझेदार हुए बिना नहीं रह सकते।

हमारी गभीरतर सत्ता चाहे कितनी ही पूर्ण, सचेतन और सज्ञान क्यों न हो, पर उसने एक स्थूल शरीरमें रूप धारण किया है, बस यही चीज उसकी अभिव्यक्तिकी विशुद्धतामें बाधाएं उत्पन्न कर देती है। किंतु शरीर धारण करनेका उद्देश्य होता है इन बाधाओंपर विजय प्राप्त करना, जड़ पदार्थका रूपांतर करना। अतएव, अपने अंदर इन बाधाओंको देखकर हमें न तो विस्मय होना चाहिये और न दुःख, क्योंकि इस पृथ्वीपर ऐसा कोई प्राणी नहीं है जिसे किसी कठिनाईका सामना न करना पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस त्रुटिका कारण हमें दो दृष्टियोंसे दिखायी दे सकता है: एक साधारण, दूसरा वैयक्तिक।

सामान्य दृष्टिकोणसे देखा जाय तो जड़ वस्तुकी अपूर्णताका कारण यह है कि जड़के द्वारा जो सूक्ष्म शक्तियां अभिव्यक्त होना चाहती हैं उनके प्रति उसमें ग्रहणशीलताका अभाव रहता है। ग्रहणशीलताके इस अभावके भी कई कारण हैं, पर यदि हम इनका विवेचन करने लगेंगे तो अपने मुख्य विषयसे बहुत दूर हट जायेंगे। इसके अतिरिक्त, मेरे विचारमें मूलत: सारी कठिनाइयोंकी उत्पत्ति होती है व्यक्तित्वके भ्रमसे — इस भ्रमसे कि कोई चीज सबसे पृथक् अस्तित्व रख सकती है।

विश्वको हम जिस रूपमें जानते हैं उसके अस्तित्वके लिये यह भ्रम अनिवार्य है या नहीं, इसकी खोजमें न पड़ते हुए मैं इस प्रश्नपर केवल पृथ्वी और मानवकी दृष्टिसे विचार करूंगी।

अहंका यह भ्रम कि वह सबसे पृथक् है हमारे अंदर दो प्रवृत्तियों-का संचार करता है।

पहली प्रवृत्ति सबके साथ एकत्व स्थापित करनेकी अचेतन आवश्यकतासे उत्पन्न होती है। किंतु व्यक्तित्वके भ्रमके कारण हर एक इस एकत्वका अर्थ लगाता है सबको आत्मसात् कर लेना और कम या अधिक रूपमें सबका केंद्र बन जाना। फल यह होता है कि जो कुछ भी उसकी चेतनामें आता है उसे प्रत्येक व्यक्ति अपनी बौद्धिक और शारीरिक शक्तिके अनुसार अपनी ओर खींचना चाहता है ताकि वह अपने व्यक्तित्वकी सदैव वृद्धि करता चले।

यह समग्रके प्रति सचेतन होनेकी, सार रूपमें उचित कामनाका परिणाम है, किंतु वह अज्ञानका आधार लेकर प्रकट होती है। कारण, समग्रके प्रति सचेतन होनेका यदि कोई उपाय है तो निश्चय ही वह उपाय समग्रको अपनी ओर खींचनेका नहीं है। ऐसा करना तो मूर्खतापूर्ण और निष्फल होगा। इसका उपाय है इससे बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपरीत मनोभाव और क्रियाको अपनाना। वह है समग्रकी चेतनाके साथ अपनी चेतनाको एक कर देना।

दूसरी प्रवृत्ति पहलीका स्वाभाविक परिणाम है। वह है वर्तमान अवस्थाको बनाये रखनेकी अत्यधिक प्रबल भावना, बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक — समस्त प्रकृतिकी अपरिवर्तनशीलता। यह विश्व-विकासके साथ-साथ चलनेके लिये हमें जितनी तेजीसे रूपांतरित होना चाहिये उसे असंभव कर देती है।

कहा जा सकता है कि व्यक्तिको यह भय होता है कि यदि वह सबके साथ अधिक और मुक्त मेल-मिलाप रखेगा तो दूसरोंसे पर्याप्त रूपमें पृथक् नहीं रह पायेगा।

इसके अतिरिक्त, यह अपरिवर्तनशीलता उत्पन्न होती है संग्रह करनेकी इच्छासे और उस मूलसे जिसके कारण हम यह समझने लगते हैं कि हम संसारमें किसी वस्तुके स्वामी भी हो सकते हैं। हमें ऐसा लगने लगता है कि हम जिन तत्त्वोंसे बने हैं उनपर हमारा जन्मसे अधिकार है, सचेतन या अचेतन रूपमें हम उन्हें अपने लिये सुरक्षित रखना चाहते हैं, साथ ही उनकी वृद्धिके लिये हम अन्य तत्त्वोंको भी अपनी ओर खींचनेको तत्पर रहते हैं। किंतु हम भूल जाते हैं कि कोई वास्तविक पृथकत्व ही नहीं है। वास्तवमें, हम न कुछ देते हैं, न पाते हैं।

हमें शृंखलाकी एक कड़ीमात्र होना है। अपनी पड़ोसी कड़ियोंको हानि पहुंचाकर वह फूलेगी नहीं। परंतु उसमें जो शक्ति-तरंग है उसे वह निष्ठासे औरोंमें संचारित करेगी तो उसे अन्य शक्ति-तरंग प्राप्त होगी। और यह कड़ी जितनी अधिक पूर्णता और द्रुततासे इन तरंगोंको संचारित करती जायेगी उसका संबंध उन अनेक शक्तियों या वस्तुओंसे उतना ही अधिक निकट होगा जिन्हें उसे उपयोगमें लाना या अभिव्यक्त करना है। इस प्रकार, कुछ न लेते हुए, अपने लिये कुछ न रखते हुए वह धीरे-धीरे समग्र साथ सायुज्यसे प्रत्येक वस्तुका ज्ञान प्राप्त कर लेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बातके विरुद्ध जिन आपत्तियोंकी मैं कल्पना कर सकती हूं उनके लिये मैं यह कहना चाहूंगी :

जब मैं व्यक्तित्वके भ्रमकी बात कहती हूं तो मैं यह अस्वीकार नहीं करती कि प्रत्येककी अभिव्यक्तिका ढंग भिन्न-भिन्न होता है। परंतु विभिन्नताका अर्थ विभाजन नहीं है।

यदि प्रत्येकका अपना-अपना कार्य न होता तो शृंखलामें इन अनगिनत कड़ियोंका प्रयोजन ही क्या था?

यहां पहली तुलना पूरी करनेके लिये एक और तुलनाकी आवश्यकता पड़ेगी, क्योंकि प्रत्येक तुलनाका अपूर्ण होना अनिवार्य है।

यदि हम अपने-आपको एक विशाल जीवंत शरीरके कोषाणु मान लें तो तत्काल समझ जायंगे कि जो कोषाणु अपने जीवनके लिये औरोंके जीवनपर निर्भर है और औरोंसे विच्छिन्न होनेमें जिसके नाशका भय है, उसकी भी समष्टिमें अपनी विशेष भूमिका जरूर होती है।

और यह भूमिका ठीक वही है जो हमारी सत्ताकी गहराईसे स्वतःस्फूर्त होती है। इसे खोजनेके लिये हमें अहंकारके साथ अपना व्यक्तित्व प्रकट करनेकी आवश्यकता नहीं होती। इसके विपरीत, हम अपने-आपको निर्वैयक्तिक कार्यमें जितना अधिक लगायेंगे, यह भूमिका उतनी ही अधिक सुदृढ़ और सुस्पष्ट हो जायेगी। ठीक यही भूमिका हमारे सच्चे व्यक्तित्वका निर्माण करती है, क्योंकि भागवत तत्त्वको, जो सब व्यक्तियों और सब वस्तुओंमें एक है, अभिव्यक्त करनेका हमारा विशेष ढंग यही है।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड २; 'पहलेकी बातें')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणलोक और धन

[प्राणलोककी सत्ताएं मनुष्य रूपमें; प्राणलोककी निम्नतम सत्ताएं; आध्यात्मिक जीवनके प्रति उनका आकर्षण; धन विरोधी शक्तियोंके कब्जेमें; प्राणमय मांगोंके लिये धनागार खुला रहता है, परंतु अच्छे उपयोगोंके लिये बंद — क्यों ?]

कुछ मनुष्य पिशाचों जैसे लगते हैं, वे क्या हैं और वे इस तरहके क्यों हैं ?

वे मनुष्य नहीं होते, उनका रूप या दिखावा ही मनुष्यके जैसा होता है। ये लोग भौतिक जगत्के बाद ही जो अगला लोक है, जिसे हम प्राणलोक कहते हैं, वहांकी सत्ताओंके मूर्त्त रूप होते हैं। वही जगत् समस्त इच्छाओं, आवेगों और आवेशोंका तथा हिंसा, लालच और धूर्त्तता एवं हर प्रकारके अज्ञानकी गतियोंका निवास है, किंतु समस्त गतिशीलता, समस्त जीवन-शक्तियां और सामर्थ्य भी यहींपर हैं। स्वभावतः, इस जगत्की सत्ताओंकी हमारे उस जड़-प्राकृतिक जगत्पर विचित्र-सी पकड़ होती है, और वे इसपर अपना दुष्ट प्रभाव डाल सकती हैं। इनमेंसे कुछ सत्ताएं मनुष्यकी सत्ताके उन अवशेषोंसे बनी होती हैं जो उनके मर जानेके बाद भी पार्थिव भूमिकाके समीप प्राणमय वातावरणमें बने रहते हैं। मनुष्यकी इच्छाएं और लालसाएं मृत्युके बाद भी प्राणमय भूमिकापर तैरती रहती हैं और शरीरके नष्ट हो जानेके बाद भी इनका एक रूप बना रहता है। बहुधा ये अभिव्यक्त होने और अपनेको संतुष्ट करनेके लिये प्रवृत्त होती हैं। और इस प्रवृत्तिका ही परिणाम है प्राणमय जगत्के इन जंतुओंका जन्म। परंतु ये मामूली प्राणी हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यद्यपि ये अत्यंत दुःखदायी हो सकते हैं, फिर भी इनका मुकाबला करना असंभव नहीं होता। इनके अतिरिक्त अन्य अधिक भयंकर सत्ताएं हैं जो कभी मानव रूपमें प्रकट नहीं हुईं। वे कभी पृथ्वीपर मनुष्य-शरीरमें नहीं जन्मीं और बहुधा इस प्रकारका जन्म ग्रहण करनेसे इनकार करती हैं, क्योंकि यह जीवन जड़तत्त्वकी गुलामी है और वे अपने ही जगत्में —— जहां वे बलवान हैं और दूसरोंको सता सकती हैं —— रहना और वहींसे पार्थिव सत्ताओंपर अधिकार करना अधिक पसन्द करती हैं। यद्यपि वे पृथ्वीपर जन्म लेना नहीं चाहतीं तथापि यह अवश्य चाहती हैं कि उनका भौतिक प्रकृतिसे, उसके बन्धनमें आये बिना ही, संबंध बना रहे। उनका तरीका यह है कि पहले तो वे किसी मनुष्यपर अपना प्रभाव जमानेका प्रयत्न करती हैं, फिर धीमे-धीमे उस वातावरणमें घुस आती हैं और अन्त में उसकी वास्तविक मानव आत्मा और व्यक्तित्वको एकदम बाहर निकालकर उसे पूर्ण रूपसे अपने अधिकारमें कर सकती हैं। ये सत्ताएं जब किसी मनुष्य-शरीरपर अधिकार किये हुए हों तो उनका रूप तो मनुष्यों जैसा हो सकता है, पर उनका स्वभाव मनुष्यों जैसा नहीं होता। मनुष्योंकी प्राण-शक्तियोंको चूसते रहना, उनकी आदत होती है। जहां कहीं संभव हो वे मनुष्यकी प्राण-शक्तिपर हमला करके, उसे अपने कब्जेमें करके उसके द्वारा अपना जीवन निर्वाह करती हैं। यदि ये सत्ताएं तुम्हारे वातावरणमें आ जायं तो तुम एकाएक उदास और क्लान्त हो जाओगे, यदि कुछ कालतक तुम उनके समीप रहो तो बीमार पड़ जाओगे और यदि उनमेंसे किसी-के साथ तुम रहने लगे तो संभव है कि वह तुम्हें मार डाले।

परंतु ये सत्ताएं यदि किसीके वातावरणमें घुस चुकी हों तो वहांसे इन्हें कैसे निकाल बाहर किया जाय?

इन सत्ताओंमें मूर्त्त रूप लेनेवाली प्राण-शक्ति बिलकुल स्थूल-भौतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकारकी होती है और उसका असर थोड़ी दूरतक ही पड़ता है। साधारणतया, यदि तुम उनके साथ एक ही मकानमें न रहो या उनकी संगतिमें न रहो, तो तुम उनके प्रभावमें नहीं आ सकते। पर यदि तुम उनके साथ किसी प्रकारका सम्बन्ध या संसर्ग स्थापित करनेके लिये कोई रास्ता खोल दो, उदाहरणार्थ, उनसे पत्र-व्यवहार करो तो इन शक्तियोंके साथ आदान-प्रदान संभव बना देते हो, और तब बहुत दूरसे भी तुमपर प्रभाव पड़ सकता है। अधिक बुद्धिमानी इसीमें है कि इन सत्ताओंसे संबंध काट दिया जाय और इनसे किसी तरहका सरोकार न रखा जाय — हां, यदि तुम्हारे अन्दर बहुत अधिक गुह्य ज्ञान या प्रचण्ड शक्ति हो और तुमने अपनी रक्षा और बचाव करना सीख लिया हो तो दूसरी बात है — किन्तु तब भी इनके साथ मिलना-जुलना सदा खतरनाक होता है। इन्हें रूपान्तरित करनेकी आशा रखना, जैसा कि कुछ लोग रखते हैं, एक निष्फल मोह है, क्योंकि ये रूपान्तरित होना नहीं चाहतीं। वे किसी प्रकारके रूपान्तरके लिये सहमत नहीं होना चाहतीं और इस दिशामें सारे प्रयास व्यर्थ हैं।

जब ये सत्ताएं मनुष्य-शरीरमें होती हैं तो बहुधा उन्हें इस बातकी चेतना नहीं होती कि वे वास्तवमें कौन हैं। हां, कभी-कभी उन्हें एक धुंधली-सी प्रतीति होती है कि वे साधारण अर्थमें मनुष्य नहीं हैं। फिर भी ऐसे उदाहरण हैं जहां वे सचेतन, बहुत अधिक सचेतन होती हैं। वे केवल इतना ही नहीं जानतीं कि वे मनुष्य नहीं हैं, बल्कि यह भी जानती हैं कि वे कौन हैं और अपने इस ज्ञानके अनुसार ही कार्य करती हैं और समझ-बूझकर अपने उद्देश्यको पूरा करनेमें लगी रहती हैं। प्राणमय जगत्‌की सत्ताएं, स्वभावतः, बड़ी बलवान् होती हैं और इस बलके साथ जब कुछ ज्ञान जुड़ जाता है तो वे दूनी भयंकर हो जाती हैं। इन प्राणियोंके साथ कोई संबंध नहीं रखना चाहिये और यदि तुम्हारे अन्दर इन्हें कुचल डालने और नष्ट कर देनेकी शक्ति न हो तो इनसे किसी भी प्रकार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का संपर्क रखनेसे बचो। यदि तुम्हें जबरदस्ती इनके संपर्कमें आना ही पड़े तो इनके जादूसे सावधान रहो। प्राणमय जगत्की सत्ताएं जब भौतिक भूमिकापर प्रकट होती हैं तो इनमें सदा वशीकरणकी बहुत बड़ी शक्ति होती है, कारण इनकी चेतनाका केन्द्र प्राणमय जगत्में होता है, भौतिक जगत्में नहीं और ये मनुष्यकी तरह भौतिक चेतनाद्वारा ढकी नहीं रहतीं और छोटी नहीं बन जातीं।

क्या यह ठीक नहीं है कि ये सत्ताएं आध्यात्मिक जीवनकी ओर एक विचित्र प्रकारका आकर्षण रखती हैं?

हां, क्योंकि वे अनुभव करती हैं कि वे इस जगत्की नहीं हैं बल्कि किसी दूसरे स्थानसे आयी हैं; वे यह भी अनुभव करती हैं कि उनमें शक्तियां हैं जिन्हें उन्होंने लगभग गंवा दिया है और वे उसे पुनः प्राप्त करनेके लिये उत्सुक होती हैं। इसलिये जब कभी वे किसी ऐसे व्यक्तिसे मिलती हैं जो उन्हें सूक्ष्म जगत्का कुछ ज्ञान दे सके तो वे उसकी ओर दौड़ पड़ती हैं। परन्तु वे प्राणमय जगत्को ही भूलसे आध्यात्मिक जगत् समझ लेती हैं और उनकी खोजका हेतु भी आध्यात्मिक नहीं, प्राणमय होता है। या शायद वे जान-बूझकर आध्यात्मिकताको कलुषित करके अपने स्वभावके सांचे-में ढली हुई, आध्यात्मिक सृष्टिकी एक नकल खड़ी करना चाहती हैं। परन्तु अपने इस प्रयासमें भी वे अपने ढंगसे, आध्यात्मिक जीवनको एक प्रकारकी श्रद्धांजलि भेंट करती हैं अथवा हरजाना चुकाती हैं। उनमें एक प्रकारका आकर्षण भी होता है जो उन्हें विवश करता है। उन्होंने भगवान्के शासनके प्रति विद्रोह किया है, किन्तु विद्रोहके होते हुए भी, या संभवतः इस विद्रोहके कारण ही, वे भगवान्के साथ अपने-आपको किसी-न-किसी रूपमें बंधा हुआ अनुभव करती हैं और उनके प्रति प्रबल रूपसे आकृष्ट होती हैं।

यही कारण है कि तुम कभी-कभी देखते हो कि जिन लोगोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीपर आध्यात्मिक जीवन सिद्ध करना है उनमें आपसमें संबंध स्थापित करनेके लिये ये सत्ताएं यंत्र रूपसे उपयोगमें लायी जाती हैं। यह काम वे स्वेच्छासे नहीं करतीं, उन्हें बाध्य होकर करना पड़ता है। यह एक प्रकारका ऋण-परिशोधन है जिसको वे पूरा करती हैं। जो दिव्य ज्योति अवतरित हो रही है वे उसका दवाव अनुभव करती हैं, उन्हें इस बातका आभास मिलता है कि अब समय आ गया है, अथवा शीघ्र ही आनेवाला है, जब उन्हें रूपांतर या लय, इन दोनोंमेंसे एकको चुन लेना होगा, उन्हें यह चुनाव करना होगा कि भागवत संकल्पके प्रति अपने-आपको समर्पण करके इस महान् योजनामें अपनी भूमिका पूरी करें अथवा अचेतनामें डूबकर अपना अस्तित्व खो दें। सत्यके जिज्ञासुके साथ संपर्क इस प्रकारकी सत्ताको परिवर्तित होनेका अवसर देता है। सब कुछ इस बातपर निर्भर है कि वह इस अवसरका किस प्रकार उपयोग करती हैं। यदि इसका उचित उपयोग हो तो वह मिथ्यापन, अंधकार और क्लेशसे छुटकारा पानेका रास्ता खोल देता है और पुनरुद्धार तथा नवजीवनकी ओर ले जाता है — ये ही वे तत्त्व हैं जिनसे ये प्राणमय सत्ताएं बनी होती हैं।

क्या इन सत्ताओंका धन-शक्तिपर बहुत बड़ा अधिकार नहीं है?

इस समय धन-शक्ति प्राण जगत्की शक्ति और सत्ताके प्रभाव या कब्जेमें है। इसी प्रभावके कारण तुम धनको सत्यकी सेवाके लिये प्रचुर परिमाणमें जाते हुए कभी नहीं देखते। वह हमेशा भटकता रहता है, क्योंकि वह विरोधी शक्तियोंके पंजेमें है, और जिन साधनोंके द्वारा प्राणमय जगत्की ये शक्तियां पृथ्वीपर अपना कब्जा रखती हैं उनमेंसे एक प्रमुख साधन है। धन-शक्तिपर विरोधी शक्तियोंका अधिकार मजबूतीसे, पूरे तौरपर सुसंगठित है और इस संहत संगठनसे कुछ भी निकाल लाना अत्यंत कठिन कार्य है। प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार जब तुम इस धनका कुछ थोड़ा-सा भाग भी इसके वर्तमान संरक्षकोंके हाथोंमेंसे निकालकर ले आना चाहते हो तो तुम्हें भीषण युद्ध करना पड़ता है।

फिर भी, जिन विरोधी शक्तियोंका धन-शक्तिपर कब्जा है उनपर यदि कहीं भी कोई विजय प्राप्त हो जाय तो साथ-ही-साथ अन्य क्षेत्रोंमें भी अपने-आप और विजय प्राप्त करना संभव हो जायेगा। यदि किसी एक स्थानपर ये झुक जायं तो वे सभी जो आज सत्यकी सेवाके लिये धन देनेमें असमर्थता अनुभव करते हैं, धन देनेके लिये हठात् एक महान् और तीव्र इच्छाका अनुभव करेंगे। यह बात नहीं है कि जो अमीर कमोबेश प्राण-शक्तियोंकी कठपुतली या यंत्र बने हुए हैं, वे धन खर्च करनेके अनिच्छुक हों, असलमें उनकी लोभ-वृत्ति तभीतक जागती है जबतक उनकी प्राणमय वासनाओं या तृष्णाओंको नहीं छुआ जाता। जिस वासनाको वे अपनी समझते हैं उसकी तृप्तिके लिये तो वे खुशीसे खर्च करते हैं, किंतु जब उन्हें अपने आराम और धनके लाभमें दूसरोंको साझा देनेके लिये कहा जाता है तो उनके लिये धनसे अलग होना कठिन हो जाता है। धनपर नियंत्रण रखनेवाली प्राण-शक्ति एक ऐसे अभिभावककी तरह है जो अपने धनको सदा एक बड़ी भारी तिजोरीमें अच्छी तरह बंद किये रहता है। जो लोग इस शक्तिके पंजेमें हैं उनसे जब कभी कुछ धन देनेके लिये कहा जाता है तो वे अपनी थैलीका मुंह थोड़ा-सा खोलनेके लिये राजी होनेसे पहले खोज-खोजकर नाना प्रकारके प्रश्न पूछते हैं, किंतु यदि स्वयं उनके अंदर किसी प्राणमय तृष्णाकी मांग उठ खड़ी हो तो ये अभिभावक अपने धनागारको बड़ी खुशीके साथ खोल देते हैं, और इस कामके लिये उनका धन स्वच्छंद रूपसे पानीकी तरह बहने लगता है। साधारणतया, जिन प्राणगत वासनाओंकी आज्ञाओंका वह पालन करना है उनका संबंध काम-वासनाकी तृष्णासे रहता है, किंतु बहुधा वह ख्याति और मान-मर्यादाकी वासना, आहारकी वासना अथवा प्राणमय भूमिकाकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकारकी किसी भी वासनाकी आज्ञाओंका भी पालन करता है। जो कुछ उपर्युक्त श्रेणीका नहीं होता उसके बारेमें बारीकीके साथ खोज-खोजकर सवाल किये जाते हैं, उसकी अच्छी तरह छान-बीन की जाती है और उसकी उपयोगिताको बड़ी आनाकानीके साथ स्वीकार किया जाता है, किंतु फिर भी, अंतमें, प्रायः, सहायता करनेसे इनकार कर दिया जाता है। जो लोग प्राणमय सत्ताओंके गुलाम हैं उनमें सत्य, प्रकाश और आध्यात्मिक प्राप्तिकी इच्छाका यदि कभी स्पर्श होता भी है तो उनकी वह इच्छा धनकी बराबरी नहीं कर पाती। उनके हाथोंसे धनको भगवान्के लिये जीत लानेका अर्थ है उनके अंदर जो राक्षस घुसा हुआ है उसे मार भगाना। पहले तुम्हें उनके उस प्राणमय स्वामीको, जिसकी वे गुलामी करते हैं, जीतना या भगवत्परायण बनाना होगा, और यह काम सहज नहीं है। जो लोग प्राणमय सत्ताओंके कब्जेमें हैं वे अपने आरामतलबीके जीवनको बदल सकते हैं, भोगोंको त्याग कर बिलकुल कठोर वैरागी बनकर भी पहले जैसे दुष्ट बने रह सकते हैं, यहांतक भी हो सकता है कि वे इस परिवर्तनके कारण पहलेसे अधिक बुरे बन जायं।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका एक उद्देश्य होता है और वही सच्चा और स्था
उद्देश्य है — भगवान्। उन्हींकी ओर मुड़ो और सब खालीप
चला जायगा।

—श्रीम

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीरामकृष्णके वचन

(माताजीके द्वारा चुने हुए)

जो यह सोचता है कि उसके गुरु केवल एक मनुष्य हैं वह उनसे कोई लाभ नहीं उठा सकता।

*

शिष्यको अपने गुरुकी आलोचना कभी नहीं करनी चाहिये। गुरु जो कुछ कहें उसका आंख मूंदकर पालन करना चाहिये। एक बंगला पदमें कहा गया है :

"मेरे गुरु भले ही पियक्कड़ों या पापियोंका संग क्यों न करें, लेकिन वे मेरे लिये तो वही नित्यानंद राय, पवित्र और निर्दोष गुरु रहेंगे।"

*

मोतीको उठा लो और सीपको दूर फेंक दो। गुरुने जो मंत्र (उपदेश) तुम्हें दिया है उसका पालन करो और अपने गुरुकी मानव अक्षमताओंको भूल जाओ।

*

अगर कोई तुम्हारे गुरुकी निंदा या उनका तिरस्कार कर रहा हो तो उसकी बात मत सुनो। उसके आगेसे तुरंत चले जाओ।

(श्रीमातृवाणी, खंड २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 873

Statement about ownership and other particulars about Newspaper (Agnishikha), to be published in the first issue every year after the last day of February.

FORM IV (See Rule 8)

1.	Place of Publication:	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry
2.	Periodicity of its publication:	Monthly
3.	Printer's Name:	Amiyo Ranjan Ganguli
	Nationality	Indian
	Address	Sri Aurobindo Ashram Press, Pondicherry-605002
4.	Publisher's Name:	Secretary, Sri Aurobindo Society
	Nationality	Indian
	Address	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry-605002
5.	Editor's Name:	Ravindra
	Nationality	Indian
	Address	Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry-605002
6.	Names and addresses of Individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one per cent of the total capital:	Sri Aurobindo Society, Pondicherry-605002

I, Guruprasad, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date: 1st March, 1979

(Sd.) Guruprasad
Signature of Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
31479

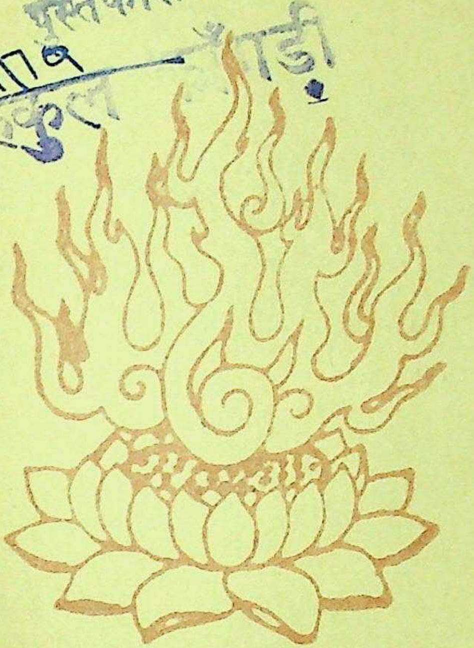

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अप्रैल १९७९

वर्ष ९, अंक ९, पूर्णांक १०५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

माताजीके वचन : आदर्श कार्य		१
आध्यात्मिक अनुभूति		५
मानसिक साक्षी		६
धर्म, दर्शन और आध्यात्मिकता		७
मन और चैत्य जगत्		१०
पांडिचेरीमें श्रीअरविंद		१४
वे महत्त्वपूर्ण रातें		२०
माताजी और नारी		२३
मैं कौन हूं	संकलित	२८
सोसायटी समाचार		२९

हमारा नवीन प्रकाशन

श्वेत कमल — माताजीके चरणोंमें : लेखक — रवीन्द्र
माताजीकी बाल्यावस्था, गुह्य विद्याएं, पांडिचेरीकी ओर, सहयोगी, सिद्धि-दिवस, श्रीअरविंदाश्रम, आश्रममें शिक्षा आदि विषयोंका परिचय; १३ चित्रोंसे सज्जित। मूल्य — सजिल्द : २५.००
अजिल्द : २०.००

पुरोधा : वार्षिक ८.०० आजीवन १७५.००
अग्निशिखा : वार्षिक ६.०० आजीवन १२५.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमातृवाणीसे :

आदर्श कार्य

(२ जुलाई, १९१२ की बैठकमें माताजीका वक्तव्य)

किस प्रकारके मन मेरे सबसे अधिक निकट हैं और उनके बीच मेरा आदर्श कार्य क्या होगा ?

जीवन हमेशा हमारे रास्तेमें, किसी-न-किसी रूपमें, ऐसे व्यक्ति प्रस्तुत करता है जो किसी-न-किसी कारणसे हमारे निकट होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जैसा वह स्वयं होता है, उसीके अनुसार अपना वातावरण बना लेता है।

और यदि यही हमारी प्रधान कर्म-प्रवृत्ति हो तो वे सब व्यक्ति जिनसे हम जीवन-पथपर मिलते हैं ठीक वे होते हैं जिनके लिये हम अधिकतम उपयोगी हो सकते हैं।

जो निरंतर आध्यात्मिक चेतनामें निवास करता है उसके लिये उसके साथ होनेवाली परिस्थितियोंका एक विशेष अर्थ होता है और वे सब उसके उत्तरोत्तर विकासक्रममें सहायक होती हैं। ऐसा व्यक्ति अपने सब संपर्कोंका उपयोगी अवलोकन कर सकता है, उनके ऊपरी और गहन कारणोंका अध्ययन कर सकता है और अपनी उपकार-भावनासे प्रेरित होकर यह जानना चाहेगा कि इन विभिन्न प्रकारके व्यक्तियोंमेंसे प्रत्येकका वह क्या हित कर सकता है। आध्यात्मिकताका जितना अंश उसके अपने अंदर होगा उसीके अनुपातमें उसका कार्य भी आध्यात्मिक प्रभाव डालनेकी शक्तिसे युक्त होगा, यह प्रभाव कम या अधिक हो सकता है, पर होगा अवश्य।

यदि हम अपने साथियोंके निकट आनेके कारणोंका जरा ध्यानसे निरीक्षण करें तो देखेंगे कि ये संबंध हमारी सत्ताके विभिन्न स्तरों-

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर, हमारी चेतनाकी विशेष क्रिया-धाराओंके अनुसार बने हैं।

इन संबंधोंको हम अपनी चेतनाकी क्रियाके चार प्रधान प्रकारोंके अनुसार चार श्रेणियोंमें बांट सकते हैं, भौतिक, प्राणिक, आध्यात्मिक और मानसिक। और ये संबंध अपनी व्यक्त क्रियावलीके गुण और प्रकारके अनुसार इन श्रेणियोंमेंसे किसी एकमें अथवा एकसे अधिकमें एक साथ या बारी-बारीसे आ सकते हैं।

भौतिक संबंध तो एक तरहसे अनिवार्य है, क्योंकि हम भौतिक शरीरधारी हैं। यह संबंध, स्वभावतः, उनके साथ होता है जिन्होंने हमें शरीर प्रदान किया है, साथ ही उन सबके साथ भी जिनका इसके साथ भौतिक संबंध होता है। ये रिश्तेदारीके संबंध हैं। कुछ संबंध पड़ोसी होनेके नाते बनते हैं, उदाहरणार्थ, मकानका पड़ोस, नाना सवारियोंमें पड़ोस, सड़कोंपर मिलन। (यहां एक बात कह दूं — और यह बात अन्य तीनों श्रेणियोंके संबंधमें भी लागू होती है — वह यह कि यह जरूरी नहीं है कि ऐसा संबंध केवल भौतिक ही होता हो; वास्तवमें, ऐसा तो शायद ही कभी होता हो, क्योंकि हम बिरले ही अपनी सत्ताके किसी एक ही स्तरपर क्रियाशील रहते हैं। मेरे कहनेका अभिप्राय यह है कि इन संबंधोंमें भौतिक तत्त्व अन्य तीनोंसे प्रबल रहता है:)

प्राणिक संबंध होता है उन आवेगों और इच्छाओंका संबंध, जो दोनोंमें एक समान हैं या जो आपसमें मिलकर अधिक पूरी या वर्धित हो सकती हैं।

आन्तरात्मिक संबंध वह संबंध है जो आध्यात्मिक अभीप्साओंके मेलसे बनता है।

मानसिक संबंध होता है विचारों और रुचियोंमें सादृश्य होनेसे या उनके आपसमें एक-दूसरेके पूरक होनेसे।

सामान्यतः, जबतक इनमेंसे किसी एक श्रेणीकी प्रधानता बाकी तीनोंपर स्पष्ट रूपसे स्थापित न हो गयी हो, — और यह प्रधानता तभी हो सकती है जब सत्ताकी गहराई और जटिलतामें सुव्यवस्थित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विन्यास हो जाय — तबतक जो लोग भौतिक कारणोंसे हमारे समीप हैं हम उन्हें भौतिक रूपमें सहायता दे सकते हैं, और देनी चाहिये भी।

अपवादोंको छोड़कर, अपने कुटुम्बीजनोंके लिये तथा उनके लिये जिनसे हम गाड़ी, जहाज या ट्राम आदिमें मिलते हैं यह भौतिक सहायता ही सर्वोत्तम सहायता होती है और इसका रूप होता है आर्थिक सहायता, बीमारी या संकटके समय सहायता।

जो लोग कलात्मक या अन्य रुचियोंके सादृश्यके कारण हमारी ओर आकर्षित हुए हैं हमें उनकी संवेदनशील सत्ताकी सहायता करनी चाहिये। यह हम उनकी अनुभूतिकी वृत्तियोंको एक सत्य निष्ठा, एक नयी स्थिति, एक नयी दिशा देकर कर सकते हैं।

जिनके साथ हमारा संपर्क प्रगतिकी अभीप्साके सादृश्यके कारण हुआ है उनकी सहायता हम मार्ग दिखाकर, अपने प्रेमके द्वारा उनके मार्गकी कठोरताको कम करके कर सकते हैं।

अंतमें, जो लोग हमारे निकट मानसिक आकर्षणोंको लेकर आते हैं उनके प्रति हमारा कर्तव्य यह है कि हम उनकी बुद्धिके प्रकाशको तेज करें, यदि संभव हो तो उनके विचार-क्षेत्रको विस्तृत और आदर्शको आलोकित करें।

ये नाना स्तरोंके आकर्षण हमारे मिलनेकी अवस्थाओंमें संकेतों, और प्रायः, सूक्ष्म संकेतोंद्वारा प्रकट होते हैं। दूसरी ओर, हमारी निरीक्षणकी कुशाग्रता कभी-कदास ही पूरी सजग रहती है; फलस्वरूप, ये संकेत प्रायः हमारी दृष्टिसे बच निकलते हैं।

किंतु अपनी कार्य-धाराको ठीक रखनेके लिये और अपने साथियोंके प्रति अपने मनोभावमें त्रुटियां लानेवाले कारणोंको यथासंभव कम-से-कम करनेके लिये हमें हमेशा बड़े ध्यानसे उन असंख्य कारणोंको देखना होगा जिनसे हम एक-दूसरेके समीप आते हैं, सादृश्य और मेलकी उन श्रेणियोंको देखना होगा जो हमें उनके साथ बांधती हैं।

कुछ विरल व्यक्ति ऐसे होते हैं जो एक साथ सत्ताके इन चारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकारके संबंधोंसे हमारे निकट हों। मित्रताके गहनतम अर्थमें ऐसे लोग ही हमारे मित्र हैं। इन्हींके लिये हम अत्यधिक समग्र और पूर्ण रूपसे उपयोगी और कल्याणकारी कार्य कर सकते हैं।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि दो मानव जीवनोंका संपर्क कितना स्थायी होगा, यह इस बातपर निर्भर है कि उनको जोड़नेवाले आकर्षण सत्ताके कितने स्तरोंपर हैं और उन स्तरोंपर कितनी गहराईतक क्रियावन्त हैं।

वे, केवल वे ही, आपसमें सदाके लिये संयुक्त हो सकते हैं जो अपने तथा समस्त वस्तुओंके शाश्वत तत्त्वमें मिलते हैं, सायुज्य स्थापित करते हैं।

चिर मित्र वे ही हैं जो सदा मित्र रहते हैं, चाहे दूर हों, चाहे पास, चाहे इस जगत्में, चाहे अन्य जगतोंमें।

और ऐसे मित्रोंके साथ हमारा मिलना किसी ऐसे पूर्व-मिलनपर निर्भर है जो हमारे अंतरमें, हमारी सत्ताकी अजानी गहराईमें हुआ होगा।

इसके अतिरिक्त, जब कभी ऐसा मिलन होता है तो हमारा समस्त मनोभाव बदल जाता है।

जब हम अंतःस्थित भगवान्के साथ एक हो जाते हैं तो सभी चीजोंके साथ उनकी गहराईमें एक हो जाते हैं। वास्तवमें, सबके साथ हमारा संबंध भगवान्में और भगवान्के द्वारा ही होना चाहिये। तब न आकर्षण रहता है, न विकर्षण, न अनुराग, न विराग। जो भगवान्के निकट है, उसके हम निकट होते हैं, और जो उनसे दूर है, उससे दूर।

निष्कर्ष यह निकलता है कि हमें दूसरोंके बीच, सदा और अधिकाधिक रूपमें सर्वांगीण, भौतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक, क्रियाकलापका ऐसा दिव्य दृष्टांत बनना चाहिये जो उन्हें दिव्य जीवनके मार्गको समझने और उसपर चलनेका एक अच्छा सुयोग दे।

(श्रीमातृवाणी, खंड २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक अनुभूति

आप आध्यात्मिक अनुभूतिकी बात कहती हैं। अनुभूति क्या है और उसे कैसे पाया जा सकता है ?

वह कोई ऐसी चीज है जो तुम्हें तुम्हारी वर्तमान चेतनासे ज्यादा ऊंची चेतनाके संपर्कमें ला देती है। तुम्हें अपने बारेमें एक प्रकारकी अनुभूति होती है, तुम्हें उसका भान भी नहीं होता, तुम्हारे लिये यह तुम्हारी साधारण अवस्था है। अगर सहसा तुम्हें अपने अंदर किसी बहुत ही भिन्न और बहुत श्रेष्ठ चीजकी अनुभूति हो, वह चाहे कुछ क्यों न हो, तो यह आध्यात्मिक अनुभूति होगी। तुम उसे मानसिक विचारका रूप दे भी सकते हो और नहीं भी दे सकते, तुम उसे अपने-आपको समझा सकते हो और नहीं भी समझा सकते, यह टिक भी सकती है और नहीं भी टिक सकती, क्षणिक हो सकती है। लेकिन जब चेतनामें यह तात्त्विक भेद हो और स्वभावतः उसका जो स्वरूप आये तुम्हारी सामान्य चेतनासे वह बहुत . . . उच्चतर, स्पष्टतर और अधिक पवित्र हो, तो कहा जा सकता है कि यह आध्यात्मिक अनुभूति है; उसका मतलब यह है कि अलग-अलग हजारों चीजें हैं जिन्हें आध्यात्मिक अनुभूति कहा जा सकता है।

क्या हमें आध्यात्मिक अनुभूति पानेके लिये अभीप्सा करनी चाहिये ?

मेरा ख्याल है कि आध्यात्मिक अनुभूतिके लिये अभीप्सा करनेकी अपेक्षा, ज्यादा बुद्धिमत्तापूर्ण है प्रगतिके लिये या अधिक सचेतन होनेके लिये या ज्यादा अच्छा बनने या ज्यादा अच्छा करनेके लिये अभीप्सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना; क्योंकि हो सकता है कि वह (आध्यात्मिक अनुभूतियोंके लिये अभीप्सा) न्यूनाधिक काल्पनिक और ऐसी मिथ्या अनुभूतियोंके लिये या प्राणिक गतिविधियोंके लिये द्वार खोल दे जो उच्चतर चीजोंका रूप धरकर आती हैं। तुम अनुभूतिके लिये अभीप्साके द्वारा अपने-आपको धोखा दे सकते हो। वास्तवमें, अनुभूतिको सहज रूपसे आंतरिक प्रगतिके परिणामस्वरूप आना चाहिये, लेकिन अपने ही लिये या अपने-आप नहीं।

(श्रीमातृवाणी, खंड ६)

मानसिक साक्षी

"मानसिक साक्षी" का क्या मतलब है ?

हम साक्षीके बारेमें कई बार बात कर चुके हैं, यहां मनकी बात है। 'साक्षी' सब जगह होते हैं। यह सत्ताकी वह क्षमता है जिसमें वह अपने-आपको पृथक् कर सकती है, पीछे हटकर जो हो रहा है उसे देखती है, जैसे तुम सड़कपर होनेवाली किसी चीजको देखते हो या तुम अपने-आप खेलमें भाग लिये बिना औरोंको खेलते हुए देखते हो, अपने-आप बैठकर, हिले-डुले बिना औरोंको गति करते हुए देखते हो। यह ऐसे ही है।

सत्ताके सभी भागोंमें एक भाग ऐसा होता है जो यह कर सकता है: अपने-आपको पीछे रखता है और शांत रहकर भाग लिये बिना देखता है। इसीको साक्षी कहते हैं। हमारे अंदर बहुत सारे साक्षी होते हैं, और प्रायः, तुम जाने बिना भी साक्षी होते हो अगर तुम इस चीजको विकसित करो, इससे हमेशा यह संभावना पैदा होती है कि तुम शांत रह सको और चीजोंसे प्रभावित न होओ। तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने-आपको उनसे अलग कर लेते हो, और ऐसे देखते हो मानों नाटकका कोई दृश्य देख रहे हो जिसमें स्वयं तुम भाग नहीं ले रहे। इससे बहुत फायदा नहीं होता।

(श्रीमातृवाणी, खंड ६; प्रश्न और उत्तर, १९५४)

धर्म, दर्शन और आध्यात्मिकता

[धर्मके अनुसार दर्शन या अनुभवका रूप बदल जाता है; आध्यात्मिक अनुभूतिका अर्थ; जॉन ऑफ आर्कके अंतः-दर्शन किस कोटिके]

क्या झूठे दृश्य नहीं दिखायी देते ?

ऐसे दृश्य होते हैं जिनका बाह्य रूप झूठा होता है। उदाहरणार्थ, सैकड़ों क्या, हजारों आदमी ऐसे मिलेंगे जो कहते हैं कि उन्होंने ईसामसीहको देखा है। इस बड़ी संख्यामेंसे जिन्होंने वास्तवमें उन्हें देखा है ऐसे शायद एक दर्जन भी न निकलें। और इन थोड़े-से लोगोंने भी जो कुछ देखा है उसके संबंधमें बहुत कुछ कहनेकी गुंजायश है। बाकी लोगोंने जो कुछ देखा है, वह हो सकता है कि ईसामसीहकी कोई विभूति हो, अथवा उनका अपना कोई विचार हो, या कोई ऐसी प्रतिमा हो जो उनके मनको याद है। ऐसे लोग भी होते हैं जिन्हें ईसामसीहपर दृढ़ श्रद्धा होती है और उन्हें किसी ऐसी शक्ति या सत्ताका या किसी स्मृत मूर्तिका दर्शन होता है जो अत्यंत तेजोमय होती है और उनपर गहरा असर डालती है। उन्होंने कुछ ऐसी चीज देखी है जिसे वे दूसरे जगत्की और प्राकृत जगत्से परेकी मानते हैं। और उसे देखकर उनमें भय, संभ्रम या हर्षका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावावेश पैदा होता है और चूंकि वे ईसाको मानते हैं इसलिये वे किसी औरकी बात नहीं सोचते और कहते हैं कि उन्होंने ईसा-मसीहको देखा है। परंतु वही दर्शन या अनुभव यदि किसी हिन्दू, मुसलमान या अन्य धर्मावलंबीको हो तो उसका नाम और रूप कुछ और ही हो जायेगा। जिसका दर्शन या अनुभव हुआ हो उसके मूलतः एक होनेपर भी ग्रहण करनेवाले मनकी बनावटकी भिन्नताके अनुसार उसका रूप भी भिन्न-भिन्न प्रकारका बन जाता है। केवल वही जो इन विश्वासों, श्रद्धाओं, धर्माख्यानों और परंपराओंके ऊपर उठ चुके हैं, यह कह सकते हैं कि वास्तवमें उन्होंने क्या देखा; पर ऐसे लोग कम होते हैं, बहुत कम। यह जान सकनेसे पहले कि तुमने क्या देखा है, तुम्हें समस्त मानसिक रचनाओंसे मुक्त होना चाहिये और जो कुछ केवल स्थानीय या सामयिक है उससे अपने-आपको दूर कर लेना चाहिये।

आध्यात्मिक अनुभूतिका अर्थ है अपने अंदर (अथवा बाहर, जो उस क्षेत्रमें एक ही बात है) भगवान्‌का संस्पर्श। और यह अनुभूति सर्वत्र, सब देशोंमें, सब जातिके लोगोंमें, यहांतक कि समस्त युगोंमें एक ही प्रकारकी होती है। अगर भगवान्‌से तुम्हारी भेंट होती है तो सर्वदा और सर्वत्र एक ही प्रकारसे होती है। भेद इसलिये आता है क्योंकि जो कुछ अनुभव होता है और उसको जो रूप दिया जाता है, उन दोनोंके बीच एक बड़ी खाई होती है। आध्यात्मिक अनुभूति सदा आंतर चेतनामें होती है और जैसे ही तुम्हें कोई आध्यात्मिक अनुभूति होती है, वैसे ही वह तुम्हारी बाह्य चेतनामें प्रतिबिंबित हो जाती है और तुम्हारी शिक्षा, श्रद्धा और मानसिक धारणाके अनुसार उसकी किसी-न-किसी प्रकारकी व्याख्या हो जाती है। सत्य तो एक ही है, सद्वस्तु तो एक ही है, किंतु जिन रूपोंद्वारा उसकी अभिव्यक्ति की जा सकती है, वे अनेक हैं।

जॉन ऑफ आर्कको जो अंतर्दर्शन होते थे, वे किस कोटिके थे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम जिसे "देवोंका लोक" कहते हैं (अथवा कैथोलिक संप्रदायके शब्दोंमें "संतोंका लोक", यद्यपि ये दोनों लोक बिलकुल एक नहीं हैं), उस लोककी कुछ सत्ताओंके साथ जॉन ऑफ आर्कका स्पष्ट संबंध था। जिन सत्ताओंका उन्हें दर्शन होता था, उन्हें वे "प्रधान देवदूत" कहा करती थीं। ये सत्ताएं उच्चतर मानसलोक और अतिमानसलोक (विज्ञानलोक) के बीचकी थीं; यही वह लोक है जिसे श्रीअरविंद अधिमानस कहते हैं। यह सृष्टिकर्ताओंका, रूप देनेवालोंका लोक है।

जो दो सत्ताएं जॉन ऑफ आर्कको हमेशा दिखायी देती और उनसे बातें करती थीं, वे यदि किसी हिन्दूके सामने होतीं तो उनका कुछ और ही रूप होता, क्योंकि जब कोई किसी सत्ताको देखता है तो, उसके रूपको अपने मनकी कल्पनाके अनुसार गढ़ लेता है। तुम जो कुछ देखते हो उसे वही रूप दे देते हो जिसे देखनेकी तुम्हें आशा होती है। यदि एक ही सत्ता एक ही समय किसी ऐसी मंडलीको दिखायी दे जहां ईसाई, बौद्ध, हिन्दू और शितों धर्मावलंबी हों तो ये सब उसे एकदम अलग-अलग नामोंसे पुकारेंगे। इनमेंसे हर एक व्यक्ति कहेगा कि इस सत्ताका स्वरूप इस या उस जैसा था, सभीकी राय एक-दूसरेसे अलग होगी, यद्यपि सबके सामने एक ही सत्ता प्रकट हुई होगी। भारतवर्षमें तुम लोगोंको एक सत्ताका दर्शन होता है और इसे तुम लोग भगवती माता (आद्या शक्ति) कहते हो, कैथोलिक संप्रदायवाले इसे "कुमारी मेरी", जापानी "क्वोनोन" अर्थात्, दयाकी देवी और दूसरे धर्मवाले किसी और ही नामसे जानेंगे। शक्ति एक ही है, सत्ता एक ही है, किंतु उसकी प्रतिमाएं भिन्न-भिन्न धर्मोंमें भिन्न-भिन्न प्रकारकी बन गयी हैं।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३; 'पहलेकी बातें')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन और चैत्य जगत्

[मनके विभिन्न प्रकार, विभिन्न रूप; महत्तर मनलोक प्राणमय गतियों और विरोधी शक्तियोंसे सर्वथा मुक्त; चैत्य जगत् — भागवत चेतनाका, दिव्य आत्माका निवास-स्थान]

विरोधी शक्तियां जिस प्रकार प्राणमय जगत्में आक्रमण करती हैं उसी प्रकार क्या मनोमय भूमिकापर भी उनका आक्रमण होता है?

इस प्रश्नका ठीक-ठीक उत्तर देनेके लिये ऐसी बहुत-सी बातोंके विस्तारमें जाना होगा जिनमें हम अभी नहीं जा सकते।

मन एक गति है। परंतु इस गतिके भी कई प्रकार हैं, कई स्तर हैं जो एक-दूसरेका स्पर्श करते और आपसमें ओत-प्रोत होते रहते हैं। साथ ही जिस गतिको हम मन कहते हैं वह अन्य भूमिकाओंमें भी प्रविष्ट होती रहती है। स्वयं मनोमय जगत्में कई स्तर हैं। ये सभी मनोमय भूमिकाएं और मनोमय शक्तियां, यद्यपि अन्योन्याश्रित हैं, फिर भी, उनकी गतियोंके गुणमें भेद होता है और उनके वर्णनकी सरलताके लिये हमें उनको एक-दूसरेसे अलग करना पड़ता है। इस प्रकार, हम उच्चतर मन, मध्यवर्ती मन, भौतिक मन और अत्यंत स्थूल मनके बारेमें कह सकते हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुतेरे भेद किये जा सकते हैं।

कुछ मनोमय भूमिकाएं ऐसी हैं जो प्राणमय जगत्से बहुत ऊपर स्थित हैं और वे प्राणमय जगत्के प्रभावसे बच जाती हैं, वहां विरोधी शक्तियां या सत्ताएं हैं ही नहीं। परंतु दूसरी मनोमय भूमि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काएं हैं—और ये अनेक हैं—जहां प्राणमय शक्तियां पहुंच सकती हैं और उनमें ओत-प्रोत हो सकती हैं। जो मनोमय भूमिका भौतिक जगत्से संबंध रखती है, जिसे हम, साधारणतया, भौतिक मन कहते हैं, उसकी बनावट और गति असली मनकी अपेक्षा अधिक स्थूल और जड़ होती है और यह भौतिक मन प्राणमय जगत् और विरोधी शक्तियोंके बहुत अधिक प्रभावमें रहता है। भौतिक मन, साधारणतया, निम्न प्राणकी चेतना और उसकी गतियोंके साथ एक प्रकारकी मित्रताका संबंध रखता है। निम्नतर प्राण जब किन्हीं इच्छाओं और आवेगोंको प्रकट करता है तब यह अधिक स्थूल मन उसकी सहायताके लिये पहुंच जाता है, उसके लिये लंबी-चौड़ी व्याख्याएं, तर्क और बहाने निकाल-निकालकर उसके औचित्यको सिद्ध करने और उनका समर्थन करनेकी कोशिश करता है। मनका यही स्तर प्राणमय जगत्के सुझावोंके लिये बहुत अधिक खुला रहता है और अधिकतर इसीपर प्राणमय जगत्की शक्तियां आक्रमण किया करती हैं। परंतु हममें एक उच्चतर मन भी है जो निःस्वार्थ भावनाओं और प्रकाशमय चिन्तनोंके क्षेत्रमें विचरण करता रहता है, यही मन आकारोंका जन्मदाता है। और भावनाओंका एक मन है, ऐसी भावनाओंका जिन्हें अभी आकार नहीं दिया गया है—ये महत्तर मनलोक प्राणमय गतियों और विरोधी शक्तियोंसे सर्वथा मुक्त हैं, क्योंकि यह उनकी पहुंचके बहुत ऊपर स्थित है। वहां परस्पर प्रतिकूल गतियां हो सकती हैं, ऐसी गतियां और रचनाएं हो सकती हैं जो सत्यके साथ टकराती हों, जो एक-दूसरेकी विरोधी हों, किंतु वहां प्राणमय क्षोभ नहीं है, ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे प्रतिकूल या शत्रु कहा जा सके। सच्चा दार्शनिक मन चिंतन करनेवाला आविष्कारक तथा आकार निर्माण करनेवाला मन और जिन्हें अभीतक आकार नहीं प्राप्त हुआ है ऐसी विशुद्ध भावनाओंवाला मन इस हीनतर आक्रमण और प्रभावकी पहुंचके परे है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि जिन विकृत या विरोधी सत्ताओंके विषयमें मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीतक कहा है उनसे अधिक शक्तिशाली तथा उच्चतर स्रोतवाली सत्ताओंके द्वारा इन मनोंकी गतियोंकी नकल नहीं की जा सकती, अथवा, इनकी सृष्टिका दुरुपयोग नहीं किया जा सकता।

चैत्य जगत्की अवस्थाएं कैसी हैं? वहां विरोधी शक्तियोंकी पहुंच है क्या?

चैत्य जगत् अथवा उसकी चेतनाकी भूमिका जगत्का वह भाग है, चैत्य पुरुष हमारी सत्ताका वह भाग है जो सदा भागवत चेतनाके प्रभावमें रहता है, विरोधी शक्तियां इसपर किसी प्रकारकी जरा-सी क्रिया भी नहीं कर सकतीं। यह सामंजस्यका जगत् है, और इसमें प्रत्येक वस्तु एक प्रकाशसे दूसरे प्रकाशकी ओर तथा एक प्रगतिसे दूसरी प्रगतिकी ओर गति करती है। यह भागवत चेतनाका, व्यक्तिमें रहनेवाली दिव्य आत्माका निवास स्थान है। यह प्रकाशका, सत्यका, ज्ञानका, सौंदर्य और सामंजस्यका केंद्र है जिसे दिव्य आत्मा अपनी उपस्थितिके द्वारा हममेंसे हर एकके अंदर थोड़ा-थोड़ा करके बनाती रहती है। यह भागवत चेतनाका एक अभिन्न अंग है और उसीके द्वारा प्रभावित, गठित और परिचालित होता है। यही तुममेंसे हर एकके अंदर वह गभीर आंतर सत्ता है जिसे अपने अंदर रहनेवाले भगवान्के संपर्कमें आनेके लिये तुम्हें ढूंढना होगा। यह भागवत चेतना और तुम्हारी बाह्य चेतनाके बीच संबंध जोड़ता है, आंतर जीवनको बनाता है, और बाह्य प्रकृतिमें भागवत संकल्पके अनुसार व्यवस्था और नियमकी अभिव्यक्ति करता है। यदि तुम अपने अंदर रहनेवाले चैत्य पुरुषसे अपनी बाह्य चेतनामें अवगत होकर उसके साथ एक हो जाओ तो तुम शुद्ध शाश्वत चेतनाको पा सकोगे और उसमें रह सकोगे; और साधारण मनुष्यकी तरह सदा अज्ञानद्वारा कर्ममें प्रवृत्त होनेके बदले, तुम अपने अंदर एक शाश्वत ज्योति और ज्ञानकी उपस्थितिका अनुभव करोगे, तुम इसीको आत्म-समर्पण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोगे और इसीको पूर्ण रूपसे आत्म-निवेदन करके इसीके द्वारा प्रत्येक कर्ममें चालित होते रहोगे।

क्योंकि, चैत्य पुरुष तुम्हारा वह भाग है जो भगवान्‌को अर्पित हो चुका है, इसका जो प्रभाव तुम्हारी चेतनाकी अत्यंत बाह्य और और स्थूल सीमाओंपर क्रमशः फैल रहा है, वही तुम्हारी संपूर्ण प्रकृतिका रूपांतर करेगा। यहां किसी प्रकारके अंधकारको स्थान नहीं है, यह तुम्हारा ज्योतिर्मय भाग है। अधिकतर मनुष्य, अपने अंदर रहनेवाले इस भागसे अनभिज्ञ हैं। योग-साधना तुम्हें इस भागके प्रति सचेतन बनानेके लिये है, जिससे तुम्हारे रूपांतरकी प्रक्रिया, शताब्दियोंमें पूर्ण होनेवाले एक मंद और लंबे प्रयासके बदले एक ही जीवन अथवा कुछ ही वर्षोंमें पूरी होनेवाली बन जाय।

चैत्य पुरुष वह है जो मृत्युके बाद भी बना रहता है, क्योंकि यह तुम्हारा शाश्वत व्यक्तित्व है और यही चेतनाको जन्म-जन्मांतरमें आगे बढ़ाता रहता है।

चैत्य पुरुष तुम्हारे अंदर स्थित सत्य, भागवत व्यक्तिका वास्तविक व्यक्तित्व है। कारण, तुम्हारे व्यक्तित्वका अर्थ है अभिव्यक्तिका एक विशेष प्रकार, और तुम्हारा चैत्य पुरुष उस भागवत चेतनाका —जिसने तुम्हारे अंदर रूप ग्रहण किया है—एक पहलू है। परंतु व्यष्टि-चेतना और विश्व-चेतनाके बीच जो भेद-भाव तुम्हारी प्रकृतिके अन्य भागोंमें है वह चैत्य पुरुषकी चेतनामें नहीं है। वहां तुम्हें इस बातका ज्ञान रहता है कि तुम्हारा व्यक्तित्व तुम्हारी अभिव्यक्तिका विशिष्ट प्रकार है, पर साथ-साथ तुम जानते हो कि वह अखंड विश्व-चेतनाकी ही बहिर्गत अभिव्यक्ति है। यह ऐसा है मानों तुमने अपने एक अंगको अपने-आपमेंसे निकाल बाहर कर अपने सामने रख लिया हो और अब दोनों आपसमें एक-दूसरेको देख रहे हों और दोनोंके बीच क्रियाओंकी लीला हो रही हो। अपने बहिर्गत रूपके साथ संबंध बनाने और स्थापित करने और उसे भोग सकनेके लिये यह द्वैत-भाव जरूरी था। किंतु चैत्य चेतनामें यह भेद-भाव, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वैत-भावको तेज करता है केवल भ्रमरूप, एक आभासमात्र अनुभव होता है, इससे अधिक कुछ नहीं।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

पांडिचेरीमें श्रीअरविंद

श्रीअरविंदको अंदरसे पांडिचेरी जानेका आदेश मिला। इन दिनों वे हर काम अंतरके आदेशके अनुसार ही किया करते थे, अतः, आदेश मिलते ही उन्होंने अपने एक साथी, सुरेशचन्द्र चक्रवर्तीको पांडिचेरीके लिये रवाना कर दिया ताकि वह वहां जाकर उनके रहनेकी व्यवस्था कर सके। वह छोटा-सा लड़का था, इसलिये उस-पर सरकारी गुप्तचर-विभागको कोई संदेह न हुआ और वह सुरक्षित पांडिचेरी जा पहुंचा।

पांडिचेरीमें उसे काफी कठिनाईका सामना करना पड़ा। वह जिन लोगोंके नाम संदेश लाया था वे कैसे मान लेते कि वह सच बोल रहा है, कि श्रीअरविंद सचमुच पांडिचेरी जैसे स्थानपर आ रहे हैं? खैर, थोड़ी-बहुत व्यवस्था तो हो गयी। उन लोगोंने सोचा, 'अगर श्रीअरविंद निश्चित दिन न आये तो वे यही मानेंगे कि इस लड़के, सुरेशको, विरोधियोंने हमें बहकानेके लिये भेजा है।

लेकिन सौभाग्यवश, श्रीअरविंद ४ अप्रैल, १९१० को 'डयूप्ले' नामक जहाजसे पांडिचेरी आ पहुंचे। उनके साथ विजय नामक एक युवक भी था। उन दिनों श्रीनिवासाचार्य, सुब्रह्मण्यम भारती आदि कई राष्ट्रीय कार्यकर्ता ब्रिटिश फंदेसे बचनेके लिये पांडिचेरी आ गये थे। श्रीअरविंदको अपने बीच पाकर उन लोगोंमें एक नया उत्साह आ गया।

बंगाल छोड़नेसे पहले श्रीअरविंद कुछ समय चंद्रनगरमें अज्ञातवास-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रहे थे। मानों उन्हें फुसलानेके लिये किसीने बिना हस्ताक्षरका एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था, "आप अज्ञातवासमेंसे बाहर क्यों नहीं आ जाते? सरकारने आपपर कोई मुकदमा तो चलाया नहीं है, फिर आपको इस तरह छिपनेकी जरूरत ही क्या है?" लेकिन श्री-अरविंद फंसे नहीं। वे पांडिचेरी आ ही गये। इस बीच यह अफ-वाहें भी फैलीं कि वे फ्रांस या जर्मनी जा रहे हैं और कोलंबोमें काफी कड़ी निगरानीकी व्यवस्था कर दी गयी।

लेकिन एक मजेदार चीज तो रह ही गयी। जब वसुदेव बालक कृष्णको लेकर वृन्दावन जा रहे थे तो जेलके दरवाजे खुल गये थे और पहरेदार सो गये थे, इतना ही नहीं, बेड़ियां भी छूट गयीं और सब प्रकारकी सहायता मिल गयी। पांडिचेरीके लिये रवाना होनेसे पहले श्रीअरविंद जब कलकत्ते में थे तो उन्हें अंतरसे चंद्रनगर जानेका आदेश मिला। विधिके विधानसे उनके मकानपर चौबीस घंटे नजर रखनेवाले गुप्तचर कहीं इधर-उधर हो गये। श्रीअरविंद संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी गलियोंमेंसे होते हुए घाटपर जा पहुंचे और सारे रास्ते कहीं कोई न दिखायी दिया। सब प्रकारके संकटोंकी संभावना होते हुए वे चंदन नगर जा पहुंचे। इसके बादका किस्सा तो आप सुन ही चुके हैं।

यहां हम पहली शताब्दीकी पांडिचेरीकी एक झांकी लेते चलें। राजा कोवलाके भाई इलांगो लिखते हैं: "खुली छतोंपर, गोदामों और बंदरगाहके आस-पास बने मकानोंपर हरिणकी आंखों जैसे हवाके लिये सूराख हैं (रोमन कमानवाली खिड़कियां)। सबपर धूप फैली रहती है।

"बंदरगाहमें बहुत-से आते-जाते जहाज दिखायी देते हैं जिनमें दूर देशोंके नाविक एक परिवारके रूपमें रहते हैं। इन यवनोंकी समृद्धि कभी कम नहीं होगी, नगरकी गलियोंमें फेरीवाले शृंगारकी चीजें, स्नानके लिये, शरीरको ठंडा रखनेके लिये कई तरहके चूर्ण, फूल, अगर, सुगंधित द्रव्य बेचते हैं। कहीं-कहीं जुलाहे रेशमी, सूती और ऊनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़े लिये बैठे हैं। गलियां कपड़े, मूंगे, चंदन, मेंहदी तथा अनमोल हीरे-जवाहर, मोती और गहनोंसे भरी दिखायी देती हैं।

"विदेशी व्यापारी अपने घर-द्वार छोड़कर यहां बस गये हैं। यहां की सफेद बालूपर उनकी लायी हुई चीजें बिकती हैं। शामके समय रंग-बिरंगे चूर्ण, चन्दन, चमेलीके फूल, इत्र, भांति-भांतिकी मिठाइयां, चतुर सुनार और गोटे-किनारीके कपड़े बेचनेवालोंके सामान, नाना प्रकारके आकार-प्रकारोंके झिलमिलाते दीपक चमक रहे हैं। समुद्र-तटपर एक प्रकाशस्तंभ है जो समुद्र-तटके जहाजोंको रास्ता दिखाता है। अजीब-अजीब भाषाएं बोलनेवाले विदेशियोंके अपने ही दीपक हैं और उन गोदामोंके दीपक जिनमें विदेशोंसे आया हुआ माल अटा पड़ा है — हर एककी अपनी शोभा है।"

यह सब पढ़कर ऐसा लगता है मानों तभीसे ओरोवीलकी तैयारी होती आयी है। यही समृद्ध नगरी बादमें मुरदा-सराय बन गयी। पुर्तगाल और डेनमार्कके लोग भी आये और अपनी-अपनी बोलियां बोलकर उड़ गये। फिर अठारहवीं शतीमें फ्रेंच लोगोंने इसे नया जीवन दिया। लेकिन वह भी श्मशानका जीवन बन गया।

जब श्रीअरविंद यहां आये तो पांडिचेरीकी क्या हालत थी? एक छोटा-सा कस्बा जिसमें यहां-वहां कुछ शहरी चीजें घुसा दी गयी थीं। पांडिचेरीको फ्रांसका हिस्सा माना जाता था और यहांके बहुत-से लोग फ्रांसको ही मातृभूमि मानते थे। ऐसे लोगोंका एक विशेष वर्ग था जिन्होंने फ्रांसकी नागरिकता प्राप्त कर ली थी। यह चीज तो दूसरे महायुद्धतक चलती रही। ब्रिटिश राज्यसे आनेवाले भारतीय यहांपर विदेशी कहलाते थे और राष्ट्रीयताके खानेमें उन्हें अंगरेज लिखा जाता था! फ्रांसके चप्पे-चप्पेका इतिहास और भूगोल जाननेवाले अफसर (काले फ्रेंच) पूछ लेते थे, "बंगाल कहां है? कलकत्तेमें?" इस तरहकी बेढंगी बातें आम थीं। उन दिनों लोग पांडिचेरीको श्मशान कहा करते थे जहां भूतोंकी कमी न थी।

पांडिचेरीके दो भाग थे, एक काला शहर और एक गोरा शहर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभावतः, गोरे शहरमें अधिकतर फ्रेंच लोग रहते थे। वहांके मकान भी अच्छे थे और सड़कें भी ज्यामितिके हिसाबसे बनी थीं। परंतु काले शहरको तो शायद भगवान्ने भी बिसरा दिया था। पांडिचेरी-के बन्दरगाहपर आनेवाले सामानपर कोई कर न लगता था, इसलिये यहांके बाजार फ्रेंच-मालसे पटे रहते थे और चीजें बहुत ही सस्ती थीं। हमें याद है दूसरे महायुद्धके पहलेतक अगर आप बाजारमें कोई देसी माल ढूंढनेकी कोशिश करते तो लोग आपको एक अजूबा मानकर देखने लगते थे।

यहां रोमन कैथोलिक धर्मका बहुत जोर था और एक अच्छी संख्या ऐसे लोगोंकी थी जो फ्रांस या फ्रांसके उपनिवेशोंमें नौकरी कर आये थे। फ्रेंच लोगोंकी संख्या भी शहरको देखते हुए काफी बड़ी थी। उनके विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल, क्लब, पुस्तकालय, खेलके मैदान थे। इस तरह फ्रेंच संस्कृतिकी एक अच्छी झांकी मिल जाती थी। पांडिचेरीके प्रतिनिधिको फ्रेंच संसदमें बैठनेका अधिकार था, परंतु प्रायः वह कोई फ्रेंच आदमी ही होता था।

फ्रेंच लोगोंको अपनी आनका काफी ख्याल रहता है। राजनीतिक कारणोंसे पीड़ित लोगोंको आश्रय देना वे अपना कर्तव्य समझते थे। श्रीअरविंदसे पहले कई राजनीतिक लोग ब्रिटिश भारतसे पांडिचेरी आ चुके थे, परंतु श्रीअरविंद सबसे ज्यादा "भयंकर" थे। अंगरेज कैसे मान लेते कि श्रीअरविंद सचमुच राजनीति छोड़कर ध्यान-धारणामें लग गये हैं और पांडिचेरीको ही अपनी तपस्याकी स्थायी गुफाके रूपमें स्वीकार कर चुके हैं? सरकारी और गैर-सरकारी अफवाहें फैलनी शुरू हुईं। आखिर ७ नवम्बर, १९१० को श्री-अरविंदने मद्रासके 'हिन्दू' के संपादकको एक पत्र लिखा जिसमें उन्होंने इस बातपर जोर दिया कि वे राजनीति छोड़ चुके हैं और कुछ इने-गिने मित्रोंको छोड़कर किसीसे मिलते तक नहीं।

श्रीअरविंदके मकानके चारों ओर गुप्तचर लगा दिये गये। खुल्लम-खुल्ला भी एक पुलिस चौकी रखी गयी। उनके ऊपर नजर रखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरी था और हो सके तो उन्हें ब्रिटिश भारत ले जाना और भी ज्यादा जरूरी था। फ्रेंच सरकारके लिये यह अपनी प्रतिष्ठाका सवाल था और अंगरेजोंके लिये स्वार्थका। अंगरेज चाहते थे कि किसी तरह यह सिद्ध कर दें कि श्रीअरविंद राजनीतिक षड्यंत्र कर रहे हैं। आम्भीसे लेकर जयचन्द और अमीचन्दतकको जन्म देनेवाली हमारी जन्मभूमिमें ऐसे शुभ कामोंमें सहायता करनेवालोंकी कमी नहीं रहती!

श्रीअरविंदको पांडिचेरीसे उड़ा ले जानेकी योजनाएं बनीं। परंतु सुरेशचन्द्र (मणि), विजय आदि युवक पूरी तरह जाग्रत रहते थे; उन चौकन्ने युवकोंकी आंखोंमें धूल झोंकना संभव न था। इसमें असफलता मिली तो एक नयी योजना बनी। स्थानीय भूतोंकी सहायतासे अंगरेज राज्यकी पुलिसने कुछ दस्तावेज, फोटो तथा अन्य कागज तैयार करवाये और उन्हें एक डब्बेमें बन्द करके श्रीअरविंदके मित्र, तथा पांडिचेरीमें राजनीतिक शरणार्थी वी. वी. एस. ऐयरके घरके कुंएमें डाल दिया। योजना यह थी कि अचानक पुलिस आयेगी और इन खतरनाक कागजोंकी खोज होगी और यह प्रमाणित हो जायगा कि श्रीअरविंद तथा उनके साथी हत्या तथा डाकेके लिये षड्यंत्र कर रहे थे। बस, इतना सिद्ध हो जाय तो सरकारके पौ-बारह।

लेकिन मुश्किल यह है कि 'सर्पाणां च खलानां च परद्रव्यापहारिणां अभिप्राया न सिद्धयन्ति तेनेदं वर्तते जगत्' (सांपों, खलों और दूसरोंके मालका अपहरण करनेवालोंकी इच्छाएं पूरी नहीं होतीं, इसीसे जगत् बना हुआ है)। घरकी नौकरानी पानी भरने गयी और वह डब्बा उसकी बाल्टीमें आ गया। नौकरानीको मजा आया। उसने डब्बा ऐयर महाशयको दिखाया। वे तुरन्त श्रीअरविंदके पास सलाह लेनेके लिये जा पहुंचे। श्रीअरविंदकी रायसे तुरंत मामलेकी रिपोर्ट पुलिसमें कर दी गयी। पुलिसने डब्बा खोला। उसमें कई ऊल-जलूल कागज थे, कुछ बंगला कागज थे और कालीकी एक मूर्ति थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन सब चीजोंको देखकर फ्रेंच मजिस्ट्रेट और पुलिस अफसर श्रीअरविंदके मकानकी तलाशीके लिये आये। श्रीअरविंद अपने स्थानसे न हिले। उन्होंने दोनोंसे कह दिया, "मकान खुला पड़ा है, जो चाहो देख लो।" दोनोंने देखा वहां किताबोंके सिवाय कुछ भी न था और किताबोंमें ग्रीक और लैटिनकी किताबें भी थीं। दोनों बड़े खुश हुए, एक-दूसरेसे कहने लगे, "यह आदमी लैटिन भी जनता है, ग्रीक भी जानता है! ऐसा आदमी दुष्ट कैसे हो सकता है?" दोनोंने श्रीअरविंदसे हाथ मिलाया और उनके मित्र बनकर लौटे।

लेकिन ब्रिटिश भारतकी पुलिस चुप न हुई। साम, दाम, दण्ड, भेद, सभीका उपयोग करना था उसे। अब श्रीअरविंदको सब्ज बाग दिखाये जाने लगे। उनके सामने सुझाव रखा गया कि वे दार-जीलिंग चले जायं। सरकार उन्हें काफी जमीन देगी और सब तरहकी सुविधाएं सुलभ कर देगी। बंगालके लाटसाहब उनसे भार-तीय दर्शन और योगके बारेमें बातचीत करने आयेंगे। श्रीअरविंद टस-से-मस न हुए। फिर यह सुझाव आया कि उन्हें अलजीरियामें बहुत बड़ी जगह दी जायगी। वे अपनें साथियोंको लेकर वहां बस जायं, लेकिन इसका भी वही असर हुआ। श्रीअरविंद अपनी गुफा छोड़नेके लिये किसी हालमें तैयार न थे। लेकिन सरकारके प्रयास समय-समयपर चलते ही रहे।

गुप्तचरों और पुलिसकी बात करते हुए एक मजेदार घटना और सुनते चलिये। श्रीअरविंदके साथ नगेंद्र नाग और वीरेन राय रहा करते थे। वीरेनकी गतिविधिसे कहीं कोई शंका न होती थी। उसने अचानक एक दिन अपना सिर मुंडा लिया। उसकी देखा-देखी मणि (सुरेश चक्रवर्ती) को न जाने क्या सूझी, उसने भी अपना सिर साफ कर लिया। वीरेन घबराया। उसने औरोंके सामने श्रीअरविंदसे कहा, "मुझे एक अपराध स्वीकार करना है। मैं अंगरेजोंका गुप्तचर हूं।" सब हंस पड़े। लोगोंने समझा यह कोई मजाक कर रहा है। पर वह गंभीर था। उसने हाथ जोड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "मैं सच कह रहा हूं। मैं गुप्तचर हूं। मैंने सिर इसलिये मुंडाया था कि पुलिसवाले मुझे दूरसे ही पहचान सकें। लेकिन बिना किसी कारणके इन बाबूने भी अपना सिर घुटवा डाला। आपको मेरी असलियतका पता चल गया होगा। मैंने आपके विरुद्ध कुछ नहीं कहा। लीजिये, मैं जा रहा हूं।" उसे इस कामके लिये जितना धन मिला था वह उसने श्रीअरविन्दके चरणोंमें रख दिया और चला गया।

इन्हीं दिनों श्रीअरविन्दने २३ दिनका उपवास किया। साधारणतः, उपवासका नियम यह है कि उपवाससे पहले अल्प भोजन शुरू किया जाता है और उपवासके बाद कई दिनोंतक फलोंका रस लेते हैं और वह भी नपा-तुला। उसके बाद कई दिनोंतक हल्का भोजन किया जाता है। यह सावधानी न बरती जाय तो उपवास करनेवालेका पेट हमेशाके लिये खराब हो जाता है। लेकिन श्रीअरविन्दने यह सब नहीं किया। उन्होंने पूरा भोजन खाकर उपवास शुरू किया और उपवास खतम करते ही सामान्य भोजन खाना शुरू कर दिया : ऐसे उपवासके समय यदि आदमी वैश्व प्राणसे शक्ति प्राप्त कर सके तो बहुत अच्छा परिणाम आता है। श्रीअरविन्दने यही किया था और इसी कारण दुष्परिणामोंसे बचे रहे।

वे महत्त्वपूर्ण रातें

साधारणतः, हम नींदमें एकदम अचेत होते हैं। हमारा मन न जाने कहां-कहां भटकता फिरता है, परंतु सवेरे उठकर उसे कुछ भी याद नहीं रहता। नींदके कई प्रकार होते हैं। एक भारी होती है। आदमी लड़ाई-भिड़ाई करता है, नशा पीता है, फालतू समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नष्ट करता है और थककर चूर हो जाता है। ऐसी अवस्थामें जो नींद आती है वह थकानेवाली होती है। आदमी जब सोकर उठता है तो थका हुआ, अनमना, चिड़चिड़ा होता है। यह नींद आराम नहीं देती।

कभी-कभी हमें दिन-भरकी घटनाएं ही अलग-अलग रूप लेकर दिखायी देती हैं। दिन-भरकी आशा, निराशा, प्रेम, युद्ध, भय और कामनाएं अगल-अलग मुखौटे पहनकर आ जाते हैं। इन स्वप्नोंका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता। कोई-कोई स्वप्न हमें अपनी नियति-की पूर्व सूचना दे देता है तो कोई दुःस्वप्न बनकर हमें झकझोर डालता है।

माताजी कोई साधारण लड़की न थीं। वे ऐसे-वैसे स्वप्न न देखती थीं। वे स्वप्नोंमें भगवान्का साक्षात्कार पाती थीं और यह जानती थीं कि इस दिव्य चेतनाको धरतीपर, हमारे दैनिक जीवनमें उतारा जा सकता है।

माताजी स्वप्नमें बहुत-से आध्यात्मिक लोगोंसे मिला करती थीं जो उन्हें भूत, भविष्य और वर्तमानके गुह्य रहस्य बताया करते थे। उनमेंसे कुछ उन्हें बादके जीवनमें भौतिक स्तरपर भी मिले। उन्हीं दिनों, जब उन्हें भारतीय रीति-नीति, धर्म या संस्कृतिके बारेमें विशेष पता नहीं था, माताजी बार-बार एक व्यक्तिको देखा करती थीं जिसे वे "कृष्ण" कहती थीं। उन्हें यह बतलाया गया कि उनका भविष्य इसीके साथ जुड़ा है और दोनोंका कार्य-क्षेत्र भारतवर्षमें होगा।

बहुत वर्षों बाद, १९१४ में जब माताजी पांडिचेरी आकर श्रीअर-विन्दसे मिलीं तो उन्हें ज्ञात हुआ कि ये कोई और नहीं, उनके स्वप्नों-के श्रीकृष्ण ही थे।

हां, तो हम माताजीके स्वप्नोंकी बात कर रहे थे। माताजीने 'ध्यान और प्रार्थना' नामक पुस्तकमें अपने एक स्वप्नकी बात लिखी है। तब वे तेरह वर्षकी थीं। वे कहती हैं:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रत्येक रात, ज्यों ही मैं बिछौनेपर लेटती, मुझे ऐसा मालूम होता कि मैं अपने शरीरसे बाहर निकल आयी हूं और सीधी ऊपर की ओर, अपने मकानके ऊपरकी ओर, फिर शहरके ऊपर, बहुत ऊंचाईपर उठ गयी हूं। फिर मैं देखती कि मैंने एक चमचमाता सुनहला चोगा पहन रखा है जो मुझसे बड़ा है, और जैसे-जैसे मैं ऊपर उठती वैसे-वैसे वह चोगा भी बढ़ता जाता, मेरे चारों ओर गोलाकार फैलता जाता, मानों शहरके ऊपर एक विशाल छतका रूप ले लेता। फिर मैं देखती कि सभी ओरसे मनुष्य, स्त्रियां, बच्चे, बूढ़े, बीमार, दुःखी बाहरसे आते हैं, वे चारों ओर फैले हुए चोगेके नीचे एकत्र होते और सहायताके लिये विनती करते, अपनी विपत्तियों, अपने दुःख-कष्टों, अपनी पीड़ाओंकी कहानियां सुनाते। उत्तरमें वह नमनीय और सजीव चोगा प्रत्येक व्यक्तिकी ओर अलग-अलग फैल जाता और ज्यों ही वे उसे छूते त्यों ही वे आश्वस्त या नीरोग हो जाते और शरीरसे बाहर निकलनेके समयसे अधिक प्रसन्न और सबल बनकर अपने शरीरमें वापस चले जाते। कोई दूसरी चीज इससे अधिक सुन्दर मुझे नहीं प्रतीत होती थी, कोई दूसरी चीज मुझे इससे अधिक सुख नहीं देती थी, और दिनके मेरे सभी कार्य रातके इस कार्य के मुकाबलेमें, जो कि मेरे लिये सच्चा जीवन था, बड़े नीरस और भद्दे, सच्चे जीवनसे खाली प्रतीत होते थे। प्रायः ही, जब मैं इस तरह ऊपर उठ जाती तब मैं अपनी बायीं ओर एक वृद्ध पुरुषको देखती जो नीरव और निश्चल दिखायी देते और जो मेरी ओर हिताकांक्षी स्नेहकी दृष्टिसे ताका करते तथा अपनी उपस्थितिसे उत्साहित करते। ये वृद्ध व्यक्ति जो गहरे बैंगनी रंगका एक लंबा चोंगा पहने होते — मुझे पीछे मालूम हुआ — उसकी साकार मूर्ति थे जिसे "दुःख-पुरुष" (मैन ऑफ सॉरोज़) कहते हैं।"

(श्रीमातृवाणी, खंड १; प्रार्थना और ध्यान; २२ फरवरी, १९१४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी और नारी

आजकल संसारमें नारी स्वातंत्र्यकी समस्याने बहुत जोर पकड़ लिया है। भारतके लिये यह कोई नयी बात नहीं है। यहीं यह कहा गया है: "यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" — जहां नारीकी पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं, और साथ ही नारी-को नरकका द्वार भी कहा गया है। जहां गृहिणीको गृह कहा गया है वहां नारीको पैरकी जूती भी बताया गया है। जहां स्वयं शक्तिको नारी रूप माना गया है जिसके मानव रूप हैं काली, दुर्गा, चंडी आदि, वहां उसे माया कहकर त्याज्य भी बताया गया है।

माताजी और श्रीअरविंदने अपने आश्रममें यथासंभव एकता और समानताका आदर्श रखा है। यहां उठने-बैठनेमें, खान-पानमें, खेल-कूदमें कहीं भी काले-गोरेका, गरीब-अमीरका या स्त्री-पुरुषका भेद नहीं किया जाता। जब गांधीजीका हरिजन उद्धार अपने पूरे जोबन-पर था तो उन्होंने कहा था, "मैं इतना प्रयास करके भी इस भेद-भावको नहीं मिटा पाता; माताजीने न जाने क्या जादू किया है कि आश्रममें यह सवाल ही नहीं पैदा होता!"

वेदोंके सुप्रसिद्ध विद्वान पं० सातवलेकर जब आश्रम आये तो जिस चीजने सबसे पहले उनका ध्यान खींचा वह थी लड़के-लड़कियों-की समानता। उनका कहना था कि भारतके पतनका सबसे बड़ा कारण है स्त्रीकी अवहेलना। उनका कहना था कि वैदिक कालमें आत्माका आत्माके साथ मिलन हुआ करता था, यह नहीं देखा जाता था कि वह आत्मा नर चोलेमें है या नारी चोलेमें। पंडितजीने कहा, "मैं देख सकता हूं कि माताजी आज उसी चीजको लानेकी कोशिश कर रही हैं। इस दिशामें सफल होना आसान नहीं है, पर इस मार्गपर चलना, इस दिशामें प्रयास करना अपने-आपमें बहुत बड़ी बात है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री और पुरुषकी समस्यापर बहुत कुछ लिखा और कहा गया है। कई बार माताजीसे भी इस विषयमें प्रश्न किये गये। एक बार तो माताजीने कहा था कि पता नहीं मानव इस दिशामें पाषाण युगके मनुष्यसे आगे बढ़ा है या नहीं। आज भी स्त्री और पुरुष एक-दूसरेके निरंकुश स्वामी और दयनीय दास हैं। यह बात चौंकानेवाली है। इस दासताके बारेमें माताजी कहती हैं: "हां, सचमुच दास, क्योंकि जबतक मनुष्यमें इच्छाएं हैं, अभिरुचियां और आसक्तियां हैं, तबतक वह इन व्यक्तियों और उन व्यक्तियोंका भी दास है जिनपर वह इन इच्छाओंकी पूर्तिके लिये निर्भर है!

"अतएव, स्त्री पुरुषकी दासी इसलिये है कि वह पुरुष और उसके बलके प्रति आकर्षण अनुभव करती है, उसके अंदर घर बसानेकी इच्छा होती है, वह घरसे प्राप्त होनेवाली सुरक्षा चाहती है और उसमें मातृत्वकी प्रति मोह भी होता है। इधर, पुरुष भी स्त्रीका दास है — अधिकार-भावनाके कारण, काम-वासनाकी तृप्तिकी इच्छा, शक्ति और तृष्णाके कारण, विवाहित जीवनकी छोटी-मोटी सुख-सुविधाओंके प्रति आसक्तिके कारण।

"इसलिये कोई भी कानून स्त्रीको बंधन-मुक्त नहीं कर सकता जबतक वह स्वयं अपने-आपको बंधन-मुक्त न करे। इसी तरह अपनी अधिकार जमानेकी आदतोंके होते हुए पुरुष भी तबतक दासतासे मुक्त नहीं हो सकता जबतक कि वह अपने अंदरकी दासतासे पिंड न छुड़ा ले।"

वर्तमान अवस्था तो यह है कि पुत्र हो या पति, वह हमेशा अपने-आपको घरकी स्त्रियोंसे बड़ा और गौरवपूर्ण मानता है और घर-भर पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहता है। उधर स्त्री अपने-आपको उत्पीड़ित करती है और प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे विद्रोह करना चाहती है। इन दोनोंका झगड़ा हर देशमें युग-युगसे चला आ रहा है। हां, देश-देशमें और युग-युगमें उसका रूप अलग-अलग रहता है। पुरुष हमेशा सारा दोष स्त्रीके सिर मढ़ता है और स्त्री पुरुषके सिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब कि वास्तवमें दोनोंका बराबर दोष है। जबतक प्रधानता और हीनताकी भावना नहीं जाती तबतक यह संघर्ष बना ही रहेगा।

एक बार कोई संभ्रांत और सुशिक्षित सज्जन माताजीके साथ अपने परिवारके बारेमें बातचीत कर रहे थे। उन्होंने अपनी कठिनाइयां गिनाते हुए कह दिया, "क्या करूं, मेरी पत्नी एकदम गंवार और पशुके जैसी है!" माताजी एकदम गंभीर हो गयीं। उन्होंने पूछा, "तुम्हारा व्याह हुए कितने बरस हो गये?"

"जी, पच्चीस वर्ष," उन सज्जनने कहा।

माताजीने कहा, "तो पच्चीस वर्ष हो गये तुम्हें अपनी स्त्रीके साथ रहते। इन पच्चीस वर्षोंमें उसे पशुसे मनुष्य बनानेके लिये तुमने कितना प्रयास किया? अपने बच्चोंकी पढ़ाईपर तुम कितना समय और धन खर्च करते हो? इसका एक प्रतिशत भी लगाया तुमने इसकी शिक्षापर? अगर तुम प्रति दिन एक घंटा भी इसे देते तो यह क्यासे क्या बन जाती, लेकिन तुमने कभी इस बारेमें सोचातक नहीं! तुमने बस, यही माना कि स्त्री तुम्हारा खाना पकाने और बच्चे पैदा करनेकी मशीन है, और अब बड़ी शानसे उसे दोष देते हुए कह रहे हो कि वह गंवार और पशु है। अगर ऐसी बात है तो उसकी पूरी-पूरी जिम्मेदारी किसी औरकी नहीं, तुम्हारी अपनी है।"

लड़कियोंके साथकी छेड़खानी करनेकी घटनाएं आये दिन होती रहती हैं। माताजीके पास भी ऐसी शिकायतें आती रहती थीं। उनका कहना था कि साधारणतः, लड़की छेड़े जानेमें एक अस्वस्थ रस लेती है, इसे वह एक छिपी हुई सराहना और प्रशंसा मानती है। वह सोचती है कि यह इस बातका प्रमाण है कि उसमें कुछ विशेषता है। अगर लड़कीमें यह अस्वस्थ वृत्ति और भय न हो तो कोई पुरुष उसे तंग करनेकी हिम्मत न करेगा। भय हमेशा उस चीजके लिये दरवाजा खोल देता है जिससे वह बचना चाहता है। और रुग्ण वृत्ति निमंत्रण देती है।

इस सिलसिलेमें माताजी अपने जीवनकी एक घटना सुनाया करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। तब उनकी उम्र शायद पंद्रहके आस-पास थी। वे किसी ललितकला विद्यालयमें चित्रकारीके लिये जाया करती थीं। एक बार विद्यालयके लड़के-लड़कियोंमें कुछ अन-बन हो गयी। लड़कोंने सभी लड़कियोंको एक कमरेमें घेर लिया। बेचारी लड़कियोंका आतंकके मारे बुरा हाल था। भयके साथ माताजीका कभी परिचय न हुआ था। वे घेराव करनेवाले लड़कोंके पास गयीं और बोलीं, "मुझे जाने दो।" भीड़ छंट गयी। रास्ता बन गया और माताजी एक राजकुमारीकी तरह बाहर निकल आयीं। वे कहा करती थीं कि यह बात कम या अधिक रूपमें सभीके लिये संभव है।

माताजी शारीरिक शिक्षापर बहुत बल दिया करती थीं। जब आश्रममें विद्यालयका श्रीगणेश हुआ तो उसके साथ-ही-साथ क्रीडांगण भी आया जहां लड़के-लड़कियोंको समान रूपसे व्यायाम करवाया जाता है। लड़कियां भी वर्दी पहनकर एथेलिटिक्स, जिमनास्टिक्स, जूडो आदि सीखती हैं और हर क्षेत्रमें लड़कोंके साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर चलती हैं। शुरू-शुरूमें बहुत-से लोग इसपर आपत्ति किया करते थे। उनका कहना था कि यह लड़कियोंके स्वास्थ्यके लिये और उनके सौंदर्यके लिये हानिकर है।

ऐसी बातोंके उत्तरमें माताजीने कहा, "शारीरिक शिक्षाका उद्देश्य है शरीरकी सभी संभावनाओंको विकसित करना। शरीरके एक-एक अंगमें सामंजस्य, शक्ति, नमनीयता, चतुरता, फुर्ती, सहनशीलता आदि को अधिक-से-अधिक बढ़ाना, अपने हाथ-पांव ही नहीं, सभी अंगों और इंद्रियोंकी क्रियाओंपर अधिकाधिक अधिकार पाना, अपने शरीर को इस योग्य बनाना कि वह ज्ञानपूर्ण संकल्प-शक्तिका अच्छा यंत्र बन सके। यह सभी मानव प्राणियोंके लिये आवश्यक और उपयोगी है। अतः कोई कारण नहीं कि लड़कियोंको इनसे वंचित रखा जाय।"

रही बात सौंदर्यकी, तो माताजी रंग-रोगनवाली गुड़ियाको सुन्दर नहीं मानतीं। माताजी सुन्दरताको बहुत अधिक महत्त्व देती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनका कहना है कि भगवान् भौतिक जगत्में सुन्दरताके द्वारा अभिव्यक्त होते हैं। उन्होंने यह भी कहा है कि हम सौंदर्यकी अवहेलना करके अपने अंदर आसुरी प्रभावको निमंत्रण देते हैं। लेकिन माताजी कामुकताको उत्तेजित करनेवाली चीजको, निम्न वृत्तियोंको उभारनेवाले साज-श्रृंगारको सौंदर्य नहीं मानतीं। उनके अनुसार, नारी सौंदर्यका आदर्श है अंगोंके परिमाणमें सामंजस्य, कोमलता और सामर्थ्य, नमनीयता और क्षमता, कमनीयता और दृढ़ता। और इन सबसे बढ़कर, उत्तम एकरूप और अपरिवर्तनशील स्वास्थ्य जो तभी प्राप्त होता है जब आदमीमें भागवत कृपाके लिये अटल श्रद्धा हो, शुद्ध-चरित आत्मा बननेकी बड़ी चाह हो, उच्चतर जीवनके लिये आकांक्षा और विश्वास हो।

माताजीकी शताब्दीके पुण्य अवसरपर हमारी यही प्रार्थना है कि भारतकी और भारतकी ही नहीं, समस्त संसारकी नारियां ऐसी बन सकें, क्योंकि, भावी मानवजातिका निर्माण उन्हींके हाथोंमें है।

श्रीरामकृष्णके वचन

लोग चौहद्दी लगाकर अपनी भूमिका बटवारा करते हैं, लेकिन सिरपर फैले आसमानको कोई नहीं बांट सकता। अविभाजनीय व्योम हर चीजको घेरे रहता है, हर एकको अपने अंदर लिये रहता है। इसी तरह अज्ञानवश साधारण आदमी कहता है, "मेरा धर्म ही एकमात्र धर्म है। मेरा धर्म सर्वश्रेष्ठ है।" लेकिन जब उसका हृदय सच्चे ज्ञानसे प्रबुद्ध होता है तब वह जान जाता है कि इन मत-मतांतरों और संप्रदायोंके झगड़ोंके ऊपर उस एक, अविभाज्य, अनंत और सर्वज्ञ परमानंदका राज्य है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो अपने गुरुको मानव माने उसे प्रार्थना और भक्तिसे क्या फल मिलेगा? हमें अपने गुरुको मामूली मनुष्य नहीं समझना चाहिये। भगवान्‌के दर्शन करनेसे पहले शिष्य दिव्य ज्योतिके पहले अंतर्दर्शन-में गुरुको देखता है, फिर स्वयं गुरु ही रहस्यमय रूपसे भगवान्‌में परिवर्तित होकर उसे भगवान्‌का दर्शन कराते हैं। तब शिष्य देखता है कि गुरु और भगवान् एक ही हैं। शिष्य जो भी वरदान मांगे दिव्य-रूप गुरु उसे प्रदान करते हैं। हां, गुरु उसे परमानंदतक, निर्वाणतक ले जाते हैं। हो सकता है कि मनुष्य आराध्य और आराधकका रिश्ता बनाये हुए द्वैतकी अवस्थामें रहनेका चुनाव करे। व्यक्ति जो भी मांगता है गुरु उसकी मांगको पूरा करता है।

*

समुद्रके बीचोंबीच, किसी जहाजके मस्तूलपर बैठा पक्षी अपनी स्थितिसे उकताकर किसी दूसरी जगहकी खोजमें उड़ जाता है। लेकिन हाय! आखिर वह निराश और थका-मांदा, उसी जहाजके मस्तूलपर लौट आता है। साधारण अभीप्सा करनेवालेका भी यही हाल है। वह अपने कर्तव्य और उस अनुशासनसे उकता जाता है जो उसपर हितैषी और अनुभवी गुरुद्वारा आरोपित किया गया है। वह आशा खो बैठता है। और चूंकि उसे गुरुपर विश्वास नहीं रहता इसलिये वह विशाल जगत्‌में एक नये गुरुकी खोजके लिये निकल पड़ता है। यह निश्चित है कि वह एक निष्फल खोजके बाद फिरसे उसी गुरुके पास लौट आयेगा। और तब अपने गुरुके प्रति उस पछताते हुए शिष्यका आदर दोगुना हो जाता है।

*

एक पुरानी कहावत है: "गुरु तो सैकड़ों, हजारों मिल सकते हैं लेकिन एक अच्छा चेला विरला ही होता है।" इसका मतलब यह है कि उपदेश देनेवालोंकी कोई कमी नहीं है, लेकिन उसका अनुसरण करनेवाले मुट्ठी-भर हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं कौन हूं

मैं संसारकी संगठित सेनाओंसे कहीं अधिक शक्तिशाली हूं।

मैंने राष्ट्रके सभी युद्धोंकी अपेक्षा कहीं अधिक मनुष्योंकी तबाही की है।

मैं गोलियोंसे अधिक घातक हूं और मैंने बड़ी-बड़ी तोपोंसे अधिक घर तबाह किये हैं।

केवल अमरीकासे ही मैं हर साल ५००,०००,००० डालर चुराता हूं।

मैं किसीको नहीं छोड़ता और धनी और दरिद्र, दोनोंमें समान रूपसे अपने शिकारको ढूंढ निकालता हूं; जवान और बूढ़े, सबल और दुर्बल, विधवाएं और अनाथ बच्चे, सब मुझे पहचानते हैं।

मैं हर साल हजारों-लाखों कमाई करनेवालोंकी हत्या करता हूं।

मैं अदृष्ट स्थानोंमें छिपा बैठा रहता हूं और अपना अधिकांश कार्य चुपचाप करता हूं; तुम्हें मेरे विरुद्ध चेतावनी दी जाती है, लेकिन तुम उसकी तरफ कान नहीं देते।

मैं निष्ठुर हूं।

मैं सब जगह, घरमें, रास्तोंपर, कारखानोंमें, रेलवे-क्रासिंग्स (फाटकों) पर और समुद्रपर, सभी जगह हूं।

मैं बीमारी, अधोगति और मृत्यु लाता हूं, और फिर भी विरले ही मुझसे दूर रहनेकी कोशिश करते हैं।

मैं बरबाद करता हूं, कुचलता हूं और लंगड़ा-लूला बना डालता हूं। मैं देता कुछ भी नहीं, लेकिन सब कुछ ले लेता हूं।

मैं तुम्हारा बुरे-से-बुरा शत्रु हूं।

इतना होते हुए भी लोग मुझे अबला समझते हैं और मुझे कहते हैं **लापरवाही**।

(संकलित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

२१ फरवरी, १९७९ को माताजीका जन्मदिन मनाया गया। आश्रमवासियों और बाहरसे आये हुए लोगोंने माताजी और श्रीअरविंदकी समाधि और उनके कमरोंके दर्शन किये। एक सुन्दर-सा माताजीका फोटो सबको दिया गया जिसपर श्रीअरविंदका यह संदेश छपा था: "हमेशा इस तरह व्यवहार करो मानो माताजी तुम्हें देख रही हैं, क्योंकि, वास्तवमें, वे हमेशा उपस्थित रहती हैं।" १० से १०.३० तक समाधिके चारों ओर ध्यान हुआ। शामको क्रीड़ांगणमें मार्च-पास्ट हुआ और उसके बाद सामूहिक ध्यान।

२८ फरवरीको ओरोवीलके ११ वें वार्षिकोत्सवके उपलक्ष्यमें सोसायटीने 'भारत निवास'में एक छोटे-से कार्यक्रमका आयोजन किया था।

१६ से २६ फरवरीतक सोसायटीद्वारा आयोजित एक स्वाध्याय शिविर हुआ जिसके निर्देशक थे डा. माहेश्वरी। इसमें श्रीअरविंद की पुस्तक 'द मदर' का अध्ययन किया गया।

२२ फरवरीको सोसायटीके कार्यालयमें एक सभाके सामने श्री नवजातने माताजीके शताब्दी वर्षमें किये गये कार्यका दिग्दर्शन कराया और भविष्यके लिये योजना प्रस्तुत की।

श्री नवजातने भोपाल, चंडीगढ़, बंगलौर, मद्रास, इंदौर, वाराणसी आदिके उत्सवोंमें भाग लिया।

११ फरवरीको **हैदराबाद**के 'इंस्टीट्यूट आफ ह्यूमन स्टडीज' में चंपकलालजी ने श्रीअरविंदके पवित्र अवशेष स्थापित किये। शामको सार्वजनिक्र सभामें उस्मानिया विश्व-विद्यालयके उपकुलपति श्री राम रेड्डीकी अध्यक्षतामें सभा हुई जिसमें आंध्र प्रदेशके मुख्य मंत्री श्री चेन्न रेड्डीने भी भाग लिया।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donated by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY

SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहु-मूल्य हो जायगा।

—श्रीम

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रासकी सोसायटी शाखाने 'शिक्षाके उद्देश्य'पर संभाषण प्रतियोगिता करवायी और वहां बैठकर अंगरेजी या तमिलमें 'मानवका भावी विकास' पर लेख लिखवाये गये। बहुत-से विद्यार्थियोंने भाग लिया। अच्छा बोलने-लिखनेवालोंको पुरस्कार दिये गये।

मणिपुरमें माताजीकी शताब्दी संबंधी पांच दिनका कार्यक्रम रखा गया। इसमें श्री माधव पंडितने भाग लिया।

कलकत्तेके श्रीअरविंद भवनमें ९, १०, ११ फरवरीको बाल-दिवस मनाया गया।

करीमगंजमें माताजी और श्रीअरविंदके छाया-चित्रोंकी प्रदर्शनी की गयी।

छोटा उदयपुर (गुजरात) में श्री अश्विन कापड़ियाने "सावित्री"पर भाषण दिया।

लखनऊ विश्व-विद्यालयके शिक्षा-विभागने 'शिक्षाके बारेमें माताजी' के विषयमें दो दिनका कार्यक्रम रखा जिसमें सर्वश्री सुरेश त्यागी, सुरेंद्र सिंह, तिवारी, सीताराम जायसवाल आदिने भाग लिया। न्याय-मूर्ति मिश्रने सभापतिका आसन ग्रहण किया। पुस्तक-प्रदर्शनी भी की गयी।

करीमपुर, राणाघाट, कृष्णनगर आदिमें भी बहुत-से विशेष आयोजन किये गये।

घोषणा

२४ मईसे ५ जूनतक पांडिचेरीमें श्रीअरविंद सोसायटीकी ओरसे शिक्षा शिविर होनेवाला है। जिन लोगोंको माताजी और श्रीअरविंद-की शिक्षा-प्रणालीमें रस है उनके लिये उपयोगी कार्यक्रम रहेगा। विस्तृत जानकारीके लिये श्री अश्विन महादेविया, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२ से पत्र-व्यवहार करें।

धनादेश भेजनेवालोंसे निवेदन है कि वे कूपनमें अपना नाम, पता और धन किस मदमें भेजा जा रहा है इसका उल्लेख अवश्य कर दिया करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 873

श्रीअरविंदाश्रमकी फिल्म 'माताजीके जीवनकी झांकियां', न्यू ला... प्रोडक्शन, सेवर्स स्ट्रीट, कटक-७५३००१ से मिल सकती हैं। वि... जानकारीके लिये उनसे पत्र-व्यवहार कीजिये।

माताजीका कुछ परिचय देनेवाली पुस्तक 'श्वेत कमल' छप... तैयार है। डिमाईके २०० पृष्ठ और १३ चित्रोंवाली पुस्त... दाम — सजिल्द : २५.०० अजिल्द : २०.०० रजिस्ट्रीका खर्च ४.०... पुरोधा या शब्द, श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी-६०५००२ से प्राप्य।

सोसायटीके नये केंद्र :

श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर
श्रीमातारविंद सेवा-संघ
द्वारा श्री बी. अजप्पा
डोड्डीकोप्पा-५७७४१३ पी. ओ. मूडी
ताल्लुक सोराब, जिला शिमोगा (कर्नाटक)

श्रीअरविंद सोसायटी सें...
द्वारा श्रीमती पुष्पा सच...
४, डा. सुन्दरी मोहन एव...
पी. ओ. कलकत्ता-७०००...
(पश्चिम बंगाल)

श्रीअरविंद सोसायटी सेंटर
द्वारा श्री अनिल कुमार गुप्त
खारी फाटक रोड,
विदिशा-४६४००१
जिला विदिशा (मध्य प्रदेश)

श्रीअरविंद स्वाध्याय केंद्र
द्वारा टी. एन. अग्रवाल
हनुमान रोड
पी. ओ. फिरोजाबाद-२८३२...
जिला आगरा (उ. प्र.)

श्रीअरविंद सेवक मंडल
द्वारा श्री श्याम बिहारी गुप्त,
पी. ओ. अजयगढ़-४८८२२०
जिला पन्ना (मध्य प्रदेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

मई १९७९ वर्ष ९, अंक १०, पूर्णांक १०६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संपादकीय : आश्रमपर हमला
श्रीअरविंदवाणी : शांति, स्थिरता और समता ('योगके आधार'से)
माताजीके वचन : योगके लिये शक्ति और अपूर्णताएं
मरते समय
काम — अनुबेन
सोसायटी समाचार
आ०

अग्निशिखाका वार्षिक चंदा है ६.०० और पुरोधाका ८.०० लेकिन इसमें किसी तरह छपाईका खर्च पूरा नहीं हो पाता। जो लोग अधिक चंदा दे सकते हैं वे अपनी सामर्थ्यके अनुसार अधिक भेजनेकी कृपा करें तथा नये ग्राहक बनानेकी भी कोशिश करें।

हमारा नवीन प्रकाशन

श्वेत कमल — माताजीके चरणोंमें : लेखक — रवीन्द्र
माताजीकी बाल्यावस्था, गुह्य विद्याएं, पांडिचेरीकी ओर, सहयोगी सिद्धि-दिवस, श्रीअरविंदाश्रम, आश्रममें शिक्षा आदि विषयोंका परिचय १३ चित्रोंसे सज्जित। मूल्य — सजिल्द : २५.०० अजिल्द : २०.००

पुरोधा :	वार्षिक ८.००	आजीवन १७५.००
अग्निशिखा :	वार्षिक ६.००	आजीवन १२५.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट, आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसयटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय :

आश्रमपर हमला

(हमारे पिछले अंकमें आश्रमके ऊपर आक्रमणकी बात पढ़कर कुछ पाठकोंने और अधिक जानकारी मांगी है। उनकी इच्छा पूरी करनेके लिये हम एक मित्रका लिखा हुआ लेख यहां दे रहे हैं।—सं०)

पांडिचेरी केन्द्र-शासित प्रदेश है। पिछले दिनों इसे तमिलनाडु-के साथ मिला देनेकी बात चली, तो यहां उसके विरोधमें २२ जनवरीको बड़ी हड़ताल की गयी। आश्रमके विभाग भी उस दिन बन्द रखे गये। आश्रमवालोंकी सहानुभूति उन लोगोंके साथ थी जो इस तरह मिलाये जानेका विरोध कर रहे थे, क्योंकि उनकी दृष्टिमें पांडिचेरीने पिछली कई शतियोंमें अपना एक अलग व्यक्तित्व बना लिया था और उसकी इन विशेषताओं और शासकीय व्यावहारिकताकी उपेक्षा करना बहुत वांछनीय नहीं है। इस सिल-सिलेमें हमें यह याद रखना चाहिये कि माताजीने कहा था, "बाहरी रूपसे भारतके प्रदेश अपनी प्रकृति, संस्कृति, रुचियों और भाषाओंमें एक-दूसरेसे बहुत अलग-थलग हैं। उन्हें कृत्रिम रूपसे मिला देनेका प्रयास केवल भयानक परिणाम ला सकता है।"

आश्रमवालोंका मनोभाव तो यह था, फिर भी उन्होंने देखा कि लोगोंके झुण्ड, विशेष रूपसे छोटे बच्चे, बड़े अव्यवस्थित ढंगसे दौड़ते-भागते आश्रमके मकानोंपर पथराव करने लगे। वे अपने भटके हुए उत्साहमें यह भी न जानते थे कि वे क्या और क्यों कर रहे हैं। उनके बाद आये और दल जिन्हें किसी भी परिभाषाके अनु-सार बच्चे नहीं कहा जा सकता। उन्होंने भी वही करना शुरू किया जो बच्चे कर रहे थे। जब उनसे इसका कारण पूछा गया,

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब उनसे कहा गया कि आश्रमवालोंको तो तुम्हारे भावके प्र सहानुभूति है, फिर तुम आश्रमपर पथराव क्यों कर रहे हो, तो उन पास कोई उत्तर न था।

लेकिन कुछ ही देर बाद पांडिचेरी-विलयविरोधी समितिके कु सदस्य वहां आ पहुंचे और उन्होंने भीड़से छंट जानेका आग्रह किया काश, उन लोगोंने जनताको पहले ही यह बताया होता कि पांडि चेरीमें आश्रमका अस्तित्व पांडिचेरीके अलग राज्य होंनेके पक्षमें ए बड़ी युक्ति है!

आश्रमके मकानोंको इस पथरावसे काफी नुकसान हुआ औ वहांके लोगोंको जनताके एक भागके इस बेतुके व्यवहारसे बहु धक्का लगा, फिर भी आश्रमने शांत रहनेकी ठानी। उसने आशा की कि भविष्यमें लोग अपना विरोध-प्रदर्शन करते समय ज्यादा उचित और वैध उपायोंसे काम लेंगे।

आशा खरी न उतरी

लेकिन ऐसा न होना था, न हुआ। २६ जनवरीको भारतीय गणतंत्र दिवस समारोहका बहिष्कार करनेका फैसला किया गया। यह फैसला पांडिचेरीके जबरदस्ती विलयन और हिन्दीके थोपे जाने के विरोधमें था। न जाने कौन-सी युक्तिसे फिर आश्रमके मकानों, कारखानों और खेतोंको आक्रमणका शिकार बनाया गया। एक बहुत ही उपेक्षित जमीनका टुकड़ा था। आश्रमने उसे अपने हाथमें लेकर बहुत-सा धन और बरसोंका परिश्रम लगाकर एक सुन्दर-से फूलों और फलोंके बगीचेमें बदल दिया। उसका नाम रखा गया 'नन्दनम्'। वह पांडिचेरीका उपेक्षित भाग पांडिचेरीका एक आकर्षण बन गया। वह भी आततायियोंके क्रूर हाथोंसे न बच सका। मकानोंकी तोड़-फोड़ हुई, मोटरों और एक नये ट्रेक्टरको तोड़ा-फोड़ा गया और पेड़-पौधे उखाड़ फेंके गये, मानों उन्होंने भी कुछ अपराध किया हो। इतना ही नहीं, इस अंधे पागलपनकी हद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गयी जब भारतवर्षके इस कोनेमें निरीह गौओंको बड़ी निर्दयतासे पीटा गया।

एक कारखाने — 'ओटो केअर' — के सभी कागज और अन्य सामानको भस्मसात् कर दिया गया। वहां मरम्मतके लिये आयी हुई दस मोटरें खड़ी थीं। उनमेंसे तीन तो बिलकुल ही जला दी गयीं और सातको तोड़ा-फोड़ा गया।

स्पोर्ट्स ग्राउण्डके पास एक लकड़ीका कारखाना है। जिसमें बहुत-सा फरनीचर रखा था, वह सब स्वाहा कर दिया गया। हाथ-बने कागजके कारखानेमें स्थानीय कर्मचारियोंके बच्चोंके लिये एक विद्यालय है, उसकी बुरी हालत कर दी गयी। बच्चोंकी सिलेटों-से लेकर उनके खानेके बरतनतक चकनाचूर कर दिये गये।

आस-पासके इलाकेमें खड़े कई मकानोंके साथ भी यही व्यवहार हुआ।

आश्रमने हस्तक्षेप क्यों न किया?

सभीको आश्चर्य था और नगरके बहुत-से लोगोंने पूछा भी कि जब आश्रममें इतने सारे युवक हैं जो अगर चाहते तो संपत्तिकी भली-भांति रक्षा कर सकते थे, फिर आश्रमवाले चुप क्यों बैठे रहे?

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, आश्रमको इस अच्छी नीयतसे किये जानेवाले प्रदर्शनके साथ सहानुभूति थी और उसने यह आशा न की थी कि इस प्रदर्शनका एक भाग ऐसा रूप ले लेगा। फिर उन्हें यह आशा थी कि आन्दोलनके नेता और पुलिस कानून और सुव्यवस्था बनाये रखनेके लिये काफी हैं। आन्दोलनके नेता, जो आश्रमके व्यवहारको अच्छी तरह समझते थे, आश्रमके मैनेजिंग-ट्रस्टीसे मिलते-जुलते रहे।

लेकिन यह तथ्य है कि जब आश्रमवालोंको पता लग गया कि कुछ लोग स्थितिका लाभ उठाकर आश्रमको नुकसान पहुंचाना चाहते हैं, तब भी उन्होंने सामना न करनेका निश्चय किया। सचमुच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कठोर संयम था। जो युवक अलग-अलग विभागोंकी निगरानी कर रहे थे और हर तरहका खतरा उठानेके लिये तैयार थे, उन्हें भी तुरन्त वापिस बुलाकर एक केंद्रीय अनुशासनमें रखा गया। कोई भी समझदार व्यक्ति यह अंदाज़ लगा सकता है कि अगर आश्रमके लोग, जिनकी शिकायतें सच्ची थीं, निरपराध लोगोंको हानि पहुंचानेवालोंसे भिड़ जाते तो क्या परिणाम आता। तब स्थिति और ज्यादा खराब हो जाती और सच्ची समस्या धुंधली पड़ जाती। इस दृष्टिसे आश्रमवालोंने इस व्यर्थके विनाशकी सूचना अखबारोंमें भी नहीं भेजी।

आक्रमणकी कहानी

श्रीअरविंद आश्रमका इतिहास आधुनिक पांडिचेरीके इतिहासका एक आवश्यक अंग है। पिछले पचास-साठ वर्षोंमें पांडिचेरीके विकास और आश्रमके विकासकी कहानी एक-दूसरेके साथ घुली-मिली रही है। सभी सम्बद्ध व्यक्तियोंके लिये यह सन्तोषका विषय है कि आश्रम और पांडिचेरीवालोंके सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहे हैं।

आक्रमणके दूसरे दिन जब पांडिचेरीके प्रतिष्ठित लोगोंने अपनी निजी जानकारीके बलपर यह बताया कि आश्रमपर हमला करनेके लिये बाहरसे गुण्डे बुलाये गये थे, तो हमने उनकी बातपर विश्वास कर लिया, क्योंकि यह स्पष्ट ही था कि पांडिचेरीवालोंको इस हमलेसे कोई लाभ न हो सकता था। वास्तवमें, आश्रमसे दूर-स्थित दो खेतों — 'ग्लोरिया' और 'लेक' — में पासके गांववाले सामने आ गये और पहलेसे ही उन्होंने संपत्तिको बचानेकी व्यवस्था कर ली। 'ओरोशिखा' — अगरबत्ती विभाग — में वहांके गांवके लोग बड़े उत्साहसे पहरा दे रहे थे।

आश्रमपर हमला करनेके लिये बाहरसे गुण्डे बुलानेका क्या अभिप्राय था? एक मान्यता यह है कि चूंकि आश्रम देश-भरमें प्रतिष्ठित संस्था है, इसलिये इसपर हमला करनेसे देश-भरमें विलयन-विरोधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंदोलनके विरुद्ध भावना पैदा की जा सकती है। इसका मतलब यह हो सकता है कि यह आक्रमण उन लोगोंने करवाया जो जन-आंदोलनको बदनाम करना चाहते थे।

यह बात सही हो भी सकती है और नहीं भी। हम इसका उल्लेख केवल यही दिखानेके लिये कर रहे हैं कि मुट्ठी-भर लोग भीड़को बहकाकर उससे ऐसे काम करवा सकते हैं जो उसे इकट्ठा करनेवालोंके उद्देश्यके बिल्कुल विपरीत हो।

एक और मान्यता यह है कि कुछ लोग आश्रमको हानि पहुंचाना चाहते थे, उन्होंने इस अवसरका लाभ उठाकर बाहरसे गुण्डे मंगा लिये और यहां यह गप फैला दी कि आश्रम विलयनके पक्षमें है। एक और मान्यता यह है कि दो परस्पर-विरोधी राजनीतिक दलोंमें स्पर्धा थी, उनमेंसे हर एक आश्रमपर आक्रमण करके ख्याति पा लेना चाहता था।

हमें पता नहीं और हम इस विषयमें खोज भी नहीं करना चाहते।

१९६५ में हिन्दी विरोधी-आंदोलनके दौरान आश्रमपर आक्रमण किया गया था। तब भी आश्रमवाले आश्चर्यमें पड़ गये थे। आश्रममें हिन्दी बोलनेवालोंकी संख्या बहुत कम है। कोई भी गंभीरता-से यह नहीं मान सकता कि आश्रमने कभी हिन्दी-प्रचारके लिये कोई काम किया है; माताजीने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया था कि अभीके लिये अंगरेजी ही संपर्क-भाषा बनी रहनी चाहिये। अगर भारतीय किसी राष्ट्रभाषापर एकमत हो सके तो वह सरल संस्कृत होनी चाहिये। 'श्रीअरविंद अन्तरराष्ट्रीय शिक्षा-केंद्र' में अंगरेजी और फरासीसी शिक्षाकी माध्यम हैं। विद्यार्थियोंको अपनी मातृ-भाषा और संस्कृत सीखनेके लिये भी प्रोत्साहित किया जाता है। वहांपर कई विदेशी और अधिकतर भारतीय भाषाएं सिखानेकी व्यवस्था है।

जिन्होंने श्रीअरविंदके ग्रंथ पढ़े हैं और यह विश्वास करते हैं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये ग्रंथ भावी मानवजातिके लिये प्रकाश-स्तंभ हैं, वे स्वभावतः भारतमें अंगरेजीका विरोध नहीं कर सकते, क्योंकि ये सभी ग्रंथ अंगरेजीमें हैं।

हम यह नहीं कहते कि अगर आश्रमका मन्तव्य कुछ और होता तो उसपर आक्रमण न्यायसंगत होता। हमारे दिये हुए तथ्य केवल इस बातपर जोर देते हैं कि हिन्दी-विरोधी भावको आधार बनाकर आश्रमपर हमला करना कितना बेतुका काम था।

यहां यह कहना अप्रासंगिक न होगा कि १९४०के दशकमें फ्रेंच सरकार पांडिचेरीमें श्रीअरविंदके नामसे एक आदर्श विश्व विद्यालय स्थापित करनेकी सोच रही थी। श्रीअरविंदकी जन्म-शताब्दी (१९७२) मनानेके लिये भारत सरकारने जो राष्ट्रीय समिति बनायी थी, उसने फिरसे इस बातको उठाया था। यह विचार न तो आश्रमसे आया था, न आश्रमका इसके साथ कोई संबन्ध था। फिर भी कुछ लोगोंने इस अवसरका लाभ उठाकर आश्रमके विरुद्ध विष-वमन किया, मानों विश्व विद्यालयके साथ श्रीअरविंदका नाम जोड़ देने-भरसे आश्रमको कोई लाभ हो सकता था!

पांडिचेरीने इस नामका विश्व विद्यालय खो दिया। यह भविष्य ही बतायेगा कि क्या उसके विरुद्ध इस प्रकारका आंदोलन चलाना युक्तियुक्त था? क्या यह ज्यादा अच्छा न होता कि पांडिचेरीमें श्रीअरविंदके नामसे एक आदर्श विश्व विद्यालयकी स्थापना हो जाती? आश्रम इस बारेमें तब भी चुप था और अब भी चुप है। हम यहां सिर्फ यही दिखाना चाहते हैं कि कुछ लोग बिना बातके हर चीजमें आश्रमका नाम घसीटनेकी कोशिश करते हैं, चाहे आश्रमके साथ उसका दूरका संबंध भी न हो।

कहते हैं कि आश्रमके विरुद्ध भावनाएं उभारनेके लिये यह नारा बहुत काम आता है कि आश्रम उत्तरके लोगोंका गढ़ है। बड़े दुःखकी बात है कि आज भी देशमें ऐसे लोगोंकी संख्या कम नहीं हैं जो जातियों, प्रदेशों, भाषाओंके आपसी-कलह जगाकर फलते-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलते हैं। वे इस तथ्यकी ओरसे आंखें मूंद लेते हैं कि भारतके नगर-नगरमें सभी प्रदेशों, जातियों और क्षेत्रोंके लोग भरे हैं। कहीं तो उनकी संख्या हजारोंमें पहुंच जाती है। इस देशके इस ताने-बानेको क्षुब्ध करना सारे देशके लिये हानिकर है।

श्रीअरविंद आश्रममें लगभग १८०० व्यक्ति हैं जिनमें पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिणके ही नहीं, विदेशोंके लोग भी शामिल हैं। जानकार लोगोंका कहना है कि दुनिया-भरमें कोई दूसरी जगह ऐसी नहीं है जहां विभिन्नतामें एकताका ऐसा सुंदर, सहज उदाहरण मिल सके।

आश्रम और पांडिचेरी

सिर्फ यह तथ्य ही कि माताजी और श्रीअरविंदने पांडिचेरीको अपनी साधना-पीठके रूपमें स्वीकार किया था, इस बातके लिये काफी है कि आश्रमके लोग पांडिचेरीको एक पवित्र तीर्थ-स्थानके रूपमें स्वीकार करें और वहां रहनेमें गर्वका अनुभव करें। और आज केवल भारतमें ही नहीं, सारे संसारमें अनगिनत लोग ऐसे हैं, और उनकी संख्या बढ़ती जा रही है, जो माताजी और श्रीअरविंदके भक्त या प्रशंसक होनेके नाते पांडिचेरी-यात्राको बहुत अधिक महत्त्व देते हैं।

भगवान्ने श्रीअरविंदाश्रमके लिये और स्थानोंको छोड़कर पांडि-चेरीको चुना है, यह पांडिचेरीके लिये भी गौरवकी बात है। यह संस्था समस्त भारतकी एकताका प्रतीक है। पांडिचेरीकी जिम्मे-दारी है कि वह इसके फलने-फूलनेमें सहायता दे, इसकी रक्षा करे।

यहां श्रीअरविंद-दर्शनका परिचय देनेके लिये स्थान नहीं है, जिन्हें रस हो वे माताजी और श्रीअरविंदके ग्रंथोंको मूल भाषामें या अनु-वादमें पढ़ सकते हैं। श्रीअरविंद हमें मनुष्यके उज्ज्वल भविष्यका आश्वासन देते हैं। उनका कहना है कि मनुष्य विकास-मार्गपर है और वह समय आ रहा है जब वह इस वर्तमान अवस्थासे उठकर एक उच्चतर सत्ता बन जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजका संसार नाना प्रकारके वादों, प्रतिवादों और तुच्छ झंझटोंमें फंसा तड़प रहा है। श्रीअरविंदका संदेश बहुत बल देता है। संसार धीरे-धीरे, परंतु निश्चित रूपसे, उनकी शिक्षाकी ओर आंखें खोल रहा है। इस संदेशको फैलाने और उसे सुरक्षित रखनेमें आश्रम और पांडिचेरीकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

'श्रीअरविन्द अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा-केंद्र' आश्रमका ही एक भाग है। वहां शिक्षा-विषयक कुछ ऐसे परीक्षण किये जा रहे हैं जिन्होंने सारे संसारके उच्च कोटिके शिक्षाविदों और मनीषियोंका ध्यान खींचा है। जगह-जगहकी शिक्षण-संस्थाओंसे लोग यहां प्रेरणा लेनेके लिये आया करते हैं और अपनी-अपनी ग्रहणशीलताके अनुपातमें अपनी झोली भरकर ले जाते हैं।

लेकिन अगर शुद्ध रूपसे सामाजिक और आर्थिक दृष्टिसे ही देखें तो स्वीकार करना पड़ेगा कि पांडिचेरीके विकासमें आश्रमने महत्त्वपूर्ण भाग लिया है। माताजी और श्रीअरविन्दके मतानुसार जीवनका हर क्षेत्र, प्रत्येक मानव क्रिया साधनाका अंग है। इसीलिये आश्रम कर्मका त्याग नहीं करता। सभी आश्रमवासी काम करते हैं और इससे आश्रमका काम चलानेमें भी सहायता मिलती है।

इस सिलसिलेमें आश्रमने कुछ छोटे-छोटे कारखाने खड़े किये हैं, उसके कुछ खेत हैं और मुद्रणालय आदि हैं जिनमें बड़ी संख्यामें मजदूर और कारीगर काम करते हैं। इस तरह पांडिचेरीके सैंकड़ों परिवार आर्थिक दृष्टिसे आश्रमके साथ संबंध रखते हैं। आश्रमने बड़ी संख्यामें मकान कियायेपर ले रखे हैं। आश्रमके कारण ही पांडिचेरी भारतके प्रमुख यात्रा-स्थलोंमेंसे एक है जिससे पांडिचेरीको काफी आमदनी होती है। विभिन्न प्रदेश अपने यहां नये उद्योग-धंधे खोलनेके लिये उत्सुक रहते हैं। कई उद्योगपति पांडिचेरीमें केवल इसीलिये बसे हैं ताकि वे आश्रमके साथ संपर्क रख सकें।

आश्रममें साधक अपने आध्यात्मिक लक्ष्यको पानेकी कोशिश करते हैं। समाजकी दृष्टिसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि यहां सामूहिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनमें भी आध्यात्मिक परीक्षण हो रहे हैं। सभी साधक अलग-अलग व्यक्ति हैं, फिर भी वे अपनी एक और अभिन्न अभीप्सामें जुड़े हुए हैं। माताजीने कभी बाहरी एकरूपता लानेके लिये कोई नियम लागू नहीं किये। वे चाहती थीं कि साधक अंदरसे फले-फूले। मानवजातिकी चेतनाके विभिन्न स्तरोंसे आये हुए लोगोंमें इस प्रकारका आंतरिक अनुशासन ही समस्त मानवजातिकी चेतनापर कोई प्रभाव डाल सकता है।

इस प्रकारके, इतने बड़े पैमानेपर होनेवाले परीक्षणके लिये एक विशेष वातावरणकी जरूरत होती है। अगर आश्रम साधकोंको यह विशेष वातावरण न दे पाय तो वह अपने लक्ष्यमें सफल न हो पायेगा। इसी कारण, आश्रममें एक प्रकारका लगाव-सा है। भारतवर्षके लिये यह कोई नयी चीज नहीं है। अगर कोई समूह औरोंको किसी प्रकारकी क्षति पहुंचाये बिना अपने उद्देश्यकी पूर्तिके लिये अपना अलग-अलग जीवन बिताना चाहता है तो सामान्य समाजको उसकी भावनाओंका आदर करना चाहिये और उसे अपने कामके लिये खुली छूट देनी चाहिये।

यह जानी हुई बात है कि श्रीअरविन्दाश्रम राजनीतिमें भाग नहीं लेता, इसलिये यह आशा नहीं की जा सकती कि आश्रम शुद्ध राजनीतिक समस्याओंके बारेमें अपना मत लेकर सामने आयेगा। अगर आश्रम किन्हीं राष्ट्रीय प्रश्नोंपर अपना मत प्रकट करना चाहे तो उसे इस विषयमें अपनी विवेकबुद्धिके साथ काम करनेकी छूट होनी चाहिये।

हां, जब आश्रमवालोंका सामान्य जनतासे पाला पड़ता है तो उसकी अपनी कुछ कठिनाइयां होती हैं। आश्रम एक बड़ी संस्था है जिसमें सब प्रकारके लोग भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक, भाषागत तथा अन्य प्रकारकी विभिन्नताएं लेकर आये हैं। वहां हजारों यात्री आते हैं जिनमेंसे कुछ सच्चे जिज्ञासु होते हैं और कुछ केवल कौतूहलवश आते हैं। आशा तो यही की जाती है कि आश्रममें रहते समय ये लोग अमुक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकारका आचरण करेंगे, पर उन्हें बाधित नहीं किया जा सकता, य छोटी-मोटी त्रुटियां हैं, पर सद्भावनावाले लोग आश्रमकी अ सृजनात्मक गतिविधियोंके सामने इन्हें कोई महत्त्व नहीं देते। यह हम १९६५ में दिये गये माताजीके एक वक्तव्यको फिरसे उद्ध करनेका लोभ संवरण नहीं कर सकते। वे कहती हैं:

"जो लोग चीजोंको ऊपरी दृष्टिसे ही देखते हैं वे पूछ सकते हैं कि आश्रम इस नगरमें इतने वर्षोंसे चला आ रहा है, फिर भी वहांके लोगोंको पसंद क्यों नहीं?

इसका पहला उत्तर यह दिया जा सकता है कि इस नगरमें जो सांस्कृतिक दृष्टिसे, बुद्धि, शिक्षा और सद्भावकी दृष्टिसे ऊंचे स्तरके लोग हैं उन्होंने न केवल आश्रमका स्वागत किया है, बल्कि वे उसके साथ सहानुभूति रखते हैं और उसके लिये प्रशंसा और सद्भाव भी व्यक्त करते हैं। पांडिचेरीमें श्रीअरविन्दाश्रमके बहुत-से सच्चे और वफादार मित्र और अनुयायी हैं।

हमारी स्थिति स्पष्ट है:

हमारा किसी मत या धर्मसे कोई झगड़ा नहीं है।

हमारा सरकारके किसी रूपसे झगड़ा नहीं है।

हम किसी सामाजिक वर्गसे नहीं झगड़ते।

हम किसी राष्ट्र या संस्कृतिके विरुद्ध नहीं लड़ रहे।

हम लड़ रहे हैं विभाजन, अचेतना, अविद्या, तमस् और असत्यके विरुद्ध।

हम धरतीपर ऐक्य, ज्ञान, चेतना और सत्यकी स्थापना करना चाहते हैं और जो कुछ ज्योति, शांति, सत्य और प्रेमकी इस नवीन सृष्टिके आगमनका विरोध करता है हम उसके विरुद्ध लड़ते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिरता-शांति-समता

"शांति, स्थिरता, अचंचलता और निश्चल नीरवता" — हर एक शब्दमें अपनी अर्थ-छटा है, लेकिन उनकी परिभाषा करना कठिन है।

"पीस" है शांति;
"काम" है स्थिरता;
"क्वायट" है अचंचलता और
"साइलेंस" है निश्चल-नीरवता।

*

अचंचलता एक ऐसी दशा है जिसमें कोई चंचलता या विक्षोभ नहीं होता।

स्थिरता अधिक अटल अवस्था है जिसपर किसी विक्षोभका असर नहीं पड़ता — यह अचंचलताकी अपेक्षा कम नकारात्मक स्थिति है।

शांति और भी अधिक भावात्मक स्थिति है; इसमें एक सुप्रतिष्ठित सामंजस्यपूर्ण विश्राम और मुक्तिका भाव रहता है।

निश्चल-नीरवता एक ऐसी अवस्था है जिसमें मन या प्राणमें कोई गति नहीं होती या एक ऐसी निस्तब्धता होती है जिसे कोई ऊपरी गति न तो भेद सकती है, न बदल सकती है।

*

अचंचलता बनाये रखो और इस बातकी परवाह न करो कि अभी-के लिये वह रिक्त अचंचलता है; चेतना प्रायः एक बरतनकी तरह होती है जिसे उसमें भरी मिश्रित या अवांछनीय चीजोंसे खाली करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ता है; उसे कुछ समयके लिये तबतक खाली रखना पड़ता है जब-तक कि उसे नयी और सत्य, उचित और शुद्ध चीजोंसे न भरा जा सके। तुम्हें एक बातसे बचना चाहिये, प्याला कहीं फिरसे उन्हीं गंदी चीजोंसे न भर जाय। इस बीच प्रतीक्षा करो, अपने-आपको ऊपरकी ओर खोलो। बहुत अधिक बेचैनी-भरी उत्सुकतासे नहीं, बहुत धीरता और स्थिरताके साथ उस नीरव-निश्चलतामें शांतिका आवाहन करो और एक बार शांति आ जाय तो आनंद और भागवत उपस्थितिका आवाहन करो।

*

स्थिरता, चाहे वह शुरूमें एक अभावात्मक चीज ही मालूम होती हो, प्राप्त करना इतना कठिन है कि उसकी जरा-सी प्राप्तिको भी प्रगतिका एक बहुत बड़ा कदम मानना चाहिये।

वास्तवमें, स्थिरता अभावात्मक चीज नहीं है। वह सत्पुरुषका अपना स्वरूप है और भागवत चेतनाका भावात्मक आधार है। और, चाहे जिस चीजके लिये अभीप्सा की जाय, चाहे जो प्राप्त हो, इसे बनाये रखना चाहिये। यहांतक कि अगर ज्ञान, शक्ति, आनंद भी आयें और इस आधारको न पायें, तो वे भी यहां नहीं टिक सकते और तबतकके लिये लौट जाते हैं जबतक भागवत शुद्धि और सत्-पुरुषकी शांति यहां स्थिर रूपसे न हों।

शेष भागवत चेतनाके लिये अभीप्सा करो, लेकिन करो स्थिर, गहरी अभीप्साके साथ। वह तीव्र होनेके साथ-साथ स्थिर हो सकती है, लेकिन अधीर, बेचैन या राजसिक उत्सुकतासे भरी न हो।

अतिमानस सत्य केवल अचंचल मन और सत्तामें ही अपनी सत्य सृष्टिका निर्माण कर सकता है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह निश्चित है कि साधनामें अनुभूतियां मानसिक स्तरसे शुरू होती हैं, — बस, आवश्यकता इस बातकी है कि अनुभूति निर्दोष और निष्कपट हो। मनमें समझ और संकल्प-शक्तिका दबाव और हृदयमें भगवान्के प्रति भावावेग — ये दोनों योगके पहले अभिकर्ता हैं और यथार्थमें जिस प्रथम आधारकी सबसे पहले जरूरत है वह है शांति, शुद्धि और स्थिरता (और साथ ही निचली बेचैनीको शांत कर देना)। प्रारंभमें इसे पाना अति-भौतिक जगतोंके झांकी पाने या अंतर्दर्शन पाने, वाणियां सुनने या शक्तियां पानेसे ज्यादा जरूरी है। शुद्धि और स्थिरता योगकी पहली आवश्यकताएं हैं। इनके बिना भी आदमीको इस प्रकारकी अनुभूतियां (सूक्ष्म जगत्, अंतर्दर्शन, वाणी आदि) प्रचुर मात्रामें हो सकती हैं, लेकिन जब ये अनुभूतियां अशुद्ध और अशांत चेतनामें होती हैं तो वे प्रायः अव्यवस्थित और मिश्रित रहती हैं।

पहले-पहल शांति और स्थिरता निरंतर नहीं बनी रहतीं, वे आती-जाती हैं और सामान्यतः, प्रकृतिमें स्थिर होनेके लिये उन्हें बहुत समय लगता है। इसलिये अधीरतासे बचकर जो काम किया जा रहा है उसीको लगातार करते जाना चाहिये। अगर तुम शांति और स्थिरताके परे कुछ और भी पाना चाहो तो वह चीज होनी चाहिये तुम्हारी आंतरिक सत्ताका पूरी तरह खुलना, और तुम्हारे अंदर काम करती हुई दिव्य शक्तिके प्रति सचेतनता। उसके लिये सचाईके साथ, बड़ी तीव्रतासे, लेकिन अधीरताके बिना अभीप्सा करो और वह आ जायगी।

*

आखिर तुम्हें साधनाका सच्चा आधार मिल गया। यह स्थिरता, शांति और समर्पण ही वह समुचित वातावरण है जिसमें बाकी चीजें, ज्ञान, बल और आनंद, आती हैं। इसे पूर्ण होने दो।

जब तुम काममें लगे रहते हो तब यह स्थिति नहीं रहती, क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह अभीतक ठीक मनके क्षेत्रतक ही सीमित है और मनने अभी हालमें ही निश्चल-नीरवताका उपहार पाया है। यह त्रुटि तब गायब हो जायगी जब नयी चेतना पूरी तरहसे बन जायगी और प्राणमय प्रकृति और भौतिक सत्तापर अपना पूरा अधिकार कर लेगी। (अभीतक निश्चल-नीरवताने प्राणको छुआ-भर है या उसपर छा गयी है, अभीतक उसपर अधिकार नहीं पाया है।)

अभी तुम्हारे मनमें जो शांतिकी अचंचल चेतना है उसे केवल स्थिर ही नहीं, विशाल भी होना चाहिये। तुम्हें उसे हर जगह अनुभव करना चाहिये, अपने-आपको और सबको उसके अंदर। इससे कर्ममें स्थिरताको आधार बनानेमें सहायता मिलेगी।

तुम्हारी चेतना जितनी विस्तृत होगी, तुम ऊपरसे उतना ही अधिक पा सकोगे। शक्ति नीचे उतर सकेगी और अपने साथ बल, ज्योति और साथ ही शरीरमें शांति ला सकेगी। तुम्हें अपने अंदर जो चीज संकीर्ण और सीमित लगती है वह है भौतिक मन। वह तभी विस्तृत हो सकता है जब यह विस्तृत चेतना और ज्योति नीचे आयें और प्रकृतिपर अधिकार कर लें।

तुम जिस भौतिक तमस्से पीड़ित हो उसके घटने और गायब होनेकी संभावना तभी है जब शरीरमें ऊपरसे बलका अवतरण हो।

अचंचल बने रहो, अपने-आपको खोलो और दिव्य शक्तिका आवाहन करो ताकि वह स्थिरता और शांतिका समर्थन करे, चेतनाका विस्तार करे और उसमें उतनी ज्योति और शक्तिको ले आये जितनीको वह अभी ग्रहण और आत्मसात् कर सकता है।

सावधान, बहुत अधिक उत्सुक न बन जाओ, वरना हो सकता है कि इससे प्राण-प्रकृतिमें जो अचंचलता और संतुलन प्रतिष्ठित हो चुके हैं उनमें भी विघ्न पड़े।

अंतिम परिणाममें विश्वास रखो और दिव्य शक्तिको अपना काम करनेके लिये समय दो।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभीप्सा करो, उचित मनोभावके साथ एकाग्र होओ, चाहे जो कठिनाइयां क्यों न हों, तुमने अपने आगे जो उद्देश्य रखा है उसे जरूर प्राप्त कर लोगे।

तुम्हें पीछे स्थित शांति और अपने अंदरकी उस "कुछ अधिक सत्य चीज" में निवास करना चाहिये और उसीको अपना सच्चा स्व अनुभव करना चाहिये। बाकी सबको तुम्हें अपना सच्चा स्व न मानना चाहिये, उसे बाहरी तलपर होनेवाली उन गतियोंका प्रवाह मानना चाहिये जो हमेशा बदलती या बार-बार आती रहती हैं, जो वास्तविक स्वके प्रकट होनेपर निश्चित रूपसे चली जायेंगी।

शांति ही सच्चा उपचार है; कठोर कार्यसे मनको दूसरी ओर ले जानेसे कुछ राहत ही मिलती है—यद्यपि सत्ताके विभिन्न भागोंमें उचित संतुलन रखनेके लिये कुछ मात्रामें काम आवश्यक है। अपने सिरके ऊपर और चारों ओर शांतिका अनुभव करना पहला कदम है; तुम्हें उसके साथ नाता जोड़ना चाहिये और उसे तुम्हारे अंदर उतरना और तुम्हारे मन, प्राण और शरीरको भर देना और तुम्हें चारों ओरसे घेर लेना चाहिये ताकि तुम उसके अंदर निवास करो —क्योंकि यह शांति तुम्हारे साथ भागवत उपस्थितिके होनेका एक चिह्न है। एक बार तुम उसे पा लो, तो बाकी चीजें आने लगेंगी।

वाणीमें सत्य और विचारमें सत्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। तुम जितना अधिक यह अनुभव कर सको कि मिथ्यात्व तुम्हारा अपना हिस्सा नहीं है, कि वह बाहरसे तुम्हारे अंदर आता है, उतना ही उसे अस्वीकार करना और त्यागना आसान होगा।

लगे रहो तो जो कुछ टेढ़ा है वह सीधा कर दिया जायगा। तुम भगवान्‌की उपस्थितिके सत्यको निरंतर जानते और अनुभव करते रहोगे और प्रत्यक्ष अनुभवके द्वारा तुम्हारी श्रद्धाका सत्य प्रमाणित होगा।

*

पहले अभीप्सा करो और माताजीसे मनकी अचंचलता, शुद्धि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिरता, शांति, जाग्रत् चेतना, भक्तिकी तीव्रता, सभी आंतरिक और बाह्य कठिनाइयोंका सामना करनेके लिये और योगके अंततक पहुंचनेके लिये बल और आध्यात्मिक क्षमता पानेकी प्रार्थना करो। अगर चेतना ज़ाग जाय और भक्ति तथा अभीप्साकी तीव्रता हो और मन अचंचलता और शांति सीख ले तो उसके लिये ज्ञानमें विकसित होना संभव होगा।

*

यह भौतिक सत्ता, विशेषकर प्राणिक-भौतिककी तीव्र सचेतनता और संवेदनशीलताके कारण है।

शरीरके लिये अच्छा है कि वह अधिकाधिक सचेतन हो, लेकिन उसे उन सामान्य मानव प्रतिक्रियाओंसे अभिभूत नहीं होना चाहिये जिनके बारेमें वह सजग होता है, और जिनसे बुरी तरह प्रभावित या परेशान होता है। मनकी तरह स्नायुओं और शरीरमें भी सुदृढ़ समता, प्रभुता और अनासक्ति आनी चाहिये। इससे शरीर किसी प्रकार विचलित हुए बिना इन चीजोंको जान सकेगा और उनसे संपर्क कर सकेगा; उसके लिये वातावरणकी गतिविधिके दबावको अनुभव करना और सह लेना नहीं चाहिये, उसे उन्हें जानना चाहिये, सचेतन होना चाहिये और उन्हें अस्वीकार करके फेंक देना चाहिये।

*

अपनी कमजोरियों और मिथ्या प्रवृत्तियोंको पहचानना और अपने-आपको उनसे अलग कर लेना -- यही मुक्तिकी ओर ले जानेवाला रास्ता है।

जबतक तुम चीजोंको स्थिर मन और स्थिर प्राणके साथ न देख सको तबतक अपने सिवाय किसीका मूल्यांकन न करो -- यह एक बहुत अच्छा नियम है। साथ ही, अपने मनको कुछ बाहरी रूपोंके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधारपर जल्दीमें संस्कार न बनाने दो और न ही अपने प्राणको उनके आधारपर काम करने दो।

आंतरिक सत्तामें एक जगह है जहां तुम हमेशा शांत-स्थिर रह सकते हो। वहांसे ऊपरी चेतनाकी हलचलोंको संतुलन और विवेक-के साथ देख सकते हो और उसे बदलनेके लिये क्रिया कर सकते हो। अगर तुम आंतरिक सत्ताकी उस स्थिरतामें रहना सीख लो तो तुम्हें अपना स्थिर आधार मिल जायगा।

*

इन सब बातोंसे अपने-आपको विक्षुब्ध या विचलित न होने दो। एकमात्र वस्तु जो हमेशा करनी चाहिये वह है: भगवान्‌के प्रति अभीप्सामें दृढ़ रहो और समस्त कठिनाइयों और विरोधोंका समता और अनासक्तिके साथ सामना करो। जो लोग आध्यात्मिक जीवन बिताना चाहते हैं उनके लिये हमेशा भगवान् पहले होने चाहिये, बाकी सब चीजें गौण होनी चाहिये।

अपने-आपको अनासक्त रखो और इन सब चीजोंको उस आदमी-की स्थिर अंतर्दृष्टिसे देखो जो अंदरसे भगवान्‌के प्रति समर्पित हो।

*

अभी तुम्हारी अनुभूतियां मानसिक स्तरपर हैं, लेकिन यह ठीक गति है। बहुत-से साधक इसलिये प्रगति नहीं कर पाते, क्योंकि वे मन और चैत्यके तैयार होनेसे पहले प्राणिक स्तरको खोल देते हैं। मानसिक स्तरपर सच्ची आध्यात्मिक अनुभूतियोंके शुरू हो जानेपर प्राणमें समयसे पहले अवतरण हो जाता है और बड़ी उथल-पुथल और गड़बड़ पैदा हो जाती है। इससे बचना होगा। इससे भी ज्यादा बुरी अवस्था वह है जब प्राणिक कामना-पुरुष, मनके आध्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्मिक वस्तुओंका स्पर्श पानेसे पहले अनुभूतियोंकी ओर खुल जाता है।

हमेशा यह अभीप्सा करो कि मन और चैत्य पुरुष सत्य चेतना और अनुभूतियोंसे भर जायें और तैयार हो जायें। तुम्हें विशेष रूपसे अचंचलता, शांति, स्थिर श्रद्धा, बढ़ती हुई स्थिर विशालता, अधिकाधिक ज्ञान, गहरी, तीव्र परंतु शांत भक्तिके लिये अभीप्सा करनी चाहिये।

अपने चारों ओरकी चीजों और उनके विरोधसे परेशान न होओ। शुरू-शुरूमें बहुधा ये परिस्थितियां एक प्रकारकी अग्नि-परीक्षाके रूपमें आरोपित की जाती हैं। अगर तुम शांत और अविचलित बने रहो, और इन परिस्थितियोंमें भी अपने अंदरसे घबराये बिना साधना किये चले जाओ तो यह चीज तुम्हें एक ऐसा बल देगी जिसकी बहुत आवश्यकता है; योग-मार्ग हमेशा भीतरी और बाहरी कठिनाइयोंसे भरा रहता है और उसका सामना करनेके लिये साधकको अचंचल, दृढ़ और ठोस बल विकसित करना चाहिये।

(योगके आधार, अध्याय १)

माताजीके वचन :

योगके लिये शक्ति और अपूर्णताएं

मधुर मां, यहां क्यों कहा गया है कि "जिनमें योगके लिये सबसे अधिक शक्ति होती है, बहुधा उन्हींमें सबसे अधिक अपूर्णताएं भी होती हैं" ?

ऐसा क्यों है ? (मौन) क्योंकि योगकी प्रबल क्षमता होनेके लिये तुम्हारी प्रकृति बहुत प्रबल, बहुत शक्तिशाली होनी चाहिये जिसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत आंतरिक बल हो; और बहुत प्रबल प्रकृतिमें बहुत प्रबल कठिनाइयां भी होती हैं।

जो लोग मध्यम, मंद, महत्त्वहीन होते हैं वे साधारणतः, बहुत अधिक गड़बड़के बिना अपने छोटे-से रास्तेपर चलते रहते हैं। लेकिन वे कुछ अधिक नहीं कर सकते, उनका रास्ता बहुत छोटा, बहुत संकरा होता है और वे जल्दी ही अपने छोरतक जा पहुंचते हैं। वे बहुत कुछ नहीं कर सकते। लेकिन जिन लोगोंकी प्रकृति मजबूत होती है उनकी कठिनाइयां भी मजबूत होती हैं। क्योंकि इस संसारमें कठिनाइयोंके बिना रहना एकदम असंभव है। जबतक संसार वैसा बना रहेगा जैसा कि वह है और आदमी संसारमें भाग लेता रहेगा तबतक उसे आवश्यक रूपसे उसकी कठिनाइयोंमें भी भाग लेना होगा।

बहुत अधिक आग्रहपूर्ण और निरंतर प्रयासके द्वारा ही आदमी अपनी कठिनाइयोंपर विजय पानेमें सफल हो सकता है; फिर भी, अपने-आपको बाकी जगत्के साथ एकात्मतासे बिल्कुल काटकर अलग कर लेना असंभव मालूम होता है। अतः, जबतक संसार पूर्णताके अमुक स्तरपर न पहुंच जाय तबतक पूर्ण शुद्धि, संपूर्ण पूर्णता असंभव मालूम होती है। एकांतवासी तपस्वी भी जो किसी गुफामें या जंगलमें या पेड़के नीचे जा बैठता है, वह भी, अपने-आपको बाकी जगत्के साथ एकात्मतासे अलग नहीं कर सकता। वह जो सांस लेता है वह जगत्के समस्त स्पंदनोंसे भरा है, वह जो खाना खाता है, वह चाहे कुछ क्यों न हो, चाहे उसे कम-से-कम मात्रामें लिया जाय, उसमें भी संसारके स्पंदन भरे होते हैं। अतः, उसके अस्तित्वका बना रहना ही जगत्-भरकी कठिनाइयोंके साथ एकात्मता बनाये रखनेके लिये काफी है।

वस्तुतः, इसी कारण रास्ता इतना लम्बा है। अगर हम और किसी चीजको न भी देखें, केवल उन्हीं चीजोंको देखें जिन्हें आदमी हमेशा सांस लेते हुए या खाते हुए आत्मसात् करता है तो इन सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीजोंको हमेशा आत्मसात् करनेके साथ-साथ बदलते चलना पड़ेगा। यह एक निरंतर कीमिया है जिसमें आदमी एक खास तरहके स्पंदनों को आत्मसात् करता है जिनमें सब प्रकारके विकार होते हैं और उन्हें किसी ऐसी चीजमें बदलना होता है जो ऊपरसे आनेवाली ज्योति को ग्रहण करनेके लिये तैयार हो। और यह कार्य सतत रूपसे चलता रहता है, और इसे हमेशा नया करते रहना पड़ता है। अतः यह असंभव है कि जबतक स्वयं संसार ही बहुत बड़ी प्रगति न कर ले तबतक आदमी इस संसारमें -- जैसा कि वह अभी है -- रहते हुए पूर्ण हो सके।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ६; प्रश्न और उत्तर १९५४)

कठिन रास्तोंपर चले बिना पहाड़की चोटीतक पहुंचना संभव नहीं है।

*

सच्चे साहसमें अधीरता, धृष्टता या उतावलेपनके लिये जगह नहीं होती।

*

भगवान्‌की कृपा ही हमारा एकमात्र सहारा हो।

*

धीरजके साथ सब कुछ किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरते समय

क्या जो लोग रातोंको निम्न प्राणके लोकमें घूमा करते हैं उन्हें मृत्युके बाद बहुत कष्ट झेलना पड़ता है?

यह जरूरी नहीं है कि वहां घूमनेवालोंको न घूमनेवालोंसे ज्यादा कष्ट सहना पड़े। इस तथ्यके कारण ही कि वे वहां घूमा करते हैं वे जरा ज्यादा तैयार, उस जगत्‌के लिये जरा ज्यादा अभ्यस्त होते हैं। उनके लिये एकदम यह अपरिचित क्षेत्र नहीं होता; क्योंकि वे वहां हो आये हैं। उदाहरणके लिये, हो सकता है कि उन्हें काफी सारे अप्रिय अनुभव हो चुके हों और वे उनसे अपने-आपको बचानेकी तरकीब सीख गये हों। यह सच है कि साधारणतः, इन अवस्थाओंमें बचावका एक ही तरीका होता है और वह है शरीरमें एकदम लौट जाना, और यह ऐसी चीज है जिसे अब नहीं किया जा सकता। फिर भी, उन्हें थोड़ा-बहुत अनुभव होता है, जब कि जो लोग वहां कुछ भी जाने बिना जाते हैं, जिन्हें यह चेतना कभी नहीं मिली, जब वे उस जगत्‌में फेंके जाते हैं तो ऐसा लगता है मानों उन्हें सर्वथा अप्रिय और अज्ञात जगत्‌में फेंक दिया गया है और वे आत्म-रक्षाके उपायसे पूरी तरह अनभिज्ञ हैं। मेरा ख्याल है कि जो स्वप्न देखते हैं, जिन्हें वे स्वप्न कहते हैं, और जो उनके बारेमें सचेतन हैं, चाहे उनके स्वप्न बहुत सुन्दर न भी हों, जो बिलकुल ही अचेतन हों उनकी अपेक्षा ज्यादा अच्छी स्थितिमें होते हैं। क्योंकि एक बार शरीर छोड़नेके बाद, आदमी चाहे सचेतन हो या अचेतन, चाहे विकसित हो या अविकसित, वह आरंभमें हमेशा उसी क्षेत्रमें जा पड़ता है। हां, कोई योगी हो जो अपने साथ अपनी मरजीके मुताबिक कर सके तो और बात है। लेकिन ये इतने विरल होते हैं कि उनके बारेमें विचार करनेकी जरूरत नहीं। शरीर छोड़नेपर सभी मनुष्य निम्न प्राणके क्षेत्रमें फेंक दिये जाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं जिसमें कोई विशेष रूपसे सुखकर चीज नहीं होती। फिर भी, जरा ठहरो, यह एक अजीब बात है, कोई ऐसी चीज है जिसके बारेमें मैं आज ही कह रही थी।

इस अवस्थामें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है चेतनाकी वह अंतिम अवस्था जब दोनों मिले हुए थे, जब प्राणिक सत्ता और शरीर दोनों इकट्ठे थे। अतः, कहा जा सकता है कि अदृश्य जगत्के साथ पहले संस्पर्शके लिये चेतनाकी अंतिम अवस्था, या यूं कहो, अंतिम कामना या अंतिम आशा या अंतिम अभीप्साका बहुत अधिक महत्त्व होता है। और इस बातमें मरते हुए आदमीके इर्द-गिर्दके लोगोंकी जिम्मेदारी जितना वे सोचते हैं उससे बहुत ज्यादा होती है। अगर वे उसे अपनी उच्चतम चेतनामें प्रवेश करनेमें सहायता दें तो वे उसकी अधिकतम सेवा करेंगे। लेकिन वे करते क्या हैं? उसके साथ अधिक-से-अधिक चिपके रहते हैं, और उसे भयंकर स्वार्थके साथ अपनी ओर खींचते हैं; परिणाम क्या होता है? बजाय इसके कि वह अपनी उच्चतर चेतनामें जा सके जो उसके प्रयाणकी रक्षा करे, वह भौतिक वस्तुओंमें जकड़ जाता है और तब अपने शरीर तथा अपनी आसक्तियोंसे छुटकारा पानेके लिये भीषण युद्ध होता है।

वस्तुतः, बहुत ही कम अपवादोंको छोड़कर — इतने कम जिनके बारेमें मुश्किलसे कुछ कहा जा सकता है — सभी मनुष्य पूर्ण अज्ञानमें निवास करते हैं, जीनेकी पद्धतिके बारेमें पूर्ण अज्ञानमें, संसारकी चीजोंके बारेमें ही नहीं, जीनेकी अति सामान्य प्रारंभिक जानकारीके बारेमें भी अनभिज्ञ। वे जानते ही नहीं कि कैसे जिया जाय। वे सारे समय ऐसी चीजें करते रहते हैं जो न करनी चाहिये और मैं इच्छाओंकी पूर्ति वगैराकी बात नहीं कर रही, मैं सिर्फ हर क्षणके जीवनकी बात कर रही हूं, हर क्षणकी गतिविधिकी, चूंकि मनुष्य पूर्ण अज्ञानमें रहता है इसलिये वह अपना अभीष्ट परिणाम पानेके लिये जो करना चाहिये उससे ठीक उल्टा करता है। आदमी किसी लक्ष्यका अनुसरण करनेकी कोशिश करता है, वह कोई स्वार्थमय लक्ष्य हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है या कोई निष्काम लक्ष्य, कोई भौतिक लक्ष्य हो सकता है या आध्यात्मिक लक्ष्य, कुछ भी क्यों न हो, आदमी कहीं पहुंचना चाहता है, परंतु सारे समय, वहां पहुंचनेके लिये जो करना चाहिये उससे ठीक उल्टा करता है। और अगर तुम जरा भी सावधान हो और किसी क्षण अपने-आपको देख सको, तुम चाहे कुछ भी कर रहे हो, आधे सेकेंडके लिये रुको और अपने ऊपर नजर डालकर पूछो : "क्या मैं जानता हूं कि मुझे क्या करना चाहिये ?", अगर तुम सच्चे और निष्कपट हो तो तुम देखोगे कि तुम बिलकुल नहीं जानते। तुम जो करते हो यंत्रवत् सहज-वृत्तिसे, आदतके कारण या किसी आवेगके कारण करते हो; परंतु यह जानना : "क्या यही वह चीज है जो करनी चाहिये ? क्या उसे इसी तरह करना चाहिये ?"— मुझे नहीं लगता कि हजारमें एक बार भी तुम उत्तर दे सकोगे।

और फिर, जब किसीकी सहायता करनेका प्रश्न आता है. . . अगर तुम्हारे अंदर सद्भावना है और तुम किसीकी मदद करना चाहते हो. . . पहले तो तुम यह भी नहीं जानते कि स्वयं अपनी सहायता कैसे की जाय, फिर भी, तुम स्वार्थी नहीं हो; किसी विशेष क्षणमें किसीकी सहायता करना चाहते हो, तब यह प्रश्न उठता है : "मैं क्या करूं ?" तुम उसके बारेमें कुछ भी तो नहीं जानते। "उसे क्या चाहिये ?" मेरा मतलब केवल भौतिक चीजोंसे नहीं है, बल्कि तुम्हारे अंदर क्या भाव होना चाहिये, तुम्हारे अंदर क्या विचार आना चाहिये, तुम्हें क्या शब्द बोलना चाहिये। अगर तुम बस एक कदम पीछे हटो, तुम अपने ऊपर नजर डालो, लेकिन तुम उसके बारेमें कुछ भी नहीं जानते; तुम उसे यूं ही कर देते हो, जैसे-तैसे, इस आशाके साथ कर देते हो कि यह सफल होगा, परंतु ज्ञान नहीं होता। स्वभावतः, बोले बिना. . . मैं उन लोगोंके बारेमें नहीं कह रही जो कुछ भी नहीं जानते, जब उनके एक बच्चा ही हो जाय तो वे यह भी नहीं जानते कि उसे ठीक तरह उठाया कैसे जाय और स्वस्थ रखा जाय। मैं इस तरहके अज्ञानकी बात भी नहीं कह रही, क्योंकि इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर एक स्वीकार करता है। मैं ऐसी अनगिनत नारियोंको जानती थी जिन्हें इस बातका जरा भी ख्याल न था कि बच्चोंको स्वस्थ रखने के लिये क्या करना चाहिये। मैं इसकी बात भी नहीं कर रही, क्योंकि अगर कोई एक किताब पढ़ ले, जरा-सी मेहनत कर ले, अध्ययन करे तो थोड़ा-सा ज्ञान पा ही सकता है।

नैतिक दृष्टिसे जरा ऊंचे स्तरकी बात कह रही हूं, तुम्हारे आचार-की, लोगोंके साथ मनोवैज्ञानिक संबंधकी। तुम किसी ऐसे आदमीके साथ हो जो मुश्किलमें है। क्या तुम जानते हो कि तुम्हें उससे क्या कहना चाहिये? क्या तुम उसकी कठिनाईके कारण और स्रोत-को जानते हो? उसके अंदर क्या चल रहा है? तुम उसका अंदाज लगा सकते हो, तुम उसकी कल्पना कर सकते हो, तुम अनुमान कर सकते हो, तर्क कर सकते हो, पर उसे जानते नहीं!

तुम्हारे अंदर वह निश्चिति नहीं है, वह ज्ञान नहीं है जो कहे: "यह वह है।" यह तुम्हारे अंदर नहीं है। "क्या यह वह है? क्या यह ऐसा है? अगर मैं ऐसा करूं तो क्या ऐसा होगा? अगर मैं वह करूं तो क्या वैसा होगा?" और तुम चलते चले जाते हो, तुम घंटों चलते रह सकते हो, संकोच करते रहो, टटोलते रहो, अपने-आपसे पूछते रहो...। श्रीअरविन्दने यही बात अपने अंतिम लेखमें लिखी थी जो 'बुलेटिन'में छपी थी। वे कहते हैं कि अगर तुम अतिमनके अवतरणके लिये अपने-आपको तैयार करना चाहते हो, तो सबसे पहले तुम्हारे अज्ञान और अक्षमताके मनके स्थानपर प्रकाश-का मन आना चाहिये जो देखता और जानता है। और यह पहला कदम है। इस सीढ़ीको पार किये बिना तुम आगे नहीं बढ़ सकते। मैं यह बात तुम्हें हतोत्साह करनेके लिये नहीं कह रही, यह उन लोगोंके लिये है जो मानते हैं कि उन्हें बस इतना कहना चाहिये: "मैं अतिमानसिक प्रकाश चाहता हूं", और वह चट-से आ जायगा, वैसे ही जैसे तुम कहते हो: "मैं एक गिलास पानी पीना चाहता हूं", और पी जाते हो। इतना आसान नहीं है! तो ऐसी बात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम

एक छोटे-से शहरमें एक लड़का रहता था। नाम उसका था रामकिशोर।

रामकिशोर स्कूल जाता तो था, लेकिन उसका मन हमेशा पीछे रह जाता था। वह कबड्डीमें सबसे आगे रहता, लंगड़ी करता-करता न जाने कहांसे कहां जा पहुंचता। मन महाशय एक स्कूल छोड़कर बाकी सब जगहकी सैर कर लिया करते।

परीक्षा पास आयी, संगी-साथी किताबोंसे उलझ गये, लेकिन रामकिशोरपर कोई असर न पड़ा।

एक दिन मांने उसे बुलाया।

मां बोली, "बेटे, परीक्षा सिरपर है, अब तो कुछ तैयारी कर ले।"

रामकिशोर गेंद उछालता-उछालता बोला, "तू इतनी डरती क्यों है? देखना, मैं जरूर पास हो जाऊंगा।"

मांने कहा, "क्या कोई मंत्र सीख लिया है? ऐसे पढ़े बिना पास कैसे होगा?"

रामकिशोर हंसकर बोला, "हां, मैं न, रोज राम-नामका जाप करता हूं। तू उस दिन कह रही थी न कि भगवान् सब कुछ कर सकते हैं तो मुझे पास कराना भी उनके लिये आसान ही होगा।"

मांने कहा, "अरे बेटे, इस तरह मेहनतके बिना कुछ होता है? भगवान् सब कुछ देते तो हैं, पर उसे नहीं जो हमेशा हाथपर हाथ धरे बैठा रहे।"

रामकिशोरने आश्चर्यसे पूछा, "तो, मां, फिर तू रोज घंटा-घंटा बैठकर पूजा क्यों किया करती है? क्या फायदा ऐसी पूजाका?"

मां बोली, "चल हट, ऐसी बात नहीं करते। भगवान्के साथ व्यापार थोड़े ही किया जाता है! मेहनत तो हमें करनी ही चाहिये लेकिन उसका फल भगवान्की इच्छासे ही मिलता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकिशोर सोचमें पड़ गया, काम हम करें, मेहनत हम करें फिर भी फल भगवान् देना चाहे तभी मिले? बात कुछ जंची नहीं।

"मां, तुम्हारे भगवान् विचित्र हैं।"

मां थोड़ी देरतक बेटेको ताकती रही, फिर बोली, "मैं तुझे एक कहानी सुनाती हूं। एक शहरमें एक मजदूर रहता था। उसका काम था एक मशीनको चलाना और उसकी देख-रेख करना। एक दिन मशीन चलाकर वह अपने साथीके साथ हंसी-मजाक करने लगा। बात-बातमें उसने अपना पांव आगे बढ़ाया। और. . . एक झटकेसे उसका पांव मशीनमें जा फंसा। वह जोरसे चीखा, दर्द असह्य था। वह बेहोश होकर गिर पड़ा। चारों ओर हो-हल्ला मच गया। किसीने मशीन बंद कर दी। डाक्टर आये। कई दिनों बाद वह बिस्तरसे उठ पाया।

"भगवान्ने इतनी कृपा की कि उसका पांव कटा नहीं।

"वह चल सकता था, लेकिन लंगड़ा कर।

"अड़ोस-पड़ोसके लोग सहानुभूति तो बहुत दिखाते, पर कोई क्या कर सकता था?"

रामकिशोर बोल उठा, "मां, इसका नाम तो तूने बताया ही नहीं?"

मां चौंकी, "हां, सच, मैं बिलकुल भूल गयी। बेटा, उसका नाम था जोन। यह कहानी यूरोपकी है। जोनको ईसामसीहपर पूरी श्रद्धा थी। वह सोचने लगा कि भगवान्ने जो भी किया मेरे भलेके लिये किया है। मुझे हैरान न होना चाहिये।

"वर्ष बीतने लगे।

"यूरोपमें युद्ध छिड़े तो सबको लड़ने के लिये जाना पड़ता है।"

रामकिशोर — "सबको?"

मां — "सबको, मतलब, सभी स्वस्थ वयस्कोंको। अगर तुम वहां होते तो न बुलाये जाते किंतु हमारा पड़ोसी रमेश बुलाया जाता। २१ वर्षके ऊपरके सब लड़के बुलाये जाते हैं।"

रामकिशोर — "और लड़कियां?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां — "लड़कियां पीछे रहकर कारखाने, दफ्तर, डाक वगैरह संभालती हैं। हां, तो बेटे, एक बार युद्ध छिड़ा।

"जोनके सब मित्र युद्धमें गये।

"लेकिन जोनको सेनाने छोड़ दिया क्योंकि वह लंगड़ाता था।

"जोनकी मांसे उनकी सहेलियां कहने लगीं, 'अरी बहन, तू तो भाग्यवान् है। तेरा बेटा तेरे सामने है। हमारे बेटोंका क्या होगा कौन कह सकता है?'

"कुछ समय बाद सरकारकी ओरसे संदेश आया कि जोनके पड़ोसी तीन लड़के मारे गये।

"उनके माता-पिता बहुत दुःखी रहते। जोनकी मां मन-ही-मन सोचती, 'भगवान्‌की कृपाको समझना कितना कठिन है! जोन लंगड़ाने लगा तो मुझे कितना कष्ट हुआ था, आज उसी लंगड़ानेके कारण वह मेरे हाथसे छिनता-छिनता बच गया। सचमुच भगवान् जैसा शुभचिंतक और प्रेमी कोई और नहीं हो सकता।'

रामकिशोर सोचमें पड़ गया।

मां फिर बोली, "तो बेटा, कभी भगवान्‌को भला-बुरा मत कह। हम मनुष्य उनको कैसे समझ सकते हैं? यह ऐसा ही होगा जैसे कोई चींटी हमें समझनेकी कोशिश करे।"

*

छुट्टियोंमें रामकिशोरके घर एक छोटा-सा मेहमान आया। नाम पूछा तो कहा, "कपिल।"

दोनों खेलने लगे।

खेलते-खेलते कितनी देर हो गयी, पर उन्हें पता ही न चला।

दोपहरके खानेका समय हुआ।

मांने दूरसे हांक लगायी।

रामकिशोर चिल्लाया, "अभी आया।" फिर पता नहीं क्या हुआ, घर जानेकी याद ही न रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांके दो-तीन बार बुलानेपर भी जब वे न गये तो अंतमें बड़े भैया आये।

आते ही उबल पड़े, "क्यों रे रामकिशोर, कुछ खाने-पीनेकी चिन्ता है कि नहीं? मां कबसे तुम्हारे लिये चौकेमें बैठी है। चल दौड़!"

राम और कपिल दौड़कर गये।

खाना खाकर धीरेसे बाहर खिसकने ही वाले थे कि फिर भैयाने पुकारा, "राम, अभी बाहर मत जाओ, बहुत धूप है।"

रामकिशोर मुंह बिचकाकर चटाईपर बैठ गया। ये बड़े अत्याचारी होते हैं, यह मत करो, वहां मत जाओ; 'मत करो' और 'नहीं', इन दो बातोंके सिवा उनके पास कोई बात ही नहीं होती।

कपिल आरामसे बैठकर किताब पढ़ने लगा। रामकिशोरने देखा, बहुत जल्दी वह पुस्तकमें खो गया। कपिलके पास जाकर रामकिशोर फुसफुसाया, "चल, भाग चलें।"

कपिलने मना किया। रामने उचककर देखा, 'अरे कहानीकी किताब नहीं, सिर खपानेवाली भूगोलकी पुस्तक थी।...'

रामकिशोर उस समय चुप रहा

जब कपिल पढ़ चुका तो बोला, "छोड़ इस झंझटको, चल खेलें।"

कपिलने कहा, "मुझे तो कोई झंझट नहीं लगता।"

रामकिशोर — "अरे, खेलके जैसा मजा और कहां?"

कपिल — "लेकिन मुझे तो पढ़नेमें भी खेलके जितना ही मजा आता है।"

रामकिशोर — "तो भूगोल तुम्हें बहुत पसंद है?"

कपिल — "नहीं, ऐसी बात नहीं है, मैं जो भी करता हूं उसीमें मजा लेता हूं।"

रामकिशोर — "पढ़ाई, परीक्षामें, सबमें?"

कपिल — "हां, एक बार ऐसा हुआ था कि मैंने सारा साल खेल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूदमें बिताया और परीक्षामें 'फेल' हो गया। मन बहुत दुःखी हुआ। मेरे बाबा यहीं थे। मुझसे बहुत प्यार करते थे। उन्होंने मुझे बुलाया। कहां तो घरके सब मुझपर बरस रहे थे और कहां बाबा . . ."

वह रुक गया, "सच कहता हूं, राम, बाबाके जैसा प्यार उन दिनों मुझे किसीसे नहीं मिला। मेरी पीठपर हाथ फेरते-फेरते बोले थे, 'क्यों, बेटा, पढ़ाई एकदम गोल कर दी थी न?'

"मैंने सिर झुकाकर कहा, 'हां।'

"बाबाने कहा, 'क्यों भई? तुम तो अच्छा पढ़-लिख लेते थे, फिर . . .

"मैंने कहा, "खेलमें बहुत मजा आ रहा था इसलिये . . .।'

"बाबाने कहा, 'अरे बेटा, इतनी-सी बात थी? तूने पहले क्यों नहीं बतायी? चल, आजसे हम दोनों एक साथ पढ़ेंगे?'

"बाबाने कहा, 'बेटा, मजा लेनेकी एक कीमिया है। जो काम करो उसमें पूरे तन-मनसे डूब जाओ, फिर देखना सब काम अच्छा लगने लगेगा, बहुत मजा आयेगा।' शुरूमें मुझे बहुत बार अनख आती थी लेकिन बाबा इतने मजेसे काम करते थे कि मुझे उनकी छूत लग गयी। अब तो भगवान्‌की दया है, सब अच्छा लगता है।"

रामकिशोर अचंभित-सा उसे देखता रहा।

*

रामकिशोरका एक मित्र था दयाल। रहता था मन्दिरमें, सारे दिन पूजा-पाठ, उत्सवमें ही लगा रहता। कभी-कभी खेलने आता। उसे देखते ही सब चिढ़ाते, "आओ, गुसाईं!"

दयाल हंसकर जवाब देता, "आशीर्वाद, बेटे!"

दयाल सबको प्रिय था, हर एकसे दोस्ती थी।

हंसते-हंसते रामकिशोर बोला, "अरे गुसाईं, कोल्हूके बैलकी तरह वही पूजा-पाठ करते-करते तू ऊब जाता होगा, हम तुझे बुलाने आया करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयाल हंसा, "आना हो तो आ जाना, पर सच्ची बात तो यह है कि मैं पूजा-पाठसे कभी नहीं ऊबता।"

रामकिशोरने उसकी पीठपर हाथ मारा, "चल, साधु-बच्चा मत बन, हम सब जानते हैं एक ही काम करते-करते क्या हाल होता है।"

दयाल गंभीर हो गया, "नहीं, भई, सच कहता हूं। रोज काम एक होता है, लेकिन मैं देखता हूं कि काम करनेवाला एक नहीं होता। मैं रोज नया होता हूं।"

रामकिशोर — "चल, अपने साधु महाराजजीकी तरह भाषण मत दे। चला है हमारे आगे शेखी बघारने, मैं रोज नया होता हूं!!"

दयाल — "न मानो तो क्या करूं? पर एक बात जानता हूं, गुरु महाराजजीने बताया था कि हम मनुष्य धरतीपर आगे बढ़ने, भगवान्का काम करनेके लिये आये हैं और अगर हम रोज प्रयास करते रहें तो रोज कुछ आगे बढ़ सकते हैं।

रामकिशोर — "कहा न साधु महाराजकी दुम है तू! उन्होंने कहा और तूने मान लिया। अरे, बुद्धू, हर वस्तुके लिये प्रमाण चाहिये।

दयाल, — "मैं तुझे प्रमाण तो दे सकता हूं पर तू मानेगा नहीं। तूने दशावतारका काव्य सुना होगा जहां कहते हैं कि करुणासे द्रवित होकर पहले भगवान्ने मछलीका रूप लिया, फिर कच्छप, मतलब कछुए और शूकर यानी सूअरका, फिर राक्षसी जातिको हरानेके लिये आधा पशु और आधा मानव बने।

"तू तो सायंसका बखान करते नहीं अघाता, तेरी सायंस भी तो वही कहती है कि सबसे पहला सचेतन रूप पानीमें ही जन्मा था। बादमें ऐसे जीव आये जो पानी और जमीन दोनोंपर रह सकते थे, यानी, कछुआ। फिर आधा पशु और आधा आदमी; तेरे डार्विन आदमीको बंदरकी संतान कहते हैं न? उसके बाद आये मनुष्य। ऊंचे आदर्शोंवाले, ऐसे मनुष्य जो सोच-समझकर कुछ सीखनेकी, आगे बढ़नेकी कोशिश करने लगे; जैसे, राम..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकिशोर, "हां, तेरी बात कुछ-कुछ ठीक मालूम हो रही है। लेकिन अब क्या है? अब तो आदमी चांदतक पहुंच गया है।"

दयाल, "यही तो मुसीबतकी जड़ है! आदमीको आगे बढ़ना चाहिये। सच बात यह है कि अभीतक हम सब, साधुओंकी बात छोड़ो, अपने लिये, अपने स्वार्थके लिये काम करते रहे हैं इसलिये जितना आगे बढ़े उतने ही पिछड़ते गये। यही देख न, साधु महाराज कहते थे, कुत्ता जैसे अपनी दुम पकड़नेके लिये गोल-गोल घूमता है इसी तरह मनुष्य अपनी इच्छाओं, अपने स्वार्थोंको संतुष्ट करनेके लिये, धन, कीर्ति, पदवी, स्त्रीके पीछे भागता रहता है, लेकिन फिर जैसे कुत्ता अपनी दुम कभी पकड़ नहीं पाता, उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छाओंको संतुष्ट नहीं कर पाता। मनुष्य चिल्लाता रहता है, "मैं कर्म करता हूं, पर सच्चा कर्म . . ."

रामकिशोर बीचमें टपका, "अरे, बाप रे बाप! चुप भी कर, तेरा भाषण सुनकर मेरे कान पक गये। प्रश्न क्या पूछा, मुसीबत बुला ली।"

दयालने गंभीरतासे कहा, "तूने पूछा तो मैंने उत्तर दिया। अरे, भैया, जब तुम काम भगवान्को जैसे फूल देते हो, आरती करते हो, उस तरह पूजाके भावसे, उनके लिये करोगे तो न तुम्हें ऊब आयेगी, न तुम थकोगे। काम तो सबसे बड़ा शिक्षक है, जितना काम करेंगे, उतना अधिक सीखेंगे।"

—अनुबेन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

सोसायटीकी बंगलौर शाखाने २५ फरवरीको भजन और पाठका एक कार्यक्रम रखा था। २८ को हिमालयके सौन्दर्यका दिग्दर्शन करानेवाले चित्रोंकी प्रदर्शनी की थी।

कलकत्ता श्रीअरविंद शारीरिक शिक्षा समितिने २४ फरवरीको रवींद्र सरोवरके मैदानमें अपनी वार्षिक रैली की। कई विद्यालयोंके बच्चोंने इसमें भाग लिया।

श्रीअरविंद पाठ चक्र, मुन्नालाल इंटर कालेज वजीर गंज (बदायूं) ने हिंदीमें माताजी और श्रीअरविंदके वचनोंकी एक आठ पृष्ठकी पुस्तिका प्रकाशित की है।

गांधी नगर (गुजरात) के श्रीअरविंद केंद्रने 'अवतारणा' नामक सुन्दर-सी स्मारिका प्रकाशित की है। इसमें गुजराती और अंगरेजी लेख हैं। मूल्य १५.००

सोसायटीकी देहरादून शाखाने वहांके सार्वजानिक पुस्तकालयको एक समारोहमें माताजी और श्रीअरविंदके फोटो उपहारमें दिये। २१ फरवरीको शिक्षा-संबन्धी सभा हुई।

बड़ौदा शाखाने संस्कृत कक्षाओंके लिये व्यवस्था की है जिसमें लगभग साठ विद्यार्थी आ रहे हैं। इसी तरह व्यायामकी कक्षाएं शुरू की गयी हैं जिनमें लगभग सौ व्यक्ति भाग ले रहे हैं।

पन्ना (मध्य प्रदेश) का समाचार है कि वहां आश्रमसे उदार और विद्यावती 'कोकिल'ने अनेक स्थानोंपर भाषण दिये और 'सावित्री' का पाठ किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

अहमदाबाद शहर और जिलेके विद्यालयों और महाविद्यालयोंमें निबंध प्रतियोगिताएं करवायी गयीं। इसके अतिरिक्त डा० थानकी ने शहरके तीस विद्यालयों और महाविद्यालयोंमें श्रीअरविंदाश्रमकी शिक्षा-पद्धतिके बारेमें भाषण दिये और आश्रमके फोटो दिखाये।

शेरामें रासायनिक उर्वरकोंसे होनेवाली हानिके बारेमें एक शिविर किया गया।

जमशेदपुर, रांची, सिद्री, ऋषिकेश आदि स्थानोंसे २१ फरवरीके उत्सवके समाचार आये हैं।

नूतन प्रकाशन :

हेल्थ एंड हीलिंग इन योग — इस पुस्तकमें माताजीके स्वास्थ्य-संबन्धी लेखोंका संग्रह है। मूल्य १५.००। शब्द, श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरीसे प्राप्य।

आदर्श बालक : इस वर्ष सारे संसारमें बाल वर्ष मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्यमें माताजीकी छोटी-सी पुस्तक 'आदर्श बालक' बहुत उपयोगी हो सकती है। यह ऐसी चीज है जो हर बालकके हाथमें जानी चाहिये। इसके अनुवाद विभिन्न भारतीय और विदेशी भाषाओंमें छप चुके हैं। जिन लोगोंको रस हो वे हजारोंकी संख्यामें लेकर विद्यालयोंमें बांट सकते हैं। भारतमें बांटनेके लिये एक हजार प्रतियां केवल तीन सौ रुपयेमें शब्द, श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरीसे मिल सकती हैं। अभी काम शुरू ही हुआ है और साढ़े तीन लाख प्रतियां बांटी जा चुकी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जून १९७९

वर्ष ९, अंक ११, पूर्णांक १०७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

श्रीमातृवाणीसे : मन	१
मानव स्वभाव	५
सद्गुणोंकी कहानी	९
माताजीकी दृष्टिमें काम	१२
नियतिकी मांग	१६
उदवीका समारोह	१८
माताजीने कहा	२२
सोसायटी समाचार	३०

अग्निशिखाका वार्षिक चंदा ६.०० है और पुरोधाका ८.०० लेकिन इसमें किसी तरह छपाईका खर्च पूरा नहीं हो पाता। जो लोग अधिक चंदा दे सकते हैं वे अपनी सामर्थ्यके अनुसार अधिक भेजनेकी कृपा करें तथा नये ग्राहक बनानेकी भी कोशिश करें।

पुरोधा :	वार्षिक ८.००	आजीवन १७५.००
अग्निशिखा :	वार्षिक ६.००	आजीवन १२५.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट, आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसयटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमातृवाणी :

मन

[मन और उसका स्वयं रचित जगत्; मन और उसकी समझनेकी क्षमता; शब्दोंकी ध्वनि और गतिके पीछे जाकर नीरवतामें सुनना]

विचारकी शक्ति किस प्रकारकी है? प्रत्येक मनुष्य किस हदतक और कैसे अपने जगत्का कर्ता है?

बौद्धमतके अनुसार, प्रत्येक मनुष्य अपने ही रचे हुए जगत्में रहता और विचरण करता है, उसका यह जगत् दूसरे मनुष्यके जगत्से सर्वथा स्वतंत्र होता है; और जब इन विभिन्न जगतोंमें एक प्रकारका सामंजस्य हो जाता है तभी ये एक-दूसरेमें अन्तःप्रविष्ट हो सकते हैं और तभी मनुष्य परस्पर संपर्कमें आते और एक-दूसरेके विचारोंको समझ सकते हैं। जहांतक मनका संबंध है यह बात ठीक है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने ही विचारोंद्वारा बनाये गये मानसिक जगत्में विचरण करता रहता है। यह बात यहांतक सच है कि सदा ही जब कोई बात कही जाती है तो प्रत्येक व्यक्ति उसे अलग रूपमें समझता है, श्रोता जो कुछ कहा गया है उसे ग्रहण नहीं करता, बल्कि किसी ऐसी चीजको ग्रहण करता है जो उसके मस्तिष्कमें पहले-से भरी हो। परंतु यह सत्य मनोमय भूमिकाकी गतियोंसे ही संबंध रखता है और उसी भूमिकापर लागू होता है।

मन कर्म करने और आकार देनेका करण है, ज्ञानका करण नहीं। यह प्रत्येक क्षण आकारोंकी रचना करता रहता है। विचार आकार-मय होते हैं और इनका अपना व्यक्तिगत जीवन स्रष्टासे सर्वथा स्वतंत्र होता है। स्रष्टा जब इन विचारमय आकारोंको जगत्में भेज देता

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तो ये अपने अस्तित्वके प्रयोजनको पूरा करनेके लिये जगत्‌में विचरण करने लगते हैं। जब तुम किसी व्यक्तिके विषयमें विचार करते हो तो तुम्हारा विचार एक आकार धारण करके उसे खोजनेके लिये निकल पड़ता है, और यदि तुम्हारे विचारके पीछे कोई संकल्प लगा हो तो तुम्हारे अंदरसे निकला हुआ यह विचारमय आकार अपने-आपको चरितार्थ करनेकी चेष्टा करता है। उदाहरणके लिये, मान लो कि तुम्हारी यह तीव्र इच्छा है कि अमुक व्यक्ति तुम्हारे पास आये, और इच्छाके इस प्राणमय आवेगके साथ-साथ यदि तुम्हारे बनाये हुए मनोमय आकारके साथ एक जोरदार कल्पना भी जुड़ी हो तो तुम कल्पना करोगे : "यदि वह आये तो ऐसा होगा, वैसा होगा।" कुछ कालके बाद तुम इस विचारको सर्वथा त्याग देते हो, लेकिन तुम नहीं जानते कि तुम्हारे भूल जानेके बाद भी, तुम्हारे विचारका अस्तित्व बना हुआ है। वास्तवमें अब भी उसका अस्तित्व है और वह तुमसे सर्वथा स्वतंत्र रहकर अपना काम कर रहा है, और उसे अपने कामसे वापस बुलानेके लिये एक महान् शक्तिकी आवश्यकता होगी। वह उस विचारसे संबंध रखनेवाले व्यक्तिके वातावरणमें प्रविष्ट होकर अपना काम करने लगता है और उसमें तुम्हारे पास आनेकी इच्छा उत्पन्न करता है। और यदि तुम्हारे विचारमय आकारमें कार्य-सिद्धिके लिये पर्याप्त इच्छा-शक्ति है, यदि उस आकार-का गठन भली-भांति हुआ है तो वह अपना काम पूरा करेगा। परंतु इस आकार-रचना और उसकी सिद्धिके बीच कुछ समय लगता है और यदि इस बीच तुम्हारा मन और ही चीजमें लगा हो, तो जब-तक तुम्हारा यह भूला हुआ विचार कार्यमें परिणत होगा तबतक हो सकता है कि तुम्हें यह याद भी न रहे कि एक दिन तुमने ही इसे आश्रय दिया था, संभव है तुम्हें यह पता ही न हो कि तुम्हींने इसे क्रियान्वित होनेके लिये प्रेरित किया था और आज जो परिणाम आया है वह तुम्हारे ही कारण है। और बहुधा यह भी होता है कि जब इन विचारमय आकारोंका फल प्राप्त होता है, तब तुम उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयकी इच्छा या परवाह भी नहीं करते। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनमें इस प्रकारकी रचना-शक्ति बहुत ही बलवान् होती है और उनकी मनोरचनाएं सदा कार्यान्वित होती हैं, लेकिन चूंकि उनकी मनोमय और प्राणमय सत्ता अच्छी तरह सधी हुई नहीं होती, इसलिये वे कभी इस चीजकी इच्छा करते हैं तो कभी उस चीजकी, अतः उनकी ये भिन्न-भिन्न अथवा विरोधी रचनाएं और उनके परिणाम एक-दूसरेसे टकराते और भिड़ते रहते हैं। और इन लोगोंको आश्चर्य होता है कि उनके जीवनमें इतनी अधिक अव्यवस्था और असामंजस्य क्यों है! वे इस बातका अनुभव नहीं करते कि उनके अपने विचारों और इच्छाओंने ही उनके इर्द-गिर्द ऐसी परिस्थिति बनायी है जो उन्हें इतनी बेमेल और परस्पर-विरोधी जान पड़ती है और उनके जीवनको प्रायः असह्य-सा बना देती है।

यह ज्ञान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, पर तभी जब सदुपयोग करनेके रहस्यके साथ-साथ दिया जाय। आत्म-संयम और आत्म-शासन ही इसके रहस्य हैं। सत्यके मूलको तथा भागवत संकल्पके सतत शासनको — केवल भागवत संकल्पका अनवरत शासन ही प्रत्येक विचारमय आकारको उसकी पूर्ण शक्ति तथा उसकी संपूर्ण और सामंजस्यमय सिद्धि प्रदान कर सकता है — अपने अंदर खोज निकालना ही यह रहस्य है। साधारणतया, मनुष्य यह जाने बिना ही कि उनकी विचार-रचनाएं किस प्रकार गति और क्रिया करती हैं, विचारोंको रचा करते हैं। इस प्रकारकी अज्ञानमय और विश्रृंखल अवस्थामें गढ़े हुए विचार परस्पर टकराते रहते हैं और तुमपर भार, श्रम और थकानका प्रभाव डालते हैं और तुम्हें लगता है मानों तुम असंख्य बाधाओंके बीचसे अपना मार्ग बना रहे हो। अज्ञान और असंगतिकी ये अवस्थाएं एक विश्रृंखल संघर्ष शुरू कर देती हैं और सबसे अधिक बल और सहनशीलतावाले विचारमय आकार विजयी होते हैं।

मन और उसके कार्यके विषयमें एक बात निश्चित है और वह यह कि तुम केवल उसी बातको समझ सकते हो जिसका तुम्हें अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरात्मामें पहलेसे ही ज्ञान है। किसी पुस्तककी वही बात तुमपर विशेष असर करती है जिसे तुम अपने अंदरकी गहराईमें पहले ही अनुभव कर चुके हो। मनुष्य किसी पुस्तक या उपदेशको अत्यंत अद्‌भुत पाते हैं और बहुधा तुम उन्हें यह कहते हुए पाते हो : "यहां जो कुछ कहा गया है ठीक वही मैं स्वयं अनुभव करता और जानता हूं, किंतु मैं इसे इतनी अच्छी तरह व्यक्त नहीं कर सकता था जैसे यहां किया गया है।" जब मनुष्य किसी सत्य-ज्ञानकी पुस्तकका पारायण करते हैं तो उसमें प्रत्येक पाठक अपने-आपको पाता है, और प्रत्येक पारायणमें उसे कुछ ऐसी बातें मिलती हैं जिन्हें वह पहले न देख सका था, प्रत्येक आवृत्तिमें यह ग्रंथ उसके सामने ज्ञानके एक नवीन क्षेत्रको, जिसे वह अभीतक उसमें न पा सका था, खोलकर दिखा देता है। परंतु यह इसलिये होता है कि उस मनुष्यकी अव-चेतनामें ज्ञानके जो स्तर अभिव्यक्त होनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे, यह पारायण उनका स्पर्श करता है और वह देखता है कि उस ज्ञानकी अभिव्यक्ति किसी दूसरे व्यक्तिने की है और वह भी, वह स्वयं करता उससे कहीं अधिक सुन्दर रीतिसे। परंतु एक बार यह अभिव्यक्ति होते ही वह उसे तुरंत पहचान लेता है और अनुभव करता है कि यह सत्य है। जो ज्ञान बाहरसे आता हुआ दिखायी देता है वह तुम्हारे अंदरके ज्ञानको बाहर ले आनेका एक अवसरमात्र है।

यह एक साधारण अनुभव है कि हम जो कुछ कहते हैं उसे प्रायः और ही रूपमें समझा या प्रदर्शित किया जाता है, इसका कारण भी उपर्युक्त प्रकारका ही है। हम जो कुछ कहते हैं वह सर्वथा स्पष्ट हो तो भी लोग उसे जिस प्रकार समझते हैं उसे देखकर आदमी चकरा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति उसमें कुछ ऐसी बात देखता है जो कहनेवालेके अभिप्रायसे अलग होती है यहांतक कि वह उसमें कोई ऐसी चीज जोड़ देता है जो उसके आशयसे बिलकुल उल्टी होती है। यदि तुम सत्य रूपमें समझना और इस प्रकारके भ्रमसे बचना चाहते हो, तो तुम्हें शब्दोंकी ध्वनि और गतिके पीछे जाकर नीरवतामें सुनना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीखना चाहिये। यदि तुम नीरवतामें सुनोगे तभी तुम ठीक-ठीक सुनोगे, ठीक-ठीक समझोगे। परंतु जबतक तुम्हारे मस्तिष्कमें कोई चीज घूम रही हो और कोलाहल मचा रही हो तबतक तुम केवल वही समझोगे जो तुम्हारे सिरमें घूम रहा है, न कि वह जो तुमसे कहा गया है।

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

मानव स्वभाव

[मानव-स्वभाव सीमित, संकुचित और सत्य-दर्शनकी शक्तिको सहन करनेमें असमर्थ; पृथ्वीपर भागवत शक्ति-के अवतरणके साथ-साथ पार्थिव वातावरणमें परिवर्तन; वर्तमान कालमें भागवत चेतना अति सशक्त; मानव स्वभावद्वारा उसकी विकृति; प्रभुके चुने हुए यंत्र]

सभी धर्मोंमें हमें ऐसे लोग मिलते हैं जिनमें भावपूर्ण होनेकी बड़ी क्षमता होती है और जो सच्ची और ज्वलंत अभीप्सासे भरे होते हैं। परंतु उनकी बुद्धि बहुत सरल होती है और वे ज्ञानके द्वारा भगवान्‌तक पहुंचनेकी आवश्यकता अनुभव नहीं करते। इस प्रकार-की प्रकृतिवालोंके लिये धर्मका उपयोग है, इतना ही नहीं, बल्कि उन-के लिये यह एक आवश्यक वस्तु है, कारण, मंदिरोंके उत्सव आदि बाह्य प्रथाओंके द्वारा यह उनकी आंतरिक आध्यात्मिक अभीप्साको एक प्रकारका सहारा देता और मदद पहुंचाता है। सभी धर्मोंमें कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने अपने उच्च आध्यात्मिक जीवनका विकास किया है। परंतु उनकी आध्यात्मिकता धर्मकी दी हुई नहीं है, बल्कि उन्होंने ही अपने धर्ममें अपनी आध्यात्मिकताका समावेश किया है। ये लोग जहां कहीं रहते, जिस किसी संप्रदायमें पैदा होते, वहीं वही आध्यात्मिक जीवन जीते। वे जो कुछ हैं अपनी सामर्थ्य और अन्तः-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ताकी किसी शक्तिके द्वारा बने हैं, न कि स्वीकार किये हुए धर्मके द्वारा। उनकी प्रकृतिमें यह शक्ति इतनी बलवान् है कि धर्म उनके लिये गुलामी या बंधनका कारण नहीं बन सकता। परंतु उनका मन बलवान्, स्पष्ट और क्रियाशील नहीं होता, इसलिये उन्हें इस बातकी आवश्यकता होती है कि वे विश्वास करें कि इस या उस संप्रदायमें ही निरपेक्ष सत्य है और किसी विचलित करनेवाली शंका या संदेहके बिना वे अपने-आपको उसपर न्योछावर कर दें। मैंने सभी धर्मोंमें इस तरहके लोगोंको देखा है, और इन लोगोंकी श्रद्धाको डिगाना एक अपराध होगा। इस तरहके लोगोंके लिये धर्म बाधक नहीं है। धर्म उनके लिये बाधक है जो और आगे बढ़ सकते हैं, किंतु जो आगे तो नहीं बढ़ सकते, पर आत्माके मार्गपर कुछ दूरतक चल सकते हैं, उनके लिये सहायक हो सकता है। धर्मके कारण निकृष्टतम और उत्कृष्टतम दोनों प्रकारकी प्रवृत्तियोंको प्रोत्साहन मिला है। एक ओर यदि इसके नामपर अत्यंत भयानक युद्ध लड़े गये हैं और भयंकर अत्याचार किये गये हैं तो दूसरी ओर इसने धर्म-कार्यके निमित्त परम शौर्य और आत्म-बलिदानके भावोंको भी जगाया है। मनुष्यके मनने अपनी उच्चतम कर्मण्यताओंके द्वारा जो कुछ प्राप्त किया है, दर्शन-शास्त्रके समान धर्म भी उसकी सीमा दिखाता है। यदि तुम धर्मके बाह्य रूपके गुलाम हो जाओ तो यह बाधा है, एक बंधन है, किंतु यदि इसके अंदरके सारका उपयोग करना जानते हो तो यह आध्यात्मिक भूमिकामें कूद सकनेके लिये सहायता देनेवाला तख्ता बन सकता है।

जो किसी विशेष मतमें विश्वास रखता है अथवा जिसने सत्यके कुछ अंशको प्राप्त किया है, वह सोचने लगता है कि सत्यको, समग्र और पूर्ण सत्यको, केवल उसीने पाया है। मानव स्वभाव ही ऐसा है। मानव प्राणियोंको अपने पैरपर खड़े होनेके लिये और अपने मार्गपर चलनेके लिये मिथ्याकी मिलावट आवश्यक-सी प्रतीत होती है। यदि उन्हें अचानक सत्यका दर्शन करा दिया जाय तो वे बोझके नीचे कुचल जायंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर बार जब भागवत सत्य एवं भागवत शक्तिका कुछ अंश पृथ्वीपर प्रकट होनेके लिये उतरता है, तो पार्थिव वातावरणमें कुछ परिवर्तन आता है। जो ग्रहणशील हैं वे इस अवतरणके फलस्वरूप किसी दिव्य प्रेरणा, किसी स्पर्शकी ओर उन्मुख हो जाते हैं, उनमें दिव्य दृष्टि खुलने लगती है। यदि वे जो कुछ प्राप्त हो उसे धारण करके यथार्थ रूपमें अभिव्यक्त कर सकें तो वे कहेंगे : "एक महान् शक्तिका अवतरण हुआ है, मैं उसके संस्पर्शमें हूं और उसके बारेमें मैंने जो कुछ समझा है वह तुमसे कहूंगा।" परंतु अधिकांश व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाते, क्योंकि उनके मन संकुचित होते हैं। उन्हें एक प्रकाश मिलता है और वे उससे अभिभूत हो जाते हैं तथा सहसा चिल्ला उठते हैं : "भागवत सत्य मेरे पास है, मेरा उसपर समग्र और संपूर्ण रूपसे अधिकार है।" आज इस धरतीपर कम-से-कम दो दर्जन ईसामसीह हैं, और शायद इतने ही बुद्ध भी हों। अकेले भारतमें ही तुम जितने चाहो उतने अवतार पा सकते हो, छोटी-छोटी विभूतियोंका तो कहना ही क्या है। इस तरह तो यह सब कुछ बेढंगा-सा दिखायी पड़ेगा, लेकिन यदि तुम इसके पीछे देखो तो पहली दृष्टिमें यह जितना मूर्खतापूर्ण दिखायी देता है, उतना नहीं रहेगा। सत्य यह है कि मानव व्यक्तित्वको किसी दिव्य सत्ता, या दिव्य शक्तिका संस्पर्श मिला है और वह अपनी शिक्षा और परंपराके प्रभावके कारण उसे बुद्ध, ईसामसीह या और किसी परिचित नामसे पुकारता है। यह कहना बड़ा कठिन है कि उस व्यक्तिके संस्पर्शमें आनेवाली सत्ता या शक्ति स्वयं बुद्ध या ईसामसीहकी थी, किंतु यह भी कोई नहीं कह सकता कि इस सत्ता या शक्तिसे प्राप्त होनेवाली प्रेरणाका मूल्य वही नहीं था जहांसे ईसामसीह या बुद्धको प्रेरणा मिलती थी। यह सर्वथा शक्य है कि इन मानव पात्रोंमें ऐसे किसी उद्गमसे प्रेरणा आयी हो। परंतु यदि वे विनीत और सरल होते तो अपनी प्रेरणाके विषयमें इतना ही कहकर संतोष मानते और इससे आगे न बढ़ते, वे कहते हैं : "अमुक महान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मासे मुझे यह प्रेरणा मिली है," किंतु इसकी जगह, वे घोषणा कर बैठते हैं : 'मैं ही वह महान् आत्मा हूं।" मैं एक ऐसे व्यक्तिको जानती थी जो इस बातका दावा करता था कि वह खुद ईसामसीह और बुद्ध, दोनों है। उसने कुछ प्राप्त किया था, किसी सत्यका अनुभव किया था, अपनेमें और दूसरोंमें भगवान्‌की उपस्थितिका दर्शन किया था। परंतु उसके लिये यह अनुभव बहुत ही कड़ा था, यह सत्य उसके बसका न था। वह पागल-सा हो गया और दूसरे ही दिन गलियोंमें यह कहता हुआ फिरने लगा कि उसके अंदर ईसामसीह और बुद्ध, दोनों एक हो गये हैं।

एक भागवत चेतना यहां उपस्थित है जो इन समस्त अभिव्यक्तियोंके अंदर अपना मार्ग तैयार करती हुई इन सब लोगोंके द्वारा काम कर रही है। आज इस पार्थिव भूमिकापर वह जितनी अधिक शक्तिके साथ काम कर रही है, उतनी शक्तिसे उसने पहले कभी नहीं किया था। कुछ लोग ऐसे हैं जिन्हें किसी रूपमें या कुछ परिमाणमें इस चेतनाका स्पर्श प्राप्त होता है, किंतु जो कुछ उन्हें प्राप्त होता है उसे वे विकृत कर डालते हैं, उसके अंदरसे अपनी ही कोई चीज खड़ी कर लेते हैं। दूसरे ऐसे होते हैं जो इस स्पर्शका अनुभव तो करते हैं, किंतु उसकी शक्तिको नहीं सह सकते और उसके भारके कारण पागल हो जाते हैं। परंतु कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनमें इस शक्तिको ग्रहण करनेकी क्षमता और इसे सहनेकी ताकत होती है और यही लोग पूर्ण ज्ञानके पात्र, प्रभुके चुने हुए यंत्र और प्रतिनिधि होंगे।

यदि तुम्हें, जिस धर्ममें तुम पैदा हुए या पले हो उसका वास्तविक मूल्य आंकना हो अथवा अपने देश या समाजको उसके यथार्थ रूपमें देखना हो, यदि तुम्हें यह जानना हो कि जिस परिस्थितिमें तुम जा पड़े हो या घिरे हुए-से हो वह कितनी सापेक्ष है तो केवल पृथ्वी-पर्यटन करके यह देख लो कि जिस चीजको तुम अच्छा समझते हो वही चीज दूसरी जगह बुरी समझी जाती है, और जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ एक स्थानमें बुरा समझा जाता है उसीका दूसरे स्थानपर अच्छा कहकर स्वागत किया जाता है। सभी देशोंका और सभी धर्मोंका जन्म अनेकविध परंपराओं और रूढ़ियोंके समूहमेंसे हुआ है। इन सभीमें तुम्हें सन्त, शूर-वीर, महान् और शक्तिशाली पुरुष मिलेंगे, साथ-ही-साथ क्षुद्र और दुष्ट पुरुष भी। तब तुम यह अनुभव करोगे कि यह कहना कितना हास्यास्पद है : "चूंकि मैं इस धर्ममें पला हूं इसलिये यही धर्म सच्चा है, चूंकि मैं इस देशमें पैदा हुआ हूं इसलिये यही देश सब देशोंमें उत्तम है।" इसी तरहका दावा अपने परिवारके विषयमें भी किया जा सकता है और कहा जा सकता है : चूंकि मैं एक ऐसे परिवारका हूं जो किसी स्थानमें इतने वर्षों या शताब्दियोंतक रहा है, इसलिये उसकी परंपराओं और रूढ़ियोंसे मैं बंधा हुआ हूं, केवल ये परंपराएं और रूढ़ियां ही आदर्श हैं।"

(श्रीमातृवाणी, खंड ३)

सद्‌गुणोंकी कहानी

एक समयकी बात है। एक भव्य महल था जिसके बीचोंबीच एक गुप्त मंदिर था। किंतु आजतक उसकी देहली भी किसीने पार नहीं की थी। और तो और, उसकी बाहरी चहारदीवारीतक भी पहुंचना मर्त्य प्राणियोंके लिये सहज नहीं था, क्योंकि महल ऊंचे बादलोंपर खड़ा था और आदि कालसे अबतक बिरले ही वहांका मार्ग ढूंढनेमें समर्थ हुए थे।

यह था 'सत्य' का महल।

एक दिन वहां एक उत्सवका आयोजन हुआ : मनुष्योंके लिये नहीं, वरन् उनसे अत्यन्त भिन्न प्रकारकी सत्ताओंके लिये। इसमें वे छोटे-बड़े देवी-देवता आमंत्रित हुए थे जो इस पृथ्वीपर "सद्‌गुणों"के नामसे पूजे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस महलके बाहरी भागमें एक बहुत बड़ा कक्ष था। उसकी दीवारें, फर्श और छत स्वयं प्रकाशमान थीं, तिसपर हजारों अग्नि-स्फुलिंगोंसे और भी जगमगा रही थीं।

यह था 'बुद्धि'का महाकक्ष। यहां फर्शके पास प्रकाश बहुत हल्का था। नीलमणिके रंगका अति सुन्दर, गहरा नीला रंग छतकी ओर अधिकाधिक तेज होता गया था। छतमें हीरोंके शमादान झाड़ोंकी तरह लटके हुए थे। उनके हजारों मुखोंसे आंखोंको चौंधियानेवाली किरणें चारों ओर फूट रही थीं।

सद्गुण अलग-अलग आये, पर शीघ्र ही अपनी-अपनी रुचिके अनुसार टोलियां बनाकर बैठ गये। सभी प्रसन्न थे कि आज ऐसा दिन आया जब वे एक बार इकट्ठे हो सके। वे, साधारणतः, इस जगत्में और अन्य जगतोंमें बिखरे रहते हैं, परायोंकी भीड़में छितरे रहते हैं।

इस उत्सवकी अध्यक्षता की 'दिलकी सच्चाई'ने जिसका वेश स्वच्छ जलके समान निर्मल था, उसके हाथोंमें एक घनाकार, अति विशुद्ध स्फटिक था। उस स्फटिकसे वस्तुएं वैसी दिखलायी देती थीं जैसी वे वास्तवमें हों, जैसी वे साधारणतया प्रतीत होती हैं उससे सचमुचमें बहुत ही भिन्न, क्योंकि उसमें वस्तुएं हूबहू, बिना किसी विकृतिके, प्रतिबिम्बित होती थीं।

उसके पास ही दो मूर्तियां विश्वस्त अंग-रक्षकोंकी तरह खड़ी थीं; एक थी 'विनम्रता', उसका भाव आदरपूर्ण और साथ ही गर्वीला था और दूसरी ओर उन्नत ललाट, उज्ज्वल चक्षु, दृढ़ हास्यपूर्ण अधर, प्रशांत निश्चिन्त भंगिमावाला 'साहस' था।

'साहस'के समीप उसके हाथ-में-हाथ डाले बुरकेमें लिपटी एक नारी खड़ी थी। केवल उसकी तीक्ष्ण आंखें ही घूंघटको भेदकर चमकती हुई दीख पड़ती थीं। वह थी 'सावधानता'।

सबके बीच एक-दूसरेके पास आती-जाती, फिर भी हर समय सबके निकट दीखती थी 'उदारता',—एक ही साथ सतर्क एवं शांत,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मरत एवं विवेकपूर्ण। उस समूहमें वह जिधर निकल जाती उधर ही अपने पीछे उज्ज्वल, मृदु प्रकाशकी रेखा छोड़ती जाती थी। यह प्रकाश जो उससे छंटकर विकीर्ण हो रहा था, वास्तवमें, उसे अपनी श्रेष्ठ सखी, चिर सहचरी और जुड़वां बहन 'न्यायपरता'से मिल रहा था, किंतु वह उसके पास सूक्ष्म रूपमें, अधिकांश दृष्टियोंसे ओझल रहकर आ रहा था। 'दया', 'धैर्य', 'नम्रता', 'सज्जनता' और ऐसे अनेकोंकी उज्ज्वल सेना 'उदारता'को घेरे हुए थी।

सभी आ चुके थे। कम-से-कम सबकी ऐसी धारणा थी। किंतु यह लो, स्वर्ण-द्वारपर हठात् एक नवागन्तुक!

द्वारपालने बड़ी कठिनाईसे उसे अन्दर आने दिया था। न तो उन्होंने उसे कभी पहले देखा था और न ही उसकी आकृतिमें उन्हें कोई प्रभावशाली चीज लगी। वह नवीन वयसकी थी, उसकी देह दुबली-पतली और पोशाक साधारण, बल्कि गरीब जैसी थी। वह डरती-सी, झिझकती-सी, कुछ डग आगे बढ़ी। पर स्पष्ट ही वह अपनेको ऐसी वैभवशाली उज्ज्वल भीड़के बीच पाकर खो-सी गयी। वह ठिठक गयी, उसे पता न था कि किसकी ओर जाय।

उधर 'सावधानता' साथियोंसे कुछ परामर्श करके उनके अनुरोधपर अनजाने मेहमानकी ओर बढ़ी। वह जरा गला साफ करके, जैसा कि दुविधामें पड़े लोग थोड़ा सोचनेके लिये करते हैं, उसकी ओर अभिमुख होकर बोली: "हम सब जो इस महलमें इकट्ठे हुए हैं एक-दूसरेके नाम और गुण जानते हैं। आपको आते देखकर हमें बड़ा आश्चर्य हो रहा है। आप विदेशी-सी प्रतीत होती हैं। कम-से-कम ऐसा नहीं लगता कि आपको कभी देखा हो। क्या आप यह बतानेकी कृपा करेंगी कि आप कौन हैं?"

नवागताने लम्बी सांस लेते हुए उत्तर दिया: "हाय! मुझे आश्चर्य नहीं कि मुझे विदेशी माना जा रहा है, मैं कहीं कदाचित् ही आमंत्रित होती हूं। **मेरा नाम है 'कृतज्ञता'।**"

(श्री मातृवाणी, खण्ड २; पहलेकी बातें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीकी दृष्टिमें काम

लोग जब दुनियासे ऊब जाते हैं, काम-काजमें मन नहीं लगता, घरके कलहका अंत नहीं आता, उधार पहाड़ बनकर कमर तोड़ता है, नौकरीसे लात लग जाती है, तो भगवान्को याद करते हैं। कहते हैं न :

नारि मुई घर संपति नासी,
मूंड़ मुड़ाय भये संन्यासी।

हां, तो इसी तरह एक समृद्ध व्यापारीने माताजीको लिखा, "अब काम-काज में मेरा मन नहीं लगता, दुनियासे मुंह मोड़नेकी इच्छा प्रबल हो उठी है। मैं आपके आश्रममें आकर रहना चाहता हूं, कृपया स्वीकृति प्रदान करें।" माताजीने उत्तर भेजा : अगर तुम दुनियासे मुंह मोड़ना चाहते और काम-काजसे ऊब गये हो, श्री-अरविंद आश्रम तुम्हारे लिये बड़ा ही गलत स्थान होगा। यहां तो बाहरसे अधिक काम करना होगा।"

आश्रमें यहां-वहां माताजीके कुछ वाक्य लगे हुए हैं, उनमेंसे एक है, "काम शरीर द्वारा की गयी प्रार्थना है।" अन्य कई योग-पद्धतियों-में भी कामको बहुत महत्त्व दिया गया है, परंतु श्रीअरविंद और माताजीके योग में कामका महत्त्व निराला है। अन्य पद्धतियोंमें जहां साधनाका उद्देश्य होता है संसारसे, मायाजालसे पिंड छुड़ाना, वहां श्रीअरविंदका योग इस मौतिक जीवनका, भवसागरका त्याग नहीं, रूपांतर करना चाहता है। ध्यान-धारणा आदिके द्वारा आप अपनी चेतनाको ऊपर उठा सकते हैं, परन्तु उसकी सच्ची कसौटी तो काममें ही होती है।

हमने बहुत-से योगियोंके बारेमें पढ़ा है जिनकी चेतना ध्यानके समय बहुत ऊंची उठ जाती थी, परन्तु ध्यानके बाहर आते ही वे जैसे-के-तैसे हो जाते थे। माताजीके योगमें उस उच्चतर चेतनाको अपने दैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहारमें बनाये रखना, अपने काममें उसीके द्वारा संचालित होना जरूरी है।

हां, एक बहुत बड़ा फर्क है। साधारण मनुष्य काम करता है अपने लिये, अपने कुटुम्ब, समाज या देशके लिये, यानी, किसी-न-किसी छोटे-बड़े अहंके लिये, लेकिन माताजीका साधक जो कुछ करता है वह अपने लिये नहीं, भगवान्के लिये और आगे चलकर उन्हींको अर्पण करता हुआ, और उससे भी आगे चलकर उन्हींकी प्रेरणासे, और फिर, उन्हींके द्वारा परिचालित होकर करता है।

माताजीकी दृष्टिसे काम करना कोई आसान बात नहीं है। चेतनाके क्षेत्रमें, जिसकी जहां पहुंच हो, उस शिखरतक पहुंचना, और फिर, उस चेतनाको लेकर नीचे उतरना और उसी चेतनाके साथ काम करना ही सच्चा काम है। शुरूमें, "साधो सहज समाधि भली" वाली स्थिति बहुत उपयोगी है, जिसमें साधक खाते-पीते, सोते-जागते अपनी क्रियाएं अर्पित करता जाता है, परन्तु यह प्रारंभ है। योगकी दृष्टिसे कोई काम कम या अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं होता। महत्त्व होता है कामके पीछेकी भावनाका। रैदास भक्त-का जूते गांठना औरोंकी पूजा-अर्चनासे, तीर्थ-स्थानसे अधिक महत्त्व-पूर्ण है। आदमी कोई भी काम पूरी सच्चाईके साथ और सच्चे संकल्पके साथ करे, तो उसे वही लाभ हो सकता है। इसी विषय-पर बोलते हुए माताजी कहती हैं:

"लेकिन किसी भी रास्तेसे, अगर तुम काफी सच्चाईसे और काफी निरन्तर रूपसे लगे रहो, तो चाहे कोई रास्ता क्यों न हो — मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं — तुम जूते गांठते हुए भी भगवान्को पा सकते हो। ऐसे जाज्वल्यमान उदाहरण हैं जिनका खण्डन नहीं किया जा सकता। व्यक्ति क्या करता है उसका महत्त्व न के बराबर है। ऐसे लोगोंके बहुत सारे उदाहरण हैं जिनमें लोग बागवानी और खेती करते थे, जिन्होंने अपना शारीरिक काम करते हुए भगवान्को पाया। इसके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें अपना काम बन्द करनेकी कभी जरूरत नहीं पड़ी।"...

(मातृवाणी, खण्ड ५, पृ ७९)

केवल योग करते समय ही नहीं, साधारण जीवनमें भी, हमारे हर एक कामका हमारे जीवनपर बहुत अधिक असर पड़ता है। कामका रूप अपने-आपमें महत्त्वपूर्ण नहीं है, यह हम पहले ही देख आये हैं, महत्त्व है इस बातका कि हम काम कैसे करते हैं। माता-जीके शब्दोंमें सुनिये :

"तुम अपने कर्मोंसे उत्पन्न वातावरणको अपने साथ, अपने चारों ओर, अपने अंदर लिये फिरते हो, और तुम जो कुछ करते हो, वह शरीर सुन्दर, भला और सुसमंजस हो तो तुम्हारा वातावरण भी सुन्दर, अच्छा और सुसमंजस बना रहेगा, दूसरी ओर, यदि तुम क्षुद्र स्वार्थपरतामें, अविवेकपूर्ण आत्म-हितचिंतनमें, निष्ठुर अशुभ इच्छामें निवास करो तो तुम अपने जीवनके प्रत्येक मुहूर्त उसीमें सांस लोगे और उसका अर्थ होगा दुःख, निरन्तर बेचैनी, उसका अर्थ होगा कुत्सित होनेके कारण निराशामय वीभत्सता।

"और यह न सोचो कि इस शरीरको छोड़ देनेपर तुम इस वातावरणसे मुक्त हो जाओगे; बल्कि शरीर तो अचेतनाके एक परदे जैसा है जो दुःख-क्लेशकी तीव्रताको कम कर देता है। यदि तुम शरीरके संरक्षणसे रहित होकर अत्यन्त स्थूल प्राणिक जीवनमें चले जाओ, तो दुःख-कष्ट बहुत अधिक तीव्र हो जायगा, और फिर, तुम्हें ऐसा सुयोग नहीं मिलेगा कि जो बदलने लायक है उसे बदल दिया जाय, जो संशोधन योग्य है उसे संशोधित कर दिया जाय, एक अधिक उच्च, अधिक सुखमय और अधिक ज्योतिर्मय जीवन तथा चेतनाकी ओर अपना उद्घाटन किया जाय।

"तुम्हें अपना काम यहीं शीघ्र कर लेनेकी कोशिश करनी चाहिये, क्योंकि वास्तवमें, वह यहीं हो सकता है।

"मृत्युसे किसी चीजकी आशा मत करो। जीवन ही सुरक्षा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस, जीवनमें रहकर ही तुम्हें अपनेको रूपांतरित करना चाहिये। इस पृथ्वीपर ही तुम उन्नति कर सकते हो और इस पृथ्वीपर ही उपलब्ध कर सकते हो। इस शरीरमें ही तुम 'विजयश्री'को अविकृत कर सकते हो।"

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३; पृ० १९०)

माताजीने धम्मपदके ऊपर बोलते हुए कहा है:

"यहां कुछ बड़े सुन्दर और ज्ञानपूर्ण उपदेश हैं — जैसे, दूसरे जो कुछ करते हैं और वे जो भूलें करते हैं उनके विषयमें व्यस्त नहीं होना चाहिये, बल्कि अपने निजी दोषों और लापरवाहियोंको देखना चाहिये और उन्हें सुधारना चाहिये। दूसरी उत्तम सलाह है कि कभी बहुत अधिक ऐसी सुभाषित वाणी नहीं बोलनी चाहिये जो कर्ममें परिणत न की गयी हो — थोड़ा बोलो और उत्तम रूपमें काम करो। उनका कहना है कि जो सुन्दर शब्द बस, शब्द ही हैं, वे सुगंधहीन फूलकी तरह हैं।

"और अंतमें, तुम अपने दोषोंके कारण कहीं हतोत्साह न हो जाओ इसलिये धम्मपद तुम्हें यह आश्वासन देनेवाली उपमा देती है: 'सड़कके किनारे पड़े हुए कूड़े-करकटके ढेरमेंसे विशुद्ध कमल उत्पन्न हो सकता है।" कहनेका तात्पर्य यह कि कोई चीज इतनी रद्दी नहीं है कि उसमें से अत्यन्त पवित्र उपलब्धि उत्पन्न न हो सके।

"हमारा भूतकाल चाहे जो भी रहा हो, हमने चाहे जो भी भूलें की हों, हम चाहे जितने अज्ञानमें क्यों न रह चुके हों, हम अपने गभीरतम प्रदेशमें परम पवित्रताको धारण किये हुए हैं जो एक अनुपम अनुभूतिके रूपमें रूपांतरित हो सकती है।

"बस, प्रधान बात है उसीके विषयमें सोचना, उसके ऊपर एकाग्र होना और अपनी समस्त कठिनाइयों और विघ्न-बाधाओंके विषयमें भी संलग्न न रहना।

"जो कुछ तुम बनना चाहते हो, बस, उसीपर पूर्ण रूपसे एकाग्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होओ और जो कुछ तुम नहीं होना चाहते उसे यथासंभव समग्र रूपमें भूल जाओ।"

(वही; पृ० २०९)

नियतिकी मांग

कथा यूं है। एक दिन शिव-पार्वती धरतीकी यात्रापर निकले। शिवजीने दो ऐसे स्थानोंपर विशेष रूपसे प्रणाम किया जहां न कोई मंदिर था, न कोई संगम, जहां किसी प्रकारकी कोई विशेषता न थी। पार्वतीजीको कुतूहल हुआ। उन्होंने इसका कारण पूछा तो शिवजी बोले, "इनमेंसे एक स्थान ऐसा है जहां हजारों वर्ष पहले किसी योगीने बड़ी तपस्या की थी। दूसरे स्थानपर आजसे हजारों वर्ष बाद कोई योगी आकर तपस्या करनेवाला है। उनके कारण दोनों पुण्य क्षेत्र हैं।"

कहते हैं दालीजोदाका 'श्रीअरविन्द श्रीक्षेत्र' उन्हींमेंसे एक स्थान-पर स्थित है। वहां भूतकालमें कर्म योगी निवास करते थे और वहीं श्रीअरविन्द योगके कुछ साधक धरतीपर सत्य चेतना उतारनेके लिये कटिबद्ध होकर तपस्या कर रहे हैं।

यह स्थान कटकसे लगभग ३२ किलोमीटरपर है और वहांके लोग इसे 'डाक्टर साही' कहते हैं। श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरीके 'नव-ज्योति' कार्यालयने इस स्थानपर ३०-६-७४ को पदार्पण किया और यहांपर 'श्रीअरविंद श्रीक्षेत्र' सोसायटीकी स्थापना की गयी।

यह लगभग दो सौ एकड़का फार्म है जिसका अधिक भाग अभी-तक जंगल है। इसके पंद्रह खंड किये गये हैं जिनके नाम हैं— भागवत कृपा, भागवत रक्षा, भागवत प्रेम, श्रद्धा आदि। कुछ खंडोंमें काम जोर-शोरसे शुरू हो गया है। लगभग २० साधक अपना सब कुछ छोड़कर इस काममें लगे हैं। कृषि, गोशाला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुर्गी-पालनसे लेकर भवन-निर्माण, शिक्षा आदिपर ध्यान दिया जा रहा है। आशा की जाती है शीघ्र ही यहां साधकोंकी संख्या सौ-तक पहुंच जायगी और यह सारा क्षेत्र अध्यात्म-प्रेरित क्रिया-कलापसे गूंज उठेगा। भावी क्रिया-कलापकी कौन जाने, अभी जो काम हो रहे हैं उनकी कुछ रूपरेखा देख लीजिये।

कृषि और सिंचाई — प्रयास यह किया जा रहा है कि पासकी तीन सौ एकड़ जमीन और मिल जाय। तब यांत्रिक कृषि ज्यादा आसान हो जायगी और योजना बनानेमें और पैमानेपर काम करनेमें भी सुविधा होगी। यहां धान, गेहूं, तिलहन, दालें, शाक और फल पैदा करनेकी दिशामें कदम उठाये जा रहे हैं। यहां एक छोटा-सा बांध बनाकर सिंचाईकी व्यवस्था की जा रही है, जिसपर लगभग सोलह लाखका खर्च आयेगा। साथ ही वर्तमान कुंए, तालाबोंको भी ठीक-ठाक किया जा रहा है।

गोशाला और मुर्गी-पालन — यहां लगभग सौ गायों और पांच हजार मुर्गियोंके पालनेकी योजना बन रही है। इनके दाने-चारेको यहीं पैदा किया जा सकता है।

उद्योग-धंधे — बेंत और अगरबत्तीका काम शुरू हो चुका है और तेल निकालनेकी मशीन जल्दी ही लग जायगी। इनके अतिरिक्त, हाथ-काम, ईंटके भट्टे, हाथके करघे, साबुनसाजीके लिये योजना बन रही है।

मकान — लगभग सौ स्थायी सदस्यों, कार्यकर्ताओं, दर्शकों, विद्यार्थियों आदिके लिये भवन-निर्माणकी भी बड़ी योजना है।

शिक्षा — माताजी और श्रीअरविंदने बालकोंकी शिक्षाके बारेमें बहुत कुछ कहा है। यहां उनके बताये मार्गका अनुसरण करनेकी कोशिश की जायगी।

यह सारी योजना केवल कपोल-कल्पना या शेखचिल्लीका सपना नहीं है। इस दिशामें गंभीरतासे काम शुरू हो चुका है। यहां, गड्डे पल्लीमें, रीवाके 'श्रीअरविंद ग्राम'में छोटे-छोटे ओरोवील बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं। हम आशा करते हैं कि वह दिन दूर नहीं जब इस प्रकारके केंद्र हर प्रदेशमें ही नहीं, जिले-जिलेमें काम करने लगेंगे, जब धरतीके सभी काम आध्यात्म-शक्तिके द्वारा संचालित हो सकेंगे। यह नियतिकी मांग है।

उदवीका समारोह

श्रीअरविंदाश्रम,
पांडिचेरी-६०५००२
फरवरी, १९७९

प्रिय हीरो,

तुम्हें याद होगा कि मैंने किसी चिट्ठीमें 'उदवी' का वर्णन लिख भेजा था, तुम्हें उस इतालवी आश्रमवासी 'नत' की भी याद होगी जिसने 'उदवी' में अगरबत्तियोंका एक छोटा-सा कारखाना खड़ा किया है। वहां बच्चोंके लिये एक प्राथमिक विद्यालय भी है, जिसमें आस-पासके गांवोंके लगभग ७० बच्चे पढ़ते हैं। बच्चे बस, वासी मुंह उठकर चले आते हैं, स्नान, जलपान आदि करके, पढ़ाई-लिखाई करते हैं। खेल-कूद करते हैं, दोपहरका खाना खाते और कुछ आराम करते हैं, फिर, शामकी पढ़ाई-लिखाई पूरी करके घर जाते हैं।

१४ फरवरीको इसके जन्मोत्सवके उपलक्ष्यमें एक विशेष कार्यक्रम-का आयोजन था। साढ़े पांचके आस-पास मैं वहां जा पहुंची। 'ओरोशिखा' का छोटा दरवाजा खुला था। वहां बांसके झुरमुटके पास सुन्दर अल्पना देखकर मैंने पूछा तो पता लगा कि यह पासकी स्त्रियोंकी कला है। तबीयत खुश हो गयी। आज भी हमारे ग्रामीणोंमें इतनी सौन्दर्य-वृत्ति है! आगे बढ़े तो हमारे शिक्षा-केंद्रके स्नातक और यहांके एक प्रमुख कार्यकर्ता, विक्रम, ने हमारा स्वागत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। कुछ समय पहले हमने जो 'ओरोशिखा' देखी थी आजका रूप उससे काफी अलग था। इस बीच दो नये मकान खड़े हो चुके हैं, एक नयी सड़क बन गयी है और विद्यालयकी दीवारोंपर नयी चित्रमाला दिखायी दे रही है। एक दीवारपर रामचन्द्रजीके धनुष तोड़नेका दृश्य था तो दूसरीपर स्वर्णमृगका। तीसरी दीवार-पर महाभारतके दृश्य उभर रहे हैं। यह सभी चित्र आश्रमके एक तरुण कलाकारके बनाये हुए हैं।

विद्यालयके सामने ही रंगीन रोशनियोंसे जगमगाता सुन्दर-सा मंच बनाया गया था। खुले मैदानमें कुछ कुरसियां पड़ी थीं और बाकी स्थानपर चटाइयां बिछी थीं। चारों तरफकी पृष्ठभूमिमें यह दृश्य बड़ा मनोहर लग रहा था।

छः बजे यहांकी एक अध्यापिकाने जो हमारे शिक्षा-केंद्रकी स्नातिका है, तारिकाके रूपमें प्रकट होकर एक संक्षिप्त और मधुर स्वागत-भाषण दिया। किसी गैर तामिलके मुखके ऐसी अच्छी तमिल सुननेके अवसर कम ही मिलते हैं।

कार्यक्रमका आरंभ हुआ फ्रेंचमें माताजीकी प्रार्थनासे। उसके बाद आयी अंगरेजी नाटककी बारी। तुमने वह कहानी तो जरूर पढ़ी होगी जिसमें एक धूर्त्त दरजी राजाको खूब ठगकर फरिश्तोंकी पोशाक बना देनेका वचन देता है, पर साथ ही यह कह देता है कि यह पोशाक सिर्फ सदाचारियोंको ही दिखायी देगी। दुराचारी कहानेके डरसे सभी दरबारी राजाको नंगा देखते हुए भी उसकी पोशाककी प्रशंसा करते हैं, लेकिन एक छोटा-सा मासूम बच्चा चिल्ला पड़ता है, "अरे, देखो तो राजा नंगा है।" तो इस कहानीको नाटकके रूपमें प्रस्तुत किया गया था।

इसके बाद गुजराती गानके साथ बड़ी आकर्षक वेश-भूषाके साथ दो लड़कियोंने नाच किया। दोनों सचमुच फूल-सी सुन्दर लग रही थीं। उनके सिरपर बहुत बड़ा गजरा था और गलेमें कागजके पत्तोंकी माला, कमरपर लहराता घाघरा अपनी अलग ही छटा दिखा रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद हमने एक जादूगर देखा। ५–६ सालका बच्चा बड़ा-सा चोगा पहने, सिरपर लंबी नुकीली टोपी लगाये आया। उसके सहायक एक लंबा, बड़ा बक्सा लेकर आये। अब जादूगरने एक अंडा दिखाया, उसे बक्सेमें रखा, छड़ी घुमाई और आनन-फानन एक चूजा निकल आया। इसके बाद नन्हें जादूगरने कमाल कर दिखाया। एक छोटी लड़कीको बक्सेमें लिटा दिया, छड़ी घुमाई और बाहर निकला एक लड़का।

अंतमें तमिलमें महाभारतसे द्रौपदीके वस्त्र-हरणका दृश्य दिखाया गया। जब पांच वर्षकी द्रौपदीने प्रवेश किया तो दर्शकोंमें तहलका मच गया। सब उछल-कूद मचाने लगे। मेरे सामने छोटे बच्चे बैठे थे। वे आस-पासके गांवसे आये थे। तुम कल्पना नहीं कर सकतीं इनकी कैसी अवस्था होती है! गरीबी, अज्ञान, आलस्यने उन्हें ऐसा जकड़ा रखा है कि बच्चे रोज नहातेतक नहीं, मिट्टी-धूलमें सारे दिन खेलकर कपड़ोंका वह हाल कर लेते हैं कि पूछो मत! वैसे बच्चे मेरे चारों ओर बैठे थे। एक क्षण मेरा सुरुचि-प्रिय मन भड़क उठा, छिः . . . किंतु, तुम विश्वास करो, मैंने पाया है कि श्रीअरविंदकी कोई भी कृति पढ़ो, वह तुम्हारे अंदर घुसकर धीरे-धीरे तुम्हें बदलने लगती है। जब मेरा मन 'छिः' कह रहा था, उसी क्षण मुझे उनकी एक कविताकी इन पंक्तियोंकी याद हो आयी:

Even in rags I am a God;
Fallen, I am divine.

मैंने चारों ओर नजर दौड़ायी और मुझे लगा, 'नत' के सामने कितने ही "Gods" चुनौती बनकर बैठे हैं। उनसे भी अधिक जिम्मेवारी है शिक्षकोंकी, जो इस मिट्टीमेंसे सुन्दर प्रतिमाओंका निर्माण करेंगे।

मेरी घिन काफूर हो गयी। अपने सामने देखनेके लिये मचलती हुई एक बालिकाको मैंने गोदमें बिठा लिया। बोल, है न यह चमत्कार!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यक्रम समाप्त हुआ, हम लोग महेंद्रभाईके साथ जल्दी-जल्दी बाहर आ गये। चलते-चलते मैंने बाड़पर नजर दौड़ायी, 'बोगेन-विलिया'के फूल विभिन्न रंगोंमें अपनी छटा दिखा रहे थे। सारी बाड़ एक रंग-बिरंगी दीवार बन गयी थी। परीकथामें वर्णन पढ़ते हैं न, "दीवारपर सोना-चांदी मढ़े थे!" यहां तो सोने-चांदीसे बढ़-कर सुन्दर दृश्य था!

रात गहरी होती जा रही थी। चारों ओर घना अंधकार था। उस आदिम अंधकारमें झींगुरोंका तीव्र स्वर उसे अधिक गहरा बना रहा था। शहरकी ओर जाते हुए मैं विद्यालयके बच्चोंके बारेमें सोच रही थी। कुछ समयमें वे अन्य बच्चोंसे कितने भिन्न दिखेंगे! इस छोटे-से गांवमें बैठे-बिठाये वे फ्रेंच, अंग्रेजी, सीख जायेंगे। वे नाच-गान करते-करते गुजराती और अन्य भारतीय भाषाओंका परि-चय पायेंगे। एक छोटा-सा सुकार्य कितने विस्तारमें फैलता जा रहा है। इस कर्मठ दलको एक छोटे-से गांवको जाग्रत करने, बदलनेका अवसर मिल रहा है। काश, भारतके गांव-गांवमें सु-शिक्षित लोग इस तरह रम पाते! हमारे उद्योगपति छोटे गांवोंमें गृह-उद्योगको प्रोत्साहन दे पाते! कैसे चुप-चाप रहकर ये मुट्ठी-भर लोग एक छोटे-से गांवमें क्रांति ला रहे हैं!!

मैं कल्पनाके पंखपर चढ़कर भावी भारतको देखने लगी। गांव-गांवमें साफ-सुथरे बच्चे चहक रहे हैं, उनके मां-बाप स्वस्थ हैं। उनका मन प्रगतिशील है। कोई अनपढ़ नहीं, कोई बेकार नहीं, सब ओर खुशहाली है, और शहरसे तंग आकर शहरवासी गांवमें जा बसते जाते हैं, गांवके जीवनका अंग बनकर उसे अधिक समृद्ध, प्रगतिशील बनाते जाते हैं।

और इस तरह जब मनुष्य खाने-पीनेकी समस्यासे मुक्त हो जायगा, तो बहुत संभव है वह जीवन और उसके लक्ष्यके विषयमें गंभीरतासे सोचे! ऐसा भारतवर्ष अभीप्साका अग्नि-कुण्ड होगा, जिस-में अग्निकी असंख्य जिह्वाएं ऊपरकी ओर उठ रही होंगी। अग्नि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवोंका भी पुरोहित है, वह हमारा नेता होकर हमें अभियानके मार्ग-पर लें चलेगा। शायद हम उस स्वर्णिम दिवसकी एक हल्की-सी झांकी देख रहे हैं।

तेरी दीदी

अनु

माताजीने कहा

"भागवत कृपाके आगे कौन योग्य है और कौन अयोग्य?
सभी एक जननीके बालक हैं।
उनका प्रेम सभीपर समान रूपसे फैला हुआ है।
वे हर एकको उसकी ग्रहणशीलताके अनुसार देती हैं।"

माताजीके सच्चे रूपके बारेमें कहते हुए श्रीअरविंदने कहा है:

"एक दिव्य शक्ति है जो सारे विश्वमें काम करती है। वही व्यक्तिमें तथा व्यक्ति और विश्व दोनोंके परे भी है। माताजी इन सबकी प्रतिनिधि हैं, लेकिन वे यहां शरीरमें रहकर किसी ऐसी चीजको भौतिक जगत्में उतार लानेके लिये काम कर रहीं हैं जो अभीतक यहां प्रकट नहीं हुई है, जो यहांके जीवनका रूपांतर कर सकती है। तुम उन्हें दिव्य शक्ति मान सकते हो जो यहां इस उद्देश्यसे काम कर रही है। अपने शरीरमें माताजी वह हैं, परंतु अपनी समग्र चेतनामें वे भगवान्के और सभी पहलुओंके साथ एक हैं।"

(माता)

श्रीअरविंद बहुत बार माताजीकी शक्तिकी बात करते हैं जो केवल व्यक्तियोंपर ही नहीं, जगत्की घटनाओंपर भी क्रिया करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। एक बार किसीने पूछा : "माताजीकी शक्ति क्या है ?" श्री-अरविंदने उत्तर दिया :

"वह दिव्य शक्ति है जो अज्ञानको हटानेके लिये और प्रकृति-को दिव्य प्रकृतिमें बदलनेके लिये काम करती है।"

(वही)

और माताजीकी शक्ति कैसे काम करती है ? स्वयं माताजीसे सुनिये :

"तुम मेरी कार्य-पद्धतिको नहीं समझते। तुम कह सकते हो, 'आपके पास अतिमानसिक शक्ति है, आप उसका उपयोग करके इस झमेलेको खत्म क्यों नहीं कर देतीं ?' लेकिन काम इस ढंगसे नहीं किया जा सकता। जगत् अभी अतिमानसिक शक्तिके लिये तैयार नहीं है। अगर उचित आधार तैयार किये बिना उसका उपयोग किया जाय तो सब कुछ पूरी तरह टूट-फूट जायगा। पहले मुझे आधार तैयार करना है, तब शक्तिको उतारना है।

"तुम्हारी मानव-दृष्टि चीजोंको सीधी लकीरमें देखती है। तुम्हारे लिये या तो यह रास्ता है या वह रास्ता। मेरे लिये बात ऐसी नहीं है। मैं सारी चीजको इकट्ठा, चेतनाके एक पिण्डके रूप-में देखती हूं जो अपने उद्देश्य या लक्ष्यकी ओर बढ़ रहा है। हर छोटी-मोटी गतिके लिये मुझे देखना होता है कि समस्त पिण्डपर उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी, कौन-से अप्रत्यक्ष प्रभाव होंगे।

"जब मैं कहती हूं कि अमुक चीज इस तरह या उस तरह कर ली जाय तो तुम्हारा मानव मन उसे एक सिद्धांत बना लेता है और हर हालतमें उसे बड़ी सख्तीसे लगाना चाहता है। मेरे लिये बात ऐसी नहीं है। मेरे लिये कोई नियम, विधान या सिद्धांत नहीं है। मेरे लिये हर एक अपवादिक उदाहरण है जिसे विशेष रूपसे लेना होगा। कोई दो उदाहरण एक-से नहीं होते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जानती हूं कि चेतनाके इस पिण्डकी गतिमें अमुक बिन्दुको अमुक दिशामें प्रगति करनी चाहिये ताकि वह ज्यादा आसानीसे और जल्दी लक्ष्यतक पहुंच जाय। इस उद्देश्यको नजरमें रखते हुए मैं कहती हूं कि यह किया जाय या न किया जाय। पर मैं देखती हूं कि मार्गमें बहुत बड़ी रुकावट है। अब दो रास्ते हो सकते हैं: या तो मैं उस बिन्दुको अपना रास्ता बदलने दूं, और कुछ समयके लिये रुकावटको जैसा-का-तैसा छोड़ दूं ताकि उसपर अधिकाधिक प्रकाश पड़ता रहे और वह बदल जाय, या मैं उस रुकावटको तोड़ दूं। जैसा कि मैंने कहा, हर छोटी-सी गतिकी भी समस्त पिंडपर प्रतिक्रिया होती है, उसके प्रभाव पड़ते हैं; अतः, इस प्रकार तोड़नेसे प्रतिक्रियाओंकी एक श्रृंखला बन जायगी जो बहुत बडे क्षेत्रपर असर डालेगी। मैं व्यक्तियोंकी बहुत परवाह नहीं करती, परंतु मुझे हर क्षण सम्बद्ध व्यक्ति या व्यक्तियोंके या समयके या माध्यमके बदलनेसे आनेवाली परिस्थितियोंके परिवर्तनको देखना पड़ता है। इन सब परिवर्तनोंके साथ मुझे देखना होता है कि चीजको अच्छीसे-अच्छी तरह कैसे किया जाय जिससे वह समस्त पिंडकी प्रगतिमें सहायक हो। मुझे यह देखना होता है, रुकावटको तोड़नेसे जो परिणाम आयेंगे उन्हें स्वीकार करनेसे कुछ काम बनता भी है? क्या वह इतना प्रयास करने योग्य है? क्या वह ज्यादा अच्छा न होगा कि उसे अभीके लिये छोड़ दिया जाय और मानव मूढ़ताको सह लिया जाय? तुम्हें जो विरोध लगता है वह सारी चीजको एक रूपमें देखनेसे विरोध नहीं रह जाता। एक ही लक्ष्यतक पहुंचनेके अनेक मार्ग हैं। अगर मैं देखूं कि तोड़नेका बहुत अधिक मूल्य चुकाना होगा और वह इस काबिल नहीं है, तो मैं तुम्हें अपनी राह लेने देती हूं। लेकिन यह बात मुझे रुकावटकी निन्दा करनेसे और यह कहनेसे नहीं रोकती कि इसे जाना चाहिये।

"आखिर, जल्दी हो या देरमें, चेतनाके इस पिंडकी हर चीजको उसी एक लक्ष्यकी ओर गति करनी होगी। परंतु चेतनाको उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्यकी ओर ले जानेके लिये मुझे मनुष्योंको अपने साथ चलने देना पड़ता है और मुझे स्वयं उनके रूपमें प्रकट होना पड़ता है और उनकी भाषा बोलनी पड़ती है। मुझे एक अनगढ़ मुहावरा अपनाना पड़ता है। मुझे जिस तरह बोलना पड़ता है, नियम, अधिनियम बनाने पड़ते हैं, मैं उसकी मूर्खताको देख सकती हूं; लेकिन यह एक ऐसी छूट है जो मुझे मानवताको देनी पड़ती है, अन्यथा वह कुछ भी न समझ पायेगी। जब मैं उनकी अपनी भाषामें बोलती हूं, तब भी तो मनुष्य गलत समझ लेते हैं और गड़बड़झाला कर देते हैं। अगर मैं प्रकाशकी भाषामें बोलूं तब तो सारी चीज उनके सिरके ऊपरसे गुजर जायगी और वे बस, मुंह बाये खड़े रह जायेंगे और कुछ भी न समझेंगे।

"'क' का मन बहुत अच्छी तरह विकसित है। मैं कह सकती हूं कि उसका मन प्रकाशकी ओर बहुत खुला हुआ है। मैंने उसके साथ, जिसे श्रीअरविंद प्रकाशका मन कहते हैं, उसकी भाषामें बात करनेकी कोशिश की, परंतु वह भी न समझ पाया। वह थोड़ा-बहुत पकड़ पाया, पर सारा अर्थ उससे बच निकला।

"औरोंकी स्थिति और भी खराब है। वे कुछ भी नहीं समझ पाते और चुंधियाये-से दीखते हैं। इन लोगोंके लिये मुझे समझौता करना पड़ता है। मैं कहती हूं कि अमुक चीज मूर्खता-भरी है, पर तुम उसे किये बिना नहीं रह सकते। तो मुझे उसे सहना पड़ता है। मैं चीजोंके सापेक्ष मूल्य देखती हूं और उस मार्गको अपनाती हूं जो तुम्हारी प्रगतिमें सहायक हो। मुझे तुम्हें बहुत-सी चीजोंकी स्वीकृति देनी पड़ती है, पर इसका यह अर्थ नहीं है कि मैं उनकी मूर्खताको नहीं देख पाती या उनकी ओरसे अंधी हूं। कभी-कभी यह जरूरी होता है कि तुम्हें अनुभूति हो, इसलिये एक चीज करने दी जाती है। एक ही कामके लिये अनेक कारण हो सकते हैं। तुम्हारे मनको वह सब समझा सकना संभव नहीं है।

"इस परिस्थिति-विशेषमें मैंने 'ना' कर दी थी। अब 'ख'को लो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बहुत ही अच्छा व्यक्ति है और कई भागोंमें बहुत सच्चा है। मुझे मालूम है कि वह दुर्बल है। उसकी हड़पने और अधिकार करनेकी आदत है। मैं इस मामलेमें मना कर सकती थी, परंतु, इससे 'ख'को बहुत जोरका धक्का लगता। उसके लिये अपने-आपको ठीक रखना मुश्किल हो जाता। जैसा कि मैंने कहा, मैं चीजोंके सापेक्ष मूल्य देखती हूं, और मैंने देखा कि यह इस लायक नहीं है कि 'ख'को इतनी जोरसे झकझोरा जाय, इसलिये मैंने स्वीकृति दे दी। लेकिन इस कारण मैं यह कहनेसे नहीं रुक सकती कि यह चीज ठीक नहीं थी।"

श्रीअरविन्द अपनी पुस्तक 'माता' (द मदर) में माताजीके चार स्वरूपों -- महेश्वरी, महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती —के बारेमें कहते हैं। उनमेंसे कौन-सा स्वरूप हमारे साथ रह सकता है और हमारी सहायता कर सकता है? माताजीका उत्तर सुनिये :

"केवल महासरस्वती स्वरूप तुम्हारे साथ रह सकता है। वही ब्योरेकी हर चीजकी देख-भाल करती है। श्रीअरविन्दने कहा है कि वह तबतक तुम्हें क्षमा नहीं करती जबतक तुम अपने-आपको बदलनेकी कोशिश न करो। महाकालीको अपने साथ रखना असंभव है। वह बिजलीकी चमककी तरह आती और गरजकी तरह चली जाती है।

साधारणतः, लोग महाकाली, महालक्ष्मी या महासरस्वतीकी पूजा नहीं करते; वे काली, लक्ष्मी और सरस्वतीसे संतुष्ट रहते हैं। उनके लिये लक्ष्मी-पूजा ऐसे है जैसे किसी धनाढ्य स्त्रीको ब्याह लाना।"

वैराग्य या संन्यासवाद प्रत्येक भारतीयके रक्तमें है। किसीमें स्पष्ट और किसीमें छिपा हुआ जो समय-समयपर उछल पड़ता है। उसने हमें सुन्दरतासे दूर रहनेका उपदेश दिया है। माताजी कहती हैं:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब तुम सुन्दरतासे कतराते हो तो यह असुरका एक बहुत बड़ा अस्त्र होता है। इसीने भारतका नाश किया है। भगवान् चैत्यमें प्रेम, मनमें ज्ञान, प्राणमें शक्ति तथा भौतिकमें सौंदर्यके रूपमें प्रकट होते हैं। अगर तुम सौंदर्यका बहिष्कार करो तो तुम भगवान्‌को भौतिक स्तरपर प्रकट होनेसे रोकते हो और उस भागको असुरके हाथमें सौंप देते हो।"

लोग प्रायः माताजीसे तथाकथित चमत्कारोंकी आशा करते हैं। इस बारेमें स्वयं उनका क्या कहना है?

"यह मूर्खतापूर्ण विचार है कि चीजें जादुई ढंगसे की जानी चाहियें। लोग सोचते हैं कि वे अपनी बुरी व्यवस्था और गलत व्यवहारके बारेमें मुझे बता दें तो उनका काम पूरा हो जाता है। बात ऐसी नहीं है। भौतिक काम भौतिक ढंगसे ही करने होंगे। मैं तुम्हें चेतना दे सकती हूं जो तुम्हारी सहायता करेगी, परंतु वह शारीरिक कार्यकी आवश्यकताको कम नहीं कर सकती। तुम यह आशा नहीं कर सकते कि मैं हर जगह जाऊंगी और सब काम करूंगी। तुम आकर मुझसे बस, इतना-भर नहीं कह सकते कि गड़बड़ बढ़ रही है, चीजें बुरीसे ज्यादा बुरी होती जा रही हैं। मैं ऐसी बहुत बातें सुन चुकी हूं, बस, अब और नहीं।

"एक पुरानी सूक्ति है और है एकदम सत्य, तुम्हें किसीकी आलोचना करने या किसीके विरुद्ध शिकायत करनेका तबतक कोई अधिकार नहीं जबतक कि तुम चीजोंको ठीक न कर सको और उन्हें ज्यादा अच्छी तरह न चला सको।

"किसी चलती संस्थाको चलाये रखना बिलकुल कठिन नहीं है। राजनीतिमें जब कोई नयी सरकार आती है तो वह नयी नीतियां, नयी पद्धतियां लाती है, लेकिन दैनिक कार्यको मिनट-भरके लिये भी नहीं रोका जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीने कहा है कि सफलताको सह सकना सबसे कठिन काम है। साधारणतः, जैसे ही हम यह मान लेते हैं कि हमें सफलता मिल गयी, कोई-न-कोई बाधा आ जाती है और काम बिगड़ जाता है। ऐसा क्यों होता है माताजीसे सुनिये :

"जैसे ही तुम सोचते हो कि तुम्हें अमुक चीजमें सफलता मिल गयी, वैसे ही विरोधी शक्तियां उसपर आक्रमण करती हैं और उसे बिगाड़ देती हैं। और फिर, जब तुम सफलताके बारेमें सोचते हो तो तुम्हारी अभीप्सा ढीली पड़ जाती है और जरा-सी ढिलाई भी सारा खेल बिगाड़ देनेके लिये काफी है। सबसे अच्छी बात यह है कि उसके बारेमें सोचें बिना अपना काम करते चलो। लेकिन कभी जब तुम अपनी त्रुटियों और असफलताओंके बारेमें सोचते-सोचते अवसादमें गिर जाते हो तब तुम्हें सफलताको अपनी नाकके आगे रखकर कहना चाहिये, 'लो, यह देखो।'"

सारा संसार मिथ्यात्वसे भरा है, लेकिन इसे जाननेवाले कम ही हैं, उनमेंसे भी ऐसे कम ही हैं जो इसमेंसे निकलना चाहते हों। किसी ऐसे ही व्यक्तिने माताजीसे पूछा : "मिथ्यात्वसे पिंड छुड़ानेका क्या तरीका है ?"

माताजीने कहा :

"अगर हर आदमी अपना कर्तव्य पूरा करे और मिथ्यात्वको त्यागता चले तो सारे संसारके लिये असुरकी पकड़मेंसे बच निकलना आसान होगा। लेकिन अगर तुम हर चीजमें तोड़-मरोड़ करते हो, तुम कुटिल रहो तो काम बहुत कठिन हो जाता है। केवल झूठ बोलना ही मिथ्यात्व नहीं है। यह तो सबसे मामूली चीज है। किसी रूपमें, किसी अंगमें असुरका प्रभाव स्वीकारना मिथ्यात्व है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर तुम उससे चिपके रहो और उसमें मजा लो तो भला उससे कैसे पिंड छुड़ा सकते हो? तुम कहते हो कि तुम्हें मिथ्यात्वके प्रभावमें कष्ट सहना पड़ता है, कि ऐसी चीजें हैं जिनसे तुम घृणा करते हो और उनसे छुटकारा पाना चाहते हो, तुम बराबर 'ना, ना, ना' कहते रहते हो, फिर भी वे तुमसे चिपकी रहती हैं। लेकिन, वास्तवमें, यदि तुम मिथ्यात्वको जानो तो उसे क्षण-भरके लिये भी नहीं रख सकते। उसके साथ रह सकना असंभव हो जाता है और तुम उसे तुरंत छोड़नेके लिये बाधित होते हो। लेकिन बात ऐसी नहीं है। तुम्हारे अंदर कोई भाग उसे चाहता है और उसमें रस लेता है। तुम कहते हो कि बहुधा तुम्हें सुनायी देता है कि अमुक काम मत करो पर साथ ही तुम्हारे अंदर कोई चीज उसे निमंत्रण देती है। अगर तुम पहली आवाजकी बात सुनो और उसके अनुसार चलो तो वह ज्यादा सशक्त हो जायगी और तुम्हारी रक्षा करेगी।

"एक और तरीका भी है और वह है मिथ्यात्वके समर्पणका। तुम उसे भगवान्‌की भेंट कर दो और उनसे कहो, 'इसे शुद्ध कर दीजिये।' इसका मतलब यह नहीं है कि आलसी बन जाओ, अपने-आप कुछ न करो और यह प्रत्याशा रखो कि भगवान् तुम्हारे लिये सब कुछ कर देंगे। तुम्हें हर क्षण प्रार्थना करनी होगी, समर्पण करना होगा।"

माताजी कहती हैं:

"स्थायी साधक होनेके लिये तुम्हें अपनी समस्त संपत्ति, अपने समस्त विचार, अपनी समस्त अभीप्सा और समस्त कर्म, सब कुछ दे देना होगा। तुम्हें अपना सारा समय कामके लिये देना चाहिये। केवल तभी तुम स्थायी बनाये जानेके लिये कह सकते हो। उससे कमसे काम न चलेगा। तुम्हें सच्चा होना चाहिये।"

एक साधकने पूछा: "क्या भगवान्‌के लिये सब कुछ बलि कर देना जरूरी है?" माताजीने उत्तर दिया:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब तुम भगवान्‌के लिये बलि देनेकी बात करते हो तो इसका अर्थ यह होता है कि तुम उन चीजोंसे बहुत ज्यादा आसक्त हो। तुम्हारी दृष्टिमें उसका बहुत अधिक मूल्य है, फिर भी, तुम उसे भगवान्‌के लिये छोड़नेको तैयार हो।

"वास्तवमें, तुम्हें भगवान्‌के सिवाय किसी चीजसे आसक्त न होना चाहिये और उनके सिवाय तुम्हारी दृष्टिमें किसी चीजका मूल्य न होना चाहिये। और तब तुम भगवान्‌के लिये बलिदान देनेकी बात नहीं कर सकते।"

('श्वेत कमल'से)

सोसायटी समाचार

२४ अप्रैलको आश्रममें दर्शन-दिवस मनाया गया। १९२०में इसी दिन माताजी यहां रहनेके लिये आयी थीं। सवेरे आश्रमवासी और दर्शनार्थी श्रीअरविंदके कमरेमें गये थे, फिर समाधिके आस-पास बैठकर सबने आधे घंटेका ध्यान किया। शामको आश्रमके खेलके मैदानमें मार्च-पास्ट, वृन्द वाद्य और ध्यानका कार्यक्रम था। खेलके मैदानमें २९ मार्च (माताजीके प्रथम आगमनका दिन) और ४ अप्रैल (श्रीअरविंदका आगमन) को भी विशेष ध्यान हुआ था।

अगला दर्शन श्रीअरविंदके जन्मदिनके उपलक्ष्यमें १५ अगस्तको होगा। इन्हीं दिनों श्रीअरविंद सोसायटी तीन दिनका वार्षिक अधिवेशन किया करती है। इसमें पिछले वर्षके कामोंका सिंहावलोकन होता है और अगले वर्षके लिये सुझाव दिये जाते हैं। साधनाके बारेमें भी बातचीत होती है।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका एक उद्देश्य होता है और वही सच्चा और स्थायी उद्देश्य है — भगवान्। उन्हींकी ओर मुड़ो और सब खालीपन चला जायगा।

—श्रीमां

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष : २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है।

तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहुमूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन

पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड

सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात सरकारने समस्त प्रदेशमें पंद्रह सौ श्रीअरविंद व्यायाम और ध्यान केंद्र स्थापित करनेका निश्चय किया है और इसके लिये अठारह लाखकी राशि स्वीकृत की है। इसमें श्रीअरविंदद्वारा बतलाये गये मार्गसे स्वस्थ शरीर और ध्यानपर जोर दिया जायगा। इसके लिये उस समयके प्रदेश मंत्री श्री भाईलाल भाईने सबसे अधिक प्रयास किया था। आशा है अन्य प्रदेश भी इसका अनुसरण करेंगे।

श्रीअरविंद ग्राम (जिला रीवा, म. प्र.) ने १२ मार्चसे चार दिनके साधना शिविरकी व्यवस्था की थी। इसमें श्रीमती विद्यावती कोकिल, तारा जौहर तथा सर्वश्री उदार, छोटेनारायण शर्मा, केदारनाथ वर्मा आदिने भाग लिया। फूलोंकी प्रदर्शनी की गयी, आश्रमकी फिल्में दिखायी गयीं। 'श्री मां' और 'यज्ञकी ज्वाला' नामक दो स्मारिकाएं प्रकाशित की गयीं। महारानी रीवाने एक मातृ-औषधालयका उद्घाटन किया।

पुणेमें नौरोजी वाडिया कालिजमें श्रीअरविंद सेमिनारका आयोजन हुआ। प्रिंसिपल गाडगील उसके अध्यक्ष थे और श्री माधव पंडित मुख्य वक्ता।

श्री उदार और श्रीमती विद्यावती कोकिलने मध्य प्रदेशमें कई अध्ययन केंद्रोंका चक्कर लगाया जिनमें पन्ना, नौगांव, सतना, जबलपुर आदि भी थे। प्रश्नोत्तर, भाषण और कविता-पाठके मनोरंजक कार्यक्रम रहे।

स्मारिकाओंके बारेमें :

बहुत-से केंद्र अपनी-अपनी स्मारिकाएं प्रकाशित करते हैं जिनमें माताजी और श्रीअरविंदके उद्धरण होते हैं। इनमेंसे कुछमें माताजी और श्रीअरविंदके लेखोंके बीच-बीचमें अन्य महानुभावोंके लेख भी दे दिये जाते हैं। अधिक वांछनीय यह होगा कि माताजी और श्रीअरविंदके वचनोंके बीच-बीचमें और किसीके लेख न छापे जायं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri 2673

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

उनका एक अलग खंड रखा जा सकता है, बड़े लोगोंके संदेश भी शुरूमें न देकर पीछे दिये जायं।

वार्षिक अधिवेशन

श्री गुरुपरशादजी, मुख्य सचिव, श्रीअरविंद सोसायटी, सूचित करते हैं कि श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन शनिवार, १४ जुलाई १९७९ को श्रीअरविंद भवन (८ शेक्सपीयर सरणी, कलकत्ता) में शामके चार बजे होगा। उसकी कार्रवाई इस प्रकार होगी :

१) पिछले वर्षके अधिवेशनकी रिपोर्ट
२) ३१.३.७८ के वार्षिक आय-व्ययका लेखा-जोखा देखना और पारित करना
३) १९७७-७८ की सोसायटीकी कार्रवाईकी रिपोर्टपर विचार
४) १९७८-७९ के लिये आडिटर नियुक्त करना
५) सभापतिकी अनुमतिसे अन्य कोई विषय

नये प्रकाशन :

व्हाइट लोटस (अंग्रेजी) **श्वेत कमल** (हिंदी)

इस पुस्तकमें माताजीकी अकथ कहानी कहनेका प्रयास किया गया है। अंग्रेजीका दाम ६०.०० और हिंदीका सजिल्द २५.०० अजिल्द २०.००।

जिन्हें इसमें रस हो वे शब्द या 'पुरोधा' श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरीसे मंगा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

जुलाई १९७९ वर्ष ९, अंक १२, पूर्णांक १०८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

श्रीअरविन्दवाणी : अभीप्सा ('योगके आधार'से) [illegible]
श्रीमातृवाणीसे : धन [illegible]
उदार और लोभी [illegible]
वस्तुओंका वास्तविक मूल्य १२
धर्म और सत्य १५
सपना — वंदना १७
माताजीने कहा है २२
सोसायटी समाचार ३०

हमारे निवेदनपर कुछ मित्रोंने कान दिया है और अपने चंदेसे अधिक राशि भेजी है। हमारा खर्च चंदेकी अपेक्षा काफी अधिक पड़ता है। समर्थ मित्रोंकी सहायतासे ही जन-साधारणके लिये चंदा कम रखा जा सकता है। अतिरिक्त राशि भेजते समय इसकी ओर संकेत कर दें तो सुविधा रहेगी।

पुरोधा वार्षिक ८.००	आजीवन १७५.००
अग्निशिखा वार्षिक ६.००	आजीवन १२५.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट, आदि भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसयटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंदवाणी :

अभीप्सा

इस योगकी मांग है कि जीवनको पूरी तरह भागवत सत्यकी खोज करने और उसे मूर्तिमान् करनेके लिये उत्सर्ग कर दिया जाय —और किसी भी चीजके लिये नहीं। अपने जीवनको भगवान् और किसी बाहरी लक्ष्य या क्रियामें बांटना, जिसका सत्यकी खोजके साथ कोई संबन्ध न हो, अस्वीकार्य है। इस तरहकी छोटी-से-छोटी चीज भी योगमें सफलताको असंभव बना देगी।

तुम्हें अपने अंदर पैठकर आध्यात्मिक जीवनके लिये पूर्ण उत्सर्ग-में प्रवेश करना होगा। मानसिक पसंदके साथ सभी प्रकारके चिपकावको छोड़ देना होगा, प्राणिक लक्ष्यों, हितों और आसक्तियों-को दूर करना होगा। अगर तुम योगमें सफल होना चाहो तो परिवार, मित्र, देशके साथ समस्त अहंकारपूर्ण चिपकावको गायब हो जाना होगा। जो कुछ बाह्य ऊर्जा या क्रियाके रूपमें प्रकट होने को हो उसे उस सत्यसे आना चाहिये जिसे एक बार खोज लिया गया है, निम्न मानस या प्राणिक हेतुओंसे नहीं, उसे भागवत संकल्प-से आना चाहिये, निजी चुनाव या अहंकारकी अभिरुचिसे नहीं।

*

मानसिक सिद्धांतोंका कोई मौलिक महत्त्व नहीं है, क्योंकि मन उन्हीं सिद्धांतोंको बनाता या स्वीकार करता है जो सत्ताके झुकाव-का अनुमोदन करें। महत्त्वपूर्ण है वह झुकाव और तुम्हारे अन्दर-की पुकार।

यह ज्ञान कि एक परम सच्चिदानंद है जो केवल अभावात्मक निर्वाण या अचल-अटल निर्गुण निरपेक्ष ही नहीं, गतिशील भी है,

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यह बोध कि यह भागवत चेतना केवल परलोकमें ही नहीं, यहां भी उपलब्ध हो सकती है, और फलस्वरूप दिव्य जीवनको योग-का उद्देश्य मानना —— ये बातें मनकी नहीं हैं। यह किसी मानसिक सिद्धांतका प्रश्न नहीं है — यद्यपि यह सिद्धांत भी अन्य सिद्धांतों-की तरह मानसिक दृष्टिसे अगर ज्यादा नहीं तो उतनी ही अच्छी तरह पुष्ट किया जा सकता है —— यह अनुभूतिका प्रश्न है, और अनुभूति आनेसे पहले अंतरात्माकी श्रद्धा और उसके साथ आनेवाली मन और प्राणकी अनुरक्तिका है। जिसे उच्चतर ज्योतिका संपर्क प्राप्त है, जिसे उसकी अनुभूति है वह इस मार्गपर चल सकता है, फिर चाहे यह उसके निचले अंगोंके लिये कितना भी मुश्किल क्यों न हो; और जिसे उसका स्पर्श मिल गया, भले अनुभूति न हुई हो, वह भी यदि उसकी पुकार हुई है, जिसे विश्वास हो, जिसे अंतरा-रात्माकी लगनने विवश कर दिया हो, वह भी इस पथपर चल सकता है।

*

भगवान्‌के मार्ग मानव मनके मार्ग नहीं होते और न ही हमारे नक्शोंके अनुसार चलते हैं। उनके बारेमें कुछ फैसला करना असं-भव है, ऐसे नियम नहीं बनाये जा सकते कि भगवान्‌को क्या करना और क्या न करना चाहिये, क्योंकि तुम जितना जान सकते हो भगवान् उससे ज्यादा अच्छी तरह जानते हैं। अगर हम भगवान्‌को मान ही लें तो मुझे लगता है कि सच्ची तर्क-बुद्धि और भक्ति एक होकर निर्विवाद श्रद्धा और समर्पणकी मांग करती हैं।

*

साधनोंकी सच्ची वृत्ति है भगवान्‌पर अपने मन और प्राणिक संकल्पको लादनेकी जगह भागवत इच्छाको जानना और उसका अनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मरण करना। यह मत कहो : "यह मेरा अधिकार, चाह, दावा, आवश्यकता, प्रयोजन है, मुझे यह क्यों नहीं मिलता ?" अपने-आपको दे दो, समर्पण कर दो और भगवान् जो कुछ दें उसे खुशीसे स्वीकार करो, दुःख या विद्रोह मत करो, यही अच्छा रास्ता है। तब तुम्हें जो मिलेगा वही तुम्हारे लिये उचित होगा।

*

श्रद्धा, भगवान्पर निर्भरता, समर्पण और भागवत शक्तिके प्रति आत्म-निवेदन आवश्यक और अनिवार्य हैं। लेकिन भगवान्पर निर्भरताको प्रमाद, दुर्बलता और निम्न प्रकृतिके आवेशोंके प्रति समर्पणको एक बहाना या नकाब न बना लेना चाहिये : उसे अथक अभीप्सा और भागवत सत्यके मार्गमें आनेवाली चीजोंके निरंतर त्यागके साथ-साथ चलना चाहिये। भगवान्के प्रति समर्पणको अपनी कामनाओं और निम्न गतियोंके प्रति या अपने अहंकार या अज्ञान अंधकारकी किसी शक्तिके प्रति, जो भगवान्का मुखौटा पहन लेती हैं, समर्पण न हो।

*

तुम्हें केवल अभीप्सा करनी चाहिये, अपने-आपको माताजीकी ओर खुला रखना और जो कुछ उनकी इच्छाके विरुद्ध है उसे त्याग देना चहिये। उन्हें अपने अंदर काम करने दो। अपना सारा काम भी उनके लिये करो और इस श्रद्धाके साथ करो कि तुम उनकी शक्तिके द्वारा ही कर सकते हो। अगर तुम इस तरह खुले रह सको तो ज्ञान और सिद्धि यथासमय आ जायेंगे।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस योगमें सब कुछ इसपर निर्भर है कि तुम भागवत प्रभावकी ओर खुल सकते हो या नहीं। अगर अभीप्सामें सचाई है और सभी विघ्न-बाधाओंके होते हुए उच्चतर चेतनातक पहुंचनेके लिये धैर्यपूर्ण संकल्प है, तो किसी-न-किसी रूपमें तुम जरूर खुल जाओगे। लेकिन मन, हृदय और शरीरके तैयार होने या न होनेकी अवस्थाके अनुसार इसमें कम या अधिक समय लगेगा; तो अगर आदमीमें आवश्यक धैर्य नहीं है तो वह आरंभकी कठिनाईके कारण प्रयास छोड़ सकता है। इस योगमें इसके सिवाय और कोई तरीका नहीं है कि तुम अपने-आपको एकाग्र करो, ज्यादा अच्छा है कि हृदयमें एकाग्र करो और माताजीकी उपस्थिति और शक्तिको बुलाओ कि वह तुम्हारी सत्ताको ले लें और अपनी शक्तिकी क्रियासे चेतनाका रूपांतर कर दें; हृदय या भौंहोंके बीच भी एकाग्रता की जा सकती है, लेकिन बहुतोंके लिये यह बहुत अधिक कठिन उद्घाटन होता है। जब मन शांत-स्थिर हो जाता है और एकाग्रता दृढ़ हो जाती है और अभीप्सा तीव्र होती है तब अनुभूतिका आरंभ होता है। श्रद्धा जितनी अधिक होगी, परिणामके उतनी ही जल्दी आनेकी संभावना रहेगी। बाकीके लिये, तुम्हें केवल अपने ही प्रयासपर निर्भर नहीं रहना चाहिये, भगवान्‌के साथ संपर्क जोड़नेमें और माताजीकी शक्ति और उपस्थितिके प्रति ग्रहणशील होनेमें सफलता प्राप्त करनी चाहिये

*

तुम्हारी प्रकृतिमें कौन-कौन-सी त्रुटियां हैं इसका कोई महत्त्व नहीं। एकमात्र महत्त्वपूर्ण चीज है तुम्हारा अपने-आपको दिव्य शक्तिकी ओर खोले रखना। कोई भी अपने ही परिश्रमसे, बिना सहायताके, अपने-आपको रूपांतरित नहीं कर सकता। अगर तुम अपने-आपको खुला रखो तो तुम्हारे लिये और सब कर दिया जायगा।

(योगके आधार, अध्याय २)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमातृवाणी :

धन

आदमीके पास जितना अधिक धन हो उतनी ही अधिक आवश्यकता होती है...

मेरे बालक, आदमीके पास जितना अधिक पैसा होता है वह उतनी ही अधिक मुसीबतकी अवस्थामें होता है। हां, यह एक मुसीबत है।

पैसा होना एक महान् विपत्ति है। वह तुम्हें जानवर बना देता है, वह तुम्हें कंजूस बना देता है, वह तुम्हें दुष्ट बना देता है। यह संसारकी सबसे बड़ी मुसीबतोंमेंसे है। धन एक ऐसी चीज है जो तुम्हारे पास तबतक न होनी चाहिये जबतक तुम कामना-रहित न हो जाओ। जब तुम्हारे अंदर कामना न रहे, जब तुम्हारे अंदर आसक्तियां न रहें, जब तुम्हारी चेतना धरतीके समान विशाल हो, तब सारी धरतीका धन तुम्हारे पास हो सकता है। यह सभीके लिये बहुत अच्छा होगा। लेकिन जबतक ऐसा न हो, तबतक तुम्हारे पास जो भी धन है वह तुम्हारे लिये अभिशाप है। यह बात मैं किसीके भी सामने कहूंगी, ऐसे आदमीके सामने भी जो धनवान् होना अपना अधिकार मानता है। यह एक मुसीबत है और शायद एक कलंक भी, यानी, यह भगवान्के असंतोषकी अभिव्यक्ति है।

गरीब होनेकी अपेक्षा अमीर होनेपर अच्छा होना, समझदार होना, बुद्धिमान् और उदार होना, अधिक उदार होना — सुन रहे हो न — कहीं अधिक कठिन है। मैंने बहुत-से देशोंमें बहुत-से लोग देखे हैं। और सभी देशोंमें मुझे जो सबसे अधिक उदार लोग मिले वे सबसे गरीब थे। जैसे ही जेबें भर जाती हैं कि एक तरहकी बीमारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें आ पकड़ती है, वह है धनके लिये एक घिनौनी आसक्ति। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं, यह एक अभिशाप है।

अतः जैसे ही तुम्हारे पास धन आये तो करने लायक पहली चीज यह है कि उसे दे दो। लेकिन जैसा कि कहा जाता है, विवेकके बिना मत दो। उन लोगोंकी तरह मत करो जो परोपकार करते हैं क्योंकि वे अपनी भलाईसे, अपनी उदारतासे और अपने महत्त्वसे भरे होते हैं। तुम्हें सात्विक ढंगसे क्रिया करनी चाहिये, यानी, यथासंभव अच्छे-से-अच्छा उपयोग करो। और फिर, हर एकको अपनी चेतनामें सबसे ऊंची स्थितिमें यह खोजना चाहिये कि उसके धनका अच्छे-से-अच्छा उपयोग क्या हो सकता है। और संचारणके बिना धनका कोई मूल्य नहीं। हर एकके लिये और सबके लिये धनका मूल्य तभी है जब वह खर्च किया जाय। अगर तुम उसे खर्च न करो तो . . .। मैं कह कहती हूं, लोग ऐसी चीज चुननेमें सावधान रहते हैं जो न सड़े, यानी, सोना — जो नहीं सड़ता। अन्यथा, नैतिक दृष्टिकोणसे वह सड़ जाता है। और अब जब सोनेकी जगह कागजने ले ली है, अगर तुम कागजको लंबे अरसेतक सावधानी बरते बिना रखो, तो तुम दराज खोलते समय देखोगे कि तुम्हारे कागजके रुपयोंपर छोटे-छोटे कीड़ों (सिलवर फिश) ने दावत की है। उन्होंने ऐसे फीते छोड़े हैं जिन्हें बैंक स्वीकार न करेगा।

ऐसे देश हैं और ऐसे धर्म हैं जो हमेशा यह कहते हैं कि भगवान् जिन लोगोंसे प्यार करते हैं उन्हें गरीब बना देते हैं। मुझे नहीं मालूम कि यह सच है या नहीं। लेकिन एक बात सच्ची है कि, निश्चय ही, जब कोई जन्मसे धनवान् होता है या बहुत धनाढ्य बन जाता है, जब उसके पास भौतिक संपत्तिकी दृष्टिसे बहुत कुछ होता है, तो निश्चय ही यह इस बातका सूचक नहीं है कि भगवान्ने उसे अपनी भागवत 'कृपा'के लिये चुना है। अगर वह सच्चे मार्गपर भगवान्की ओर चलना चाहे, तो उसे परिमार्जन करना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तुमसे पहले ही एक बार कह चुकी हूं कि धन एक शक्ति है, प्रकृतिकी एक शक्ति है; और उसे संचारणका एक साधन होना चाहिये, एक गतिशील शक्ति होना चाहिये, जैसे बहता हुआ पानी एक गतिशील शक्ति है। यह ऐसी चीज है जो उत्पादनमें, व्यवस्थामें, सहायता कर सकती है। यह एक सरल तरीका है, क्योंकि मूलत यह चीजोंके प्रचुर मात्रामें मुक्त संचारणका एक साधन है।

यह शक्ति उन लोगोंके हाथोंमें जानी चाहिये जो उसका यथा-संभव अच्छे-से-अच्छा उपयोग करना जानते हों, यानी, जैसा कि मैंने पहले कहा है, उन लोगोंके हाथमें जिन्होंने किसी प्रकार सभी व्यक्तिगत कामनाओं और सभी आसक्तियोंसे अपने-आपको मुक्त कर लिया है या उन्हें किसी तरह निकाल बाहर किया है। इस-में हम धरतीकी आवश्यकताओंको समझनेके लिये पर्याप्त रूपसे विशाल अंतर्दृष्टिको जोड़ सकते हैं, साथ ही, एक ऐसे ज्ञानको, जो इतने पर्याप्त रूपमें पूर्ण हो, जोड़ सकते हैं जो सभी आवश्यकताओं-को व्यवस्थित करना जानता हो और इस शक्तिको उन उपायोंसे काममें लाना जानता हो।

इसके अलावा, अगर इन लोगोंमें श्रेष्ठतर आध्यात्मिक ज्ञान हो, तो वे इस शक्तिका उपयोग धरतीपर थोड़ा-थोड़ा कर उस चीजका निर्माण करनेके लिये कर सकते हैं जो दिव्य 'समर्थ', 'शक्ति' और 'कृपा'को अभिव्यक्त करने योग्य होंगी। और तब, धनकी समृद्धिकी यह शक्ति, यह आर्थिक बल, जिसके बारेमें मैंने अभी कहा है कि वह एक अभिशापकी तरह है, वही सबके भलेके लिये परम आशीर्वाद बन जायगा।

चूंकि मेरा ख्याल है कि अच्छी-से-अच्छी चीजें सबसे बुरी बन जाती हैं, शायद बुरी-से-बुरी चीजें ही अच्छी-से-अच्छी बन सकती हैं। ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि बुरे-से-बुरे लोग ही अच्छे-से-अच्छे बनते हैं। मैं आशा करती हूं कि अच्छे-से-अच्छे लोग बुरे-से-बुरे नहीं बन जायेंगे, क्योंकि यह दुःखद होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अंततः, निश्चय ही, बड़ी-से-बड़ी शक्ति भी, यदि उसका दुरुपयोग किया जाय, तो वह एक बहुत बड़ी मुसीबत बन सकती है, जब कि वही बहुत बड़ी शक्ति, यदि उसका सदुपयोग किया जाय तो आशीर्वाद बन सकती है। सब कुछ इसपर निर्भर है कि तुम चीजोंका उपयोग कैसे करते हो। जगत्में हर चीजका एक स्थान है, एक उपयोग है, एक सच्चा उपयोग है, और अगर उसे किसी और काममें लगाया जाय तो इससे अव्यवस्था पैदा होती है, गड़बड़झाला होता है, अंध व्यवस्था आती है। और चूंकि जगत्में, जैसा कि वह है, बहुत ही कम चीजें ऐसी हैं जिन्हें उनके सच्चे उपयोगके लिये काममें लाया जा रहा है, इसलिये, बहुत ही कम चीजें हैं जो अपने सच्चे स्थानपर हैं। और चूंकि संसार एक भीषण अव्यवस्थामें है, इसलिये ये सब दुःख और ये सब कष्ट हैं। अगर हर चीज अपने स्थानपर, एक सामंजस्यपूर्ण संतुलनमें होती, तो समस्त संसार अब जिस दुःख और कष्टकी अवस्थामें है उसमें होनेकी आवश्यकताके बिना प्रगति कर पाता।

ऐसी कोई चीज नहीं है जो अपने-आपमें बुरी हो, लेकिन ऐसी बहुत-सी चीजें हैं (प्रायः सभी), जो अपने स्थानपर नहीं हैं।

शायद शरीरमें भी ऐसा ही है। ऐसी कोई चीज नहीं है जो अपने-आपमें बुरी हो, लेकिन ऐसी बहुत-सी चीजें हैं जो अपने स्थानपर नहीं हैं। इसी वजहसे आदमी बीमार होता है। एक आंतरिक असामंजस्य पैदा होता है और परिणाम यह है कि हम बीमार पड़ जाते हैं। और लोग हमेशा सोचते हैं कि अगर वे बीमार हों, तो इसमें उनका दोष नहीं है और हमेशा उनका दोष होता है, और अगर तुम उनसे यह बात कहो तो वे बहुत नाराज होते हैं। "इसमें दया-माया नहीं है।" फिर भी यह है सच।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ७; प्रश्न और उत्तर, १९५५; २६ फरवरी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदार और लोभी

"साधारण सामाजिक धारणाएं दो प्रकारके लोगोंमें भेद करती हैं --उदार और लोभी। कृपण आदमीसे घृणा की जाती है, उसे बुरा-भला कहा जाता है जब कि उदारको निस्स्वार्थ और समाजके लिये उपयोगी माना जाता है, उसके गुणोंके लिये उसकी प्रशंसा की जाती है। परंतु आध्यात्मिक दृष्टिके सामने दोनों एक ही स्तरपर खड़े हैं। एककी उदारता और दूसरेकी कृपणता, दोनों ही एक उच्चतर सत्यके, एक ज्यादा बड़ी दिव्य शक्तिके विकृत रूप हैं। एक शक्ति है, एक दिव्य क्रिया जो शक्तियों और वस्तुओंको प्रकृतिके सभी स्तरोंपर, अत्यंत जड़-पदार्थसे लेकर अत्यंत आध्यात्मिक स्तरतक जो कुछ भी उसके अधिकारमें हो उसे बिखेरती, फैलाती और खुले हाथों फेंकती रहती है। उदार व्यक्तिके पीछे, उसकी उदारताके पीछे ऐसे प्रकारकी आत्मा होती है जो इस क्रियाको अभिव्यक्त करती है। वह फैलानेके लिये, दूर-दूरतक बांटनेके लिये एक शक्ति है। एक और शक्ति है, एक और दिव्य क्रिया है जो इकट्ठा करती है, जमा करती है, वह सब प्रकारकी शक्तियों और चीजों और सभी संभव संपत्तिको बटोरती और उनका संचय करती है। फिर चाहे वे चीजें ऊंचे स्तरोंकी हों या नीचेकी। तुम जिसे कृपण होनेका दोषी ठहराते हो वह इस शक्तिका यंत्र बननेके लिये था। दोनों महत्त्वपूर्ण हैं। समस्त योजनामें दोनोंकी जरूरत है। जोड़ने और इकट्ठा करनेकी क्रिया फैलाने और बिखेरनेकी क्रियासे कम आवश्यक नहीं है।"

प्रश्न और उत्तर, १९२९ (४ अगस्त)

"प्रकारकी आत्मा" से आपका क्या मतलब है?

वाक्य क्या है? (माताजी पुस्तक देखती हैं) ओह! प्रकारकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा। जैसे हमने कहा था हर पशुकी जातिके पीछे उस जातिकी आत्मा होती है, उसी तरह हर प्रकारके मनुष्यके पीछे उस प्रकारकी आत्मा होती है। मैं उसीको प्रकारकी आत्मा कहती हूं। यह प्रकारकी आत्मा है जो प्रगतिशील हो सकती है, पर वह नष्ट नहीं होती।

प्रकारकी आत्मा, व्यक्तिगत रूपमें या सामूहिक रूपमें सब वस्तुओं-के स्वधर्मसे मेल खाती है। कभी-कभी इसे वस्तुओंका सत्य, हर चीजका सत्य कहा जाता है।

क्या उदारता सत्यका विकृत रूप है?

हां, सभी मानव गुण अपने पीछे रहनेवाले सत्यके विकृत रूप हैं। और जिन चीजोंको तुम गुण या दोष कहते हो वे सब हमेशा अपने पीछे रहनेवाली किसी चीजके विकृत रूप होते हैं और वह चीज न तो यह है, न वह, बल्कि कुछ और ही है। और फिर, मैं कहती हूं, उदारताके पीछे जो सत्य पाया जाता है वह है फैलानेवाली शक्तियोंकी क्रिया। लेकिन इन शक्तियोंके फैलनेसे पहले यह जरूरी है कि, वे कहींपर केंद्रित हों। अतः, स्पंदनकी-सी एक गति होती है, पहले शक्तियां केंद्रित होती हैं, फिर फैलती हैं, और फिर वे पुनः केंद्रित होती हैं, और फिर फैलती हैं...। लेकिन अगर तुम हमेशा, इकट्ठा किये बिना फैलाते ही रहना चाहो, तो कुछ समयके बाद तुम्हारे पास फैलानेके लिये कुछ भी नहीं बच रहता। शक्तियोंके लिये — सभी शक्तियोंके लिये — यही बात है। और फिर, मैंने लिखा है (बल्कि मैं कभी लिखूंगी) कि धन एक शक्ति है, यह उसके सिवा कुछ नहीं। इसलिये किसीको व्यक्तिगत रूपसे उसे अपने वशमें रखनेका अधिकार नहीं है, क्योंकि वह केवल शक्ति है, प्रकृतिकी और विश्वकी और सब शक्तियोंकी तरह। अगर तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशको एक शक्तिके रूपमें लो, किसीके दिमागमें यह बात न आयेगी कि वह कहे : "प्रकाशपर मेरा अधिकार है," और यह चाहे कि प्रकाशको अपने कमरेमें बंद कर दे, किसी औरको न दे! हां, धनसे लोग ऐसे बौरा जाते हैं कि वे कल्पना करते हैं मानों यह कोई ऐसी चीज है जिसे वे अपने वशमें कर सकते हैं, रख सकते हैं मानों वह उनकी अपनी हो और जिसे वे अपनी निजी संपत्ति बना सकते हों। यह ठीक वही चीज है। मैं कागजके रूपमें धनकी बात नहीं कर रही। यह तो, स्वभावत: ऐसी बात होगी जैसे तुम्हारे दीपककी रोशनी। दीपक तुम्हारा हो सकता है और तुम कहते हो : "यह मेरा प्रकाश है।" धन, तुम्हारे नोट, तुम्हारे चांदी-के टुकड़े तुम्हारा धन हैं। परंतु ये धन नहीं हैं। इन सबके पीछे एक शक्ति होती है, विनिमयकी शक्ति जो धन है। वह किसीकी नहीं होती। वह सबकी होती है। वह ऐसी चीज है जो संचारसे ही जीवित रह सकती है। अगर तुम उसका ढेर लगाना चाहो तो वह सड़ जाती है। यह ऐसा होगा जैसे तुम किसी बरतनमें पानीको बंद कर दो और हमेशा रखना चाहो। कुछ समयके बाद तुम्हारा पानी बिलकुल सड़ जायगा। धनके साथ भी यही बात है। लेकिन लोग अभीतक यह नहीं समझे हैं। बादमें, मैं इस बारेमें लिखूंगी।

यह चीज चलेगी नहीं।

जब भौतिक वस्तुओंके लिये कृपणता हो . . .।

सभी चीजोंके लिये कृपणता — एक कृपणता आध्यात्मिक चीजों-के लिये भी होती है। ऐसे कंजूस लोग होते हैं जो सभी शक्तियोंको अपने ही लिये रख लेना चाहते हैं, कुछ भी नहीं देना चाहते। लेकिन मैंने अभी-अभी तुम्हें इसका सत्य बतलाया है। बिखेरनेकी शक्ति होनेके लिये तुम्हारे अंदर संचय करनेकी शक्ति होनी चाहिये। अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे अंदर दोनोंमेंसे एक ही हो तो असंतुलन हो जाता है और तब यह कृपणता या अपव्यय बन जाती है। तुम्हारे अंदर संतुलित लयबद्ध गतिके रूपमें दोनों चीजें होनी चाहियें, जिनके बारेमें हम अभी बात कर रहे थे। क्योंकि, वास्तवमें, यह सिद्ध करना बहुत सरल होगा कि इस समय संतुलन ही सच्ची चीज है। तुम्हें न इस तरफ होना चाहिये, न उस तरफ, जिसे बुद्ध "मध्यम मार्ग" कहते हैं। मध्यम मार्ग संतुलनका मार्ग है। इसलिये जैसे रस्सीपर चलनेवाला लाठीके सहारे अपना संतुलन रखता है, उसी तरह तुम्हें भी अपने-आपको ठीक रखना जानना चाहिये।

लेकिन दुनियाका उदार-से-उदार आदमी भी कुछ न दे सकेगा यदि उसके पास देनेके लिये कुछ न हो। इसलिये यदि उसने संचय नहीं किया है तो किसी और ने उसके लिये संचय किया होगा, लेकिन अगर उसकी जेबमें कुछ नहीं है तो वह कुछ भी न दे सकेगा। यह तो स्पष्ट ही है। और संचय करनेकी शक्ति भी उतनी ही जरूरी है जितनी वितरण करनेकी शक्ति। जब ये दोनों चीजें अहंकारयुक्त हो जाती हैं तो उनमें विकार आ जाता है, वे बिलकुल विकृत हो जाती हैं और अपना सारा मूल्य खो बैठती हैं।

तो यह लो, मेरे बच्चो।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ५; प्रश्न और उत्तर, १९५३)

वस्तुओंका वास्तविक मूल्य

[वस्तुओंका वास्तविक मूल्य; विभिन्न राष्ट्रोंमें जन्म या विभिन्न धर्मोंके अनुसरणका मूल्य नहीं, मूल्य है उन अनुभवों तथा अनेक व्यक्तित्वोंका जो हमारी चेतनाके साथ एकत्र होते रहते हैं; सत्यको विज्ञापनकी आवश्यकता नहीं; भूतकी ओर नहीं, भविष्यकी ओर देखो]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुओंका आन्तरिक मूल्य तभी होता है और वे वास्तविक भी तभी होती हैं जब उन्हें अपनी स्वतंत्र पसन्दका उपयोग करके प्राप्त किया जाय, न कि तब जब वे थोपी गयी हों। यदि तुम अपने धर्मके बारेमें निश्चित होना चाहो तो तुम्हें उसे स्वयं पसन्द करना चाहिये, यदि तुम अपने देशके बारेमें निश्चित होना चाहो तो तुम्हें उसे स्वयं पसन्द करना चाहिये, यदि तुम अपने परिवारके बारेमें निश्चित होना चाहो तो उसे भी तुम्हें स्वयं ही पसन्द करना चाहिये। संयोगवश, जो कुछ भी मिलता जाय, उसीको यदि तुम बिना छान-बीनके स्वीकार करते चलो, तो तुम्हें इस बातका निश्चय कभी नहीं हो सकता कि वह वस्तु तुम्हारे लिये अच्छी है या बुरी, वह तुम्हारे जीवनके लिये सत्य है या नहीं। उन सभी चीजोंसे जो प्राकृतिक परिस्थितियों अथवा विरासतमें मिली वस्तुओंके रूपमें तुम्हारे इर्द-गिर्द जमा हो गयी हैं, जो प्रकृतिकी अन्य यांत्रिक प्रक्रियाद्वारा बनी और तुमपर जबरन लाद दी गयी हैं, किनारा करो, अपने अन्तःमें प्रवेश करो और वस्तुओंको शान्त और अनासक्त होकर देखो। उनका मूल्य-आंको और स्वतंत्र रूपसे चुनो। तभी तुम अपने आन्तरिक सत्यके साथ यह कह सकोगे : "यह मेरा परिवार है, यह मेरा देश है, यह मेरा धर्म है।"

यदि हम अपने अन्दरकी गहराईमें थोड़ी दूरतक भी उतरें, तो हमें पता लगेगा कि हममेंसे हर एकके अन्दर एक ऐसी चेतना है जिसका अस्तित्व अनन्तकालसे चला आ रहा और जो अपने-आपको अनेक रूपोंमें अभिव्यक्त करती आयी है। हममेंसे हर एक भिन्न-भिन्न देशोंमें जन्म ले चुका है, हमारे भिन्न-भिन्न राष्ट्र रहे हैं, हमने भिन्न-भिन्न धर्मोंका अनुसरण किया है। तो हमें अपने अन्तिम देश, राष्ट्र या धर्मको ही सर्वोत्तम क्यों मान लेना चाहिये ? इन सब जन्मोंमें विभिन्न देशों और विभिन्न धर्मोंद्वारा हमने जिन अनुभवोंका संग्रह किया है वे हमारी चेतनाकी उस आन्तरिक निरवच्छिन्नतामें, जो प्रत्येक जन्ममें हमारे साथ लगी हुई है, जमा रहते हैं। हमारे इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतकालके अनुभवोंद्वारा रचे गये अनेक व्यक्तित्व वहां रहते हैं और जब हमें अपने अन्दर रहनेवाले इस समूहका ज्ञान होता है, तो सत्यके किसी विशेष रूपको ही एकमात्र सत्य, किसी एक देशको ही अपना एकमात्र देश और किसी एक धर्मको ही एकमात्र सत्य धर्म कहना असंभव हो जाता है। ऐसे लोग हैं जो पैदा तो किसी एक देशमें होते हैं, किन्तु उनकी चेतनाके मुख्य तत्त्व स्पष्ट रूपसे किसी दूसरे देशके होते हैं। यूरोपमें जन्मे हुए कुछ ऐसे लोगोंसे मेरी भेंट हुई है जो अत्यन्त स्पष्ट रूपसे भारतीय थे। ऐसे लोग भी मुझे मिले हैं जो जन्मे तो भारतीय शरीरको लेकर, किन्तु थे स्पष्ट रूपसे यूरोपियन। जापानमें मेरी ऐसे लोगोंसे भेंट हुई जिनमें कुछ तो भारतीय थे और कुछ यूरोपियन। और ऐसे लोगों-मेंसे यदि कोई किसी ऐसे देशमें चला जाय अथवा किसी ऐसी सभ्यतामें प्रवेश करे जिसके साथ उसका मेल है, तो वह यह अनुभव करेगा मानों वह अपने ही घरमें हो।

यदि तुम्हारा लक्ष्य मुक्त होना, आत्माकी मुक्तिको प्राप्त करना है, तो तुम्हें उन सब बन्धनोंका त्याग करना चाहिये जो तुम्हारी सत्ताके आंतरिक सत्य नहीं है, बल्कि अवचेतनाकी आदतके कारण पैदा होते हैं। यदि तुम अपने-आपको पूर्ण निरपेक्ष और अनन्य भावसे भगवान्के अर्पण करना चाहते हो, तो संपूर्ण रूपसे करो, अपनी सत्ताके टुकड़ोंको इधर-उधर बंधा न रहने दो। शायद तुम आपत्ति करो कि अपने बंधनोंको संपूर्ण रूपसे काट डालना सहज नहीं है! परंतु क्या तुमने अपने भूतकालकी ओर दृष्टिपात नहीं किया और यह नहीं देखा कि इन थोड़े-से वर्षोंमें ही तुम्हारे अंदर कितने परिवर्तन हुए हैं। इस तरह पीछे देखते समय प्रायः हमेशा तुम अपने-आपसे पूछते हो कि यह कैसे हुआ कि तुमने इस तरह अनुभव किया या अमुक परिस्थितियोंमें इस तरह काम किया। कभी-कभी अपने दस साल पहलेके रूपको तुम पहचान भी नहीं सकते। तो फिर, जो कुछ था या है उसके साथ तुम अपने-आप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बांध कैसे सकते हो अथवा पहलेसे ही यह कैसे नियत कर सकते हो कि भविष्यमें क्या होगा और क्या नहीं ?

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

धर्म और सत्य

तुम्हारे सब सम्बन्ध चुनावकी आंतरिक स्वतंत्रताके आधारपर नये सिरेसे स्थापित होने चाहिये। ये परंपराएं जिनमें तुम पले हो या रहते हो, वे परिस्थितिके दबावद्वारा या सर्वसाधारण मन-द्वारा अथवा दूसरोंकी रुचिद्वारा तुम पर लादी गयी हैं। तुमने एक प्रकारसे बाध्य होकर ही इन्हें स्वीकारा है। स्वयं धर्म भी मनुष्योंपर लादी हुई चीज ही है। इसे प्रायः कोई धार्मिक भय अथवा आध्यात्मिक या अन्य प्रकारकी विभीषिकाका भाव पीछेसे सहारा दिये रहता है। भगवान्के और तुम्हारे संबंधमें इस प्रकारके आरो-पणका कोई स्थान नहीं हो सकता। यह संबंध सर्वथा स्वतंत्र रूप-से तुम्हारे मन और प्राणकी पसंदगीके अनुसार उत्साहपूर्ण तथा आनंदसे भरा होना चाहिये। वह कैसा एकत्व होगा जिसमें एक कांपे और कहे: "मैं बाध्य होकर कर रहा हूं, मेरे पास और उपाय ही नहीं है।" सत्य स्वतः सिद्ध है और उसे जगत्पर लादनेकी आवश्यकता नहीं। उसे मनुष्योंके द्वारा स्वीकारे जानेकी आवश्यकता नहीं मालूम होती, वह स्वतः स्थित है, वह अपने बारेमें लोगोंकी राय या उनके समर्थनके कारण नहीं जीता। परंतु जो धर्मकी स्थापना करता है, उसे बहुत-से अनुयायियोंकी आवश्यकता होती है। लोग किसी धर्मकी ताकत और महानताको उसके अनुयायियोंकी संख्या-को देखकर नापते हैं; यद्यपि असली महानता उसमें नहीं है। आध्यात्मिक सत्यकी महानता संख्यापर निर्भर नहीं होती। मेरा एक नवीन धर्मके अधिपतिसे, जो उस धर्मके संस्थापकका पुत्र था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय था। मैंने उसे एक बार यह कहते हुए सुना कि अमुक धर्मकी स्थापनामें इतने सौ वर्ष लगे हैं और अमुक धर्मकी स्थापनामें इतने सौ, किंतु पचास वर्षके अंदर ही हमारे धर्मके अनुयायी चालीस लाखसे भी अधिक हो गये हैं। "सो आप देखती हैं," उसने कहा, "हमारा धर्म कितना महान् है।" धर्म भले ही अपनी महानताको अनुयायियोंकी संख्याके परिणाममें कूता करें, किंतु सत्यका यदि एक भी अनुयायी न हो, तो भी वह सत्य ही रहेगा। औसत मनुष्य बड़ी-बड़ी बातें करनेवालेके प्रति आकर्षित हो जाता है। वह उधर नहीं जाता जहां शांत भावसे सत्यकी अभिव्यक्ति हो रही हो। बड़ी-बड़ी बातें बनानेवालोंको ही ढिढोरा पीटने और विज्ञापन देनेकी आवश्यकता होती है, क्योंकि इसके बिना वे लोगोंको बड़ी संख्यामें आकर्षित नहीं कर सकेंगे। जो इस बातकी परवाह किये बिना किया जाता है कि लोग उसके संबंधमें क्या कहेंगे, वह इतना विख्यात नहीं होता, इतनी आसानीसे जन-समुदायको अपनी ओर आकर्षित नहीं करता। परंतु सत्यको किसी विज्ञापनकी आवश्यकता नहीं, वह अपने-आपको छिपाता नहीं, पर अपना ढिढोरा भी नहीं पीटता। वह अपनी अभिव्यक्तिसे ही संतुष्ट रहता है, परिणामोंकी ओरसे वह बेपरवाह रहता है, उसको न लोगोंकी स्तुतिकी चाह होती है, न निन्दासे क्षोभ। संसार उसे स्वीकार करे तो वह आकर्षित नहीं होता, और अस्वीकार किये जानेपर विचलित नहीं होता है।

जब तुम योग-मार्गपर आओ, तो तुम्हें मनके महल और प्राणकी मचानोंके ढाये जानेके लिये तैयार रहना चाहिये, तुम्हें श्रद्धाके सिवाय किसी भी सहारेके बिना हवामें, अधर लटकनेके लिये तैयार रहना चाहिये। तुम्हें अपने भूतकालके व्यक्तित्व और उसकी आसक्तियोंको एकदम भूल जाना होगा, उसे अपनी चेतनामेंसे निकाल बाहर करना होगा तथा एक ऐसा नया जन्म लेना होगा जो समस्त बन्धनोंसे मुक्त हो। तुम क्या थे इसकी चिंता न करो, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बननेकी अभीप्सा करते हो केवल उसीका चिंतन करो; जिस सिद्धिको प्राप्त करना चाहते हो केवल उसीमें तन्मय हो जाओ। मृत भूतकालकी ओरसे मुंह मोड़ लो और सीधे भविष्यकी ओर देखो। तुम्हारा धर्म, तुम्हारा देश, तुम्हारा परिवार वहीं है -- वह है स्वयं भगवान्।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

सपना

(धनके बारेमें आपने दो लेख पढ़ लिये अब लीजिये एक कहानी।–स०)

जब आप सब अपने-अपने सपने सुनानेपर उतारू हैं तो मैं ही क्यों नकटोंमें नक्कू बनूं। जी, मुझे भी सपने दिखायी देते हैं और वह भी मजेदार।

लीजिये, अभी कुछ ही दिन पहलेकी बात है। बजटके दिन थे, अखबारोंमें, चौराहोंपर, नुक्कड़ोंपर, हर जगह बस, बजटकी ही चर्चा थी, देखें किसकी जेब कटती है और किसकी थैली भारी होती है। मैं भी अछूती न थी, आखिर नून तेल लकड़ी हो या अपनोंकी राजी-खुशीका संवाद, सभीपर बजटका असर तो पड़ता ही है। मैं इसी विषयकी उधेड़बुन करते-करते सो गयी।

देखती क्या हूं, चारों ओर लक्ष्मीके मन्दिर बने हुए हैं और जोरोंसे पूजा-पाठ चल रहा है। मेरे सामनेसे एक खूब पैसेवाला और साथ ही कृपण सेठ हाथमें बताशोंका दोना लेकर लक्ष्मीजीके मन्दिरमें घुसा। सेठ क्या था बस मुरमुरेका थैला समझ लीजिये। मुरमुरे और बताशेका मेल! आहा, क्या मेल बैठा है! बस, मेरे अंदर भी शैतान बच्चा जाग उठा और मैं कुतूहलवश उसके पीछे हो ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठने दो बताशे लक्ष्मीजीके दो चरणोंपर चढ़ाये और बाकी प्रसादके रूपमें अपनी जेबके हवाले किये, फिर गिड़गिड़ाकर बोला, "अम्ब, मेरी रक्षा करना। तुम्हारी कृपा हो तो मुझे और कुछ नहीं चाहिये। तुम साथ रहो तो मुझे न वरुणके पाशका डर है, न यमके दूतोंका। मां, बजट लानेवालोंकी मति जरा मेरे पक्षमें कर दो, मैं तुम्हें बहुत-सा चढ़ावा चढ़ाऊंगा।"

मैंने अपने कानोंसे सुना, मांने कहा, "जाओ, सेठ तुम्हारे भाग्यमें विपुल धन है, पर और कुछ भी नहीं।" सेठ गद्गद् हो गया। मुरमुरेका थैला मानों नाच उठा खुशीसे। उसने बड़ी उदारतासे दो बताशे जेबसे निकाले और पुजारीजीके सामने रखकर चलता बना।

सेठ रास्तेमें सोचता जा रहा था, 'अब तो मेरी पांचों घीमें है। मांने कह तो दिया कि मुझे विपुल धन मिलेगा, बस, और क्या चाहिये मुझे?' सेठ खुशीके मारे फूला न समा रहा था। उसके पैर जमीनपर न पड़ते थे। बस, अब वह सचमुच धनवान् बननेवाला था।

सेठको पता ही न चला, उधर सूर्य नारायण अस्ताचलके पीछे जा छिपे। सेठ रास्ता भूल गया और कहीं जंगलके रास्तेपर पड़ गया। इधर-उधरकी झाड़ियां उसके कपड़े फाड़ रही थीं। उसकी थैलीसे गिरते हुए सिक्के छन-छन की आवाज कर रहे थे, किंतु अंधेरा घुप था, इसमें हाथको हाथ न सूझता था, फिर वह सिक्के उठाता भी तो कैसे? हर छनपर बेचारा कलेजा मसोसकर रह जाता था।

लहू-लुहान शरीर, फटे हुए चीथड़ोंमें लिपटा हुआ आगे बढ़ रहा था। कदम-कदमपर गिरते हुए रुपये ताल दे रहे थे, और सेठ अपने होश-हवास खोता जा रहा था। सामनेसे एक बड़ी-बड़ी चमकती आंखोंवाला आग उगलनेवाला अजगर आता दिखायी दिया। सेठके रहे-सहे प्राण भी उडंछू हो गये। और वे धड़ाम-से जमीनपर आ रहे, मानों रत्नगर्भा वसुन्धराको प्रणाम कर रहे हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले ही क्षण अजगरने उन्हें अपनी कुंडलीमें जकड़ लिया। अब सेठ साहबको पता लगा कि धन, केवल धन किसी काम नहीं आता, उन्हें गज और ग्राहकी याद आयी और इधर 'लड़त-लड़त गज हारे'।

भगवान् रमाकान्तने सेठरूपी गजकी टेर सुन ली और उन्होंने अपने करुणासे भीगे नयन लक्ष्मीजीकी ओर फेरे। मांने कहा, "ये पैसेवाले सचमुच पूजा नहीं करते, वे तो लक्ष्मी-पूजाका अर्थ समझते हैं किसी अमीर घरानेकी बेटीसे ब्याह करना जो इनके हाथ-पैर हिलाये बिना इन्हें मालामाल कर दे। मुझे ऐसोंपर तरस नहीं आता।"

विष्णु भगवान् लक्ष्मीजीकी युक्तियुक्त बात काट न सके, लेकिन उनका हृदय सेठके आर्त नादसे द्रवित हो गया और उन्होंने सुदर्शन चक्रसे अजगरकी कुंडली ढीली कर देनेके लिये कहा।

सेठ होशमें आया तो देखा सूर्य देवताकी अगवानीके लिये सारी पृथ्वी सोलहों शृंगार किये खड़ी थी। देखते हुए भी उन्हें सब कुछ स्वप्न-सा लग रहा था। वे सचमुच घबरा उठे, कौन सा स्वप्न था, कौन-सा सत्य? सब कुछ उनके दिमागमें गड्डमड्ड हो उठा। आंखें रगड़ीं, अपने-आपको चुटकी काटी, तब जाकर आश्वस्त हुए कि उनका दिमाग फिरा नहीं है, अब वह स्वप्नमें नहीं, बल्कि यथार्थ-में जी रहे हैं। सहसा अपने शरीरके चीथड़ोंको देख वह डरके मारे सूखकर कांटा हो गये। 'कहां हूं मैं? उस अजगरकी कुंडली-में!!!' और सारा दृश्य उनकी आंखोंके आगे घूमने लगा। वे चीख मारकर बेहोश होने ही वाले थे कि अंतिम चित्र सर्राटेके साथ उनके नयनोंके सामनेसे निकल गया — वह अजगरकी कुंडली-में जकड़े हुए, "पाहि माम्, पाहि माम्"की निरंतर रट लगाये जा रहे हैं, फिर चारों तरफ अंधकार।

अब सारी स्थिति उनके सामने स्पष्ट हो चली और साथ-ही-साथ घूम गया मन्दिरका वह चित्र — आंखें मूंदे लक्ष्मीजीसे वह केवल धनकी प्रार्थना कर रहे हैं और अम्बाने भी आशुतोषकी भांति झट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरदान दे दिया। उस समय उन्हें प्रतापी वरदान दीखा था वह लेकिन अब, यह चीथड़े हैं उसी वरदानका प्रताप, उसकी महिमा, उसकी गरिमा।

सेठकी आंखें सजल हो उठीं, कपोलोंपर पानी रह-रहकर ढुलकने लगा। गद्‌गद् वाणीमें बोले: "अम्ब! तुम्हें धन्यवाद देनेकी बिसात मुझ तुच्छ मानवमें कहां, लेकिन आज तूने मेरी कसकर मुंदी हुई आंखोंको सहज प्रकाशमें खोल दिया है, आज तूने मुझे एक नवजात शिशु बना दिया है, एक नया जीवन प्रदान किया है। मैं सोचा करता था कि धनसे असंभवतक खरीदा जा सकता है, धन ही मेरे आगे-पीछे नाच-नाचकर मुझे मोहित किये जा रहा था, लेकिन आज मैंने धनकी नगण्यता जान ली है। ओह, कितना तुच्छ! कितना नगण्य!!" कृतकृत्य सेठ रो उठे, "सारी जवानी रुपये-पैसेके पीछे भागते-भागते चल बसी, तब शक्ति थी, सामर्थ्य था, लेकिन तुझे एक बार भी सच्चे दिलसे न पुकारा, आज तूने मुझे सचेत तो कर दिया, लेकिन उधर मुंह बाये बुढ़ापा खड़ा है। अब कहां है मुझमें वह शक्ति जो तन-मन-धनसे बस, तेरी ही आराधनामें लग जाऊं, फिर भी मैं वचन देता हूं कि जब तक इस शरीरमें प्राण रहेंगे तबतक सच्चे अर्थमें तेरी ही पूजा करूंगा। शक्ति दे, मां, कि अपने वचनको पूरा कर सकूं।"

तभी छनकी आवाज सेठके कानोंसे टकरायी, होशमें आये हुए मनुष्यकी नाईं लगे, देखते क्या हैं एक संभ्रांत-सा दीखनेवाला अधेड़ उम्रका व्यक्ति अपने कुर्तेमें नीचेसे उठा-उठाकर सिक्के भरे जा रहा है, उसके मुंहपर विजयकी मुस्कान खेल रही है, आंखोंसे लालच चू रहा है और प्रसन्नतासे सारा शरीर पुलकित है। हर्षसे वह अपने दामनको दोनों हाथोंसे पकड़े ऊपरकी ओर नजर किये चिल्ला उठा, "भगवान्, तू सचमुच औढर दानी है, मेरी मनकी मुराद यूं पलक झपकते पूरी हो जायगी इसकी मैंने कभी कल्पना तक न की थी। सचमुच ठीक ही कहा है — ईश्वर जब देता है तो छप्पर फाड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता है। आह! आज मैं संसारका सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूं, अगर आज कोई देवदूत भाग्यशालियोंकी फेहरिस्त बनाने आये तो मैं पहला स्थान पाऊंगा! आह, सचमुच तू दानी है, मेरे ईश्वर!" इतना कह वह फिर वहां पड़े उन अन्तिम सिक्कोंको चुगनेमें जुट गया।

तभी उसकी नजर सेठपर पड़ी, उसके चीथड़ोंको देख सहसा उसके मुंहसे आह निकल पड़ी, "आह . . ह . . ह, बेचारा दरिद्र! सोनेके सिक्कोंकी पहचान नहीं है तभी तो न उठाये, वरना कौन है वह मूर्ख जो घर आयी लक्ष्मीको ठुकराये!" फिर बड़े दीनभावसे एक सिक्का दामनसे निकाल उसे देने लगा, "ले, आज मेरे लिये सिक्कोंकी वर्षा हुई है इसलिये ले जा, तू भी ले जा, कई दिनोंतक इससे तेरा पेट भरता रहेगा और तू मुझे असीसें दे-देकर मेरे पुण्यकी बढ़ोतरी करेगा। ले, याद रखेगा तू भी इस दिनको। ले।"

सेठ पत्थरकी मूर्ति बने उस व्यक्तिको एकटक देखते ही रह गये। उन्हें अपना ही प्रतिबिम्ब उसमें स्पष्ट दीख रहा था। मनमें बोले, 'यह क्या? यह तो मैं ही हूं, बिल्कुल मैं! लेकिन अतीतका मैं।' फिर जरा-सा हंसकर अपनी जेबसे अन्तिम दो सिक्के निकालकर देनेवालेके सामने कर दिये। धीरे-से बोले, "भाई, यह भी लेकर मुझे उऋण करो।"

आगन्तुक भौंचक्का रह गया, बोला, "हैं, यह क्या? तेरे सिक्के हैं क्या ये सब?" फिर जोरसे हंसकर खुदसे कहा, "मेरा भी दिमाग फिर गया है, इस दरिद्रके ये सिक्के! यहींसे जुटाये होंगे, पर चूंकि मूल्य नहीं जानता इसलिये मुझे दे रहा है।" फिर वह बोला, "ना, ना भाई, गरीबका पैसा लेकर भगवान्के दरबारमें क्या मुंह दिखाऊंगा। रख, तू अपनी संपत्ति रख, मैं अपनी लेकर चलता हूं," और इतना कह वह अपना दामन संभाले आगे बढ़ा, मन-ही-मन हंसता हुआ कह रहा था, 'सिरफिरा, बेचारा!!'

सेठके मुखपर अब भी वही मुस्कान खेल रही थी, किसी असीम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखसे पोर-पोर भीग रहा था, पैसेके बंधनसे छुटकारेके सुखसे। लेकिन एक बात उन्हें रह-रहकर खटक रही थी। जी चाहता था आवाज दे उस व्यक्तिको, अपनी आत्म-कथा कह सुनाये और पैसेकी नगण्यता दिखा दें। लेकिन नहीं, वह चुप रहे, सोचा, 'अभी उसका समय नहीं आया। हर बातका अपना समय होता है।'

चीथड़े पहने एक व्यक्ति मन्दिरकी तरफ बढ़ रहा था, कुछ लोग उसे देख क्षण-भरके लिये चकराये, फिर मनका भ्रम समझ अपने रास्ते हो लिये। मन्दिरमें पहुंचकर पुजारीके सामने उसने वह दो सिक्के रख दिये। पुजारीजीकी आंखें कभी धोखा नहीं खा सकती। सकतेमें आकर बोले, "सेठजी, आप? आपकी यह गत!! और यह सोनेके सिक्के!! मैं, मैं क्या देख रहा हूं?"

सेठने शांत भावसे कहा, "हां, मैं सेठ ही हूं, लेकिन अब वह पुराना सेठ नहीं। पैसेका सेठ नहीं, बल्कि दया, माया, दान, धर्मका सेठ, अर्थात्, मांका एक तुच्छ सेवक। लो, पुजारीजी, हमेशा तुम्हें दो बताशोंपर टालता आया हूं, आज ये अशर्फियां स्वीकार करो। मांकी बड़ी कृपा है, उसने मुझे अजगरकी कुंडलीके साथ-साथ धनकी कुंडलीसे भी सदाके लिये छुड़ा दिया। मैं जान गया हूं सारा धन उन्हींका है और अब उन्हींका होगा।"

—— वंदना

माताजीने कहा है

साधनाका जीवन बड़ा कठिन है। बार-बार आंखोंके आगे अंधेरा छा जाता है, पूरा प्रयास करनेपर भी असफलताका मुंह देखना पड़ता है। कोई साधक अंधकारकी शिकायत करता है तो माताजी उत्तर देती हैं:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हें याद रखना चाहिये कि अंधकारकी अवधि अनिवार्य होती है। जब तुम्हारा चैत्य पुरुष सक्रिय होता है तो तुम्हें बिना किसी बाहरी कारणके आनंदका अनुभव होता है। यह हालत कुछ समय-तक चलती रहती है और फिरसे वह-की-वही मानसिक या प्राणिक प्रतिक्रियाएं लौट आती हैं और तुम अंधकारमें जा गिरते हो। यह जारी रहेगा। ज्योतिर्मय दिवस लम्बे होते जायेंगे, अंधकारकी अवधि कम होती जायगी और ज्यादा लंबी मुद्दतके बाद, थोड़े समयके लिये आया करेगी। तबतक तुम्हें यह जानना चाहिये कि बादलोंके पीछे सूर्य है और चिंता करनेकी कोई जरूरत नहीं। तुम्हारे अंदर एक बालकका विश्वास होना चाहिये — यह विश्वास कि कोई है जो तुम्हारी देख-भाल करता है और तुम पूरी तरह उसपर आश्रित रह सकते हो।"

बहुत-से साधकोंको यह अनुभव है कि माताजीकी सहायतासे अत्यंत भौतिक कार्य भी ज्यादा अच्छी तरह और आसानीसे किये जा सकते हैं: लेकिन कभी-कभी यह बात भुला दी जाती है। एक ऐसे ही अवसरपर माताजी कहती हैं:

"जब वे जमीनमें गड़ी हुई उस बल्लीको निकालनेकी कोशिश कर रहे थे तो मैं वहां खड़ी-खड़ी देख रही थी। यह निश्चय ही मुश्किल काम था, लेकिन वे उसे ज्यादा मुश्किल बना रहे थे। उनके प्रयासमें एकाग्रता नहीं थी। वे साधारण मजदूरोंकी तरह उत्तेजनामें चिल्ला रहे थे। उनकी उत्तेजना और उनके शोरने वातावरणमें एक ऐसी अस्तव्यस्तता पैदा कर दी थी कि वे मेरी सहायता न पा सकते थे। एकाग्र संकल्पके साथ काम करते तो काम ज्यादा आसानीसे और जल्दी हो पाता।"

आश्रममें विधि-विधान या समारोहोंका स्थान नहीं है। एक दर्शकने पूछा: "श्रीअरविंदके पूर्णयोगमें दीक्षा कैसे ली जा सकती है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीने बतलाया :

"पुराने जमानेमें शिष्यको दीक्षा पानेसे पहले अपनी क्षमता प्रमाणित करनेके लिये कड़ी परीक्षा देनी होती थी। यहां हम इस तरीकेका अनुसरण नहीं करते। बाहरी रूपसे न कोई जांच होती है, न परीक्षा। लेकिन अगर तुम सच्ची बात देख सको तो यहांकी स्थिति बहुत ज्यादा कठिन है। वहां शिष्य जानता था कि वह परीक्षा-कालमेंसे गुजर रहा था और एक बार सफल हो जानेपर वह अन्तर्वासी बन जाता था; परंतु यहां तुम्हें जीवनका सामना करना पड़ता है और हर क्षण तुम्हारे ऊपर नजर रखी जाती है। केवल तुम्हारे कामोंकी ही गिनती नहीं होती। प्रत्येक विचार, प्रत्येक आन्तरिक गतिको देखा जाता है, हर प्रतिक्रियापर ध्यान दिया जाता है। तुम वनोंके एकान्तमें जो करते हो उसका नहीं, जीवनके घोर युद्धमें जो किया जाता है उसका महत्त्व है।

क्या तुम ऐसी जांचके लिये तैयार हो? क्या तुम अपने-आपको पूरी तरह बदलनेके लिये तैयार हो? तुम्हें अपने विचारों, आदर्शों, मूल्यों, रुचियों और मतोंको उठा फेंकना होगा। हर चीज नये सिरेसे सीखनी होगी। अगर तुम इस सबके लिये तैयार हो तो लगाओ डुबकी, अन्यथा, अंदर पांव रखनेकी भी कोशिश न करो।"

एक और अवसरपर आश्रमके बारेमें माताजी कहती हैं :

"यह स्थान उन लोगोंके लिये नहीं है जो जीवनमें असफल हुए हैं या जो किसी कामके नहीं। जीवन कठोर है और जो लोग बाहरके जीवनमें बहुत सफल हुए हैं उन्हें भी कठिन लगता है। हम हर चीजमें अच्छे-से-अच्छेको लेकर उसे ज्यादा अच्छा बनाना चाहते हैं; इसलिये जीवनमें असफल लोगोंको लेनेका सवाल ही नहीं उठता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान्‌के काम और प्रकृतिके काममें फर्क बताते हुए माताजी कहती हैं :

"अपनी कार्य-प्रणालीमें हमें प्रकृतिका दास नहीं होना चाहिये। परीक्षण करने और बदलते रहनेकी ये सब योजनाएं, करने और बिगाड़ने और फिरसे करने, और बार-बार इसी तरह करते रहनेमें शक्ति, मेहनत, सामान और धन, सबका अपव्यय होता है — यह प्रकृतिकी पद्धति है, भगवान्‌की नहीं। भागवत चेतना पहले किसी काम-के सत्यको देखती है, वर्तमान परिस्थितियोंमें उसे करनेका अच्छे-से-अच्छा तरीका देखती है और जब वह कार्य करती है तो जो हो चुका उसपर फिरसे वापिस नहीं आती। वह आगे बढ़ती है। वह सफलता और असफलता, दोनोंका लक्ष्यकी ओर प्रगतिमें एक और कदमके रूपमें उपयोग करती है।

"प्रगति करनेके लिये प्रकृति नष्ट करती है जबकि भागवत चेतना वृद्धिको बढ़ावा देती और अंतमें रूपांतरित करती है।"

एक समय था जब माताजी कभी-कभी आश्रमवासियोंके घर जाया करती थीं।

एक बार वे किसी सुशिक्षित संभ्रांत सज्जनके घर गयीं। उनका बड़ा परिवार था। बातचीतमें उन सज्जनने माताजीसे कहा कि उनकी पत्नी लगभग पशु है। माताजी गंभीर हो गयीं। फिर बोलीं :

"तुम्हारा कहना है कि तुम अपने बच्चोंकी भली-भांति देख-रेख नहीं कर पाये, क्योंकि यद्यपि तुम स्वयं सुशिक्षित और सुसंस्कृत हो, पर तुम्हारे पास समय नहीं है; तुम्हारी पत्नीके पास समय तो है, पर वह अशिक्षित, असंस्कृत और बिल्कुल बेकार है। क्या तुम बतला सकते हो कि उसकी इस स्थितिके लिये जिम्मेदार कौन है? वह पच्चीस वर्षसे अधिकसे तुम्हारे साथ रहती आयी है; इन पच्चीस वर्षोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने उसे शिक्षा या अपनी "संस्कृति" देनेके लिये क्या किया? बिल्कुल कुछ भी नहीं। तुम्हारे अंदर यह विचार तक नहीं आया! तुमने कभी न सोचा कि तुम उसे शिक्षाके लिये एक घंटा भी देते तो पच्चीस वर्षोंमें बहुत फर्क पड़ जाता। तुम्हारे लिये वह केवल तुम्हारे आरामकी व्यवस्था करने और तुम्हारे बच्चे पैदा करनेकी मशीन थी। तुमने कभी उसे विश्वासमें नहीं लिया, उसकी प्रगतिके लिये कभी न सोचा और अब अपने पूरे मिथ्या-अभिमानके साथ उसे अशिक्षित और असंस्कृत होनेका दोष दे रहे हो।

"उसकी सारी त्रुटियोंके लिये मैं तुम्हें जिम्मेदार ठहराती हूं।"

जब लोगोंके सगे-सम्बन्धी बीमार हो जाते और उन्हें बुलावा आता तो वे माताजीसे पूछा करते थे। ऐसे ही एक अवसरपर माताजीने कहा :

"यह चीजोंके सापेक्ष मूल्यका प्रश्न है। तुम्हें यह निश्चय करना होगा कि तुम योगको ज्यादा मूल्यवान् मानते हो या अपने रिश्तेदारोंके सामाजिक संबन्धोंको। अगर तुम योगको ज्यादा मूल्यवान् समझो तो अपने बीमार रिश्तेदारको परम प्रभुके हाथोंमें सौंप दो और प्रभुको उसकी देख-भाल करने दो। एक बार यदि तुम अपने सम्बन्धीको मेरे सुपुर्द कर दो तो मैं उसपर चेतना डालूंगी और वह काम करेगी। वह चैत्यके सत्यको बाहर ले आयेगी। अगर चैत्य पुरुषको अधिक अनुभव पानेके लिये अभी और जीनेकी जरूरत हो तो व्यक्ति बच जायगा, अगर चैत्यको आवश्यकता नहीं है और जीवन बस, यूं ही घसिट रहा है, तो व्यक्ति कुछ घंटोंमें ही मर सकता है। मैं जो कुछ करूंगी उसकी चैत्य-आवश्यकताके अनुसार होगा। परम प्रभुको अर्पण करके तुम उच्चतर नियतिको बुला सकते हो। जब कि शारीरिक रूपसे उसके पास रहकर तुम किसी तरहकी मदद नहीं कर सकते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रमके बारेमें बात करते हुए किसीने माताजीसे कहा, "हममेंसे कुछ लोग यहां प्रसन्न नहीं हैं।" माताजीने कहा :

"जो लोग यहां दुःखी रहते हैं, जिन्हें लगता है कि उन्हें यहांपर अपनी आवश्यकताके अनुसार सुविधाएं प्राप्त नहीं हैं, उन्हें यहां न रहना चाहिये। हम जितना कर रहे हैं इससे ज्यादा कर सकने-की स्थितिमें नहीं हैं, और फिर, हमारा उद्देश्य लोगोंको आरामदेह जीवन देनेका नहीं है। हमारा उद्देश्य है उन्हें दिव्य जीवनके योग्य बनाना, जो बिल्कुल अलग चीज है।"

किसीने बहुत अधिक कामके बारेमें शिकायत की तो माताजीने उत्तर दिया :

"यहां हर कामके साथ उसे समुचित ढंगसे करनेके लिये पूरी शक्ति और भागवत कृपा भी दी जाती है। अगर तुम शक्ति और कृपाका अनुभव नहीं करते तो इससे प्रमाणित होता है कि तुम्हारी मनोवृत्तिमें कहीं-न-कहीं दोष है और तुम पुराने ढर्रे और पुराने मत-वादोंमें वापिस चले गये हो, और अपनी ग्रहणशीलता खो बैठते हो।"

कोई अपनी आंतरिक स्थितिसे सन्तुष्ट न था और बार-बार शिकायत किया करता था। माताजीने कहा :

"अगर तुम जो हो उससे तुम्हें सन्तोष नहीं है तो भगवान्‌की सहायताको बुलाओ और अपने-आपको बदलो। अगर तुम्हारे अंदर बदलनेकी हिम्मत न हो तो नियतिके सामने झुक जाओ और चुप रहो।

"लेकिन हमेशा अपनी स्थितिके बारेमें शिकायत करते रहना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे बदलनेके लिये कुछ भी न करना केवल समय और शक्तिका अपव्यय है।

"सब प्रकारकी कठिनाइयोंका इलाज तभी हो सकता है जब तुम अपनी कामनाओं और सुविधाओंपर अहंकारपूर्ण एकाग्रता समाप्त कर दोगे।"

एक बार आश्रमके किसी विभागाध्यक्षको किसी कठिनाईका सामना करना पड़ा। माताजीने कहा :

"सबसे बड़ी गड़बड़ तो यह है कि जिन लोगोंके साथ मुझे काम करना पड़ता है उनमें श्रद्धा नहीं है। अगर तुम मेरी बात नहीं समझ पाये तो मैं यूं कहूंगी : मुझे जिन लोगोंके साथ काम करना पड़ता है वे पूरी तरह अज्ञानमें डूबे हुए हैं और उसमेंसे बाहर नहीं निकल पाते। जिस चीजकी जरूरत है वह यह है : तुम्हारे अंदर यह विश्वास होना चाहिये कि एक ऐसी चेतना है जो तुमसे ज्यादा जानती और तुमसे ज्यादा अच्छी तरह काम कर सकती है।

"जिन लोगोंमें कामकी अधिक क्षमता है उनके सामने कठिनाइयां भी अधिक हैं। वे समझते हैं कि काम करनेका उन्हींका तरीका सच्चा है। सच्ची क्रियाशीलता अंदरसे होनी चाहिये और उसे अपनी पूरी शक्तिके साथ बाहर आना और बाहरी परिस्थितियोंपर काम करना चाहिये। लेकिन तुम सब बाहरकी चीजोंको इकट्ठा करते हो, धूलकणोंको जुटाकर उनसे कामकी आशा करते हो। तुम हजारों वर्षोंतक यही करते रह सकते हो, परंतु इसमें सफलता न मिलेगी।

"तुम यही चिंता करते रहते हो कि यह आदमी ठीक तरह काम नहीं कर रहा, वह आदमी ठीक तरह काम नहीं कर रहा और यह संगठन बिगड़ता जा रहा है। लेकिन यह सब बेकार है। तुम औरोंके दोष देखते हो और अपने प्रस्ताव सामने रखते हो। परंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये प्रस्ताव तुम्हारे मनके हैं। मनुष्योंको अपने मनपर बड़ा गर्व होता है, परंतु यह एक अज्ञान-भरा और असमर्थ यंत्र है। अगर तुम उसे बस, एक बार उसके नंगे रूपमें देख पाओ तो तुम अपना सारा गर्व भूलकर विनयशील बन जाओगे। तुम्हारा ज्वर और तुम्हारा प्रस्ताव मेरे कामको बिगाड़ते ही हैं। केवल इतना ही नहीं कि वे उस कामको बिगाड़नेकी कोशिश करते हैं जिनके साथ उनका संबंध है, बल्कि से सारे कामको बिगाड़नेकी कोशिश करते हैं। मेरे धरतीपर होनेका लाभ ही क्या अगर तुम्हारे अंदर वह विश्वास नहीं है जो कि कामके लिये पहली आवश्यक वस्तु है? तुम्हें मालूम होना चाहिये कि एक शक्ति काम कर रही है, एक चेतना है जो चीजोंको उनके उचित सामंजस्यमें व्यवस्थित करनेकी कोशिश कर रही है। तुम्हारी उत्तेजना केवल उस काममें गड़बड़ पैदा कर सकती है और उसकी प्रगतिमें देर लगा सकती है।

"मैं यह नहीं कहती कि तुम कुछ मत करो और कहो : 'माताजी सब कुछ कर देंगी, मुझे कोई प्रयास करनेकी जरूरत नहीं।' जब तुम्हारा प्राण हड़ताल करता है तो यही वृत्ति अपनाता है। जब चीजें उसकी इच्छाके अनुसार नहीं होतीं तो वह कहता है: 'अब माताजी जो चाहें कर लें, मैं कुछ न करूंगा।' तुम्हें काममें तभी रस आता है और तुम सक्रिय तभी होते हो जब वह 'मेरा काम, मेरा उत्तरदायित्व' हो, बड़े-बड़े अक्षरोंमें 'मैं, मैं। यह एक बड़ी गलत मनोवृत्ति है। तुम्हें क्रियाशीलता और श्रद्धाको मिलाना चाहिये। तुम्हें मेरे कामके रास्तेमें न आना चाहिये, परंतु हर क्षण पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिये। यह कठिन काम है, मुझे नहीं मालूम कि कोई एक भी व्यक्ति इसे करता है या नहीं। परंतु यही करना है और यह काम सौ वर्षोंके लिये काफी है।"

('श्वेत कमल'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

सोसायटीकी **पटियाला** शाखाने बच्चोंके लिये एक समारोह किया था जिसमें बच्चोंने कविता-पाठ किया और माताजीके वचन सुनाए। फूलोंकी प्रदर्शनी भी की गयी।

'आकाशवाणी', **अहमदाबाद —– बड़ौदा**से हर महीनेके दूसरे रविवारको रातके ९.३० बजे श्रीअरविंदके काव्य 'सावित्री'के आधारपर श्रीचंद्रवदन मेहता द्वारा लिखित नाटिका प्रसारित की जाती है।

माताजीकी जन्म-शताब्दीके सिलसिलेमें श्रीअरविंद सोसायटीने **विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम्**की स्थापना की है। इसके उद्देश्य हैः १) संस्कृतको राष्ट्र भाषा बनानेके लिये कोशिश करना, २) संस्कृत माध्यम द्वारा संस्कृत सिखा सकनेवाले अध्यापक तैयार करना, ३) विभिन्न भाषाओंके माध्यमसे संस्कृत पढ़ानेके लिये पाठ्य-पुस्तकें तैयार करना और ४) विदेशी तथा भारतीय छात्रोंको छुट्टियोंमें संस्कृत पढ़ानेकी व्यवस्था करना। इसके सभापति काशिराज विभूति नारायण सिंह हैं। जिन सदस्यों तथा अन्य लोगोंको इसमें रस हो, वे कृपया श्री देवदत्त, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी ६०५००२, से संपर्क स्थापित या पत्र-व्यवहार करें।

खेड़ा जिले (गुजरात) के श्रीअरविंदायन, कपड़वणज (पिन—३८७६२०) ने 'शतमंगला' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है जिसमें माताजी और श्रीअरविन्दके वचनोंका सुंदर चयन है। इसमें छोटे-छोटे सैंकड़ों चित्र दिये गये हैं, चीज सुंदर और उपयोगी बन पड़ी है। मू. केवल १५.००।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन १३ और १४ अगस्त, १९७९ को होगा। प्रादेशिक उपसमितियोंकी बैठकें ११ और १२ को होंगी। इसका मुख्य विषय होगा "बालक और शिक्षा"। सोसायटीके सभी सदस्य इसमें भाग लेनेके लिये निमंत्रित हैं।

सोसायटीके कार्यकर्ताओं और केंद्रोंके पदाधिकारियोंके लिये ४ से १० अगस्ततक कार्यकर्ता शिविर होगा जिसमें माताजी और श्री-अरविंदकी शिक्षा तथा संगठन-संबन्धी कार्यक्रम होगा। जो लोग इसमें भाग लेना चाहें वे पहलेसे सूचना दें।

रेल कंसेशनकी व्यवस्था है। एक तरफके किरायेमें ही आना-जाना हो सकता है, परंतु यह सुविधा **सिर्फ उन्हीं लोगोंको मिलेगी जो ३१-७-७९ को सोसायटीके मेम्बर हों**। पति-पत्नी और २१ वर्षसे कम अवस्थाके बच्चोंको भी सुविधा मिल सकती है।

जो लोग इस अवसरपर आना चाहें वे जल्दी-से-जल्दी प्रतिनिधि फार्म भरकर ऐकोमोडेशन सेक्रेटरी, श्रीअरविंद सोसायटीके नाम भेज दें।

जो लोग ठहरनेकी व्यवस्था चाहते हैं वे भी डार्मिटरीके लिये रु० १०.०० और अन्य व्यवस्थाके लिये रु० २०.०० प्रति व्यक्ति पेशगी भेज दें। अगर आप ४ अगस्तसे पहले न आनेकी सूचना दे सकें तो यह पैसा वापिस हो सकता है, **४ अगस्तके बाद नहीं**। रहने-की व्यवस्थाके लिये अनुमानित किराया : डार्मिटरी — सोनेकी जगह प्रति दिन ३ से ५ रु० प्रति व्यक्ति; एकका कमरा रु० ८.०० से २५.०० प्रतिदिन; दोका कमरा रु० १४ से ३०.०० प्रतिदिन।

(शेष आवरण ३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donated by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY
SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक अधिवेशन १९७९

श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

प्रतिनिधि फार्म

सदस्यता नं : .... कबतकके लिये है : ....

सदस्यका पूरा नाम : श्री घनश्याम सिंह ....

पता : ...... कांगड़ी पुरानी कुमी ....

जिला : बिजनौर ...... पिन : ....

मैं सोसायटीका सदस्य हूं और अगस्त १९७९ के अधिवेशनमें भाग लेनेके लिये आना चाहता हूं। कृपया मुझे (सं) . . कंसेशन फार्म भेज दीजिये। मेरे साथ मेरे परिवारके ये लोग होंगे : (पति या पत्नी और २१ वर्षसे कमके बच्चे)

नाम	संबंध	आयु
१.		
२.		
३.		
४.		

मेरी वार्षिक आमदनी १८०० मासिकसे अधिक नहीं है।

जिन फार्मोंका उपयोग नहीं किया जायगा वह आपको १६ अगस्त, १९७९ तक लौटा दिये जाएंगे।

तारीख........ सदस्यके हस्ताक्षर..........

(ये दोनों फार्म भेजते समय कृपया दो अलग कागजों पर इनकी नकल करके भरकर भेजिये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन १९७९

रहनेके लिये स्थानका फार्म

ऐकोमोडेशन सेक्शन
श्रीअरविन्द सोसायटी
पांडिचेरी -६०५००२

प्रिय महोदय,

कृपया मेरे/हमारे लिये (ता.)..............से (ता.)........ तक रहनेकी व्यवस्था कर दीजिये। मैं/हम पांडिचेरी (ता)..............को पहुंचनेकी आशा करता हूं/करते हैं (लोगोंकी संख्या)............

किस तरहका कमरा चाहिये : डोर्मिटरी/एकका कमरा/दोका कमरा/परिवारका कमरा। अगर मेरे कार्यक्रममें कोई परिवर्तन हुआ तो ४ अगस्तसे पहले आपको सूचना दे दूंगा।

पेशगी रु० ....धनादेश/चेक/ड्राफ्टद्वारा भेज रहा हूं।

सदस्यता नं० : .... कबतकके लिये...

पूरा नाम ....

पता : ....

....

....
हस्ताक्षर

तारीख :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अगस्त १९७९

वर्ष १०, अंक १, पूर्णांक १०९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

(नाटक अंक)

राजकुमार १

महालक्ष्मीका अवतरण २१

सोसायटी समाचार आ० ४

हमारे निवेदनपर कुछ मित्रोंने कान दिया है और अपने चंदेसे अधिक राशि भेजी है। हमारा खर्च चंदेकी अपेक्षा काफी अधिक पड़ता है। समर्थ मित्रोंकी सहायतासे ही जन-साधारणके लिये चंदा कम रखा जा सकता है। अतिरिक्त राशि भेजते समय इसकी ओर संकेत कर दें तो सुविधा रहेगी।

पुरोधा वार्षिक ८.०० आजीवन १७५.००

अग्निशिखा वार्षिक ६.०० आजीवन १२५.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट, आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसयटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार

आदिकालसे प्रकाश और अंधकारमें युद्ध होता आया है। अब समय आ गया है कि प्रकाशकी विजय हो। हमारा यह नाटक इसी कहानीको लेकर चलता है। राजकुमार प्रकाश देनेके लिये धरतीपर आया है। तरह-तरहके प्रयास करनेके बाद जगदम्बाकी कृपासे वह यह जान पाया है कि मनुष्यका असली शत्रु बाहर नहीं, स्वयं उसके अंदर है। उसे ज्ञात होता है कि चाहे जितने बाह्य उपचार क्यों न हों, जबतक मनुष्य अंदरसे नहीं बदलता तबतक उसकी समस्याएं कम होनेकी जगह, बढ़ती ही जायंगी। वह मनुष्यके अंदर बैठे हुए असुर-को भी देव बनाना चाहता है।

सुखवीर मानवताका प्रतिनिधि है। अच्छी प्रेरणा मिल जाय तो वह अच्छा बन जाता है और आसुरी प्रेरणा मिले तो वह भी असुरके दलमें जा खड़ा होता है। उसके अंदर बहुत संकल्प-विकल्प उठते हैं, असुरका पथ-प्रदर्शन उसके अंदर तूफान ले आता है, पर जगदम्बाकी कृपासे अंतिम विजय दैवी भावकी होती है और स्वयं असुर भी ठोस अंधकारसे बना हुआ अपना काला जामा छोड़कर देव-कोटिमें आ जाता है।

इस नाटकमें हम देखते हैं कि सत्य और असत्य, शिव और अशिव, सुन्दर और कुत्सितके संघर्षमें पहले असत्य चाहे कितना भी क्यों न उभर आये, पर अंतिम विजय सत्य, शिव और सुन्दरकी ही होगी। यह हमें आशाका संदेश देता है कि बाह्य परिस्थितियां चाहे कितनी भी खराब क्यों न हों, उन सबका रूपांतर अवश्यंभावी है। यहां असत्य और अनित्यको नष्ट नहीं किया जायगा, बल्कि उन्हें बदल दिया जायगा और सब कुछ सुन्दर हो उठेगा।

— लेखिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटकके पात्र

देवी — दैवी मातृशक्ति।

राजकुमार — देशभक्त नेता और दैवी शक्तिका प्रतिनिधि।

सुखवीर — अपने प्रदेशका सैनिक डिक्टेटर — आसुरी शक्तिका प्रतिनिधि; पहले दृश्यमें इसका बालक स्वरूप।

आवाज और आकार — आसुरी शक्तिका घन रूप। पहले केवल आवाज सुनायी देती है। फिर काले वेशमें एक भयंकर आकार मंचपर आता है।

सुरेश, राजेश, शेखर, दिनेश — राजकुमारके साथी।

किशोरी — सुखवीरकी बहिन।

ज्ञानी, दानवीर, उद्योगपति, युवती — राजकुमारका स्वागत करनेके लिये आये हुए प्रतिष्ठित व्यक्ति।

हीरा — सुखवीरका नौकर।

बूढ़ा — एक मुसीबतका मारा देहाती।

चटिया, रामू आदि कुछ बच्चे — बालक सुखवीरके साथी।

देहाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजकुमार

पहला दृश्य

(खेत और गांवके बीचकी जगह। एक ओरसे आवाज आती है, "सुखिया! ऐ सुखिया!" दूसरी ओरसे बारह वर्षका एक लड़का, सुखवीर हाथमें लकड़ी लिये आता है। अन्य दो-तीन लड़के चिल्लाते हुए आते हैं, "चलो, चलो, आज किसकी बारी है? आज मेरी बारी है...")

सुखवीर—चलो, मैं ठीक कर देता हूं। चटिया, आज तू चोर बनेगा। देखना, अगर तूने कहीं चोरीसे देख लिया तो तुझे पीट-पीटकर ठीक कर दूंगा। जा, उस इमलीके पीछे जा।

(और लड़कोंको उंगलीसे इशारा करता है। खेल शुरू हो जाता है। थोड़ी देरतक शोर-गुल रहता है। एक देहाती आदमी वहांसे कुछ भजन गाता हुआ निकलता है, सुखवीर एक कंकड़ लेकर उसकी पीठपर मारता है। देहाती रुककर, पीछे मुड़कर...)

देहाती—कौन है, ससुरा?

(कई लड़के डरके मारे भागने लगते हैं।)

सुखवीर—अरे, आंखोंसे दिखायी नहीं देता? अंधा है?... ऊपरसे गाली देता है, चल, अपना रास्ता नाप।

देहाती—वाह, कंकड़ मारते हो और ऊपरसे अंधा कहते हो? कौन है रे तू?

रामू—उसका नाम...?...

सुखवीर—अरे, तू कौन-सा लाट साहब है? जा, नहीं बताते अपना नाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चटिया–छोड़ो भी झगड़ा, एक कंकड़ ही तो लगा है, गोली तो नहीं लगी !

सुखवीर–कौन ससुरा डरता है उससे ? (ताल ठोककर) आ जाओ, आ जाओ, हम बता देंगे।

देहाती–अहा, करेले छोटे हैं, पर जहर तो देखो।

सुखवीर–क्या कहा ? कौन होता है तू हमें जहरीला कहनेवाला ?

(धीरे-धीरे लड़के खिसकने लगते हैं, केवल चटिया सुखवीरके साथ रह जाता है।)

राखस कहींका !

देहाती–लड़का क्या है, पूरा शैतान है ! (और वह भी धीरे-धीरे चलने लगता है।)

सुखवीर– (जोर-जोरसे हंसता है।) आहा ! क्या मजा आया !

चटिया–सुखिया ! मैंने तुझे कंकड़ फेंकते हुए देखा था। तू रोज-रोज इस तरह झगड़ा क्यों मोल लेता है ? क्या मजा आता है इसमें ?

सुखवीर–अरे ! रोज कहां ? आज खेलमें जान न थी, मैंने सोचा, 'चलो, जरा गरमी पैदा करूं।'

चटिया–रोज-रोज ही तो झगड़ा करता रहता है तू। कल तूने चम्पा ग्वालिनका दूध गिराकर झगड़ा किया था। परसों भगतकी लकड़ी छीन ली थी। तू हमेशा "आओ बैल मोहि मार" की तरह बिना बातके झगड़े क्यों करता रहता है ?

सुखवीर–बताऊं ? मुझे उल्लुओंको तंग करनेमें बड़ा मजा आता है। कैसे नथुने फुला-फुलाकर लड़ते हैं लोग !

चटिया–नहीं, भइया। यह अच्छी बात नहीं है।

(दूरसे आवाज आती है। चटिया ! ऐ चटिया ! गोल भागी जाय है। चटिया 'आया' कहकर भाग जाता है। सुखवीर गर्वसे चटियाको देखता है। घासपर लेटकर सीटी बजाने लगता है। एक विचित्र अमानुषी आवाज सुनायी देती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखिया चौंककर बैठ जाता है।)

आवाज—शाबाश! बहुत अच्छा कर रहे हो। तुम्हें याद है, हम दोनों मखमली अंधकारमें कैसे आरामसे रहते थे? फिर वह आया... हमारा दुश्मन। उसकी मशालकी चमकती हुई रोशनीने हमारे स्निग्ध अंधकारको झकझोर दिया। तबसे हमें न सुख है, न शांति। प्रकाश चाहते हैं और नहीं भी चाहते। याद है हम दोनोंने प्रकाशके उस जन्तुसे बदला लेनेकी ठानी थी? तुम इसीलिये मानव शरीरमें जन्मे हो, इस गांवमें अब तुम्हारा काम बाकी नहीं रहा, अब अपने असली कार्यक्षेत्रमें चलो। दुश्मन बड़ा हो चुका है, हमें देर न करनी चाहिये। मैं तुम्हें बहुत बड़ा आदमी बना दूंगा। पर मैं जैसा कहूं वैसा ही करना, भय और आतंक ही तुम्हारे अस्त्र होंगे। खबरदार! दुश्मनको दया दिखायी तो...

(सुखवीर नतमस्तक होकर आदेश स्वीकार करता है।)

दूसरा दृश्य

(एक कमरा। कमरेमें सात-आठ कुर्सियां और एक मेज। मेजपर दो युवक बैठे बातें कर रहे हैं।)

राजेश—मैं भी जानता हूं कि उनको सब राजकुमार कहते हैं। परंतु उनका सच्चा नाम क्या है? राजकुमार नाम तो जनताने अपने आदर और प्रेमके प्रतीक-रूपमें दिया है।

सुरेश—सच्चा नाम तो मैं भी नहीं जानता। लेकिन भाई, नामसे क्या होता है? आयुमें वे हमसे बहुत बड़े तो नहीं हैं परंतु उनके आते ही देशकी हवा बदल गयी है। हमारे-तुम्हारे जैसे बहुत-से भूले-भटकोंको उन्होंने रास्ता दिखाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेश–हां भाई, बात तो ठीक है। पराधीनताका दुःख असह्य था, किंतु हम सब हाथपर हाथ धरे बैठे हुए थे।

(शेखर दौड़कर अंदर आता है।)

शेखर–(हांफता हुआ) राजा भइया कहां हैं?

दोनों–क्यों? क्या हुआ?

शेखर–पुलिस उनको ढूंढती हुई यहां आ रही है।

(सब भौचक्के-से रह जाते हैं।)

शेखर–चलो अपने-अपने स्थानपर।

(बाहर जाते हुए)

मैं जब सीटी बजाऊं तो समझ लेना कि खतरा पास है।

(सब लड़के इधर-उधर हो जाते हैं। कुछ देर बाद अंदर प्रवेश करते हुए)

राजेश–क्या हुआ आये नहीं?

सुरेश–राजा भइयाने कुछ चाल चली होगी।

(शेखर आ जाता है।)

दोनों–शेखर, क्या हुआ?

(शेखरके पीछे राजकुमारका प्रवेश)

शेखर–(राजकुमारसे) भइया, क्या हुआ? पुलिसको कैसे चकमा दिया?

राजकुमार–तुम जानते ही हो, मदन देखनेमें कुछ-कुछ मेरे जैसा लगता है। उसको अपनी चादर देकर पुलिसके आगे-आगे बीस कदमका फासिला बनाये नदीतक जानेका हुक्म देकर आया हूं।

(अजित दौड़ता हुआ आता है।)

अजित–राजा भैया, गजब हो गया! पुलिसने अमलको यातनाएं दे-देकर खत्म कर डाला।

(कुछ देर सन्नाटा)

शेखर–यह अत्याचार कबतक चलता रहेगा? राजा भैया, अब आगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज०–अब और आगे ? शेखर, ये प्रश्न ही कैसे उठते हैं ? हम सबने शपथ ली है कि मांको बंधन-मुक्त करेंगे, हमारे जीवनका और कोई उद्देश्य नहीं है। हमारे लिये देश नदी-पहाड़ोंसे घिरी हुई भूमि नहीं है। इस देशमें रहनेवाले नागरिक भी देश नहीं हैं। हमारा देश एक जीवित-जागृत आत्मा है, एक शक्ति है, हमारी मां है, उसके लिये प्राण न्यौछावर करनेमें संकोच कैसा ?

राजेश–पर भाई, इस तरह हम एक-एक करके मार दिये जायेंगे। इससे न परदेशी हटेंगे और न हमारा कार्य पूरा होगा।

राज०–राजेश, तुम देखते नहीं कि प्रजा हमारे साथ होती जा रही है ? जिस दिन जन-जनार्दन जाग उठेंगे, उसी दिन हमारा काम सिद्ध हो जायगा। भाई, देश घोर तममें पड़ा हुआ है, उसे जगानेके लिये बलि देनी ही होगी। इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है। डरो मत, मांके लिये शहीद होना बड़े सौभाग्यकी बात है। शहीदोंके लिये दुःखी होकर उनका अपमान न करो।

तीसरा दृश्य

(छोटे-छोटे संघर्ष होते रहे, आखिर राजकुमारने देशव्यापी आंदोलन शुरू करनेकी ठानी। सारा दल विजय या मृत्युका वरण करनेके लिये तैयार होकर आया है : कार्यवाही शुरू करनेसे पहले राजकुमार अपनी प्रिय पहाड़ीपर जाकर चिंतन कर रहा है।)

राजकुमार–मां, सिंहवाहिनी, तेरा शेर जाग उठा है, उसकी हुंकारसे विदेशी आततायी कांप रहा है।

(थोड़ी देर मौन टहलता रहता है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरे आदेशका अभीतक ठीक-ठीक पालन किया है। आज अगर मर जाऊं तो शांतिसे तेरी गोदमें सोऊंगा और जीत गया तो देशके भाई-बहनोंको तेरी शरणमें ला सकूंगा। याद है मां, तूने कहा था कि इस देशका स्वतंत्र होना सारी धरतीके लिये आवश्यक है? यही वह देश है जो संसारको ज्ञान देगा, अमरता-का मार्ग दिखायेगा। (थोड़ी देर मौन घूमता रहता है।) आशीर्वाद दे मां, कि इन परदेशियोंको मातृभूमिसे निकाल बाहर करूं। वर दे कि तेरी ही पताका घर-घर फहरा सके।

(एक जगमगाती ज्योति दिखायी देती है। राजकुमार आश्चर्य-चकित उसको देखता है। एक देवीकी आकृति बाहर आती है। राजकुमार धीरे-धीरे उसकी ओर आगे बढ़ता है। खड़ा नहीं रह सकता, घुटने टेककर बैठ जाता है।)

राज०–(स्वगत) कौन है यह? यह मुख परिचित-सा है। ज्योति-पुंज! तुम मानवी हो या कोई और?

देवी–(सस्मित) नहीं पहचानता मुझे?

राज०–ओ! आप! परंतु स्वप्न-लोकमेंसे बाहर कैसे निकल आयीं! मुझे याद है कितनी बार रातको इस अपूर्व सुन्दर मुखने मुझे दर्शन दिये हैं। यह मेरे लिये परिचित होते हुए भी एक रहस्य है।

देवी–बेटा, आज तेरी प्रार्थना इतनी प्रबल, इतनी तीव्र थी कि वह मुझे अदृश्य जगत्‌मेंसे खींच लायी। बोलो, तुम्हें क्या चाहिये?

राज०–मां, मुझे आशीर्वाद दो कि परदेशी सत्ताको उखाड़कर फेंक सकूं।

देवी–वत्स, मैंने तो इस कामके लिये तुझे धरतीपर नहीं भेजा था। तू इतना महान् है, कि तुझे देश-कालकी सीमाओंमें बांधना तेरे साथ अन्याय होगा। तू सारे जगत्‌के लिये जन्मा है, तेरे लिये कौन अपना और कौन पराया? तेरे देशको स्वाधीनता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलनी चाहिये और अवश्य मिलेगी, परंतु तेरे लिये अब इससे बड़ा काम चुना गया है। तू शत्रुपर विजय पाना चाहता है न? आ, आजसे तुझे एक भिन्न प्रकारके शत्रुसे लड़ना होगा। यह लड़ाई बहुत अधिक भयंकर होगी। तुझे अपने सर्वस्वकी आहुति देनी पड़ेगी। बोल, है हिम्मत?

राज०—मां, तुम्हारी इच्छाके बाद भी कोई प्रश्न रह जाता है? मैं नहीं जानता तुम कौन हो? मुझसे क्या चाहती हो, पर लगता है मैं तुम्हारी ओर खिंचा चला आ रहा हूं। मैं पूर्ण रूपसे तुम्हारा हूं। बोलो, क्या आदेश है?

देवी—संसारमें आसुरी शक्तियोंका राज्य है। उनके प्रभावमें आकर मनुष्योंने भगवान्‌से मुंह मोड़ लिया है। मैं चाहती हूं कि तू इन आसुरी शक्तियोंके विरुद्ध लड़े, मनुष्योंके अंदर और सारी प्रकृतिमें भगवान्‌के साम्राज्यकी स्थापना करे। शत्रु जहां कहीं लुक-छिपकर बैठा हो, वहींसे उसे निकालना होगा। वत्स, मैं शत्रुका विनाश नहीं चाहती; वह भी तो जगदम्बाकी ही संतान है न? मैं उसका भी रूपांतर करके उसे भी अपनाना चाहती हूं। इस अभियानमें तू मेरा सेनापति होगा। तैयार है?

राज०—मां, मैं अनुभव कर रहा हूं कि मैं अपने-आपमें कुछ भी नहीं हूं, पर तुम्हारा यंत्र बनकर मैं सब कुछ कर सकूंगा। मां, वर दो, मैं हमेशा अपने अंदर और बाहर तुम्हारे दर्शन कर सकूं। मेरे जीवनका प्रत्येक क्षण तुम्हारा हो, तुम्हारा ही काम करूं और सारी धरतीपर तुम्हारे साम्राज्यकी स्थापना कर सकूं।

देवी—एवमस्तु। अपने साथी सैनिकोंको भी मेरा संदेश सुना दे। देखें, उनमें कितने सच्चे सैनिक हैं जो इस नये अभियानमें तेरा साथ दे सकें।

(देवी अंतर्धान हो जाती हैं, राजकुमार नीरव-निश्चल बैठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहता है। राजेश, सुरेश, शेखर और दिनेश उसे ढूंढते हुए वहां आ पहुंचते हैं।)

राजेश—बात क्या है, आज राजा भैयाको देर हो गयी?

सुरेश—हां, वे तो समयके इतने पाबन्द हैं कि उन्हें देखकर घड़ी मिला लो। आज कोई विशेष कारण होगा।

शेखर—अरे, मैं बताऊं, आजकल न जाने उन्हें क्या हो गया है, जब देखो अनंतकी ओर टकटकी लगाये रहते हैं। मैंने देखा है, कई बार घण्टों खोये-से बैठे रहते हैं। आजकल उनकी मेज पर गीता ही दिखायी देती है और कुछ नहीं। सुरेश भाई, हमें ये सब बातें नहीं सुहातीं। हम देशके परवाने, देशके लिये जल मरेंगे। साधु बनकर धूनी कौन रमायेगा?

राजेश—ऐसे न बोलो, भाई। मुझे तो लगता है कि वे किसी आंतरिक साधनामें लगे हैं। सुरेश, वे जो कुछ करेंगे हमारे भले के लिये ही करेंगे। उनके हाथोंमें देश सर्वथा सुरक्षित है।

शेखर—अरे, उधर देखो, वह कौन है? अंधेरेमें क्या कर रहा है?

सुरेश—चुप-चुप, राजा भइया हैं। शायद ध्यानमें बैठे हैं। चलो, हम सब भी वहीं चलें।

(सब चुपचाप राजकुमारके पास जाकर खड़े हो जाते हैं।)

राज०—(चौंककर) अरे! तुम लोग यहां कैसे?

राजेश—कुछ नहीं, यूं ही घूमते हुए निकल आये।

राज०—ओ, मैं समझा, मुझे बहुत देर हो गयी है, तुम मेरी तलाशमें आये हो (सब एक-दूसरेका मुंह देखते हैं।) भाइयो, माफ करना, मैं सब कुछ भूल गया था। लो, एक शुभ समाचार सुनो। अभी कुछ देर पहले मुझे जगज्जननीने दर्शन दिये। उन्होंने कहा कि हमारा देश स्वाधीन होनेको है। इस कामका भार उन्होंने अपने ऊपर लिया है। अब वे मुझे किसी और ही काममें लगाना चाहती हैं। उनका कहना है कि मानवजाति अज्ञान-अंधकारमें फंसी हुई है। अब उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्धारका समय आ गया है। वे चाहती हैं कि मैं उनके नये अभियानके लिये तैयारी करूं। मुझे लग रहा है कि हम उन्हीं-के यंत्र हैं। इस समय हमारा एकमात्र कर्तव्य है कि हम अपने-आपको मांके नये यज्ञके लिये समर्पित कर दें।

भाइयो, मांने मेरा पथ निश्चित कर दिया है, आपमेंसे जो इस यज्ञमें आहुति देना चाहें उन सबका स्वागत है। नमस्कार!

(राजकुमार बैठ जाते हैं — कुछ देर सन्नाटा — सुरेश और शेखर जाने लगते हैं। तरह-तरहकी भाव-भंगिमाएं हैं. . . सुरेश कहता है, "लो, हो गया बंटा ढार।" शेखर : "अरे, इन भक्तोंसे कुछ न बनेगा, हमें अपने बल-बूतेपर ही आगे बढ़ना होगा।")

राजेश–राजा भइया, तुम मुझे भुला तो न दोगे? तुम सचमुच महान् हो, राजा भइया। साधारण मानव समाज तुम्हारे अंदर जगमगाती ज्योतिको नहीं देख सकता। मैंने देखा है, विकट-से-विकट परिस्थितिमें भी तुम हिमालयकी तरह अडिग रहते हो, तुम्हारी आंखें धरती और आकाशको चीरती हुई अनंतपर लगी रहती हैं। मैं कमजोर हूं, पर हमेशा तुम्हारे साथ हूं; देखना, मुझे अलग न करना।

राज०–मांकी दृष्टिमें कोई तुच्छ नहीं है राजेश। सभी तो उसी जगज्जननीकी संतान हैं। मांका कहना है कि अभीतक मानवता-ने घृणा और झूठे आत्म-संतोषको ही देखा है। अब वे उसे प्रेमका रसास्वादन करानेवाली हैं। हमने अभीतक धारणाओं और बौद्धिक संघर्षोंकी ही खिचड़ी पकायी है, अब हमें सच्चा आलोक मिलनेवाला है। हमें जन्म-मरणसे पहले सच्चे जीवन-की प्रतिष्ठा करनी होगी। हम भाग्यशाली हैं, राजेश, कि हमने ऐसे देव-मुहूर्तमें जन्म लिया है। हम अपनी इन्हीं आंखों-से असत्यकी पराजय और सत्यकी विजय देख सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा दृश्य

(इस घटनाको बहुत वर्ष बीत चुके हैं। राजकुमारकी ख्याति देशके कोने-कोनेमें फैल गयी है। आज नगरमें राजकुमारका आगमन होगा। सुखवीरके मकानके पास लोग राजपथपर भीड़ किये हुए हैं। आपसमें बातचीत हो रही है — "अब आते ही होंगे। हमारे भी भाग्य जग गये, उनके दर्शन हो रहे हैं।"

सुखवीर और उसकी बहिन किशोरी मकानके एक कमरेमें बैठे हैं।)

किशोरी—नहीं, भैया, तुम यह ठीक नहीं कर रहे। क्या हाल कर रखा है तुमने देशका? चारों ओर लोग तुम्हें गालियां दे रहे हैं। बच्चोंको तुम्हारा नाम ले-लेकर डराया जाता है।...हाय! तुमने देशकी कितनी युवतियोंके सिरका सिंदूर पोंछ डाला, कितनी माताओंकी गोद सूनी कर दी, मुझे इन दीन-दुःखी स्त्रियोंका रोना सुनकर डर लगता है। और न सही, अपनी इस बहिन पर दया करो, सुखवीर। अपनी इस नीतिको बदल डालो, मुझे यह वैभव नहीं चाहिये, नहीं चाहिये यह सारा बड़प्पन। सुखवीर, बिलखती हुई, कलपती हुई बहिनोंके आंसुओंसे सना हुआ सुख न जाने हमें कहां फेंकेगा? मैं इन अनाथ आश्रयहीन अबलाओंकी आहें न सह सकूंगी...

सुखवीर—क्या खरगोश जैसा हृदय पाया है तुमने। जरा कुछ हुआ नहीं कि बस, लगा धड़कने। आज समस्त देशमें मेरी धाक है। बड़े-बड़े लोग मेरे नामसे थर्राते हैं, सेनापति सुखवीरका नाम बड़े-बड़े वीरोंको भी चौंका देता है। आज मेरे पास किस चीज की कमी है? क्या भय और आतंकके बिना दुनियापर इस तरह धाक जमायी जा सकती है? तुम चाहती हो कि यह सब छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूं और लंगोटा मारकर साधु बन जाऊं? ऐसी आशा न रखना मुझसे।

किशोरी—नहीं समझे मेरी पीड़ाको। भैया, साधु होनेको कौन कह रहा है? मैं तो सिर्फ इतना कह रही हूं कि दूसरोंको भी अपने जैसा आदमी समझो, उन्हें व्यर्थमें कष्ट न दो। सुखवीर, हमारे इन भाइयोंने विदेशी राजके समय बहुत दुःख झेले हैं, अब उन्हें कुछ तो आराम पाने दो। (हीराका प्रवेश) क्या है, हीरा?

हीरा—बीबीजी, सबेरेसे एक बूढ़ा दरवाजेपर पड़ा है, किसी तरह टलता ही नहीं। कहता है, वह आपके दर्शन करना चाहता है।

किशोरी—अच्छा, यहीं ले आओ।

(हीराके साथ एका बूढ़ा अंदर आता है, पर सुखवीरको देखते ही उसकी घिग्घी बंध जाती है।)

किशोरी—क्यों, बाबा, क्या बात है? नहीं, डरो मत, यहां डरनेकी कोई बात नहीं है।

बूढ़ा—मैं मुसीबतका मारा हूं। कल...कल, एक सभा हो रही थी, वहां न जाने क्या हुआ, पुलिसने गोली चलायी और मेरा इकलौता बेटा मारा गया। (रोने लगता है।) मैं चाहता हूं... जिसने मेरे लालको मारा है...उस (रोता है) आपकी शरणमें आया हूं, मेरे लालको वापिस दिला दीजिये।

किशोरी—बाबा, शांत रहो, भगवान्पर भरोसा रखो, वे तुमपर दया करेंगे।

सुखवीर—अरे! निकालो भी इसे यहांसे! कबसे कान खाये जा रहा है! तुम भी क्या मुसीबतें पालती रहती हो!

(बूढ़ा डरके मारे भाग जाना चाहता है।)

किशोरी—बाबा, डरो मत, ये कुछ नहीं करेंगे। तुम बाहर बरामदेमें बैठो, मैं अभी आती हूं।

(बूढ़ा लड़खड़ाता हुआ चला जाता है, किशोरी उसे देखती रहती है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरी—देखा, सुखवीर, इसकी आंखोंको देखा? ओह, कितना दुःख भरा था उनमें! न जाने कितने लोग इस तरह कलप-कलप कर तुम्हें गालियां दे रहे होंगे। कुछ तो सोचो, भैया, इन लोगोंकी आहें व्यर्थ न जायंगी। इस दुखियारेके लिये तुम्हारे पास सांत्वनाके दो शब्द भी न थे। मान लो, उसकी जगह मैं होती तो क्या तब भी तुम ऐसे ही कठोर बने रहते?

सुखवीर—इतनी अधिक भावुक न बनो, किशोरी, तभी तो मैं कहा करता हूं कि स्त्रियोंको राजनीतिमें न पड़ना चाहिये। यह महा कठोर हृदयवालोंका क्षेत्र है। मैं अगर सख्ती कर रहा हूं तो अपना घर भरनेके लिये तो नहीं, देशने मेरे सैनिक शासनके कारण कितनी प्रगति कर ली है! (सड़कपर शोर बढ़ता है) इसका कुछ भी मूल्य नहीं तुम्हारी नजरोंमें, केवल कुछ भीरुओंके आंसुओंसे प्रभावित होकर तुम मेरे किये-करायेपर पानी फेर देना चाहती हो? आह...यह देखो, सड़कपर फिर शोर मच रहा है। सिर-फिरे लोग शायद फिरसे कुछ गड़बड़ करना चाहते हैं। तुम इन लोगोंकी ओरसे कैसे दयाकी प्रार्थना करती हो?

देखो, हीरा, यह कैसी भीड़ है? ये लोग क्या चाहते हैं? इतना जोरदार स्वागत किसका है?

हीरा—हुजूर, ठीक तो नहीं जानता। कहते हैं कि एक बहुत बड़े महात्मा आ रहे हैं।

सुखवीर—होगा कोई चिमटेबाज ढोंगी। हमारे लोग न जाने कब तक इस अंध-विश्वासमें फंसे रहेंगे!

हीरा—नहीं, हुजूर, कहते हैं, पहले बहुत बड़े नेता थे। सारे देशमें इनका मान था। विदेशी सत्ता इनके भयसे कांपती थी। फिर न जाने क्या हुआ, एक दिन अचानक सब कुछ छोड़ बैठे। कहते हैं, इनके द्वारा स्वयं मांने ही हमारे देशको स्वाधीनता दिलायी है। मैं भी उनके दर्शन करने जाऊंगा।...गुस्ताखी माफ हो, आप भी...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोरी—अरे, हीरा, कहीं राजकुमार तो नहीं आ रहे? उनके दर्शन तो मैं भी करूंगी।

(दोनों चले जाते हैं।)

आकार—सावधान, सुखबीर, यह वही शत्रु है जिसका नाश करनेके लिये मैं तुम्हें तैयार करता आया हूं। यही है ज्योतिका कीड़ा। कहीं उसकी बातोंमें न आ जाना।

पांचवां दृश्य

(सुरेशके मकानका एक कमरा। राजकुमारके स्वागत-समारोहकी तैयारी है। नगरके प्रतिष्ठित लोग आ रहे हैं। ज्ञानीका प्रवेश। शेखर "आइये आइये" कहकर स्वागत करता है।)

ज्ञानी—भाई, मैं तो यूं ही चला आया। मिलनेको तो यहां क्या मिलेगा? मैंने अपना सारा जीवन यास्क, कपिल, कणादसे लेकर कांट, हेगल और शोपेनहोरके ग्रंथोंके साथ बिताया है। साहित्य, दर्शन, इतिहास, सबका अध्ययन कर चुका हूं। भगवान्के पक्षमें और विपक्षमें घंटों बहस कर सकता हूं, पर आज जीवनकी संध्यामें ऐसा अनुभव होता है मानों सब व्यर्थ गया। (दानवीरका प्रवेश। शेखर स्वागत करके स्थान दिलाता है) मैंने पाया क्या? कुछ नहीं। न सत्य मिला, न उसका रास्ता ही दिखायी दिया। शायद मैं दरिद्र नारायणकी सेवा करता तो कुछ काम भी होता।

दानवीर—अजी, नहीं, यह न कहिये। मुझे ही देख लीजिये न। देशमें, जातिमें मनुष्य सेवाका कौन-सा ऐसा बड़ा काम है जिसमें मैंने सहायता नहीं की। स्कूल खोले, अस्पताल खोले, धर्मशालाएं बनवायीं, अनाथालय, विधवाश्रम स्थापित किये। देशके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोने-कोनेमें मेरे नामके स्मारक लगे हैं। पर इस सबसे अंतरकी दाह नहीं बुझती। (उद्योगपतिका प्रवेश) मुझे लग रहा है बिलखती हुई मानवताके घावोंपर फाया रखनेमें मैं पूरी तरह असफल रहा। शायद मैंने लोगोंको दूसरोंका मुंह ताकना सिखाया और उनके आलस्यको प्रश्रय दिया। शायद इससे अच्छा होता कि मैं देशमें कल-कारखानोंके जाल बिछा देता, लोगोंको अपने पैरोंपर खड़ा होना सिखाता...

उद्योगपति—यह लीजिये, आप तो मेरे क्षेत्रमें कूद रहे हैं। लेकिन मैंने ही उद्योग-धंधे करके कौन-सा शेर मार लिया! यह ठीक है कि मैंने बहुतोंको काम दिया, बहुत-से दीन-दुखियोंको स्वावलंबी बनाया, उनके अंदर आशाएं उमंगें पैदा कीं और जीवनमें रस लेना सिखाया। परंतु मैं देख रहा हूं उनका जीवन उलटे रास्ते पर चल रहा है। आज उनके जीवनमें संतोषके जैसी कोई चीज ही नहीं है। आवश्यकताएं, वासनाएं बढ़ती जा रही हैं और एक उच्चतर जीवनके लिये तो उनके स्वप्नोंमें भी स्थान नहीं है। एकदम जड़-भौतिकवादने उनको अपने पंजेमें कस लिया है। कई बार सोचता हूं कि इसका दायित्व मुझपर है। बड़ा दुःख होता है यह सोचकर। लेकिन अब उपाय भी क्या है?

सुरेश—उपाय, उपाय क्यों नहीं है? आज हम जिसका स्वागत करनेके लिये बैठे हैं वह इन सब समस्याओंको हल कर सकता है। आप जानते नहीं हैं वह एक अद्भुत व्यक्ति है।

ज्ञानी—अरे, भई, होगा। मैंने एक-से-एक बढ़कर देखे हैं, परंतु असली समस्याकी चाबी किसीके पास नहीं है। अभी तो हमने इन लोगोंकी बातें सुनी हैं। कोई बतला दे, इसके बाद और क्या कहा जा सकता है। कई महान् गायक, कलाकार, राजनीतिज्ञ देखे हैं, सबके साथ घुल-मिलकर बातें की हैं, सबकी बड़ी-बड़ी अभिलाषाएं थीं, सबने बड़ा-बड़ा प्रयास किया, पर परिणाम सबका एक...मैं तो इसी निष्कर्षपर पहुंचा हूं कि इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत्में कुछ भी कर सकना असंभव है। मुझे तो अब संन्यास-मार्ग बुला रहा है। सब कुछ छोड़कर शून्यमें विलीन हो जाना ही अच्छा।

सुरेश—नहीं, साहब, आप राजा भैयाको नहीं जानते। उनकी आंखों-में वह शक्ति है जो पत्थरको भी पिघला दे। मैं उन्हें बचपनसे जानता हूं। वे पाठशालामें, खेलके मैदानमें और घरोंमें आने-वाली समस्याओंका हल चुटकियोंमें कर दिया करते थे। बच-पनसे ही वे विलक्षण रहे हैं। (युवतीका प्रवेश) हमने कभी उन्हें विक्षुब्ध होते हुए नहीं देखा। बड़े हुए तो नेतृत्व उनके चरण चूमने आया। यह सब होते हुए भी वे जनताकी नजरों-से बचकर रहना पसंद करते हैं। सैंकड़ों आदमी उनसे सलाह लेने जाते हैं, पर हर एक यही अनुभव करता है कि उसके साथ उनका विशेष संबंध है। हर समस्याकी गहराईमें पैठकर...

शेखर—बस, बस, वह देखो...

(राजकुमार आते हैं, राजेश दो कदम पीछे है।)

सुरेश—आइये, आइये। (आसनकी ओर ले जाता है) राजा भइया, हमारा अहोभाग्य है कि आपने यहां दर्शन दिये। नगरके गण्य-मान्य लोग यहां उपस्थित हैं। (ज्ञानीका परिचय कराते हुए) आप हमारे प्रदेशके सबसे बड़े विद्वान् हैं।

ज्ञानी — (नमस्कार करके) (राजकुमारसे) राजा भैया, क्षमा कीजिये इस संबोधनके लिये, मैंने लोगोंसे मिलना-जुलना छोड़ रखा है...यहां भी न जाने कौन खींच लाया है! शुरूसे ही एक तड़प मेरे हृदयमें रही है। दर्शन, विज्ञान, गुह्य विद्या सबमें पारंगत होनेके बाद मैं इस निष्कर्षपर पहुंचा हूं कि यह सब झूठा है। सुना है, आपने सत्यके दर्शन किये हैं। मुझे भी एक झांकी दिलवा सकेंगे, भैया?

राजकुमार—आप निराश न हों, महाशय, सत्य स्वर्णमय आवरणके पीछे छिपा हुआ है। आवरणको हटानेका प्रयास कीजिये।

(आगे चलते हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेश—यह हमारे यहांके सबसे बड़े दानवीर हैं। इन्होंने सैकड़ों हाथोंसे कमाया है और हजारों हाथोंसे दान किया है। कोई भी अच्छा काम नहीं जहां इन्होंने सहायता न की हो।

दानवीर—पर फिर भी शांतिसे कोसों दूर! बहुत दिनोंसे आपसे मिलना चाहता था, आज अवसर मिला है।

सुरेश—और यह हैं हमारे सबसे बड़े उद्योगपति। इनके कल-कारखाने चौबीसों घण्टे चलते रहते हैं। इन्होंने इस पिछड़े प्रदेशको उद्योगमें सबसे आगे कर दिया है।

उद्योगपति—पर सचमुच सुख तो न दे पाया किसीको! लोगोंकी तृष्णा बढ़ी, इच्छाएं बढ़ीं, और साथ-ही-साथ जीवनमें असंतोष बढ़ता चला गया।

राज०—भाई सुरेश, क्षमा करना। मैं जरा जल्दीमें हूं। स्वागत-समारोहके झमेलेमें न पड़कर पहले इन लोगोंसे बातचीत कर लूं।

सुरेश—जैसी आपकी इच्छा।

राज०—आइये, बैठ जायं। (सब बैठ जाते हैं।) सचमुच देखा जाय तो हम सबकी एक ही समस्या है। हम शांति चाहते हैं, सुख चाहते हैं और सब प्रकारके कष्टोंसे दूर रहना चाहते हैं। परंतु मार्ग हर एकने अपना-अपना चुना है। आपने ज्ञानसे, इन्होंने दानसे और आपने उद्योगसे एक ही चीजको पाना चाहा है, आपने नाम भले ही अलग-अलग दे लिये हों। हमारा सच्चा जीवन एक समुद्रकी न्याईं है जो अंदर तो शांत और गंभीर है, परंतु ऊपरी तलपर लहरें ठाठें मार रही हैं। हम जरा अंदर पैठ सकें तो सारी अशांति, सारा दाह, समस्त चिंताएं उड़ जायेंगी।

उद्योगपति—क्षमा कीजिये, परंतु क्या यह स्वार्थपरता नहीं होगी? हम संसारको रोते-बिलखते छोड़कर अपने-आप शांति प्राप्त कर लें तो क्या यह उचित होगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानवीर—और क्या जन-साधारणके प्रति हमारा कुछ भी कर्तव्य नहीं है ?

राज०—नहीं, मैं हाथपर हाथ रखकर बैठ जानेके लिये नहीं कह रहा हूं। परंतु कुछ करनेसे पहले हमें यह भी तो जानना चाहिये कि हमें क्या करना है। आप लोग अपना ही उदाहरण ले लीजिये। क्या इस सारे प्रयास, इस दौड़-धूपके पीछे अपनी महत्त्वाकांक्षा नहीं छिपी होती ? आप अस्पताल बनवाते हैं, उसपर अपने नामका पत्थर देखनेके लिये, अपने-आपको संतोष देनेके लिये कि आपने हजारोंका भला किया है। परंतु क्या सब प्रकारके बाह्य साधन पाकर भी आजका समाज सुखी है? जिन देशोंमें हर प्रकारकी सुविधा है, क्या वहांके मनुष्योंको शांति प्राप्त है ?

(उद्योगपतिसे) आपने दुनिया देखी है, आप ही बताइये।

उद्योगपति—नहीं, हमारे जीवनमें एक तरहकी कठिनाइयां हैं, उनके जीवनमें दूसरी तरहकी। शायद असंतोषकी भावना उनके अंदर हमसे भी ज्यादा है। पर इसका उपाय क्या है ?

राज०—इसका एक ही उपाय है। आप यह तो मानते ही हैं कि यह सारी सृष्टि एक सचेतन शक्तिकी बनायी हुई है जिसे हम भगवान् कह लें, चाहे जगदम्बा। आप यह भी मानते हैं कि उसके अंदर हमसे कहीं अधिक शक्ति है, ज्ञान है और अनुकम्पा है। मेरा ख्याल है आपको यह माननेमें भी आपत्ति न होगी कि हमारी अपेक्षा उसकी करुणा कहीं अधिक सशक्त है। तो क्या यह अधिक अच्छा न होगा कि हम अपनी अलहदा डफली बजानेकी जगह अपने-आपको उसके हाथोंमें सौंप दें और पूरी तरहसे उसके यंत्र बनकर काम करें ? हम अपने हृदयमें स्थित मांको पहचानें और बिना किसी ननुनचके उसकी आज्ञाका पालन करें ? हमारे लिये, मानवताके लिये और समस्त विश्वके लिये यही सबसे अधिक हितकर होगा। मैं देख रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं कि मांकी एक नयी शक्ति प्रकट हो रही है, आज न सही, कल सही, वह सारे अज्ञान-अंधकारको, सारे अहंकारको और हर प्रकारकी दरिद्रताको बदल देगी। चलिये, हम भी ग्वाल-बालोंकी तरह इस गोवर्धनको उठानेमें सहायक बनें।

(थोड़ी देर मौनके बाद)

युवती—भगवन्, मुझे भी कुछ कहना है, पर...

(सुरेश, ज्ञानी, आदि, नमस्कार करके, "अच्छा हमें आज्ञा दीजिये" कहते हैं और बाहर चले जाते हैं।)

राज०—कहो, कहो, कहनेमें संकोच न करो।

युवती—कैसे कहूं, कुछ कहते नहीं बनता। बचपनसे ही मेरे अंदर प्रेमकी अदम्य प्यास रही है। पर आजतक सच्चा प्रेम दिखायी नहीं दिया। माता-पिता मुझे बहुत चाहते थे, पर वे भी मेरे द्वारा अपने अरमानों और अपनी हसरतोंको पूरा करना चाहते थे। वे मुझे अपनी कल्पनाओं और स्वप्नोंके सांचेमें ढालना चाहते थे...

राज०—फिर ?

युवती—फिर आयी मित्रमण्डली। हर एक मेरे द्वारा अपना उल्लू सीधा करना चाहता था: किसीको मुझसे सहायता मिलती थी, किसीका समय कटता था, किसीको मेरा संग पसंद था, सभी मित्र अपने मतलबसे आते थे। फिर मैं जवान हुई। प्रेमियोंके दल पैदा हो गये, उनके लिये प्रेमका अर्थ था इच्छापूर्ति और वासना। मुझे आजतक कोई ऐसा न मिला जो मुझसे स्वयं मेरे लिये प्यार करता हो, जिसका अपना कोई स्वार्थ न हो। कहिये, महात्मन्, क्या संसारमें प्रेमके जैसी कोई चीज नहीं है ?

राज०—बहन, प्रेम संसारमें सबसे बड़ी शक्ति है। अगर एक क्षणके लिये प्रेम अपने-आपको कार्यक्षेत्रसे हटा ले तो सब कुछ तहस-नहस हो जायगा। पर सच्चा प्रेम ढोल बजाकर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्तित्वकी घोषणा नहीं करता-फिरता। उसे देखनेके लिये अंदर-की आंखें खुलनी चाहिये। मांकी कृपा हो जाय तो तुम देख सकोगी कि यह बहता हुआ पवन, यह कल-कल करती हुई सरिताएं और गुंजन करते हुए भ्रमर ही नहीं, लावा उगलते हुए ज्वालामुखी और बगूले बवंडर भी उसी प्रेमकी सूचना देते हैं। तुम्हारे अंदर सच्ची लगन है। तुम मृगतृष्णाके पीछे भागना छोड़ दो। शांत रहकर मांका आह्वान करो, तुम्हें सच्चे प्रेमके दर्शन अवश्य होंगे।

युवती—(नमस्कार करके) अच्छा, अब, आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपनी खोजमें सफल हो सकूं। (चली जाती है, राजकुमार दरवाजेतक पहुंचाने जाते हैं। उधरसे सुखवीर आता है।)

राज०—आओ सुखवीर, मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था। क्या तुम्हें आश्चर्य हो रहा है? केवल आमने-सामने मिलनेसे ही तो परिचय नहीं होता! मैं तुम्हें कबसे जानता हूं, तुम जानो या न जानो, यह और बात है। चलो, तुमसे अकेलेमें बातें करनी हैं।

(सेनापति सुखवीर राजकुमारके साथ भेंट करके निकला तो एकदम बदला हुआ आदमी था। उसने अपना पद छोड़ दिया और एक सौम्य जीवन व्यतीत करने लगा।)

छठा दृश्य

(सुखवीरके मकानका कमरा। अब पहले जैसे ठाठ नहीं हैं, साधारण मेज कुर्सी है। सुखवीर बैठा कुछ लिख रहा है। अचानक कलम रखकर)

सुखवीर—(स्वगत) आहा! जीवन कैसा सुरभिमय हो गया है! क्या कोई कल्पना कर सकता था कि क्रूरता और शोषणमें ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस लेनेवाला सुखवीर एक दिन इतना सुखी हो सकेगा? कौन मानेगा कि राजा भैयाके साथ बीते कुछ मिनटोंने इतना बड़ा परिवर्तन कर डाला है? जुग-जुग जियो राजा भैया, तुमने मेरे आतंक-भरे जीवनमें मधुका संचार कर दिया।

(आकार दिखायी देता है।)

आकार—शाबाश! मेरे वीर।

सुखवीर—अरे फिरसे, तुम फिरसे आ गये! नहीं, नहीं, जाओ, चले जाओ, मैं हाथ जोड़ता हूं।

आकार—(ठहाका मारकर) छिः, छिः! कैसा पतन हुआ, सुखवीर! कहां सेनापति सुखवीर और कहां यह...

सुखवीर—तुम्हें जो कुछ चाहिये ले लो, पर मेरा पिंड छोड़ो, छोड़ दो मुझे।

आकार—सुखवीर, इतनी जल्दी भूल गये? उस द्रोही राजकुमार का इतना गुणगान कर रहे हो और उसे भूल गये जिसने तुम्हें धन दिया, यश दिया, महानता दी और मृत्युके मुंहसे बचाया? कृतघ्नताकी भी कोई हद होती है!

अच्छा जाओ, मैं तुम्हें माफ करता हूं। पर मेरी एक आखिरी आज्ञा है, उसका पालन करना होगा।

सुखवीर—अच्छा, कहो।

आकार—कहूं, ज्योतिके इस कीड़े राजकुमारका खातमा कर दो।

सुखवीर— (साश्चर्य) ऐं! क्या कहा? राजा भैयाको खत्म कर दूं? उस प्रेम-मूर्तिको तोड़ डालूं? उस करुणाके सागरको सुखा दूं? नहीं, नहीं, यह मुझसे न होगा! कैसे हो सकता है यह?

आकार—कैसे होगा? क्या सेनापति सुखवीरको यह भी बताना पड़ेगा? तुम्हारी कमरमें क्या सिर्फ शोभाके लिये लकड़ीकी तलवार बंधी है? हिम्मतसे काम लो, सेनापति। एक वारमें, केवल एक ही वारमें उसकी जीवन-लीला समाप्त हो जायगी। उसके बाद मैं तुम्हारी सब इच्छाएं पूरी कर दूंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखवीर—नहीं, एक निहत्थे मनुष्यपर हथियार उठानेमें कौन-सी बहादुरी है? मुझसे यह अधर्म करनेको न कहो।

आकार—लेकिन, धर्मात्मन्, तुम भूल जाते हो इस धर्म-बुद्धिने ही युद्धक्षेत्रमें राजपूतोंका सफाया कर दिया। युद्धमें तो साम, दाम, दण्ड, भेद, सभी उचित हैं। और तुम शत्रुको निहत्था कहते हो; यही है तुम्हारा ज्ञान? अरे! उसके पास तो आत्म-बलका अमोघ अस्त्र है जिसके आगे इन्द्रका वज्र भी बेकार है। उसे तुम जैसे उद्‌भ्रांत ही निहत्था...

सुखवीर—तुम किसी औरको क्यों नहीं पकड़ते? मैं कह तो चुका, यह काम मेरे बसका नहीं है।

आकार—देखो, सुखवीर, लड़कपन बहुत हो चुका! यह काम उसी-के द्वारा हो सकता है जिसे उसके हृदयमें स्थान प्राप्त हो। और लोग तो उसके नजदीक जाते-जाते ही झुलस जायंगे। मैं एक युगसे तुम्हें इस कामके लिये तैयार करता रहा हूं। अब ठीक समयपर धोखा न दो। उठो, प्यारे सुखवीर, जरा-सा तो काम है।

सुखवीर—और किसीको मारनेके लिये कहो तो मैं झट प्रस्तुत हो जाऊंगा, पर राजकुमार... (हांफता है)

आकार—मूर्ख! अब तेरा बचना असंभव है। मैं समझा-समझाकर हार गया, पर तू अड़ियल टट्टूकी तरह अपनी बातपर डटा है। तुझे उससे इतना प्रेम है तो चल, उसकी जगह अपने प्राण देनेको तैयार हो जा। शेरकी खालमें छिपे हुए चूहे! तुझे मेरा हुक्म मानना ही पड़ेगा।

(आकार अदृश्य हो जाता है।)

सुखवीर—(घबराया हुआ) हाय! मैं क्या करूं? मुझे कौन छुड़ा-येगा इस राक्षसके चंगुलसे? राजा भैयाकी जगज्जननीसे ही क्यों न कह देखूं? हे राजा भैयाकी मां! अपने बालककी रक्षा करना, कहीं मैं उसका कुछ अनिष्ट न कर बैठूं। मैंने आखिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म ही क्यों लिया? जिसने हमेशा मेरा उपकार किया, जो मेरा ही नहीं प्राणीमात्रका भला करता है, उसीपर मुझे हाथ उठाना पड़ेगा? नहीं, नहीं, ऐसा कभी न होगा! मैं उन्हें हर्गिज न मारूंगा! ... (आकार फिरसे दिखायी देता है।) (गुस्सेमें) हैं! फिर आया, कमबख्त, चला जा यहांसे, मैं तेरी एक न सुनूंगा...।

आकार—सावधान!

(सुखवीर सावधान होकर खड़ा हो जाता है, राजकुमार आते हैं। आकार अदृश्य हो जाता है। सुखवीर तलवारकी ओर देख रहा है, चेहरेपर घबराहटके निशान हैं।)

राज०—सुखवीर, अरे! यह क्या हो रहा है?

सुखवीर— (तलवार लिये आगे बढ़ता है, ठिठककर) नहीं, नहीं, यह न हो पायगा, दुष्ट राक्षस! (धमकी देकर) इस बार तेरी एक न चलने दूंगा। (तलवार फेंक देता है।)

राज०—क्या बात है, सुखवीर? ऐसे क्यों देख रहे हो?

सुखवीर—देख रहा हूं, (निर्निमेष आंखोंसे) हां, देख रहा हूं। राजा भैया, तुम्हारा काल देख रहा हूं। तुम चले जाओ यहांसे, फौरन निकल जाओ, दया करो मेरे ऊपर। भाग जाओ, मैं अपने-आपेमें नहीं हूं।

(राजकुमार आश्चर्यचकित होकर बाहर चले जाते हैं।)

सुखवीर—हाश! चलो, एक बार तो मेरी जीत हो गयी, अब राजा भैया...

(आकारका प्रवेश)

आकार—(ठहाकेके साथ) हा, हा, हा, जीत, द्रोही कहींका! याद रख, तेरी बोटी-बोटी नोच डालूंगा! तुझे तिल-तिल करके मरना पड़ेगा! मुझसे बचकर जाओगे कहां, बच्चू?

सुखवीर—मुझे माफ करो, अंधकारके स्वामी। मेरा दिमाग ठिकाने नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकार—ओ, अब अक्ल ठिकाने आ रही है। अरे ! तू, अंधकार-का वासी, ज्योति लेकर क्या करेगा ? हम अंधकारमें पले हैं, उसकी मखमली स्निग्धताने हमें पाला-पोसा है; क्या तू उसीका नाश करवाने चला है ? तू हमारा सेनानी है। अनंत वैभव, अपार कीर्ति, अनिंद्य सुन्दरियां तेरी प्रतीक्षामें हैं। बस, तेरी तलवारका एक वार, और सब तेरे हाथमें होगा। छोड़ सकेगा इन सबको ? जान-बूझकर लात मारेगा अपने सौभाग्यको ? बोल, मैं उत्तर मांग रहा हूं।

सुखवीर—स्वामिन्, आपका विरोध करनेकी शक्ति कहां है मुझ-में ? पर उन आंखोंको देखकर, उस निश्छल स्नेह-भरी दृष्टिको देखकर सब कुछ भूल जाता हूं। उन नयनोंसे प्रेमाग्निकी लपटें निकलती हैं और धू-धू करती हुई मेरे सारे विद्वेष, तुम्हारे उपदेश, मेरे निश्चयको भस्म कर डालती हैं। यह विचित्र अग्नि है, अंधकारको दूर करती है, मलिनताको भस्म करती है और हृदयको शांति देती है। उन आंखोंको नष्ट करनेके लिये कहते हो ?

आकार—अच्छा, न सही, मैं तुझे एक और तरकीब बताता हूं। (उसके कानमें कुछ कहता है।)

सुखवीर—अच्छा, कोशिश करूंगा।

सातवां दृश्य

(एक चौकमें षट्कोण वेदी। आम, अशोक, आदिके पत्तोंके तोरण लटक रहे हैं। अभी होता नहीं आये हैं। सुखवीर दबे पैरों आकर वेदीके पास रखे जलके पात्रमें विष डालना चाहता है।)

सुखवीर—(स्वगत) नहीं, नहीं, यह ठीक नहीं है। मैं क्या करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा था ! मेरी जरा-सी कमजोरीके कारण राजा भैयाको मौत-के मुंहमें जाना पड़ेगा...

(आकारका प्रवेश)

आकार—तब स्वयं मरनेके लिये तैयार हो जा। अंधकारके स्वामी ऐसी अवज्ञाको माफ न करेंगे।

सुखवीर—नहीं, नहीं, स्वामिन्, नाराज न हो, लो तुम्हारा काम किये देता हूं। (फिर पुड़िया खोलने लगता है, फिर अचानक रुककर) क्या कहा ? मुझे मार डालोगे ? अच्छा लो, मार डालो। अपनी बलि चढ़ाकर राजा भैयाके प्राण बचाऊंगा। बस, यही है मेरा निश्चय।

आकार—सुखवीर, तुम साहसी हो। मैं तुम्हारी बहादुरीका कायल हूं। लेकिन जरा सोचो तो। अपनी जान गवांकर क्या पाओगे ? ऐश्वर्य, धन, वैभव सब कुछ छोड़कर उस अंधकारके वैरीके प्राण बचाओगे, जो हमारी जातिकी जड़ें खोखली कर रहा है ? तुम उसे महान् समझते हो, हा, हा, महान् ! आज-से पचास वर्ष बाद किसीको उसका नाम भी याद नहीं रहेगा, जब कि तुमको मैं इतना महान् बना सकता हूं कि हजारों वर्षों-तक लोग तुम्हें याद रखेंगे। सुखवीर, तुम्हारा नाम इति-हासके पन्नोंपर सुनहरे अक्षरोंमें लिखा रहेगा। सुखवीर, एक निकम्मे आदमीके लिये अपने भविष्यको लात न मारो।

(सुखवीर झपटकर विष डाल देता है और भागता है। कुछ क्षण शांति रहती है। घंटा-शंख बजने लगते हैं। सुरेश और शेखरका प्रवेश।)

सुरेश—सुना है, राजा भैया आज सामूहिक रूपसे मां भगवतीका आह्वान करनेवाले हैं।

शेखर—अरे ! तुम नहीं जानते ? यहां उसीकी तैयारियां हो रही हैं। चलो, हम भी बैठ जायं। शायद हमपर भी कृपा-दृष्टि हो जाय।

(राजकुमारका राजेशके साथ प्रवेश)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज०—मांने वचन दिया है, यदि हम सच्चे दिलसे उनका आह्वान करेंगे तो वे अवश्य दर्शन देंगी। मैं मंत्रोंसे उनका आह्वान करूंगा। आप लोग नीरव होकर उनके स्वागतकी तैयारी करें।

(फिर यह मंत्र तालबद्ध रूपमें पहले धीरे-धीरे और फिर और भी जोरसे उच्चारित करते हैं—)

ओ३म् आनन्दमयि, चैतन्यमयि, सत्यमयि परमे...

(तीन बार) (फिर रुककर)

मातः दुर्गे! कालीरूपिणी, नृमुण्डमालिनी, दिगम्बरि, कृपाण-पाणि देवि, असुरविनाशिनी! अपने क्रूर निनादसे हमारे अंदर-के शत्रुओंका विनाश करो। हमारे अंदर एक भी रिपु न रह जाय। हम विमल और निर्मल हो जायं। बस, यही प्रार्थना है, मातः, प्रकट होओ।

मातः दुर्गे! हमें महत् बनाओ, महत्प्रयासी बनाओ, उदारचेता बनाओ। हम अल्पाशी, निश्चेष्ट, आलसी और भयभीत न बने रहें।

वीरमार्गप्रदर्शिनी! आओ, अब तुम्हारा विसर्जन नहीं करेंगे! हमारा सारा जीवन दुर्गापूजा हो, यही प्रार्थना है, मातः! आविर्भूत होओ। मां, प्रकट होओ।

(राजकुमार आचमनके लिये जल लेते हैं, सुखवीर दौड़ा हुआ आता है। "खबरदार! राजा भैया मत पीना उसको!" कहता हुआ जलके पात्रको गिरा देता है। सब लोग खड़े हो जाते हैं।)

राज०—यह क्या किया सुखवीर, मुझे आचमन तो कर लेने देते।

सुखवीर—और आपको मरने देता... मैंने जहर (आकार आता हुआ दिखायी देता है।)

बचाइये, बचाइये, राजा भैया, फिरसे आया वह, वह आपको मरवा कर छोड़ेगा। इस अंधकारके स्वामीसे मेरा पीछा छुड़ाइये, सहायता कीजिये, देखिये... आया फिरसे! (गिर जाता है)

राज० — सुखवीर, तुम्हारी सब कठिनाइयोंको जानता हूं। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसीकी क्या मदद कर सकता हूं ? मांसे (देवीका आविर्भाव) ...वह देखो, मां स्वयं ही तुम्हें बचानेके लिये प्रकट हो गयी हैं। अब तुम्हें किसका डर है ?

(सब लोग झुक जाते हैं)

(आकार देवीको देखते ही भागना चाहता है पर भाग नहीं पाता, वहीं बंधा-सा रह जाता है। देवी उसकी ओर देखती रहती हैं। वह धीरे-धीरे झुकने लगता है। उसका काला आवरण झड़ जाता है और अंदरसे एक ज्योतिर्मय स्वरूप निकल आता है और देवीके प्रति पूर्ण रूपसे समर्पण कर देता है। राजकुमार देवीकी ओर बढ़ता है, सुखवीर उसके पीछे-पीछे है।)

राजकुमार तथा सुखवीर—असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः!

देवी—तथाऽस्तु।

(सब मिलकर)

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥

॥ इति शिवम् ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महालक्ष्मीका अवतरण

कवि — "तर्कसे तर्कोंका रण छिड़ा, विचारोंसे लड़ रहे विचार,
ज्ञानके कोलाहलके बीच डूबता जाता है संसार।
और सबका उलटा परिणाम, बुद्धिका जितना बढ़ता जोर,
आदमीके भीतरकी शिरा, हुई जाती कुछ और कठोर।
ज्ञानके मरुमें चलता हुआ आदमी खोता जाता है,
हृदयके सरका शीतल वारि और कम होता जाता है।
बुद्धि तृष्णाकी दासी हुई, मृत्युका सेवक है विज्ञान,
चेतता तब भी नहीं मनुष्य, विश्वका क्या होगा, भगवान् ?"[1]

(सिर पकड़कर बैठ जाता है। नेताका प्रवेश)

नेता — कवि, तुम्हें क्या हो गया है? आज सारे संसारमें कोलाहल मचा हुआ है। दुनिया उथल-पुथल हो रही है, हम जितना भी ठीक करनेका प्रयास करते हैं, स्थिति उतनी ही बिगड़ती जाती है। तुम भी यूं निराश होकर बैठ जाओगे तो हमें मार्ग कौन दिखायेगा? कवि सत्यको देख सकता है, वह क्रांतदर्शी है। वह हमारे तुच्छ अहंसे ऊपर उठकर भविष्यका संदेसा ला सकता है। उठो, मेरे कवि, विश्व तुम्हारी वाणीकी प्रतीक्षा कर रहा है।

कवि — भाई, क्या कहूं, कुछ नहीं सूझता। बहुत कोशिश कर चुका, पर मेरी दृष्टि इस अंधकारको नहीं चीर पाती। कभी घरके झंझट दिखायी देते हैं, कभी देशके झगड़ेपर नजर अटक जाती है। समाजमें, राजनीतिमें, शिक्षामें, सभी जगह अनाचार और भ्रष्टाचार फैला है। सबपर तमस्का राज्य है, इसके परे देख सकना असंभव है।

---

[1] दिनकरजीके 'हिमालय संदेश' से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक — नहीं, कवि, ऐसा न कहो। तुम भूलते हो, इस क्षणिक अवसादने तुम्हें अंधा कर दिया है। तुमने ही तो कहा था कि आसुरी शक्तियां अभी प्रबल हैं, चढ़ाई बहुत ऊंची है, पांव एक-एक मनके हो रहे हैं, परंतु फिर भी सत्यकी विजय होगी, और अवश्य होगी। वह दिन आ रहा है जब विश्वमें सामंजस्य होगा, एकता होगी और भगवान्का राज्य होगा।

नेता — हनुमान अपनी शक्ति भूल गये थे, तो उन्हें जाम्बवन्तकी जरूरत पड़ी। हमारे कविकी खिन्नता दूर करनेके लिये तुम जैसे अध्यापककी जरूरत है।

कवि — हां, कही थीं, मैंने ही ये बातें कही थीं। जब नजर अंदर चली जाती है, तब सब जगह प्रकाश-ही-प्रकाश दीखता है, ऐसा लगता है मानों आजकी भयंकर स्थिति, मनुष्यका यह कुत्सित रूप एक दुःस्वप्न मात्र है। परंतु अपने-आपमें आते ही यह अंधेरा ही ठोस रूप धारण कर लेता है। यहांसे निकलनेका कोई मार्ग नहीं दीखता।

(नाचते हुए एक लड़कीका प्रवेश)

(नेपथ्यसे)

"दाह भूका हरो, पन्थ शीतल करो,
विश्वका सर भरो वारिकी धारसे,
ओसका जाल दो, चांदनी डाल दो,
आदमीका हृदय सींच दो प्यारसे।
शांतिके हंसको, धर्म अवतंसको,
अंकमें लो, इसे प्रेम दो, मान दो;
हो जहां भी जहर, क्षीरकी दो लहर,
बाणकी नोंकपर फूलको तान दो।"[1]

लड़की — आहा, सारे संसारमें सौदर्य भरा है। एक-एक फूल-पत्ते

---

[1]दिनकरजीके 'हिमालयका संदेश' से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कितना सौंदर्य है ! जंगलका चप्पा-चप्पा सुन्दर हो उठा है। यह किसके आनेकी तैयारी है ? वीणाके ये मधुर राग, चारों ओर छाया हुआ सौंदर्य और यह शीतल मंद पवन किसके आनेकी सूचना दे रहे हैं ? मां कहती हैं संसार एक जंजाल है, पिताजी कहते हैं दुनियामें लड़ाइयां-ही-लड़ाइयां होती रहती हैं। वे इस सौंदर्यको क्या नहीं देख सकते ? इस संगीत-लहरीको क्या नहीं सुन पाते ? क्या मनुष्यकी दुनिया भी ऐसी ही सुन्दर नहीं बन सकती ?

(लड़की चली जाती है)

अध्यापक — देखा, कवि, हम जिस सौंदर्य और सामंजस्यको पानेके लिये एड़ी-चोटीका जोर लगा देते हैं, उसे यह अबोध बालिका सहजमें ही पा लेती है। काश, हम भी इसी भांति बालक बनकर इस सौंदर्यका आनंद ले पाते !

आवाज — यह महालक्ष्मीकी शक्ति है। वह भगवान्‌की मधुरता-का एक जादू फैला देती हैं, उनके पास आते ही आदमी गहरे आनंदका अनुभव करता है, उन्हें अपने हृदयमें अनुभव करने-का अर्थ है अपने जीवनको एक सागर बना देना। सूर्यसे जैसे प्रकाश फैलता है, वैसे ही महालक्ष्मीसे श्री, शोभा और मृदुता चारों ओर फैल जाती है। उनकी दृष्टि मनुष्यको हमेशाके लिये अपना लेती है और उसे आनंद-विभोर कर देती है। जहां उनके चरण पड़ जाते हैं, वहींसे आनंदके सोते फूट निकलते हैं।

लड़की — आहा ! आओ, मां आओ, तो यह सारा सौंदर्य तुम्हारा ही है ? मानव जीवनको भी अपने सौंदर्य और प्रेमका एक कण दे सकोगी ?

(महालक्ष्मी लड़कीके साथ मिलकर सौंदर्य, सामंजस्य और एकता-का नृत्य करती हैं। दूर खड़े हुए कवि, नेता आदि भी नजदीक आकर नतमस्तक हो जाते हैं, साधारण जनताके प्रतिनिधि भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जाते हैं। महालक्ष्मी उन्हें भी आशीर्वाद देती हैं। सभी एक साथ बोल उठते हैं:)

"विचरण करती ज्योति तुम्हारी कमल-कुंज-काननमें;
खोजूं उज्ज्वल पीठ जननि! बाहर मैं कहां भुवनमें?
नतमस्तकपर अरुण उषा-भूषित पद-पद्म धरो हे!
उतरो, विकसित हृदय-कमलके आसनपर उतरो हे!
तुम्हें मलिनता नहीं सुहाती, तो मालिन्य तजूंगा;
सतत पूर्णविधि निष्कलंक होकर मां! तुम्हें भजूंगा।

तुम आनंद असीम, भक्ति तुम,
सुन्दरताकी महाशक्ति तुम,
जन-मनमें निज विभा दिव्य, स्वर्णिम आलोक भरो हे!
करुणामयी! उदार! निरंतर मुझमें वास करो हे!

अप्रिय शुष्क हृदय, नीरस मन,
प्रिय हैं तुम्हें प्रेमके बन्धन,
नव माधुर्य-मंत्रसे प्राणोंमें झंकार भरो हे!
अपने महाप्रेमका मुझको सिन्धु अपार करो हे!"[1]

---

[1]दिनकरजी द्वारा किया गया श्रीअरविंदकी एक कविताका अनुवाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है। तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहु-मूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

सहारनपुर सर्विस स्टेशन
पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड
सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70

REGD. No. M. 8731

सोसायटी समाचार

सोसायटी बीच आफिसमें २४ मईसे ३ जूनतक डा. महेश्वरीके निदेशनमें एक शिक्षा-शिविर हुआ। इसमें माताजी और श्रीअरविंद के शिक्षा-संबन्धी लेखोंका अध्ययन किया गया। शंका-समाधान आश्रमके अध्यापकोंसे इस विषयमें वार्तालाप, आश्रमकी विभागों कार्य-पद्धतिका अध्ययन आदि के लिये भी अवसर दिया गया। यह शिविर हर वर्ष मई-जूनमें हुआ करता है।

कर्णाटकके 'फ्रेंड्ज आफ ओरोवील ग्रुप'ने २ मईसे श्रीअरविंदके 'लाइफ डिवाइन'के साप्ताहिक अध्ययनकी व्यवस्था की है। वे एक त्रैमसिक पत्रिका 'ऐस्पिरेशन' भी प्रकाशित करते हैं।

श्री गोपाल भट्टाचार्य दारजीलिंग, कालिस्पोंग, गंगटोक, डिगबाई डिब्रूगढ़, गोहाटी और शिलोंगमें माताजी और श्रीअरविंदकी शिक्षा के बारेमें प्रवचन देने गये थे। दारजीलिंगमें वह 'सेंट पॉल स्कूल' में भी गये थे जहां श्रीअरविंदने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पायी थी। इसी समय गोहाटी और शिलोंगमें असम और मेघालयकी श्रीअरविंद सोसायटीकी प्रादेशिक समितियोंका काम शुरू हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

सितंबर १९७९ वर्ष १०, अंक २, पूर्णांक ११०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

श्रीअरविंदवाणी :

योगका जाल १

योगका विकसनशील उद्देश्य २

आध्यात्मिक जीवनमें त्याग ३

मनुष्य ६

'श्रीमातृवाणी'से :

सामान्य जीवन ७

विश्व लीला ११

श्रीअरविंद ('श्वेतकमल'से) १५

माताजी -- फिरसे पांडिचेरीमें ('श्वेतकमल'से) २

माताजीने कहा ('श्वेतकमल'से) २

आश्रममें कार्य माताजी ३

सोसायटी समाचार आ० १

'अग्निशिखा' अपने दस वर्ष पूरे करके ग्यारहवें वर्षमें पग रख चुकी है। इसने प्रयास यही किया है कि जहांतक बन पड़े सरल भाषामें माताजी और श्रीअरविंदके संदेशको अपने पाठकोंतक पहुंचाये।

इस अवसरपर हम आपके अधिकाधिक सहयोगको निमंत्रित करते हैं।

—संपादक

पुरोधा वार्षिक ८.०० आजीवन १७५.००

अग्निशिखा वार्षिक ६.०० आजीवन १२५.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट, आदि, भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगका जाल

अपनी सत्ताके सभी मार्गोंद्वारा उसके साथ एक होना जो उच्चतम है—यही योग है।

अपनी सत्ताके सभी मार्गोंद्वारा उसके साथ एक होना जो सर्व है—यही योग है।

अपनी भावना और अपनी समझ और अपने हृदय तथा अपने सभी अंगोंके द्वारा मानवतामें स्थित भगवान्के साथ एक होना—यही योग है।

समस्त प्रकृति और सभी सत्ताओंके साथ एक होना—यही योग है।

इस सबका मतलब है भगवान्के साथ उनकी परात्पर और उनकी वैश्व अवस्थामें और उनके द्वारा अपनी सत्तामें निर्मित सबके साथ एक होना। क्योंकि सब कुछ उन्हींसे है और सब कुछ उनके अंदर है। वे सब कुछ हैं और सबमें हैं; और चूंकि वे तुम्हारी उच्चतम आत्मा हैं और तुम अपनी आत्मामें उनके साथ एक हो, उनका एक अंश तुम्हारी अंतरात्मामें तुम्हारी प्रकृतिके साथ खेलने लगा है; और चूंकि यह जगत् उनकी सत्तामें एक ऐसा दृश्य है जिसमें वे तुम्हारे गुप्त प्रभु, प्रेमी और मित्र हैं और तुम जो कुछ हो उसके स्वामी और पोषक हैं, इसलिये उनके साथ ऐक्य ही तुम्हारी सत्ताका पूर्ण मार्ग है।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगका विकसनशील उद्देश्य

धरतीपर मनुष्य जड़-द्रव्यके जगत्में उलझी हुई प्रगाढ़ताकी स्थिति-में मानवताका अभिनय करनेवाले भगवान् हैं जिनका परोक्ष विचार यह है कि जड़-पदार्थपर आत्माका विधान और मानव प्रकृतिपर दिव्य प्रकृतिको आरोपित करना। क्रम-विकास मानव चेतनाकी घनतामें आत्माके उत्तरोत्तर उन्मीलनके सिवाय, भगवान्की पाशविक सत्ता-से आत्माभिव्यक्तिके सिवाय कुछ नहीं है।

भगवान्ने आत्माभिव्यक्तिकी प्रक्रियामें जिस परम तपःशक्तिके द्वारा सृष्टि रची थी, जिसके द्वारा उसका पालन-पोषण कर रहे हैं और जिसके द्वारा विनाश होगा, उसी प्रक्रियाका विनियोग है। वह हमेशा हमारी बेड़ियोंमें पड़ी पाशविक मानवताकी सीमित क्रियाके स्थानपर अनंत दिव्य शक्तिकी सीधी क्रियाको ले आता है। वह दिव्यताको उठानेके लिये दिव्य उपायोंका उपयोग करता है।

समस्त योग तपस्या है और समस्त योग-सिद्धि तादात्म्यके द्वारा या भागवत सत्ताके साथ संबन्धके द्वारा परम देवकी, उनके तत्वोंमें या उनके व्यक्तित्वमें या दोनोंमें, या एक ही साथ तादात्म्य और संबन्धके द्वारा उपलब्धि है।

तादात्म्य अद्वैतका सिद्धांत है और संबन्ध द्वैतका, एक सापेक्ष तादात्म्यमें संबन्ध विशिष्टाद्वैतका। भगवान्के साथ सारभूत अनु-भूतिमें तादात्म्य और अभिव्यक्तिकी अनुभूतिमें उनके साथ भेदके संबन्धसे समग्र संपूर्णता आती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक जीवनमें त्याग

तुम जिस प्रकृतिकी बात कर रहे हो — आध्यात्मिक जीवनके लिये परिवार और सामाजिक जीवनको त्यागनेकी प्रवृत्ति — भारतवर्षमें पिछले हजार वर्षोंसे, बल्कि इससे भी ज्यादासे, परंपरा रूपमें चली आयी है। और यह विशेष रूपसे पुरुषोंमें है। इसने स्त्रियों-की बहुत ही कम संख्याको छुआ है। यह याद रखना चाहिये कि भारतके सामाजिक जीवनने व्यक्तिको लगभग पूरी तरह परिवारके आधीन कर दिया है। स्त्री-पुरुष अपनी स्वतंत्र इच्छाके अनुसार ब्याह नहीं करते। उनके ब्याह प्रायः, एकदम बचपनमें ही निश्चित कर दिये जाते हैं। यही नहीं, समाजका सांचा बहुत जमानेसे लग-भग लौह दृढ़ताके साथ हर व्यक्तिका स्थान निश्चित करता आया है और हर एकसे यही आशा की गयी है कि वह उसके अनुसार चलेगा। तुम समस्याओं और उनके साहसपूर्ण समाधानकी बात करते हो, लेकिन इस जीवनमें कोई समस्या ही नहीं है और समाधान-की जरूरत ही नहीं है — साहसपूर्ण समाधान वहीं संभव होगा जहां व्यक्तिगत इच्छा-शक्तिको स्वाधीनता प्राप्त हो, लेकिन जहां एकमात्र समाधान (यदि तुम इस जीवनमें रहना चाहो) है परिवारकी इच्छा-के आगे झुकना, वहां इस प्रकारकी कोई चीज नहीं हो सकती। यह सुरक्षित जीवन होता है और सुखी भी हो सकता है यदि व्यक्ति अपने-आपको उसके अनुकूल बना सके, उसके अंदर असाधारण अभीप्साएं न हों और अपने परिवेशके बारेमें भी भाग्यशाली हो। लेकिन इसके पास असंगतियों या किसी प्रकारकी व्यक्तिगत कुंठाका कोई इलाज या बचनेका उपाय नहीं है। इसमें किसी पहलशक्ति, किसी स्वच्छन्द गतिविधि या व्यक्तित्वके लिये कोई गुंजाइश नहीं रहती। व्यक्तिके लिये बाहर निकलनेका बस, एक ही रास्ता होता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह है अपने अंदर आध्यात्मिक जीवन या धार्मिक जीवनमें प्रवेश। इसके लिये किसी प्रकारके संन्यासद्वारा संसारका, पारिवारिक जीवनका परित्याग ही मान्यता-प्राप्त छुटकारा है। संन्यासी या वैष्णव वैरागी या ब्रह्मचारी स्वतंत्र हैं। वे कुटुंबके लिये मृतके समान हैं और वे अपनी आंतरिक आत्माके आदेशके अनुसार रह सकते हैं। लेकिन अगर वे किसी संप्रदाय या आश्रममें प्रवेश करें तो उन्हें संप्रदायके नियमोंका पालन करना पड़ता है। यह उनका अपना चुनाव होता है। समाजने अपने-आपसे छुटकारा पानेके लिये इस मार्गको मान्यता दी, धर्मने सामाजिक या सांसारिक जीवनके प्रति अरुचिको, संन्यास या धार्मिक घुमक्कड़पनको अपनानेके लिये उचित कारण माना। लेकिन यह प्रधानतया पुरुषोंके लिये ही था। प्राचीन कालमें बौद्ध नारियोंके लिये अपने संघ होते थे। बादमें वैष्णवोंमें भी कुछ ऐसी ही व्यवस्था थी, इन्हें छोड़कर स्त्रियोंके लिये कहीं छुटकारेका रास्ता न था जबतक कि इतनी प्रबल आध्यात्मिक प्रेरणा न हो जो किसी प्रकारकी अस्वीकृतिको न माने। रही बात संन्यासीके छोड़े हुए बाल-बच्चों और पत्नीकी, उनके लिये कोई कठिनाई नहीं थी, क्योंकि संयुक्त परिवार उनके भरण-पोषणकी जिम्मेदारी ले लेता था, लिये रहता था।

वर्तमान अवस्थामें हुआ यह है कि पुराना चौखटा तो बना है लेकिन आधुनिक विचारोंने एक असंगति या बेचैनी ला दी है। पुरानी पारिवारिक प्रथा टूट रही है और अधिकाधिक संख्यामें स्त्रियां भी छुटकारेकी वही स्वाधीनता पानेकी कोशिश कर रही हैं जो पुरुषोंको भूतकालमें हमेशा प्राप्त रही है। यह बात उन उदाहरणोंकी व्याख्या करती है जो तुमने देखे हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि अभीतक इनकी संख्या बहुत अधिक है। यह एक नयी चीज है। आश्रममें स्त्रियोंका प्रवेश अपने-आपमें एक नयी चीज है। अपने चारों ओरके वातावरणसे मेल न खानेवाली मानसिक और प्राणिक वृद्धिका अत्यधिक दुःख, जबरदस्ती करवायी बेमेल शादियां, जिनमें पति-पत्नीके बीच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई समानता नहीं, एक ऐसा वातावरण जो व्यक्तिके आंतरिक जीवनका विरोधी और असहिष्णु हो और दूसरी ओर है भारतीय मानसकी सहज-स्वाभाविक वृत्ति जो धार्मिक या आध्यात्मिक छुटकारेकी शरण लेती है। यह नयी स्थितिको भली-भांति स्पष्ट कर देती है। अगर समाज इससे बचना चाहता है तो उसे अपने-आपको बदलना होगा। रही बात व्यक्तियोंकी, तो हर मामलेको उसके अपने गुणोंके अनुसार देखना होगा। समस्यामें बहुत ज्यादा जटिलता है, स्वभाव, स्थिति, हेतु आदिमें इतने अंतर होते हैं कि कोई सामान्य नियम नहीं बनाया जा सकता।

मैंने सामाजिक समस्याओंके बारेमें सामान्य तौरपर ही कहा है। आश्रम-संचालनमें हमारे पास बहुत-से प्रार्थना-पत्र आये हैं जो स्पष्ट रूपसे इसीलिये लिखे गये थे कि व्यक्ति जीवनकी कठिनाइयों और जिम्मेदारियोंसे बचना चाहते थे। स्वभावतः हमने इन्हें अस्वीकार किया या इनकी अवहेलना की। ये पत्र प्रायः पुरुषोंकी ओरसे ही हुआ करते थे। अभी हालमें दो-एक उदाहरण स्त्रियोंके भी आये हैं। अन्यथा स्त्रियोंने दुःखद विवाह या कष्टकर वातावरणके आधारपर यहां आनेके लिये प्रार्थना नहीं की। अधिकतर साधिकाएं अपने पतियोंके साथ इस आधारपर आयी हैं कि उन्होंने पहले ही योग-साधना शुरू कर दी थी। कुछ हैं जो काफी हदतक विवाहित जीवनकी जिम्मेदारियां पूरी करके आयी हैं। दो-तीन उदाहरणोंमें पतिसे विच्छेद हुआ था, परंतु यह यहां आनेसे पहलेकी बात है। कुछ उदाहरणोंमें बच्चे थे ही नहीं और कुछमें उन्हें परिवारके साथ छोड़ा गया है। कुछ साधक अपने बाल-बच्चोंको पीछे छोड़ आये हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि इनमेंसे कोई उदाहरण ऐसा है जिसमें घर छोड़नेका हेतु जीवनकी कठिनाइयां रही हों। बल्कि विचार यही था कि उन्हें पुकार सुनायी दी है और उसका अनुसरण करनेके लिये और सब छोड़ देना होगा।

(सेंटीनरी वोल्यूम २३, पृ० ८७०–८७२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य

शास्त्र मनुष्य, एकमेव भगवान् और वैश्व सत्ता, तीनोंके लिये एक ही शब्द 'पुरुष'का उपयोग करते हैं, मानों वे मानवता और भगवान्के ऐक्यपर जोर दे रहे हों। नर और नारायणकी शाश्वत जोड़ी है जो दो होते हुए एक हैं, शाश्वत रूपसे भिन्न और शाश्वत रूपसे एक ही हैं। विद्वान कहते हैं कि नारायण वह हैं जो जलोंमें निवास करते हैं, लेकिन मेरा ख्याल है कि इसका अर्थ है, वह जो समस्त मानवजातिका सार-तत्त्व और योग-फल है। जहां कहीं कोई मनुष्य है वहीं नारायण भी हैं, क्योंकि दोनोंको अलग नहीं किया जा सकता। मैं कभी-कभी सोचता हूं कि जब ईसाने अपने-आपको मनुष्य-पुत्र कहा था, तो उनका असली मतलब था 'पुरुष'का पुत्र। और मैं अपने-आपको यह कल्पना करते हुए पाता हूं कि 'ऐंथ्रोपोस' किसी सीरियाई शब्दका शब्दश: और भद्दा अनुवाद होगा, ऐसे शब्दका जो हमारे 'पुरुष'के समान है।

वह चाहे जो हो, इसमें कोई संदेह नहीं कि मनुष्य दिव्य संभावनाओंसे भरा है। वह भौतिक क्रम-विकासमें एक स्तरमात्र नहीं है, बल्कि स्वयं आध्यात्मिक विकासका क्षेत्र है जो उसके साथ शुरू हुआ और उसीमें समाप्त होगा। मनुष्यकी रचना होनेपर ही देव-गण संतुष्ट हुए थे, जिन्होंने सभी पशु-रूपोंको अस्वीकार कर दिया था वे मानव-रूपको देखकर चिल्लाये थे, "सुकृतमेव।" मनुष्य सचमुच अच्छी तरह और अद्भुत रूपसे बना है, अब उच्चतर विकास शुरू हो सकता है। वह भगवान्की तरह अन्य सभी रूपों और प्राणियोंका, पशुसे लेकर देवोंतकका योगफल है। वह अनन्त रूपोंमें परिवर्तनशील है जब कि वे निश्चित हैं। वह गतिशील है जब कि वे, उनमें उच्चतम भी निश्चल, गतिहीन हैं। यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने वर्तमान और अपनी उपलब्धियोंके कारण वह देवदूतोंसे कुछ नीचा है, परन्तु संभाव्यता और अपनी पराकाष्ठाकी दृष्टिसे, देवोंसे भी बहुत ऊंचा है। दूसरी निश्चित जातियां — पशु, देव, दानव, दैत्य, अर्द्ध-देव — अपने स्तरसे ऊंचे विकासमें उठ सकते हैं, लेकिन उन्हें संक्रमणको पूरा करनेके लिये मानव-शरीर और पार्थिव जन्मका उपयोग करना होगा।

'श्रीमातृवाणी'से :

सामान्य जीवन

[साधारण जीवन इच्छाओं-लालसाओंका चक्कर; इससे मुक्त होनेका तरीका — अन्तरात्माके साथ सम्बन्ध और भगवान्‌के प्रति समर्पण; 'अहं'का चैत्य व्यक्तित्वके साथ एक होना अनिवार्य।]

सामान्य जीवन बहुत-सी इच्छाओं और लालसाओंका चक्कर है। जबतक आदमी इनमें फंसा रहे तबतक कोई स्थायी प्रगति नहीं हो सकती। इस चक्करमेंसे निकलनेका रास्ता खोजना चाहिये। उदाहरणके लिये साधारण जीवनकी सबसे बड़ी तल्लीनताको लो — लोग सदा यही सोचते रहते हैं कि वे क्या खायेंगे और कब खायेंगे और वे काफी खा रहे हैं या नहीं। भोजनके लोभको जीतनेके लिये, सत्तामें ऐसी समताका विकास होना चाहिये कि तुम भोजनकी ओरसे बिलकुल उदासीन रह सको। अगर तुम्हें भोजन मिले तो तुम खा लो, न मिले तो तुम परेशान न हो, तुम उसके बारेमें जरा भी चिन्तित न हो; और सबसे बड़ी बात यह कि तुम हमेशा भोजनके बारेमें ही सोचते न रहो। और नकारात्मक सोचना भी न हो। संन्यासियोंकी तरह परहेजकी बातें सोचना, उसकी तरकीबें ढूंढते रहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी उसी तरह भोजनमें फंसे रहना है जैसे लोभके साथ भोजनके सपने लेना। उसकी ओरसे उदासीनताकी वृत्ति रखो — यही मुख्य बात है। भोजनके विचारको अपनी चेतनासे निकाल दो, उसे जरा भी महत्त्व न दो।

तुम एक बार अपनी चैत्य सत्ता, अपनी गहराइयोंमें स्थित सच्ची अन्तरात्माके साथ संपर्क कर लो तो यह बहुत आसान होगा। तब तुम एकदम अनुभव करोगे कि ये चीजें कितनी महत्त्वहीन हैं, कि एकमात्र वस्तु जिसका महत्त्व है, वह है भगवान्। चैत्यमें रहनेका अर्थ है सब प्रकारके लोभ-लालसासे ऊपर उठ जाना। तुम्हारे अन्दर कोई ललक, कोई चिन्ता, कोई उत्तेजना-भरी लालसा न होगी और तुम यह अनुभव करोगे कि जो होता है अच्छे-से-अच्छेके लिये होता है। मुझे गलत मत समझो, इसका यह अर्थ न लगाओ कि तुम्हें यह मान लेना चाहिये कि हर चीज अच्छे-से-अच्छेके लिये ही है। जबतक तुम सामान्य चेतनामें हो तबतक हर चीज अच्छे-से-अच्छेके लिये नहीं होती। जब तुम चेतनाकी सच्ची अवस्थामें नहीं होते तब तुम्हें एकदम गलत रास्तोंपर भटकाया जा सकता है। लेकिन एक बार तुम चैत्यमें सन्तुलित हो जाओ और भगवान्के प्रति आत्मसमर्पण कर दो तो फिर जो कुछ होगा अच्छ-से-अच्छेके लिये होगा, तब हर चीज, चाहे वह किसी भी रूपमें क्यों न हो, निश्चित रूपसे भगवान्का उत्तर होगी।

वास्तवमें, सच्चे आत्मसमर्पणकी क्रिया अपने-आपमें अपना प्रत्यक्ष पुरस्कार है। वह अपने साथ ऐसा आनन्द, ऐसा विश्वास, ऐसा संरक्षण लाता है जो और किसी चीजसे नहीं मिल सकता। लेकिन जबतक आत्मसमर्पण पूरी तरहसे चैत्य न हो तबतक गड़बड़ी होती रहेगी, प्रकाशमान क्षणोंके बीच अंधकारमय क्षण आते रहेंगे। केवल चैत्य ही सीधी प्रगति करता जाता है, उसकी गति लगातार चढ़ाईकी होती है और सभी गतियां टूटी और अनिश्चित रहती हैं। और तुम तबतक सच्चे व्यक्ति भी नहीं बन सकते जब-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक कि तुम चैत्यको ही अपना 'स्व' न अनुभव करो, क्योंकि सचमुच वही तुम्हारे अन्दर सच्चा रूप है। जबतक तुम अपने सच्चे रूपको न जान लो तबतक तुम एक सत्ता नहीं, एक सार्वजनिक स्थान हो। तुम्हारे अन्दर बहुत सारी आपसमें टकराती हुई शक्तियां काम करती हैं। इसलिये अगर तुम सच्ची प्रगति करना चाहो तो अपनी निजी सत्ताको जानो जिसका हमेशा भगवान्‌के साथ ऐक्य रहता है और तभी रूपान्तर संभव होगा। तुम्हारी प्रकृतिके बाकी सभी भाग अज्ञानी होते हैं; उदाहरणके लिये, मन हमेशा यह सोचनेकी भूल करता है कि हर चमकीला विचार ज्योतिर्मय विचार है। वह एक-से उत्साहके साथ भगवान्‌के पक्ष और विपक्षमें युक्तियां दे सकता है, उसके अन्दर सत्यकी भ्रमातीत भावना नहीं होती। प्राण, साधारणतः, किसी भी शक्ति-प्रदर्शनसे प्रभावित हो जाता है और उसमें भगवान्‌के दर्शन करनेके लिये तैयार रहता है, केवल चैत्यमें ही सच्चा विवेक होता है। वह प्रत्यक्ष रूपसे परम सत्ताके बारेमें सचेतन होता है, वह बिना किसी भ्रमके भगवान् और उनसे इतरमें फर्क कर सकता है। अगर क्षण-भरके लिये भी तुम्हारा उसके साथ संपर्क हो चुका है तो तुम्हें भगवान्‌के बारेमें ऐसा दृढ़ विश्वास होगा जिसे कोई नहीं हिला सकता।

तुम पूछोगे कि हम अपनी सच्ची सत्ताको कैसे जानें। उसके लिये मांग करो, उसके लिये अभीप्सा करो। उसके लिये ऐसी चाह करो जैसी और किसी चीजके लिये न हो। यहां तुममेंसे अधिकतर लोग उससे प्रभावित हैं, लेकिन यह प्रभावसे कुछ अधिक होना चाहिये। तुम्हें उसके साथ एकताका अनुभव करना चाहिये। पूर्णताकी प्यास वहींसे आती है, लेकिन तुम उसके स्रोतसे अपरिचित हो, तुम उसे ज्ञानपूर्वक सहयोग नहीं दे रहे, तुम प्रकाशके साथ एक नहीं हो। यह न समझो कि जब मैं चैत्यकी बात करती हूं तो मेरा मतलब भावनामय भागसे है। भावना उच्चतर प्राणकी चीज है, चैत्यकी नहीं। चैत्य तुम्हारे अन्दर जलनेवाली निष्कम्प ज्वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो हमेशा भगवान्‌की ओर उठती है, उसमें शक्तिका भाव होता है जो सारे विरोधको तोड़ देता है। जब तुम उसके साथ एक होते हो तो तुम्हें भागवत सत्यकी अनुभूति होती है और तुम यह अनुभव किये बिना नहीं रह सकते कि सारी दुनिया अज्ञानमें सिरके बल चल रही है और उसके पैर हवामें हैं!

तुम जिसे अपना व्यक्तिगत 'अहं' मानते हो उसे अपने चैत्य व्यक्तित्वके साथ एक करना सीखना होगा। तुम्हारा वर्तमान व्यक्तित्व बहुत ज्यादा मिश्रित है, परिवर्तनोंकी एक श्रृंखला है जिसमें बहावके होते हुए भी एक निरन्तरता, एक अभिन्नता और स्पन्दनोंका तादात्म्य है। वह एक नदी जैसा है जो कभी वह-की-वही नहीं रहती, फिर भी उसमें एक निश्चितता और अपना स्थायित्व होता है। तुम्हारा सामान्य व्यक्तित्व, तुम्हारे सच्चे व्यक्तित्वकी छाया-मात्र होता है। तुम उस सच्चे व्यक्तिका अनुभव तभी कर सकते हो जब तुम्हारा सामान्य व्यक्तित्व जो अलग-अलग समय अलग-अलग स्थानोंमें मंडराता है — कभी मनमें तो कभी प्राणमें और कभी शरीरमें —, चैत्य पुरुषके साथ संपर्कमें आ सके और यह अनुभव करे कि वही वास्तविक सत्ता है। तब तुम 'एक' बन सकोगे, कोई चीज तुम्हें हिला न सकेगी, बाधा न दे सकेगी, तुम स्थिर और स्थायी प्रगति कर सकोगे और भोजनके लिये लोभ, आदि, छोटी-सी चीजोंसे ऊपर उठ जाओगे।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व लीला

[विश्व संकल्पकी अभिव्यक्तिमें वैयक्तिक संकल्पका स्थान; मन जगत्को छोटे-छोटे टुकड़ोंमें बांट लेता है; पृथकत्वका भान विश्व-लीलाके एक अंगका रूप; विश्व लीलामें अधिकांश व्यक्ति अनजान यंत्र; अमुक स्तरतक प्रगति करनेके बाद व्यक्तिगत महत्त्वका भ्रम चला जाता है।]

यदि हमारा संकल्प विश्व संकल्पकी अभिव्यक्ति या प्रतिध्वनिमात्र है तो फिर वैयक्तिक आरंभके लिये स्थान ही कहां? क्या व्यक्ति विश्वगतियोंको अंकित करनेके लिये केवल एक यंत्रमात्र है? क्या उसमें सृजन अथवा मौलिक रचना करनेकी कोई शक्ति है ही नहीं?

सब कुछ इसपर निर्भर है कि तुम चेतनाकी किस भूमिकासे वस्तुओंको देखते और उनके संबंधमें बोलते हो या सत्ताके किस भागसे उनपर क्रिया करते हो।

चेतनाकी एक भूमिकासे देखनेपर तुमको ऐसा लगेगा मानों व्यक्ति निरा यंत्र या केवल अंकित करनेवाला न होकर स्रष्टा है। चेतना-की दूसरी, एवं विशालतर दृष्टिवाली ऊंची भूमिकासे देखो तो तुम्हें लगेगा कि यह केवल आभास है। विश्व गतिक्रममें जो भी घटना घटती है वह जो कुछ पहले घट चुका है उसके परिणाम-स्वरूप होती है। अभिव्यक्तिकी समग्र लीलामेंसे किसी एक सत्ता-को अथवा क्रियाओंकी समग्रतामेंसे किसी एक क्रियाको पृथक् करनेका तुम्हारे पास क्या उपाय है? तुम किसी वस्तुका मूल अथवा आरंभ कहांसे मानोगे? समग्र लीला एक मजबूत जुड़ी हुई सांकल है, इसकी एक कड़ी दूसरी कड़ीमें अगोचर रूपसे गुंथी हुई है। इस सांकल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेंसे किसी चीजको अलग करके उसका इस तरह वर्णन नहीं किया जा सकता मानों वह स्वयं ही अपना मूल और आरंभ हो।

और, जब तुम कहते हो कि व्यक्ति किसी गतिकी उत्पत्ति या सृष्टि करता है तो तुम्हारा क्या अभिप्राय होता है? क्या वह उसे अपने-आपमेंसे अथवा, यूं कहें, शून्यमेंसे उन्त्पन्न करता है? यदि कोई सत्ता इस प्रकार किसी विचार, भाव, क्रिया या और किसी चीजकी सृष्टि कर सके तो वह सारे जगत्का सृजन करनेवाली होगी। यदि कोई व्यक्ति अपनी चेतनाको उस महत्तर चेतनामें वापस ले जा सके जहांसे वस्तुएं उत्पन्न होती हैं, तभी वह स्रष्टा बन सकता है। समस्त गतियोंके आदिकारण-स्वरूप एकमात्र सचेतन शक्तिके साथ तदाकार होकर ही वह किसी क्रिया-विशेषका आरंभ करनेवाला या प्रवर्त्तक हो सकता है।

चेतनाकी कई भूमिकाएं हैं, और एक भूमिकाकी नियति दूसरी भूमिकाकी नियति जैसी नहीं होती। इसलिये, तुम जब संजक व्यक्तिकी बात कहते हो तो उसके किस भागका विचार करते हो? कारण, व्यक्ति अनेक तत्त्वोंसे बनी हुई मिश्र सत्ता है। क्या तुम उसके चैत्य पुरुषके विषयमें कहते हो या उसकी मनोमय, प्राणमय या अन्नमय सत्ताके विषयमें? किसी गतिके अदृश्य मूल और उसके प्रकटीकरण, व्यक्तिद्वारा उसकी बाह्य अभिव्यक्तिके बीचमें ये सब तथा दूसरी बहुत-सी भूमिकाएं और बहुत-से क्रम हैं और प्रत्येक क्रमपर उस गतिमें बहुतेरे हेर-फेर, बहुत-से विकार, बहुत-से विरूपण आते हैं। इन परिवर्तनोंके कारण ही यह भ्रम हो जाता है कि इस गतिका मूल अमुक स्थानपर है, यह एक नयी सृष्टि अथवा एक नया आरंभ है। यह ऐसा ही है जैसे जब तुम एक छड़ीको पानीमें डाल देते हो तो वह अपनी असली सीधी रेखामें न दिखायी देकर एक कोणपर मुड़ी हुई दिखायी देती है। परन्तु यह एक भ्रम है, दृष्टि-विकार है, वह वास्तविक कोण नहीं होता।

प्रत्येक वैयक्तिक चेतना विश्व गतिमें कोई ऐसी चीज ले आती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसे एक दृष्टिबिंदुसे विश्व गतिमें उसका अपना विकार और दूसरे दृष्टिबिंदुसे विश्व गतिमें उसका अपना विशिष्ट गुण कहा जा सकता है। ये वैयक्तिक गतियां भागवत गतिकी लीलाका एक अंग ही हैं। वे अपने-आपमें आरंभ नहीं हैं, ये उन चीजोंके परिवर्तित रूप हैं जिनके प्रारंभको तुम्हें विश्वके समष्टि-रूपमें खोजना चाहिये।

पृथक्ताका भाव सब जगह फैला हुआ है, किन्तु यह एक भ्रम ही है। अगर हम सत्य चेतनामें प्रवेश करना चाहें तो जिन मिथ्या भावोंसे छुटकारा पाना जरूरी है, यह उन्हींमेंसे एक है। मन जगत्को छोटे-छोटे टुकड़ोंमें बांट लेता है। वह कहता है : "यहांपर इसका अंत है, वहां यह चीज शुरू होती है," और इस तरह टुकड़े करके वह विश्व गतिको विकृत करनेमें सफल होता है। एक, विश्वव्यापी, सर्वग्राही चेतनाका महान् प्रवाह इस नित्य-निरंतर विकसित होते हुए विश्वमें अभिव्यक्त होता रहता है। यही वह सत्य है जो यहांकी प्रत्येक वस्तुके पीछे स्थित है, पर साथ-साथ यहां वह भ्रम भी है जो सत्यको छिपाये रहता है, यह भ्रम कि ये गतियां अनेक हैं, एक-दूसरेसे पृथक्, अपने-आपमें स्थित हैं, अपने-आपमें अपने-आपके लिये हैं तथा इनमें प्रत्येक बाकीसे अलग है। ये समझती हैं कि उनकी एक-दूसरेपर क्रिया-प्रतिक्रिया एक बाहरी चीज है, मानों वे विभिन्न पृथक्-पृथक् जगतोंकी तरह हैं जो एक-दूसरेके सम्मुख खड़े हों, पर उनमें किसी दूरके बाहरी संबन्धके अतिरिक्त और कोई परस्पर संपर्क-बिंदु नहीं है। हर एक अपनेको इस प्रकार देखता है मानों उसका एक पृथक् व्यक्तित्व है जो उसे अपने अधिकारसे प्राप्त है। पृथकत्वके भानको, इस भ्रमको विश्व लीलाके एक अंगके रूपमें होने दिया गया है, क्योंकि यह आवश्यक था कि एकमेव चेतना अपने-आपको बाहर प्रकट कर सके और अपने रूपोंको स्थिर कर सके। परंतु भूतकालमें यह होने दिया गया है, इसका यह अर्थ नहीं है कि पार्थक्यका यह भ्रम सदा बना ही रहना चाहिये।

विश्व लीलामें भाग लेनेवाले अधिकांश व्यक्ति अनजान यंत्र हैं, वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे अभिनेता होते हैं जो बिना समझे-बूझे, कठपुतलियोंकी तरह नाचते रहते हैं। दूसरे ऐसे हैं जो सचेतन हैं, और वे इस बातका ज्ञान रखते हुए अपना अभिनय करते हैं कि यह एक लीला है। और कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें विश्व गतिका पूर्ण ज्ञान होता है और जो इस विश्व गतिके साथ तथा अखण्ड भागवत चेतनाके साथ एक होते हैं, फिर भी वे इस प्रकारका अभिनय करना स्वीकार करते हैं, मानों वे कोई अलग वस्तु हों, समग्रताका एक खण्ड हों। उस अज्ञान और पूर्ण ज्ञानके बीचमें कई मध्यवर्ती अवस्थाएं हैं, इस लीला-में सम्मिलित होनेके कई रूप हैं। एक अज्ञानकी अवस्था है जिस-में तुम किसी कामको इस विश्वासके साथ करते हो कि तुम्हींने उसे करनेका निश्चय किया था। दूसरी इससे कम अज्ञानपूर्ण अवस्था है और इस अवस्थामें तुम किसी कामको यह जानते हुए करते हो कि तुम्हें वह काम करना पड़ा है, किन्तु तुम्हें इस बातका पता नहीं कि तुम्हें वह क्यों और कैसे करना पड़ा। और फिर चेतनाकी एक ऐसी अवस्था भी होती है जिसमें तुम्हें पूर्ण ज्ञान रहता है— कारण, इस अवस्थामें तुम्हें इस बातका पता होता है कि वह कौन-सी शक्ति है जो तुम्हारे द्वारा कार्य कर रही है, तुम जानते हो कि तुम एक यंत्र हो, तुम्हें इसका ज्ञान होता है कि तुम्हारे कर्म कैसे और क्यों होते हैं, उनकी प्रक्रिया और उनका प्रयोजन क्या है। अज्ञानकी वह अवस्था, जिसमें तुम यह मानते हो कि तुम्हीं अपने कर्मोंके कर्ता हो उस समयतक बनी रहती है जबतक कि तुम्हारे विकासके लिये उसकी आवश्यकता रहे; किन्तु ज्यों ही तुम किसी उच्चतर अवस्थामें जानेके योग्य हो जाते हो, त्यों ही तुम्हें दिखायी देने लगता है कि तुम उस एक चेतनाके यंत्रमात्र हो। तब तुम ऊपरकी ओर कदम बढ़ाते हो और एक ऐसी भूमिकामें उठ जाते हो जो उससे भी अधिक सचेतन है।

('श्रीमातृवाणी', खंड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविंद

श्रीअरविंदका जन्म कलकत्तेके एक समृद्ध डाक्टर, श्रीकृष्णधन घोष, के घर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी — १५ अगस्त, १८७२ — को हुआ था। सात वर्षकी कच्ची उम्रमें उन्हें शिक्षाके लिये अपने भाइयोंके साथ इंगलैंड भेज दिया गया। उन्होंने वहां पूरे चौदह वर्ष निवास किया; उन्होंने ग्रीक, लैटिन तथा कुछ आधुनिक यूरोपीय भाषाओंका अध्ययन किया। अपने पिताकी इच्छा पूरी करनेके लिये उन्होंने आई.सी.एस. की परीक्षा भी दी। उन दिनोंके भारतीय युवकोंके लिये यह सब-से महान् स्वप्न हुआ करता था। परंतु श्रीअरविंदकी इसमें रुचि न थी। वे जान-बूझकर घुड़सवारीकी परीक्षा देने न गये और इस तरह सरकारी नौकरीके ढांचेसे बच गये। वे १८९३ में भारत लौटे।

सयाजी राव गायकवाड़ आदमियोंके बड़े अच्छे पारखी थे। उन्हों-ने युवा श्रीअरविंदको देखा और तुरंत बड़ौदा सरकारकी नौकरीके लिये चुन लिया। वहां इन्हें विभिन्न प्रकारके काम दिये गये। ये कॉलिजमें प्रोफेसर भी रहे और प्रशासक भी। यहां रहते हुए इन्हों-ने संस्कृत तथा कई आधुनिक भारतीय भाषाओंका अध्ययन किया। साथ ही भारतीय संस्कृतिका गहरा अध्ययन किया और काव्य तथा नाटक लिखते रहे।

श्रीअरविंद जब बम्बईमें जहाजसे उतरे थे तो उन्हें समूची शांति-की अनुभूति हुई थी। बड़ौदामें उन्होंने कालीके दर्शन किये और इसी कालमें निर्वाणकी अनुभूति भी प्राप्त की। इन्हीं दिनों 'भवानी मन्दिर'की योजना तैयार की गयी जिसमें भारत माताके निःस्वार्थ सेवकोंके प्रशिक्षणकी बात थी। शायद यह बादमें आनेवाले श्री-अरविंदाश्रमकी पहली रूप-रेखा थी।

तब आया बंग-भंग। श्रीअरविंदने बड़ौदाकी नौकरी छोड़ दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सक्रिय राजनीतिमें कूद पड़े और कुछ ही समयमें बिपिन चन्द्र पाल और बालगंगाधर तिलकके साथीके रूपमें देशके मुख्य नेताओंमें गिने जाने लगे।

उन्होंने देशको स्वाधीनता-संग्राममें भाग लेना सिखाया और उसे 'वन्दे मातरम्'का राष्ट्रीय गान दिया। शायद कांग्रेस-मंचसे पूर्ण स्वराज्यकी मांग करनेवाले पहले नेता थे श्रीअरविंद। सारा देश मोह-निद्रासे जाग उठा और अपनी बलि चढ़ानेके लिये तैयार हो गया।

श्रीअरविंदने 'वन्दे मातरम्'का प्रकाशन शुरू किया और वह अपने समयका सबसे अधिक लोकप्रिय अखबार बन गया। उस समयके बड़े-बड़े अंगरेज कहते थे: " 'वन्दे मातरम्'की एक-एक पंक्तिमें राज-द्रोह भरा है, लेकिन इस चालाकीसे छिपाया गया है कि उसपर मुकदमा नहीं चल सकता।" उस समयके वाइसरायके निजी सचिवने लिखा था: "अगर सब क्रांतिकारी जेलमें भर दिये जायें, अकेले श्रीअरविंद ही बाहर रहें तो वह फिरसे क्रांतिकारियोंकी एक सेना खड़ी कर लेंगे।"

लेकिन श्रीअरविंदके लिये भारतवर्ष देशका टुकड़ा, पर्वत, नदियों और गुफाओंका नाम न था। उनके लिये भारत माता एक देवी थी, मां थी। वे अपनी पत्नीके नाम एक पत्रमें लिखते हैं:

"अन्य लोग स्वदेशको एक जड़ पदार्थ, कुछ मैदान, खेत, वन, पर्वत, नदी-भर समझते हैं, मैं स्वदेशको मां मानता हूं, उसकी भक्ति करता हूं, पूजा करता हूं। मांकी छातीपर बैठकर यदि कोई राक्षस रक्तपान करनेके लिये उद्यत हो तो भला लड़का क्या करता है? निश्चित होकर भोजन करने, स्त्री-पुत्रके साथ आमोद-प्रमोद करनेके लिये बैठ जाता है या मांका उद्धार करनेके लिये दौड़ पड़ता है? मैं जानता हूं कि इस पतित जातिका उद्धार करनेका बल मेरे अंदर है, शारीरिक बल नहीं, तलवार या बन्दूक लेकर मैं युद्ध करने नहीं जा रहा हूं, वरन् ज्ञानका बल है। क्षात्र-तेज एकमात्र तेज नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, ब्रह्म-तेज भी एक तेज है, वह तेज ज्ञानके ऊपर प्रतिष्ठित होता है। यह भाव नया नहीं है, आजकलका नहीं है, इस भावको लेकर ही मैंने जन्म ग्रहण किया है, यह भाव मेरी नस-नसमें भरा है, भगवान्‌ने इसी महाव्रतको पूरा करनेके लिये मुझे पृथ्वीपर भेजा है। चौदह वर्षकी उम्रमें इसका बीज अंकुरित होने लगा था, अठारह वर्षकी उम्रमें इसकी प्रतिष्ठा दृढ़ और अचल हो गयी थी। तुमने न-मौसी (चौथी मौसी) की बात सुनकर यह सोचा था कि न मालूम कहांका बदजात मेरे सरल भलेमानस स्वामीको कुपथमें खींचे ले जा रहा है। परंतु तुम्हारा भलामानस स्वामी ही उस आदमीको तथा और सैंकड़ों आदमियोंको उस पथमें, कुपथ हो या सुपथ, खींच ले आया था तथा और भी हजारों आदमियोंको खींच ले आयेगा। कार्य-सिद्धि मेरे रहते ही होगी यह मैं नहीं कहता, पर होगी अवश्य।"

१९०९ में श्रीअरविंद गिरफ्तार करके अलीपुर जेलमें लगभग एक वर्षके लिये रखे गये। वहां उन्होंने हर व्यक्तिमें, हर वस्तुमें श्रीकृष्णका अन्तर्दर्शन पाया। अंगरेजोंकी पार्लियामेंटने श्रीअरविंदके मामलेपर कई घंटोंतक बहस की, परंतु श्रीअरविंदके विरुद्ध कोई अभियोग सिद्ध न हो सका, इसलिये उन्हें छोड़ दिया गया।

अप्रैल १९१० में श्रीअरविंदको अंदरसे आदेश मिला कि पांडिचेरी चले जाओ और वे ४ अप्रैल, १९१० को पांडिचेरी आ पहुंचे। उनके जीवनमें यह एक नये अध्यायका आरंभ था। इसके बाद उन्होंने कभी राजनीतिमें सक्रिय भाग नहीं लिया। लेकिन अंग्रेज सरकारका गुप्तचर-विभाग यह कैसे मान लेता कि वे सचमुच राजनीति छोड़ चुके हैं। १९१० से १९३७ तक अंग्रेज गुप्तचर उनके मकानके चारों ओर चक्कर लगाया करते थे। १९३७ में उस समयके मद्रासके मुख्य मंत्री सी० राजगोपालाचार्यने यह पहरा हटाया। इस प्रसंगमें **२५ अप्रैल, १९५४** को दिया हुआ माताजीका एक वक्तव्य देखते चलें :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीअरविंद राजनीतिसे अलग हो गये थे और उनके आश्रमके महत्त्वपूर्ण नियमोंमें से एक नियम यह है कि सब प्रकारकी राजनीतिसे अलग रहा जाय। यह बात नहीं है कि श्रीअरविंदको संसारकी गतिविधिमें रस नहीं था, वल्कि इसलिये कि आजकल राजनीति एक बहुत ही निम्न कोटिकी और भद्दी चीज है जो पूरी मिथ्यात्व, चालाकी, अन्याय, शक्तिका दुरुपयोग आदिसे भरी है। राजनीतिमें भाग लेनेके लिये कपट, धोखेबाजी और बेतहाशा महत्त्वाकांक्षा पैदा करनेकी जरूरत है।

"हमारे योगका आधार है सचाई, ईमानदारी, अहंकारका निषेध, भागवत कार्यके लिये निःस्वार्थ आत्मदान, चरित्रकी उदात्तता और ऋजुता। जो लोग इन आधारभूत गुणोंको अपने जीवनमें नहीं लाते वे श्रीअरविंदके शिष्य नहीं हैं और इस आश्रममें उनके लिये स्थान नहीं है। इसलिये मैं आश्रमपर किये गये उन मूर्खतापूर्ण और निराधार आक्षेपोंका उत्तर देनेसे इंकार करती हूं जो विकृत भावना और बुरे इरादेसे किये जाते हैं।

"श्रीअरविंद हमेशा अपनी मातृभूमिसे प्रगाढ़ प्रेम रखते थे, लेकिन वे चाहते थे कि वह महान्, उदात्त, पवित्र हो, संसारमें अपने महान् लक्ष्यके अनुरूप हो। उन्हें यह स्वीकार न था कि वह गन्दे, अधम, अपरिष्कृत, अन्धे, स्वार्थपूर्ण और अज्ञान-भरे पूर्वाग्रहोंके स्तरपर उतरे। इसीलिये हम उनकी इच्छाके साथ-साथ चलते हुए, सत्य, प्रगति और मानव रूपांतरकी ध्वजा ऊंची उठाते हैं, उन सबकी परवाह न करते हुए जो अज्ञान, मूढ़ता, ईर्ष्या और दुर्भावनाके कारण उसे गन्दा करना या कीचड़में घसीटना चाहते हैं — उसे ऊंचे-से-ऊंचे फहराते हैं, ताकि जिन्हें उससे प्रेम हो वे उसे देख सकें और चारों ओर इकट्ठे हो सकें।"

श्रीअरविंदकी जीवनीके अन्य ब्योरोंमें जानेकी जगह, हम माताजीका एक और उद्धरण देखते चलें जिसमें उन्होंने धरतीपर श्रीअरविंदके कार्यपर प्रकाश डाला है:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीअरविंदका कार्य है धरतीका अनोखा रूपांतर।

"मनके ऊपर सचेतन सत्ताके बहुत-से स्तर हैं। उनमेंसे सचमुच दिव्य जगत् वह है जिसे श्रीअरविंद अतिमानस कहते हैं, 'सत्य' लोक। लेकिन बीचमें वह है जिसे उन्होंने 'अधिमन'का नाम दिया है, जो वैश्व देवताओंका लोक है। इसी अधिमनने आजतक हमारे जगत्-पर शासन किया है। प्रदीप्त चेतनामें यही उच्चतम अवस्था है जहांतक मनुष्य पहुंच पाया है। इसे परम प्रभु मान लिया गया है और जो लोग वहां तक पहुंचे हैं उन्हें क्षण-भरके लिये भी इस बारे-में शंका नहीं हुई है कि उन्होंने सच्ची आत्माका स्पर्श पा लिया है। क्योंकि उसकी भव्यताएं साधारण मानव चेतनाके लिये इतनी महान् हैं कि वह चेतना पूरी तरह चुंधियाकर यह मान बैठती है कि कम-से-कम यही सर्वोच्च सद्वस्तु है। और फिर भी, यह तथ्य है कि अधिमन वास्तविक भगवान्से बहुत अधिक नीचे है। वह सत्यका असली धाम नहीं है। यह केवल स्रष्टाओंका, उन सब सर्जनात्मक शक्तियों और देवताओंका क्षेत्र है जिनके आगे इतिहासके आरंभसे मनुष्य शीश झुकाता आया है। और वास्तविक भगवान् अभिव्यक्त होकर पार्थिव प्रकृतिको रूपांतरित नहीं कर रहे इसका ठीक कारण यह है कि मनुष्य अधिमनको अतिमन समझ बैठे हैं...

"चेतना एक नसैनीकी तरह है। हर महान् युगमें एक महान् सत्ता रही है जो नसैनीमें एक और सीढ़ी जोड़नेमें और एक ऐसी जगह तक पहुंचनेमें समर्थ होती है जहां साधारण चेतना कभी न गयी हो। एक उच्चतर स्तरतक पहुंचकर पूर्ण रूपसे भौतिक चेतनाके बाहर निकलना संभव है। लेकिन तब फिर तुम नसैनीको बनाये नहीं रखते जब कि यह विश्वके महान् युगोंकी महान् उपलब्धि रही है। भौतिकके साथ संपर्क खोए बिना नसैनीमें एक और सीढ़ी जोड़नेकी क्षमता, 'उच्चतम'को प्राप्त करनेकी और साथ ही एक प्रकारकी शून्यताको दोनों स्तरोंके बीचके सम्बन्ध तोड़ देनेके स्थान-पर उच्चतमको निम्नतमसे जोड़नेकी क्षमता। ऊपर और नीचे जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शिखरको तलीसे जोड़ना ही सिद्धिका पूर्ण रहस्य है और यही अवतारका काम है। हर बार जब वह नसैनीमें एक और सीढ़ी जोड़ता है तो धरापर एक नयी सृष्टि होती है।

"अब जो सीढ़ी जोड़ी जा रही है उसे श्रीअरविंद 'अतिमन' कहते हैं। उसके फलस्वरूप चेतना अतिमानसिक जगत्में प्रवेश कर सकेगी और फिर भी अपने व्यक्तिगत रूपको, अपने व्यष्टिकरण-को बनाये रख सकेगी, और फिर, यहां एक नयी सृष्टिको स्थापित करनेके लिये उतर सकेगी।

"निश्चय ही यह अन्तिम नहीं है, क्योंकि सत्ताके और भी क्षेत्र हैं। लेकिन अभी हम अतिमानसको उतारनेके लिये, जगत्में एक पुनर्संगठनको उत्पन्न करनेके लिये, जगत्को फिरसे अपनी वास्तविक दिव्य व्यवस्थामें लानेके लिये काममें लगे हैं।

"तत्त्वतः, यह व्यवस्थाकी सृष्टि है, हर एक चीजको अपने यथार्थ स्थान पर रखनेकी क्रिया है। इस समय मुख्य क्रियाशील शक्ति है महासरस्वती, जो पूर्ण संगठन और व्यवस्थाकी देवी हैं।

"एक ऐसी निरंतरताको प्राप्त करनेका काम, जो व्यक्तिको ऊपर और नीचे जाने दे और जो ऊपर हैं उसे भौतिकमें लानेके लिये चेतनाके भीतर किया जाता है, जो यह करनेके लिये नियत है, यानी, अवतार, वे चाहे कारागारमें बन्द कर दिये जायें, वे किसीसे न मिले-जुलें, कभी बाहर न निकलें, फिर भी, वह अपना काम करेंगे, क्यों-कि यह चेतनाका काम है, अतिमन और भौतिक सत्ताके बीचमें संबन्ध जोड़नेका काम है। उन्हें मान्यता पानेकी कोई जरूरत नहीं, इस सचेतन संबन्धको स्थापित कर सकनेके लिये उन्हें किसी बाहरी शक्तिकी जरूरत नहीं। फिर भी, एक बार संबन्ध स्थापित हो जाय, तो उसका असर बाहरी जगत्में एक नयी सृष्टिके रूपमें होकर रहेगा। एक नमूनेके नगरसे शुरू होकर एक पूर्ण जगत्में परिणत होगी...

"जब मैं पहली बार पांडिचेरीमें श्रीअरविंदसे मिली तो मैं गहन एकाग्रतामें थी, अतिमनमें चीजें देख रही थी, ऐसी चीजें जिनको अभि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्त होना था, लेकिन किसी कारण अभिव्यक्त नहीं हो रही थीं। मैंने जो कुछ देखा था उसके बारेमें श्रीअरविंदको सुनाया और यह पूछा कि वे अभिव्यक्त होनेवाली है या नहीं। उन्होंने स्पष्ट कहा, "हां।" और तुरंत मैंने देखा कि अतिमनने धराको छू लिया और सिद्ध होने लगा था! पहली बार मैं उस शक्तिको अपनी आंखोंसे देख रही थी जो 'सत्य'को वास्तविक बनाती है।"

(१९३०)

जैसे ही भगवान्के एक नये रूपका दर्शन होता है कि एक नये धर्मकी उत्पत्तिकी संभावना हमारे सामने आती है। लेकिन माताजीने अपने एक पत्रमें ऐसी सब संभावनाओंको समाप्त कर दिया है:

"श्रीअरविंद धरापर पहलेके सिद्धांतों और शिक्षाओंके साथ प्रतियोगिता करनेके लिये एक नया सिद्धांत या शिक्षा लेकर नहीं आये हैं, बल्कि, अतीतको पार करनेका मार्ग दिखानेके लिये और एक सन्निकट और अनिवार्य भविष्यके प्रति ठोस रूपसे मार्ग खोलनेके लिये आये हैं।"

(२२-२-६७)

एक बार आश्रमके बच्चोंसे बात करते हुए माताजीने श्रीअरविंदके आगमनका सच्चा अर्थ समझाया था:

"श्रीअरविंद न अतीतके हैं, न ही इतिहासके।

"श्रीअरविंद हैं वह भविष्य जो अपनी सिद्धिके मार्गपर बढ़ रहा है।

"इसलिये आवश्यक शीघ्रताके साथ आगे बढ़ सकनेके लिये और मार्गपर फिसड्डी बनकर पीछे न रह जानेके लिये हमें चिरयौवनको धारण किये रहना चाहिये।"

(१९६७)

('श्वेत कमल'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजी—फिरसे पांडिचेरीमें

माताजी दूसरी बार २४ अप्रैल, १९२० को आयी थीं। १९३७ में उन्होंने कहा था कि उनका यह लौटना विरोधी शक्तियोंके ऊपर विजयका निश्चित चिह्न था। शुरूमें वे 'मेगरी होटल'में ठहरी थीं, वहांसे 'सुब्बू हाऊस' गयीं और फिर उस मकानमें आयीं जिसे आजकल 'गेस्ट हाऊस' कहा जाता है।

२४ नवम्बर, १९२० को बहुत जोरका तूफान आया और जोरकी वर्षा होने लगी। माताजी जिस मकानमें ठहरी हुई थीं, उसकी छत चूने लगी। गणपतिके मन्दिरके सामनेकी छत बैठ गयी। श्रीअरविंदको इन बातोंका पता लगा तो उन्होंने सुरक्षा इसीमें समझी कि माताजी और उनके साथ रहनेवाली अंग्रेज महिला, 'दत्ता', को अपने मकानमें बुला लिया जाय। उसी शामको माताजी श्रीअरविंदके मकानमें रहनेके लिये आ गयीं। इसके बाद दोनों हमेशा एक ही मकानमें रहे।

इस दिनके ठीक छः वर्ष बाद, २४ नवम्बर, १९२६ को माताजी और श्रीअरविंदको सिद्धि प्राप्त हुई।

इसी वर्षके अन्तमें माताजीने चन्दन नगरकी एक पत्रिकाके लिये एक पत्र लिखा था जिसमें यह बताया था कि वे अपने लक्ष्यके बारेमें सचेतन कैसे हुई :

"मुझे धरतीपर जो कार्य करना है उसके बारेमें मैं कब और कैसे सचेतन हुई और मैं श्रीअरविंदसे कब और कैसे मिली?

"आपने ये दो प्रश्न पूछे हैं और मैंने वचन दिया था कि इनका संक्षिप्त-सा उत्तर दूंगी।

"यह कहना मुश्किल है कि मुझे अपने जीवनके लक्ष्यका ज्ञान कब हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा लगता है मानों मैं उसे लेकर ही पैदा हुई थी और मन और मस्तिष्कके विकासके साथ इस चेतनाकी यथार्थता और पूर्णता भी बढ़ती गयी।

"११ और १३ की अवस्थाके बीच मुझे कुछ चैत्य और आध्यात्मिक अनुभूतियोंने न केवल भगवान्‌की उपस्थितिका ज्ञान कराया, बल्कि यह भी बतलाया कि भगवान्‌से मिलना संभव है और उन्हें पूरी तरह चेतना और क्रियामें प्रकट किया जा सकता है और धरतीपर एक दिव्य जीवनमें अभिव्यक्त किया जा सकता है। इसके साथ-ही-साथ उसकी उपलब्धिके लिये मुझे क्रियात्मक साधना भी बतलायी गयी। जब मेरा शरीर सोता था तो कई शिक्षक मुझे ये चीजें बतलाया करते थे। उनमेंसे कुछ बादमें मुझे भौतिक स्तरपर भी मिले। उसके बाद जैसे-जैसे आन्तरिक और बाह्य विकास होता गया उनमेंसे एकके साथ चैत्य और आध्यात्मिक संबन्ध अधिकाधिक स्पष्ट और अर्थपूर्ण होता गया और यद्यपि उन दिनों मैं भारतीय दर्शन और धर्मके बारेमें बहुत कम जानती थी, फिर भी, मैं उन्हें "कृष्ण" कहने लगी, मुझे पता था कि मैं एक दिन धरतीपर उनसे मिलूंगी और उनके साथ मिलकर ही मुझे भगवान्‌का काम करना है।

"१९१० में मेरे पति पांडिचेरी आये और यहां बड़ी मजेदार और विशेष परिस्थितियोंमें श्रीअरविंदसे मिले। तबसे हम दोनोंकी बहुत तीव्र इच्छा थी कि भारत आएं। मैंने हमेशा यही माना था कि यही देश मेरी सच्ची मातृभूमि है। १९१४ में हमें यह आनन्द प्रदान किया गया।

"जैसे ही मैंने श्रीअरविंदको देखा, मैं पहचान गयी कि ये तो वही हैं जिन्हें मैं "कृष्ण" कहा करती थी। शायद इतना कहना यह बतलानेके लिये काफी है कि मुझे यह पूरा-पूरा विश्वास क्यों है कि मेरा स्थान और मेरा कार्य यहां, भारतमें, उनके साथ है।"

माताजीके आगमनने घरके सारे वातावरणमें एक स्पष्ट अन्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ला दिया। हर चीज साफ-सुथरी, सुव्यवस्थित हो गयी। स्पष्ट है कि माताजीके महासरस्वती और महालक्ष्मी रूप काम कर रहे थे।

उदाहरणके लिये, श्रीअरविंदके स्नान और भोजनकी समुचित व्यवस्था की गयी। दैनिक जीवनमें सुन्दरता और सरलताका सामंजस्य हुआ। माताजी हर छोटी-से-छोटी चीजपर नजर रखने लगीं।

नलिनीने माताजीके आनेसे पहले और उनके आनेके बादकी अवस्था देखी थी। वह अपने संस्मरणोंमें लिखते हैं:

"हम अधिकतर यह नहीं देखते कि हम कितने अव्यवस्थित हैं। हमारा सामान अस्त-व्यस्त रहता है। हमारे काम-काज भी बिखरे-बिखरे-से रहते हैं। हमारा आन्तरिक जीवन भी बाह्य जीवनकी तरह अव्यवस्थित रहता है. . . अगर हमारा मस्तिष्क एक बाजार जैसा होता है तो हृदय पागलखाना. . .। माताजी अपने उपदेश और उदाहरणके द्वारा जो चीजें हमें सिखा रही हैं उनमेंसे एक है अपने बाह्य जीवनको और उसकी भौतिक चीजोंको उचित व्यवस्थामें साफ-सुथरा रखना। यह हमारे पार्थिव जीवनके लिये बहुत जरूरी है। माताजीने हमें सावधानीके साथ चीजें बरतना सिखाया। वे अपनी चीजोंका उपयोग केवल सावधानीसे ही नहीं, लाड़ और प्रेमसे करती हैं।"

माताजीके आनेसे पहले जो लोग श्रीअरविंदके साथ रहते थे, वे उन्हें मित्र और साथीके रूपमें देखते थे। वे उन्हें महान् तो मानते थे, परन्तु उनका व्यवहार दोस्ती और मनका ही रहता था। माताजीने कहा है कि वे श्रीअरविंदके बिना रह ही नहीं सकतीं और श्रीअरविंद उनके बिना अभिव्यक्त नहीं हो सकते। १९२२ की पहली जनवरीको माताजीने श्रीअरविंदके मकानकी देख-रेख करनेकी पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। माताजीने ही पहले-पहल सिखाया कि श्रीअरविंदकी कृपा प्राप्त करनेके लिये लोगोंको कैसे व्यवहार करना चाहिये।

('श्वेत कमल'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माताजीने कहा

माताजी चीजोंको व्यवस्थामें रखना बहुत पसंद करती थीं। स्वयं अपनी रखी हुई चीजोंको वे आधी रातके अंधेरेमें भी तुरंत ढूंढकर निकाल सकती थीं। इस विषयपर बोलते हुए उन्होंने कहा :

"चीजोंको उनके उचित क्रममें व्यवस्थित रखना बहुत मजेदार और मनोरंजक काम है। तुम चीजोंको केवल चीजें समझते हो, उनसे प्यार नहीं करते। अगर तुम्हें अपनी चीजोंसे प्यार हो तो वे तुमसे बातें करेंगी। उन्हें पता होता है कि उन्हें कहां रखा जाना चाहिये। उनमें ऐसे स्पंदन होते हैं जिन्हें तुम अपने मनके कारण नहीं पकड़ पाते। वे एक विशेष क्रममें रखी जाना चाहती हैं। तुम उनकी भाषाका अपनी चेतनामें अनुवाद कर सकते हो। अगर वे ठीक जगहपर नहीं हैं तो वे तुम्हें बुलाएंगी। अगर कोई दुर्घटना होनेवाली है तो वे तुम्हें पहलेसे सावधान कर देंगी। विश्व-में हर चीजका अपना स्थान है, परंतु सब इधर-उधर फेंक और बिखेर दी गयी हैं। अगर तुम हर चीजको व्यवस्थामें रख सको तो वह दिव्य व्यवस्था होगी। उसके बाद कोई कष्ट न होगा। छोटी-से-छोटी चीजका भी वैश्व व्यवस्थाके साथ संबंध होता है। तुम्हें समस्त विश्वको अपनी चेतनामें रखना चाहिये।"

हम बहुत बार क्रोधमें आ जाते हैं और सोचते हैं कि वह न्यायो-चित क्रोध है, लेकिन माताजी क्या कहती हैं?

"जब तुम्हें गुस्सा आता है तो तुम्हारे अन्दर असाधारण शक्ति और ऊर्जा आ जाती है जिसका उपयोग तुम शोर मचाने और नाटक खड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनेमें करते हो। अगर तुम उस ऊर्जाको अपने अन्दर समो लेने की कोशिश करो और उसका उपयोग किसी बाधापर विजय पानेके लिये या प्रगति करनेके लिये करो तो परिणाम अद्भुत होंगे। सामान्य ढंगसे भी तुम बल प्राप्त करोगे और कुछ प्रगति करोगे।"

एक और अवसरपर माताजीने कहा :

"नहीं, क्रोध करनेका बिल्कुल कोई कारण नहीं है। क्रोध दुर्बलताकी निशानी है, कारण चाहे कुछ क्यों न हो, क्रोधको कभी न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता।

"तुम क्रोध तब करते हो जब तुम एक न्यायाधीश या निर्णायककी भूमिका लेकर यह निश्चय करने बैठते हो कि क्या होना और क्या नहीं होना चाहिये। लेकिन तुम स्वयं ही सत्यको नहीं जानते, फिर दूसरोंके आचरणके लिये नियम कैसे बना सकते हो? तुम सोचते हो कि हर चीज तुम्हारे विचारोंके अनुसार होनी चाहिये। अगर कोई चीज किसी और दिशामें जाती है तो तुम नाराज हो जाते हो। तुम सोचते हो कि तुम सारे संसारके केंद्र हो और सारे संसारको तुम्हारी इच्छाओंके अनुसार चलना चाहिये। लेकिन क्यों? तुम्हारे अन्दर ऐसी कौन-सी विशेष चीज है कि तुम्हारी इच्छाको पूरा करना जरूरी हो। तुम विश्वमें करोड़ों, अरबों बिन्दुओंमेंसे बस, एक बिंदु हो।

"आत्म-रक्षाके लिये भी तुम्हें क्रुद्ध न होना चाहिये। अगर तुम शांत और ठंडे रह सको तो अपना बचाव ज्यादा अच्छी तरह कर सकते हो। मैं तुमसे क्रोधको दबानेके लिये नहीं कह रही। मैं कह रही हूं कि अपनी प्रकृतिको बदलो और क्रोधसे पिंड छुड़ाओ। पहले कदमके रूपमें तुम अपने क्रोधको प्रकट मत होने दो और फिर उसे एकदम हटा देनेके लिये भगवान्से सहायता मांगो।

"अपने-आपमें आदमीके अंदर न कोई बल है, न बुद्धि; न शक्ति है, न ज्ञान। उसके अन्दर बस, मूर्खता है, दुर्बलता है और है अज्ञान। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्हींको अपना कह सकता है। लेकिन अगर वह भगवान्‌की शरणमें जाय, अगर अपने-आपको भागवत आनन्दके सुपुर्द कर दे, तो उसे सब कुछ मिल जाता है, हर चीज मिल जाती है, वह बलवान्, बुद्धिमान् और शक्तिशाली बन जाता है। अपने-आपको पूरी तरह उनके हाथोंमें सौंप दो और वे ही तुम्हारी रक्षा करेंगे।"

हर आदमीके लिये बहुत-सी भाषाएं सीखना असंभव है। माताजी-के अधिकतर मूल ग्रंथ फ्रेंचमें हैं और श्रीअरविंदके अंगरेजीमें। भिन्न भाषाओंमें इनके अनुवाद प्रस्तुत करना जरूरी है। लेकिन आर्षवाणीका अनुवाद करे कौन? इस सिलसिलेमें बात करते हुए एक बार माताजीने कहा था:

"अगर तुम्हारा अनुवाद किसी प्रकारसे पाठकका मेरे साथ संपर्क स्थापित करनेमें सफल हो जाय, तो अपनी सब त्रुटियोंके होते हुए वह सफल है।"

इसी तरह और एक बार उन्होंने कहा:

"श्रीअरविंदकी पुस्तकोंके अच्छे-से-अच्छे अनुवादोंमें और मेरे लेखों-के अंग्रेजी अनुवादोंमें (मैं यहां श्रीअरविंदके अनुवादकी बात नहीं कर रही) तुम कम-से-कम पचास प्रतिशत तो खो ही देते हो।

"'प्रार्थना और ध्यान'का अनुवाद करना असंभव है। स्वयं श्री-अरविंदने कहा था कि वह बहुत कठिन है। उन्होंने कुछ प्रार्थनाओं-का अनुवाद करके छोड़ दिया।

"जब मैं किसी अनुवादके प्रकाशनको स्वीकृति देती हूं तो इसका यह अर्थ नहीं होता कि मैं उसे स्वीकार करती हूं और उसपर प्रामा-णिकताकी मुहर लगा देती हूं। कई बार यह इसलिये भी होता है कि उससे ज्यादा बुरा अनुवाद न छपने पाय।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार आश्रमवासी माताजीसे कहा करते थे : "आप आश्रममें मानवजातिसे ज्यादा अच्छे नमूने क्यों नहीं लेतीं ? उन लोगोंसे आपका काम जल्दी आगे बढ़ सकेगा।" माताजी प्रायः यही उत्तर दिया करती थीं कि वे बड़े लोगोंको नहीं लाना चाहतीं, उन्हें आश्रममें बच्चे ही चाहिये। यहां बच्चेसे मतलब उमरके हिसाबसे नहीं, चेतनाकी दृष्टिसे बच्चे। एक बार एक बहुत उच्च स्थितिके साधक माताजीसे मिलने आये और माताजीको देखते ही संन्यासी होनेके बावजूद, उनके पैरोंपर गिर पड़े। उन्होंने आश्रममें रहनेकी इच्छा प्रकट की, पर माताजीसे स्वीकृति न मिली। इस विषयमें माताजीने कहा :

"वह बहुत आगे बढ़ा हुआ है। मुझे देखते ही वह मेरे पैरोंपर गिर पड़ा और उसने कहा कि मैंने आपको पहचान लिया। लेकिन अपनी पूरी सद्भावनाके होते हुए वह आश्रममें ठीक न बैठेगा।

"जिन लोगोंको कुछ उपलब्धि हो गयी है उन्हें यहां टिकना बहुत मुश्किल लगता है। जब वे कुछ प्राप्त करते हैं तो समझ बैठते हैं कि अब वे शिखरपर पहुंच गये हैं। अगर वे यहां आयें तो उन्हें अपनी सारी महानता तजकर बालक बनना पड़ेगा। हर महान् उपलब्धिके बाद तुम्हें वह अर्पित करके आगे बढ़ना होता है। तब तुम्हें लगता है कि सब कुछ खो गया। ऐसे लोग ज्यादा नहीं होते जो यह कर सकें।"

बहुत-से लोगोंने माताजी और श्रीअरविंदके ग्रंथ पढ़े हैं, फिर भी उन्हें शिकायत है कि इस पढ़नेसे उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। ऐसे ही एक व्यक्तिको दिलासा देते हुए माताजी कहती हैं :

"तुम कहते हो कि तुमने हमारी पुस्तकें पढ़ी हैं, फिर भी पहले जैसे ही अज्ञानी हो; इस पढ़नेसे तुम्हारे जीवनमें कोई फर्क नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया, इसलिये यह पढ़ना बेकार था। लेकिन पढ़नेके बाद तुम इतना तो जान ही गये हो कि क्या ठीक है और क्या ठीक नहीं है। अभीतक तुम्हारा आन्तरिक सम्बन्ध इतना बलवान् नहीं हुआ है कि वह तुम्हारे जीवनपर क्रिया कर सके। एक दिन वह सबल हो जायगा और तुम्हारे ऊपर सशक्त रूपसे प्रभाव डालेगा। लेकिन अगर तुमने यह सब पढ़ा ही न होता तो तुम्हें यह पता न लगता कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं। तुम बस, इतना ही कहते, 'मुझे पता नहीं,' और स्थिति ज्यादा खराब होती।"

साधारणतः, शिक्षित लोग स्वयं अपनी आंतरिक अनुभूतियोंपर विश्वास नहीं कर पाते, परंतु वे "वैज्ञानिक सत्यों"पर पूरी आस्था रखते हैं जो बार-बार बदलते रहते हैं। इस विषयमें माताजी कहती हैं :

"बहुत कुछ तुम्हारे वातावरणपर निर्भर है। तुम अपने चारों ओर ऐसे लोगोंको पाते हो जो विज्ञानपर विश्वास रखते हैं, इसलिये तुम भी विश्वास करते हो। और फिर इसपर सरकारी शिक्षाकी मुहर है। अगर तुम सर्वसाधारण लोगोंके पास जाओ जिन्हें धार्मिक बातोंपर विश्वास है तो तुम देखोगे कि वे बिलकुल स्वाभाविक रूपसे विश्वास कर लेते हैं। इसमें सामूहिक सुझाव काम करता है। अगर लोग अंध-विश्वासको त्यागना चाहें तो यह ठीक है, बशर्ते कि वे ज्ञानकी खोज करें। लेकिन जब कोई कहे कि वह अंध-विश्वास नहीं करता और धार्मिक सिद्धांतोंको त्याग देता है, परंतु साथ ही वैज्ञानिक सिद्धांतोंको उसी तरह मान लेता है, तो? वह धार्मिक ग्रंथोंको आप्त प्रमाण न मानकर डिग्रीधारी वैज्ञानिकोंका अंधा अनुसरण करना पसंद करता है। उदाहरणके लिये, मेरी मां कट्टर नास्तिक थीं, पर वैज्ञानिकोंकी कही गयी हर बात उनके गलेसे उतर जाती थी। ये दोनों एक जैसे हैं।

"और फिर, भौतिक मनका स्वभाव है संदेह करना। तुम कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीज उसकी नाकपर रख दो फिर भी वह उसपर विश्वास न करेगा। यह सारे समय होता रहता है, पर तुम इस ओर ध्यान नहीं देते। तुम एक दरवाजेपर ताला लगाते हो और फिर कुछ कदम दूर जाते हो। तुम्हारा भौतिक मन पूछता है : 'क्या सच-मुच तुमने ताला बंद कर दिया है?' तुम फिर वापिस जाकर देखते हो ताला बंद है, लेकिन फिरसे तुम्हारे मनमें कहीं संदेह जाग जाता है। यह भौतिक अवस्थाओंमें, जहां तुम जाकर देख सकते हो, पंद्रह-बीस बार हो सकता है। परंतु आध्यात्मिक स्थितिमें जरूरी नहीं है कि एक ही अनुभूति बार-बार हो। और अगर हो भी तो उसके रूप भिन्न हो सकते हैं। इसलिये वहां भौतिक मनको अधिक अव-सर मिल जाता है।"

('श्वेत कमल'से)

आश्रममें कार्य

यहां प्रत्येक कार्य किसी चीजका प्रतीक है।

*

यहां जब कोई नया काम शुरू किया जाता है तो संसारकी नयी समस्याएं आ जाती हैं।

*

यहां जब कोई काम दिया जाता है तो साथ ही उसे यथो-चित रूपमें करनेके लिये पूरा बल और भागवत कृपा भी दी जाती है। अगर तुम बल और कृपाका अनुभव नहीं करते तो यह इस बातका प्रमाण है कि तुम्हारी वृत्तिमें कोई भूल है। श्रद्धाकी कमी है या तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराने ढर्रे या पुराने मतोंमें जा गिरे हो और पूरी ग्रहणशीलता खो बैठे हो।

१-१०-१९५२

*

श्रमके बिना कोई अस्तित्व ही नहीं। यदि तुम श्रमसे बच निकलना चाहते हो तो अस्तित्वसे बच निकलो। इसे प्राप्त करनेका एक ही रास्ता है और वह है निर्वाण-मार्ग। वह मार्ग और उसपर चलना सबसे बड़ा श्रम है।

*

पहले मैं हर चीजपर निगरानी रखती थी। पहले मेरे जाने और स्वीकृति दिये बिना कुछ भी नहीं किया जाता था। उसके बाद मैंने काम करनेका और ही तरीका अपनाया। मैंने अपनेआपको सब प्रकारके ब्योरोंसे खींच लिया और दूर रखा मानों ऊपरसे चीजोंका निरीक्षण करती रही और हर कार्यकर्ताको उसके अपने क्षेत्रमें ठीक-ठीक प्रेरणा भेजने लगी।

कार्यकर्ताके आध्यात्मिक विकासके लिये यह परिवर्त्तन जरूरी था। उसे अंदरसे मेरे प्रभावके बारेमें बोध होना चाहिये। लेकिन यह तभी प्राप्त हो सकता है जब सभी कार्यकर्ता सहयोग दें। सहयोगके बिना उचित प्रेरणा प्रभावकारी नहीं होगी। ऊपरसे आनेवाली क्रियाका क्षेत्र विस्तृत होता है। वह सभी विभागोंको एक सामंजस्यपूर्ण इकाईके रूपमें लेती है, अगर कार्यक्षेत्रमें दीवारें खड़ी कर दी जायं जो उसे काटती और तोड़ती जायें तो कार्य कभी आध्यात्मिक संकल्पके अनुसार नहीं हो सकता।

अतः मनमें भली-भांति बिठा लो, सहयोग न हो तो यथार्थ काम भी न होगा।

— माताजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

लन्दनके इंडिया हाउसमें १४ जून, १९७९ को 'मानव एकताके अंतर्राष्ट्रीय केंद्र'का एक समारोह हुआ जिसमें भारतके उच्चायुक्त श्री एन. जी. गोरेने श्रीअरविंदकी सभी पुस्तकोंका संग्रह केंद्रको उपहार स्वरूप दिया। श्री गोरेने कहा, "वर्तमान स्थितिका समाधान एक ऐसे नये जीवनकी खोजमें है जो समस्त मानवजातिको बिना किसी भेद-भावके अपनी बाहोंमें ले ले।" श्री फिशनने कहा, "समयकी सबसे बड़ी आवश्यकता है मानव जीवनकी हर प्रकारकी गतिविधि-में आध्यात्मिकताका पुट देना।"

श्री नवजात वहांपर उपस्थित थे। उन्होंने कहा, "भारत अपने अतीत कालसे समस्त मानवजातिको एक परिवारके रूपमें देखता आया है। यह स्वप्न क्रियात्मक रूप तभी ले सकता है जब भौतिक और आध्यात्मिक जीवनका समन्वय हो। मानवको पहले अपने-आपको जानना होगा और जानकर अपने सारे व्यक्तित्वको अपनी अंतरात्मा-के चारों ओर संगठित करना होगा।" उन्होंने इस बातपर जोर दिया कि ऐसी संस्थाएं स्थापित की जाएं जो क्रियात्मक रूपमें मानव एकता लानेकी कोशिश करें। यह संस्था इस दिशामें एक कदम है।

कलकत्तेके 'श्रीअरविंद भवन'में सर्वश्री शिशिर घोष, निर्मल चंद्र महाजाम, हर प्रसाद मित्र आदि ने माताजी और श्रीअरविंदके बारे-में भाषण दिये।

मद्रासमें १५ जुलाईको डा. श्रीनिवास आयंगरने 'भागवत मुहूर्त' पर भाषण दिया।

'विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम्' ने विभिन्न भारतीय शास्त्रोंके अध्ययन की व्यवस्था की है। हर बृहस्पतिवारकी शामको डा. महेश्वर गीता पढ़ाते हैं।

यह प्रतिष्ठान संस्कृतके प्रचार-प्रसारका कार्य करता है। संस्कृत-प्रेमी इस काममें सहायता दे सकते हैं। इसका सदस्यता-शुल्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

2673

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

१५.०० वार्षिक है। जो लोग सदस्य बनना चाहें वे आवेदन-पत्र-के साथ महामंत्री संस्कृत प्रतिष्ठानम्, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडि-चेरीके पास [illegible]ते हैं।

बंगलौरमें सोसायटीकी शाखा और 'संस्कृत संघ'ने मिलकर भार-तीय संस्कृतिके बारेमें एक कार्यक्रमकी योजना की थी जिसमें स्नातकोत्तर विद्यार्थियोंने भाग लिया। श्री महेश्वरने कई वक्तृताएं दीं और विचार-विनिमयका संचालन किया।

घोषणाएं

डा. इंद्रसेनके तत्त्वावधानमें २८ से ३० सितंबरतक तपोगिरिमें 'बाल भारती साधना'के बारेमें सेमिनार होगा। इसमें तीन निबन्ध पढ़े जायेंगे। एकमें श्रीअरविंदके कुछ उद्धरण हैं, बाकी दो हैं: 'बच्चोंके साथ बच्चा बनना' और 'बालक और मनुष्यका भविष्य'। अधिक जानकारी-के लिये श्री पी. एन. त्रिपाठी, तपोगिरि, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल २६३१५८ को लिखें।

सोसायटीके नये प्रकाशन

फ्लावर्स एंड फ्रेग्रेंस (भाग दो) — इस पुस्तकमें कुछ फूलोंके सुन्दर फोटो और माताजीके बताये हुए उनके आध्यात्मिक अर्थ दिये गये हैं। मूल्य ४.००, डाक-व्यय अतिरिक्त।

श्रीअरविंद सोसायटी ऐन्युअल — मूल्य १०.००, प्राप्ति-स्थान — शब्द, श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी।

राजकुमार — इसमें दो छोटी-छोटी हिन्दी नाटिकाएं हैं जो 'अग्नि-शिखा'में छप चुकी हैं। दोनोंमें मांके अवतरणका चित्रण है। दोनों मंचित की जा सकती हैं। मूल्य २.०० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

अक्तूबर १९७९ वर्ष १०, अंक ३, पूर्णांक ११२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

श्रीअरविंदवाणी : अविकार		१
'श्रीमातृवाणी'से : भूल (प्रश्नोत्तर ५४ से)		३
पुनरुज्जीवन और पुनर्जन्म (खण्ड ३ से)		६
प्राणका परिवर्तन, पुनर्जन्म और व्यक्तिगत उत्तरजीविता (खण्ड ३ से)		८
अंतर्दर्शन और स्वप्न (खण्ड ३ से)		१२
सौंदर्यकी पहचान (प्रश्नोत्तर ५३ से)		१६
चैत्य पुरुष, कामना, आंतरिक तपस्या (प्रश्नोत्तर ५४ से)		१८
कर्म-योग		२१
चैत्यकी अनुभूतियां और मानव जन्म		२३
आपके प्रश्न : सृष्टि और मनुष्य	अनुबेन	२५
सोसायटी समाचार		२८

पुरोधा वार्षिक	१०.००	आजीवन १७५.००
अग्निशिखा वार्षिक	८.००	आजीवन १२५.००

पत्र, चेक, ड्राफ्ट आदि भेजनेका पता :

संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र

प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीअरविन्दवाणी :

अधिकार

लेकिन हमें स्वतंत्र समुदायमें रहनेवाले स्वतंत्र व्यक्तिसे आरंभ करना होगा क्योंकि तभी हम स्वाधीनताके स्वस्थ विकासके बारेमें निश्चित हो सकते हैं और इसलिये भी कि हमें जो एकता प्राप्त करनी है वह पूर्णताकी ओर स्वाधीन रूपसे बढ़ते हुए व्यक्तियोंकी एकता है, मानव यंत्रोंकी एकता नहीं जिन्हें नियंत्रित सामंजस्यमें रखा गया हो या ऐसी आत्माएं हों जिन्हें काट-छांटकर एक या अनेक ज्यामितिके निश्चित रूप दे दिये गये हों। जिस क्षण हम इस विचारको सच्चाईसे स्वीकार करें उसी क्षण हमें मनुष्यपर मनुष्यके पुराने संपत्तिके अधिकारके विचारसे बहुत दूर यात्रा करनी पड़ती है। यह विचार अब भी मनुष्यमें जहां यह अधिकार नहीं है वहां भी लुका-छिपा रहता ही है। हमारे सारे भूतकालमें यह रहा है। बच्चेपर बापका संपत्तिस्वरूप अधिकार, पुरुषका स्त्रीपर, शासक या शासक-वर्ग या शासक शक्तिका शासितोंपर या सरकारका व्यक्तिपर अधिकार। पुराने, पिताकी सत्ताको माननेवालोंमें बच्चा पिताकी चल संपत्ति था। बच्चा बापकी सृष्टि, उसकी अपनी पैदावार, उसका अपना प्रतिरूप था। भगवान् या भगवान्की जगह वैश्व जीवन नहीं बल्कि पिता बालककी सत्ताका कर्त्ता था। स्रष्टाको अपनी सृष्टिपर, उत्पादकको अपने उत्पादनपर पूरा-पूरा अधिकार था। उसे यह अधिकार था कि वह उसे जो चाहे वह बनाये, यह नहीं कि यह देखे कि बच्चेकी अपनी सत्ता अंदरसे क्या है। उसे अधिकार था कि वह बच्चेको उसकी अपनी गभीर आवश्यकताओंके अनुसार नहीं बल्कि पैतृक विचारोंके अनुसार प्रशिक्षित करे और काट-छांटकर रूप दे। उसे अधिकार था कि बालककी प्रकृति, क्षमता और प्रवृत्तिके अनुसार नहीं बल्कि बाप-दादोंके पेशे या उनके चुने हुए पेशेके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांध दे और उसके जीवनके सभी महत्त्वपूर्ण मोड़ोंपर, उसके वयस्क हो जानेपर भी, उसका रास्ता निश्चित करे। शिक्षामें बच्चेको एक विकसनशील आत्मा नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक पाशविक द्रव्य माना जाता था जिसे अध्यापक रूप देता या निर्धारित सांचेमें ढालता था। हम वहांसे दूर जा चुके हैं और अब बच्चेके बारेमें यह विचार काम करता है कि यह एक अंतरात्मा है जिसकी अपनी सत्ता है, अपनी प्रकृति है, अपनी क्षमताएं हैं। उन्हें खोजनेमें हमें उसकी मदद करनी चाहिये, उसे अपने-आपको खोजने, अपनी क्षमताओंकी परिपक्वतामें विकसित होने, भौतिक और प्राणिक ऊर्जाकी पूर्णता, उसकी भावात्मक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सत्ताके अधिक-से-अधिक विस्तार, गहराई और ऊंचाईतक पहुंचनेमें सहायता देनी चाहिये। इसी प्रकार स्त्रियोंकी अधीनता, स्त्रियोंपर पुरुषोंका संपत्ति-भाव, एक बार सामाजिक जीवनमें स्वयंसिद्ध तथ्य था और अभी हालमें ही इसे सफल रूपसे चुनौती दी गयी है। मानव पशुके नरमें यह सहजवृत्ति इतनी मजबूत थी, या हो गयी थी कि धर्म और दर्शनको भी इसे स्वीकृति देनी पड़ी — बहुत कुछ मिल्टनके सूत्रके अनुसार जो पुरुषके अहंकारके बहुत ऊंचे रूपको प्रकट करता है : "वह (नर) केवल भगवान्के लिये और वह (नारी) नरमें विद्यमान भगवान्के लिये" — यदि यूं नहीं "भगवान्की जगह नरके लिये"। यह विचार भी अब धूलमें मिलता जा रहा है यद्यपि उसके अवशेष अभीतक पुराने विधानों, प्रचलित सहजवृत्ति, परंपरागत विचारोंकी दृढ़ता आदिकी स्पर्शिकाओंके द्वारा अभीतक जीवनसे चिपके हैं। इन चीजोंके विरुद्ध इस रूपमें आदेश हो चुका है कि नारीको भी स्वतंत्र व्यक्ति माने जानेका अधिकार है। स्वाधीनता और जनतंत्रके विकासके साथ-साथ शासितोंपर शासकोंके संपत्ति-भावका अंत हो गया है। वह राष्ट्रीय साम्राज्यवादके रूपमें अभीतक बाकी है। यद्यपि अब राजनीतिक आधिपत्यके भावके रूपमें नहीं, व्यापारिक लोलुपताके रूपमें है। बौद्धिक रूपसे भी इस अधिकार या स्वामित्वके अहंपर घातक चोट पड़ चुकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है परंतु जीवनमें वह अभी बचा हुआ है। ऐसा लग रहा था कि इन सबका स्थान ले लेगा व्यक्तिपर प्रशासनका स्वामित्व। लेकिन इसके आध्यात्मिक परिणामस्वरूप युद्धके डरावने प्रकाशने इसे भी पीछे हटा दिया है और हम आशा कर सकते हैं कि ज्यादा स्पष्ट ज्ञानके कारण मानव स्वाधीनताके लिये यह संकट कम होता जायगा। कम-से-कम हम एक ऐसे बिंदुकी ओर बढ़ रहे हैं जहां मानव जाति-को रूप देनेके लिये आत्म-निर्णयके सिद्धांतको उपस्थित और अत्या-वश्यक तो माना ही जायगा, चाहे अभी प्रधान शक्ति न माना जाय।

(वोल्यूम १५, ६०५-६)

'श्रीमातृवाणी'से :

भूल

मधुर मां, एक दिन आपने कहा था कि अगर तुम यह जानते हुए भूल करो कि यह भूल है, तो तुम भागवत "कृपा"को दूर धकेल देते हो और एक दीवार खड़ी कर लेते हो, अपने और भगवान्के बीच एक सचमुच दीवार खड़ी कर देते हो।

मुझे याद नहीं कि मैंने ठीक-ठीक क्या कहा था, लेकिन एक बात है: अगर तुम यह जानते हुए भूल करो कि तुम भूल कर रहे हो और फिर भी करो, तब तुम ऐसा करते हो। अगर तुम अज्ञान-के कारण भूल करते हो, तुम्हें यह पता नहीं होता कि यह भूल है तो बहुत अप्रिय परिणाम आ सकते हैं, पर तुम भगवान्को धकेल नहीं देते, क्योंकि तुमने यह चीज भूलसे की है। इसका मतलब यह नहीं कि दोष दोष नहीं है! वह दोष तो है ही, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, तुम ऐसी अवस्थामें नहीं हो कि भागवत कृपाको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूर धकेल दो। लेकिन अगर तुम जानते हो कि यह दोष है और फिर भी उसे करते हो, तो हर बार ऐसा करते समय तुम भागवत कृपाको दूर धकेलते हो, हर बार जरा और दूर।

माताजी, भूलें होती हैं...हम जानते हैं कि ये भूलें हैं, फिर भी, ऐसा लगता है कि हम उन्हें करनेके लिये बाधित होते हैं। तब ?

किससे बाधित ? ठीक यही तो होता है ! निम्न प्रकृति, अवचेतनाकी सहज-वृत्तियां तुमपर शासन करती हैं और तुमसे ऐसी चीजें करवाती हैं जो तुम्हें नहीं करनी चाहियें। तो यह तुम्हारे संकल्प और स्वीकार करनेवाले समर्पणके बीच चुनाव होता है। हमेशा एक ऐसा क्षण होता है जब तुम निर्णय कर सकते हो। जैसा मैंने कहा, बात यहांतक पहुंच जाती है कि एक ऐसा क्षण भी आता है जब तुम यह निश्चय कर सकते हो कि तुम बीमार होओ या न होओ। यहांतक कि ऐसा क्षण आता है जब तुम मरने या न मरनेका निर्णय कर सकते हो। लेकिन उसके लिये तुम्हारे अन्दर **बहुत ज्यादा** जाग्रत् चेतना होनी चाहिये, क्योंकि यह कालमें एक अत्यन्त सूक्ष्म विन्दु होता है, शायद सेकेंडके सौवें हिस्सेके समान, क्योंकि उससे पहले तुम कुछ नहीं कर सकते, उसके बाद तुम कुछ नहीं कर सकते, ठीक उसी क्षण कर सकते हो। और अगर तुम पूर्णतया जाग्रत् हो, तो तुम उस क्षण निर्णय कर सकते हो।

लेकिन मामूली चीजोंके लिये, उदाहरणके लिये, किसी आवेशके आगे झुकने या उसे अस्वीकार करनेमें बहुत कम अवधि नहीं होती, क्षण-भरकी अवधि भी नहीं होती; तुम्हें काफी समय मिल जाता है, तुम्हें निश्चय ही कई मिनट मिल जाते हैं। और तब दुर्बल समर्पण और नियंत्रण करनेवाले संकल्पके बीच चुनाव होता है। अगर संकल्प स्पष्ट हो, अगर वह सत्यपर आधारित हो, अगर वह सचमुच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यकी आज्ञाका पालन करता हो और स्पष्ट हो, तो हमेशा उसके अन्दर गलत गतिविधिको अस्वीकार करनेकी शक्ति होती है। जब तुम कहते हो: "मैं न कर सका," तो यह एक बहाना होता है, यह सत्य नहीं है। ठीक बात तो यह है कि तुमने उसे ठीक तरह चाहा ही नहीं है। हमेशा "हां" और "ना" कहनेके बीच चुनाव होता है। लेकिन मनुष्य कमजोरीका चुनाव करता है, और फिर, अपने ही सामने यह बहाना बनाता है, कहता है: "ओह, इसमें मेरा दोष नहीं है। वह मुझसे ज्यादा प्रबल था।" अगर वह तुमसे ज्यादा मजबूत था तो यह तुम्हारा ही दोष है। तुम आवेग नहीं हो, तुम सचेतन अन्तरात्मा हो, समझदार संकल्प हो और तुम्हारा कर्तव्य है कि इस बातका ध्यान रखो कि तुम्हारे ऊपर **ये तत्त्व** शासन करें, नीचेसे आनेवाले आवेग नहीं।

मधुर मां, क्या "विचारमें सत्य" और "विचारमें शुद्धि" एक ही चीज है?

ये केवल परिभाषाएं हैं। सब कुछ निर्भर है वाक्यपर, संदर्भपर, और इसपर कि शब्दोंका प्रयोग किस तरह किया गया है।

तो "विचारका सत्य"का मतलब क्या है?

इसका सीधा-सा मतलब है, सत्यको अभिव्यक्त करना।

तो फिर, "विचारकी शुद्धि" क्या है?

अनिवार्य रूपसे जो विचार सत्यको अभिव्यक्त करता है वह निश्चय ही शुद्ध होता है, अन्यथा वह सत्यको अभिव्यक्त न कर पाता।

('श्रीमातृवाणी'; खण्ड ६; प्रश्न और उत्तर, १९५४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनरुज्जीवन और पुनर्जन्म

(पुनरुज्जीवन — निश्चेतनामें खोई भागवत चेतनाका पुनः सचेतन होना; मनुष्यका बाहरी व्यक्तित्व एक मरणशील रचना; अतिमानसिक चेतना ही पिछले-जन्मोंको एक धागेमें पिरोये रहती है और वही उनको सच्चा ज्ञान दे सकती है।)

पुनरुज्जीवन

हमारे लिये पुनरुज्जीवनका अर्थ है पुरानी चेतनाका झड़ जाना, लेकिन यह केवल पुनर्जन्म नहीं है जो अतीतके साथ पूरी तरह संबंध तोड़ देता है। इसमें अपने पुराने स्व, अपनी निचली बाह्य प्रकृतिकी ओरसे मरने और नये सूत्रपातमें एक निरंतरता रहती है। पुनरुज्जीवनके अनुभवमें पुरानी सत्ताको छोड़नेकी गतिमें और उभरती हुई नयी चेतना तथा नयी शक्तिकी गतिमें नजदीकका संबंध होता है, ताकि फेंकी हुई चीजमें जो कुछ उत्तम है वह आनेवाली नयी रचनाके साथ मिल सके। पुनरुज्जीवनका सच्चा अर्थ यह है कि भागवत "चेतना" जिस निश्चेतनामें उतरकर अपने-आपको खो बैठी है, वहांसे, उस अचेतनासे जागती है और मृत्यु, रात्रि और अंधकारके लोकमें उतरनेके बावजूद, अपने बारेमें फिरसे सचेतन होती है। वह अंधकारका लोक हमारी भौतिक रातसे बहुत ज्यादा अंधेरा होता है। अगर तुम उसमें गोता लगाकर आओ तो तुम्हें सचमुच अधिकसे-अधिक अभेद्य रात भी उजली लगेगी ठीक वैसे ही जैसे दिव्य 'चेतना', बिना किसी धुंधलेपनके अतिमानसिक प्रकाशमेंसे लौटकर भौतिक सूर्य काला लगता है। लेकिन उस परम अंधकारकी गहराइयोंमें परम 'ज्योति' छिपी रहती है। वह 'ज्योति', वह 'चेतना' तुम्हारे अंदर जागे, तुम्हारे अंदर महान् पुनरुज्जीवन हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्जन्म — पिछले जीवनोंकी याद

जिस चीजको सामान्यतः पुनर्जन्म कहा जाता है उसकी समस्याको ठीक तरह समझनेके लिये तुम्हें देखना चाहिये कि ऐसे दो तत्त्व हैं जिनपर विशेष रूपसे ध्यान देना चाहिये। पहली चीज है भागवत 'चेतना'की धारा जो ऊपरसे अभिव्यक्त होनेकी कोशिशमें है और इस जगत्में जो उसकी अभिव्यक्तिका क्षेत्र है, किन्हीं रचना-श्रेणियोंको समर्थन देती है। दूसरी है चैत्य चेतना जो नीचेसे ऊपरकी ओर चढ़ती है। यह समयमें विकसित होते हुए भागवत तत्त्वका बीज है और तबतक ऊपर उठता रहता है जबतक कि ऊपरसे उतरनेवाली शक्तिके साथ मेल न हो जाय और वह 'अतिमानस सत्यकी' छाप न पा ले। यह चैत्य चेतना मनुष्यकी आंतरिक सत्ता, वह तत्त्व है जिसमेंसे, उसकी अभीप्साके उत्तरस्वरूप अतिमानस उसे एक सुसंगत व्यक्तित्व देनेके लिये नीचे उतरे तो, उसकी सच्ची अंतरात्मा या जीव गढ़ा जा सकता है। मनुष्यका बाहरी व्यक्तित्व एक मरणशील रचना है जो वैश्व प्रकृतिके तत्त्वोंसे मन, प्राण, शरीरसे बनी है और सब प्रकारकी शक्तियोंके परस्पर प्रभावका क्षेत्र है। चैत्य पुरुष मानों विभिन्न रचनाओंके पीछे रहते हुए उनके अनुभवोंके सार-तत्त्व-को ग्रहण करता रहता है। वह उन जीवनोंकी पृष्ठ-भूमि तो बनाता है, परंतु सतत संपर्क न रहनेके कारण उनकी पूरी स्मृति नहीं रखता। इसलिये केवल चैत्य पुरुषके साथ संपर्क बनाकर पिछले जन्मोंकी बातें याद नहीं की जा सकतीं। जो बातें पिछले जन्मोंकी स्मृतिके नामसे चल जाती हैं उनमें या तो जानबूझकर धोखेबाजी होती है या अंदरसे प्राप्त, इधर-उधर छिट्के संकेतोंके आधारपर बनी हुई कहानी। बहुत-से लोग अपने पशु-जीवनको भी याद रखनेका दावा करते हैं और कहते हैं, वे धरतीके इस या उस भागमें रहनेवाले अमुक बंदर थे। लेकिन अगर कोई बात निश्चित है तो यही कि बंदरका चैत्य-चेतनाके साथ कोई संबंध नहीं होता, इसलिये वह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुभवोंको लेशमात्र भी आगे नहीं बढ़ा सकता। उसके बाहरी कपि-स्वभावके संस्कार उसके पशु-शरीरके साथ ही झड़ जाते हैं। उन्हें जाननेका दावा करना विचारणीय समस्यासे संबद्ध वास्तविक तथ्योंके बारेमें अपना अत्यंत-स्थूल अज्ञान प्रकट करना है। मानव-जीवनके बारेमें भी निश्चित स्मृति तभी रहती है जब चैत्य पुरुष आगे आ गया हो, लेकिन उसमें जीवनके ब्योरेकी हर चीज तबतक याद नहीं रहती जबतक कि चैत्य पुरुष हमेशा सामने न रहता हो और बाहरी सत्ताके साथ पूरी तरह एक न हो गया हो। यह एक नियम ही है कि शरीरके मरते ही भौतिक मन और भौतिक प्राण विलीन हो जाते हैं। वे विघटित होकर वैश्व प्रकृतिमें जा मिलते हैं और उनके अनुभवोंमेंसे कुछ नहीं बच रहता। जबतक कि वे चैत्यके साथ एक न हो जायं ताकि चेतनाके दो भाग न रहकर एक समग्र चेतना बन जाय और सारी प्रकृति केंद्रीय भागवत संकल्पके चारों ओर एक न हो जाय और यह केंद्रीय सत्ता ऊपरकी दिव्य धाराके साथ संबद्ध न हो जाय — जबतक इतना सब न हो जाय तबतक व्यक्तिको उस चेतनाका ज्ञान नहीं मिल सकता। वह अपनी क्रमिक आत्माभिव्यक्तिमें क्रमशः आनेवाले आकारों और जीवनोंके बारेमें भली-भांति परिचित नहीं हो सकता। यह सब हो लेनेसे पहले अपने पिछले जन्मों और उनकी घटनाओंकी बातें करना निरर्थक है। यह मूल्यवान् 'अहं' वर्तमान अस्थायी बाहरी व्यक्तित्व ही है जिसका पीछेकी विविध रचनाओंके साथ, जैसा कि वर्तमान आकारके पीछेकी रचनाके साथ, कोई संबंध नहीं है और वास्तविक सत्ता तो वहीं पीछे रहा करती है। केवल अतिमानस चेतना ही इन सब जन्मोंको एक धागेपर पिरोये हुए गुरियोंकी तरह रखती है और वही उन सबका सच्चा ज्ञान दे सकती है।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणका परिवर्तन, पुनर्जन्म और व्यक्तिगत उत्तरजीविता

यह बहुत जरूरी है कि प्राण बदलनेके लिये राजी हो, उसे परिवर्तन स्वीकार करना सीखना चाहिये। प्राण अपने-आपमें कोई ऐसी चीज नहीं है जिसकी निन्दा करनी चाहिये। वास्तवमें, सभी शक्ति, क्रियाशीलता और प्रोत्साहन वहींसे आते हैं। उसके बिना तुम शांत, बुद्धिमान और अनासक्त भले होओ, पर एकदम गतिशून्य और सृजन-शक्तिहीन हो जाओगे। प्राणकी उंडेली हुई शक्तिके बिना शरीर बिलकुल पत्थरकी तरह जड़ हो जायगा। अगर प्राणको अलग कर दिया जाय तो तुम कोई उपलब्धि न कर सकोगे। लेकिन एक ओजस्वी घोड़ेकी तरह वह ज़िद्दी हो सकता है और इसलिये उसे नियंत्रणकी जरूरत है। तुम्हें अपनी लगाम ठीक रखनी होगी और चाबुक तैयार रखना होगा ताकि इस शक्तिशाली जानवरको वशमें रख सको। हां, एक बार प्राण बदलना स्वीकार कर ले तो फिर न तो कड़ी लगामकी जरूरत रहती है, न चाबुककी। तुम मजेसे हर बाधापरसे उछलते हुए लक्ष्यकी ओर बढ़ते जाते हो। वरना प्राण बाधाओंके आगे लड़खड़ायेगा या उन्हें पार करनेमें सकुचायेगा। यह सोचनेका कोई फायदा नहीं कि अगर बाधाएं न होतीं तो सब कुछ ठीक रहता। वे तो खेलका एक हिस्सा हैं और अगर उन्हें यहां इस जीवनमें, इस धरतीपर न पार किया जाय तो दूसरे जीवनों-में, दूसरे लोकोंमें सैकड़ों गुनी अधिक बाधाओंका सामना करना होगा। सबसे अच्छी बात यही है कि अंतिम रूपसे निश्चय कर लो और अपने प्राणको प्रशिक्षण दो कि वह इस शरीरके रहते बाजीमें दौड़े और अगर संभव हो तो जीत ले। तुम्हारी विजय निश्चित है यदि तुम्हारा भौतिक मन अपना सुधार कर ले, और उस डाकूकी तरह व्यवहार करनेकी जगह जो अपने शिकारको दबाये रहता है, जब कि उसका साथी उसकी संपत्ति लूटता है, प्राणके बदलनेमें सहायता दे।

मृत्युके बाद तुम्हारी सत्ताका भविष्य बहुत कुछ इसपर निर्भर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि तुम्हारे प्राणका परिवर्तन हुआ है या नहीं, अगर तुम अव्यवस्थित आवेगोंकी खिचड़ी-भर रहो तो मृत्युके समय जब चेतना पृष्ठभूमिमें हट जाती है, तुम्हारे विभिन्न व्यक्तित्व अलग-अलग हो जाते हैं और अपने-अपने अनुकूल वातावरणकी तलाशमें इधर-उधर दौड़-भाग करते हैं। एक भाग किसी ऐसे व्यक्तिमें घुस सकता है जिसके साथ उस-की समानता है, दूसरा किसी पशुमें प्रवेश कर सकता है और जो भाग 'भागवत सत्ता'की ओर जाग्रत् रहा है वह केंद्रीय चैत्य सत्ताके साथ जुड़ा रह सकता है। लेकिन अगर तुम पूरी तरह संगठित हो और 'एक' व्यक्तित्वमें बदल चुके हो और विकासके लक्ष्यतक पहुंचने-के लिये कटिबद्ध हो तो तुम मृत्युके बाद सचेतन रहोगे और एक सातत्य बनाये रहोगे।

पुनर्जन्मके बारेमें तो यह स्वीकार करना होगा कि ऐसा कोई नियम नहीं है जो सभी अवस्थाओंमें लागू हो सकता हो। कुछ लोग तुरंत दुबारा जन्म ले लेते हैं—बहुत बार यह होता है कि यदि बच्चे मां-बापसे बहुत लगाव रखते हों तो उनका एक भाग बच्चोंमें आ जाता है। कुछ लोग दुबारा जन्म लेनेमें शताब्दियां या सहस्राब्दियां लगा देते हैं। वे ऐसी आवश्यक परिस्थितियोंके तैयार होनेतक प्रतीक्षा करते हैं जो उनके लिये अनुकूल वातावरण बना दें। अगर कोई यौगिक दृष्टिसे सचेतन हो तो वह अपने अगले जन्मके लिये शरीर तैयार कर सकता है। वह शरीरके जन्म लेनेसे पहले उसे आकार देता और गढ़ता है। इस तरह सचमुच तो नये शरीरका निर्माता वह स्वयं होता है, नये बच्चेके मां-बाप तो केवल गौण और शुद्ध रूपसे भौतिक निमित्त होते हैं।

चलते-चलते मुझे यह भी कह देना चाहिये कि पुनर्जन्मके बारेमें एक भ्रांत धारणा है। लोग मानते हैं कि उनका पुनर्जन्म होता है लेकिन यह स्पष्ट रूपसे भूल है यद्यपि यह ठीक है कि उनकी सत्ताके कुछ अंश औरोंके साथ मिल जाते हैं और इस तरह नये शरीरोंके द्वारा काम करते हैं। उनकी पूरी सत्ताका पुनर्जन्म नहीं होता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका कारण यह साधारण-सा तथ्य है कि जिस चीजको वे अपना सच्चा 'मैं' समझते हैं वह सचमुच कोई वास्तविक व्यक्ति बनी हुई एक सत्ता नहीं है बल्कि उनका बाह्य व्यक्तित्व है, ऐसा व्यक्तित्व जो बाहरी नाम और आकारसे बना है। इसलिये यह कहना गलत है कि 'क'ने 'ख'के रूपमें जन्म लिया है। 'क' का व्यक्तित्व मौलिक रूपमें 'ख'से अलग है इसलिये 'क' 'ख'के रूपमें जन्म नहीं ले सकता। तुम्हारा यह कहना तभी ठीक होगा जब तुम यह कहो कि चेतनाकी एक ही धारा 'क' और 'ख' दोनोंका अपनी अभिव्यक्तिके यंत्रके रूपमें उपयोग करती है। जो हमेशा बना रहता है वह है चैत्य पुरुष जो बाहरी व्यक्तित्व नहीं है, जो गहराईमें स्थित रहता है, वह बाहरी नाम और आकार नहीं है।

तुम यह जानना चाहते हो कि क्या सब मनुष्य शरीरके विलयके बाद अपनी विशिष्टता बनाये रखते हैं। साधारण जन अपने शरीर-के साथ इतने अधिक एक होते हैं कि शरीरके विघटनके बाद उनमें कुछ नहीं बचता। ठीक ऐसी बात नहीं है कि उनमेंसे कुछ नहीं बचता। प्राण और मनका तत्त्व हमेशा बचा रहता है लेकिन वह भौतिक व्यक्तित्वके साथ एकात्म नहीं होता। जो बच रहता है उसपर बाहरी व्यक्तित्वकी स्पष्ट छाप नहीं होती क्योंकि भौतिक व्यक्तित्व आवेगों, इच्छाओं और शारीरिक कार्यकलापके संबंध और सहयोगसे बने अस्थायी घालमेलसे ही संतुष्ट रहता है और शरीरके कार्यकलापके बंद होनेके साथ ही स्वाभाविक रूपसे यह ऊपरी एकता भी समाप्त हो जाती है। हां, यदि विभिन्न भागोंपर मानसिक संयम रहा हो और उन्हें किसी समान मानसिक आदर्शके अधीन रखा गया हो तो एक प्रकारका सच्चा व्यक्तित्व बना रह सकता है जिसमें पार्थिव जीवनकी स्मृति सचेतन रूपसे बनी रह सकती है। कहा जा सकता है कि कलाकार, दार्शनिक तथा अन्य विकसित लोग जो अपने प्राणको एक हदतक परिवर्तित कर लेते हैं और अपने व्यक्तित्वको संगठित बना लेते हैं, वे बचे रहते हैं क्योंकि वे अपनी बाहरी चेतनामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी चैत्य सत्ताकी कुछ छाया ले आते हैं। चैत्य सत्ता स्वभावसे ही अमर है और उसका लक्ष्य है क्रमशः सारी सत्ताका केंद्रीय भागवत 'संकल्प'के चारों ओर निर्माण करना।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

अन्तर्दर्शन और स्वप्न

(अन्तर्दर्शन और उनको समझना; समझदार आदमी और छः घोड़ोंवाला रथ; स्वप्नों और स्वप्नलोकके साथ बरतनेकी विधि)

साधारण धारणा है कि अन्तर्दर्शन उच्च आध्यात्मिकताके चिह्न होते हैं। क्या यह सच है?

नहीं, यह जरूरी नहीं है। इसके अतिरिक्त इन दृश्योंका दीखना एक बात है, किंतु जो कुछ देखा है उसे समझना और उसका ठीक अर्थ लगाना बिलकुल दूसरी बात है और बहुत अधिक कठिन है। साधारणतया, जिन लोगोंको इस प्रकारके दृश्य दिखायी देते हैं वे धोखा खा जाते हैं। क्योंकि वे अपनी इच्छाओं, आशाओं और धारणाओंके अनुसार इनका अर्थ लगाते या इनकी व्याख्या करते हैं। और फिर, कई भिन्न-भिन्न प्रकारकी भूमिकाएं हैं, यहां तुम ये दृश्य देख सकते हो। ये मानसिक भूमिकापर दिखायी देते हैं, प्राणकी भूमिकापर दिखायी देते हैं और कुछ ऐसी भूमिकापर दिखायी देते हैं जो इस स्थूल-भौतिक जगत्के अति समीप है। तीसरी तरहके दृश्य इस प्रकारकी आकृतियों और ऐसे प्रतीकोंमें प्रकट होते हैं जो बिलकुल स्थूल भौतिक मालूम होते हैं। क्योंकि ये अत्यंत स्पष्ट, यथार्थ और स्पृश्य होते हैं। और यदि तुम इनका अर्थ लगाना जानो तो तुम्हें मनुष्योंकी अवस्था और उनकी आंतरिक स्थितिके बारेमें बिलकुल ठीक-ठीक निर्देश मिल सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक उदाहरण ले लें। यह एक ऐसा अन्तर्दर्शन है जो सचमुच एक आदमीको हुआ था। उसने देखा कि सूर्यके प्रकाशसे आलोकित एक सड़क है जो दुरारोह खड़े पर्वतकी चोटीकी ओर जा रही है। इस सड़कपर एक बड़ा भारी रथ चल रहा है, जिसे छः मजबूत घोड़े बड़ी कठिनाईसे धीरे-धीरे खींच रहे हैं। रथ मंद गतिसे पर लगातार आगे बढ़ रहा है। इतनेमें एक आदमी आता है, इस परिस्थितिका अवलोकन करता है, और रथके पीछे जाकर उसे पीछेसे ठेलने लगता है अथवा ठेलकर पहाड़पर पहुंचानेकी चेष्टा करता है। अब एक समझदार आदमी आता है और कहता है, "तुम व्यर्थ परिश्रम क्यों कर रहे हो? क्या तुम समझते हो कि तुम्हारी इस मेहनतका कोई फल होगा? तुम्हारे लिये यह असंभव कार्य है। इसे करनेमें घोड़ोंको भी कठिनाई हो रही है।"

अब, इस अन्तर्दर्शनका अर्थ समझनेकी चाबी छः घोड़ोंके रूपकमें है। घोड़े शक्तिके प्रतीक हैं और छः संख्या 'दिव्य सृष्टि'का चिह्न है; अतः छः घोड़ोंका अर्थ हुआ 'दिव्य सृष्टि'की शक्तियां। रथ आत्मसाक्षात्कारका प्रतीक है, उस वस्तुका प्रतीक है जिसे उपलब्ध करना है, प्राप्त करना है और उस शिखरतक पहुंचाना है जहां दिव्य 'प्रकाश'का निवास है। यद्यपि ये सृजन करनेवाली शक्तियां दिव्य हैं, किंतु इस आत्मप्राप्तिको पूर्ण करनेका कार्य इनके लिये भी कष्टसाध्य है; क्योंकि इनको महान् विरोधका सामना और प्रकृतिके अधोगामी खिंचावके विरुद्ध लड़ना पड़ता है। अब बेचारा मानव प्राणी आता है जो अपने अभिमान और अज्ञानसे ग्रस्त है, जिसके पास मानसिक शक्तियोंकी जरा-सी पूंजी है, और वह समझता है कि वह भी कुछ है और कुछ कर सकता है। उसके लिये तो सबसे उत्तम यही है कि रथमें आरामसे जा बैठे और घोड़ोंको खींचने दे।

स्वप्न बिलकुल अलग चीज हैं। इनकी व्याख्या करना अधिक कठिन है, क्योंकि हर एक व्यक्तिके लिये उसकी अपनी विशेष प्रकारकी कल्पना-मूर्तियोंका एक स्वप्न-जगत् होता है। अवश्य ही ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न भी होते हैं जिनका कुछ विशेष अर्थ नहीं होता, वे स्वप्न जो चेतनाके अत्यंत ऊपरी और भौतिक स्तरसे संबंध रखते हैं और इधर-उधरके विचारों, आकस्मिक संस्कारों, यंत्रवत् होनेवाली प्रतिक्रियाओं अथवा प्रतिघातजनित क्रियाओंके फलस्वरूप होते हैं। इनका कोई बंधा हुआ या संगठित रूप, आकार और अर्थ नहीं होता। ये कम ही याद रहते हैं और प्राय: चेतनापर अपना कोई चिह्न भी नहीं छोड़ते। परंतु वे स्वप्न भी जिनका जन्म किसी अधिक गहरे स्तरसे होता है, प्राय: अस्पष्ट ही होते हैं, क्योंकि वे विशेष रूपसे व्यक्तिगत होते हैं। इन स्वप्नोंकी बनावट प्राय: पूर्णतया उन व्यक्तियोंके अपने निजी अनुभव और स्वभाव-विशेषपर निर्भर करती है। अन्तर्दर्शन भी ऐसे प्रतीकोंके बने हुए होते हैं जिनका विश्वव्यापी अर्थ नहीं होता। ये प्रतीक भिन्न-भिन्न जाति, परंपरा और धर्मके अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकारके होते हैं। हो सकता है कि कोई प्रतीक विशेष रूपसे ईसाई धर्मका हो, दूसरा विशेष रूपसे हिन्दू धर्मका, तीसरा सामान्य रूपसे पौरस्त्य लोगोंका हो और चौथा सामान्य रूपसे पाश्चात्य लोगोंका। परंतु स्वप्न तो एकदम व्यक्तिगत होते हैं, वे दैनिक घटनाओं और संस्कारोंपर निर्भर होते हैं। किसी मनुष्यके लिये किसी दूसरे मनुष्यके स्वप्नका आशय बताना या अर्थ लगाना अत्यंत कठिन है। प्रत्येक मनुष्य एक-दूसरेके लिये एक बंद घेरेके समान है। परंतु प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने स्वप्नोंका अध्ययन कर सकता है, उनका मतलब खोल सकता और उनके अर्थका पता लगा सकता है।

अब स्वप्नों और स्वप्नलोकके साथ बरतनेकी विधि देखें। पहले तो तुमको सचेतन, अर्थात् अपने स्वप्नोंसे सचेतन होना चाहिये। अपने जाग्रत् कालकी घटनाओं और इन स्वप्नोंमें जो संबंध है उसका निरीक्षण करो। यदि तुम्हें रात्रिकालकी अपनी अवस्था याद हो तो बहुधा तुमको इस बातका पता लगेगा कि तुम्हारी दिनकी अवस्थाका कारण तुम्हारी रात्रिकी अवस्थामें निहित है। निद्राकी अवस्थामें तुम्हारी मनोमय, प्राणमय या अन्य भूमिकाओंपर कुछ-न-कुछ क्रिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती ही रहती है। वहां जो घटनाएं घटती हैं वे तुम्हारी जाग्रत् चेतनापर शासन करती हैं। उदाहरणार्थ, कुछ लोग सिद्धि प्राप्त करनेके लिये बहुत आतुर होते हैं और दिनके समय बहुत अधिक प्रयत्न करते हैं। वे सो जाते हैं और जब दूसरे दिन उठते हैं तो पहले दिनके प्रयत्नके फलका नाम-निशान भी नहीं पाते। उन्हें फिर-से उसी भूमिको पार करना पड़ता है। इसका यह अर्थ है कि उन-का वह प्रयत्न और उससे जो कुछ प्राप्त हुआ था वह सत्ताके केवल अधिक ऊपरी और जाग्रत् भागोंसे ही संबंध रखता था और सत्ताके गभीरतर और सुप्त भाग उससे अछूते ही थे। नींदमें तुम उन अचेतन भागोंके पंजेमें पड़ गये, वे खुल पड़े और तुमने सचेतन काल-में कठिन परिश्रम करके जो कुछ कमाया था उसे निगल गये।

सचेतन होओ! न केवल दिन, बल्कि रात्रिकालके जीवनसे भी सचेतन होओ! पहले तुमको सचेतनता प्राप्त करनी है, फिर अधि-कार। तुममेंसे जिनको अपने स्वप्न याद रहते हैं उनको यह अनुभव हुआ होगा कि स्वप्नके समय भी उन्हें इस बातका ज्ञान था कि यह स्वप्न है, वे जानते थे कि यह एक ऐसा अनुभव है जो स्थूल-भौतिक जगत्का नहीं था। एक बार ज्ञान पा लेनेके बाद वहां भी — स्वप्न जगत्में भी — तुम उसी तरह कार्य कर सकते हो जैसे स्थूल जगत्में करते हो, तुम स्वप्नके समय भी अपने सचेतन संकल्पका प्रयोग कर सकते हो और स्वप्नानुभवकी समस्त गतिविधिको बदल सकते हो।

और जैसे-जैसे तुम अधिकाधिक सचेतन होते जाओगे, तुम रात्रिमें भी अपनी सत्तापर उतना अधिकार रखना आरंभ कर दोगे जितना दिनमें रखते हो, शायद उससे भी अधिक। क्योंकि रातको तुम कम-से-कम एक अंशमें अपने शरीरकी यांत्रिकताकी गुलामीसे मुक्त रहते हो। शारीरिक चेतनाके व्यापारोंको वशमें रखना अधिक कठिन है, क्योंकि ये मनोमय और प्राणमय व्यापारोंकी अपेक्षा अधिक कठोर होते हैं और परिवर्तनके लिये अपेक्षया कम राजी होते हैं।

रात्रिमें मन और प्राण — विशेषतः प्राण — बहुत अधिक क्रिया-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शील रहते हैं। दिनमें उनपर एक नियंत्रण रहता है, क्योंकि भौतिक चेतना उनकी स्वतंत्र लीला और अभिव्यक्तिको दबाये रहती है। परंतु निद्राके समय यह नियंत्रण हट जाता है और वे अपनी स्वाभाविक और स्वतंत्र गतियोंके साथ बाहर निकल पड़ते हैं।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ३)

सौन्दर्यकी पहचान

अपने किसी लेखमें आपने कहा है कि सौंदर्य विश्व व्यापक है और उसे देखने और पहचाननेके लिये व्यक्तिको सार्वभौम होना चाहिये।

हां, मेरा मतलब है कि उसे देखने और पहचाननेके लिये तुम्हारे अंदर सार्वभौम चेतना होनी चाहिये। उदाहरणके लिये, यदि तुम्हारी चेतना एक जगहतक सीमित है, यानी, राष्ट्रीय चेतना है (किसी एक देशकी चेतना) तो जो चीज एक देशमें सुंदर है, वह दूसरे देशके लिये सुंदर नहीं है। सौंदर्यका भाव भिन्न होता है। उदाहरणके लिये, मैं तुम्हें एक कहानीसे हंसा सकती हूं। मैं पैरिसमें दहोमीके एक राजकुमारको जानती थी (वह नीग्रो था — दहोमीका राजा नीग्रो था), और यह लड़का पैरिसमें कानून पढ़नेके लिये आया था। वह फरासीसी लोगोंकी तरह फरासीसी भाषा बोलता था। फिर भी वह रहा नीग्रो ही — समझे? और उससे पूछा गया (वह हमें अपने छात्र जीवनकी तरह-तरहकी कहानियां सुनाया करता था), किसीने मेरे सामने उससे पूछा: "जब तुम्हें ब्याह करना होगा तो किससे ब्याह करोगे?" — "ओह! स्वभावतः अपने देशके किसी लड़कीसे। केवल वे ही सुंदर होती हैं।" (हंसी) जो लोग नीग्रो नहीं हैं उनके लिये नीग्रो-सुंदरताको देखना जरा कठिन है। लेकिन, यह बिलकुल सहज था। उसे पूरा विश्वास था कि किसीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये इससे अलग तरह सोचना असंभव है...। "केवल मेरे देशकी स्त्रियां ही सुंदर होती हैं।"

हर जगह यही बात है। केवल वे जिन्होंने कलात्मक रसका स्वाद लिया है, जो बहुत घूमे-फिरे हैं और बहुत कुछ देखा है, जिन्होंने अपनी चेतनाका विस्तार किया है, वे ही इस तरह मतांध नहीं रहते। लेकिन किसी व्यक्तिको उसकी जातिकी विशेष रुचियोंसे, रससे बाहर निकालना बहुत कठिन है। अब मैं देशकी बात नहीं कर रही, जातिकी बात कर रही हूं। यह बहुत कठिन है। वह है, जानते हो, एकदम तलीमें छिपा हुआ, अवचेतनामें, और वह तुम्हारे जाने बिना ही, बिलकुल सहज रूपमें, बिलकुल स्वाभाविक तौरपर वापिस आ जाता है। इस बातपर भी कि तुम्हारी जातिकी स्त्री और सब जातियोंकी स्त्रियोंसे हमेशा ज्यादा सुंदर होती है। सहज रूपसे, यह सहज रुचि है। मेरा यही मतलब है। तुम्हें इससे ऊपर उठना चाहिये। मैं उन लोगोंकी बात ही नहीं कर रही जिनके लिये अपने परिवार या अपनी जातिसे बाहरकी हर चीज बुरी और कुरूप होती है। मैं उन लोगोंकी बात बिलकुल नहीं कर रही। मैं उन लोगोंकी बात नहीं कर रही जिनके लिये एक देश किसी दूसरे देशसे कहीं ज्यादा सुंदर है। फिर भी ये लोग साधारण विचार-धारासे काफी ऊंचे उठ चुके हैं। मैं जातिके सवालपर भी नहीं बोल रही...। यह बहुत कठिन है। तुम्हें एकदम नीचे जाना होगा, एकदम नीचे अपनी अवचेतनामें — या उससे भी नीचे — ताकि इन चीजोंकी जड़ोंको खोज सको। इसलिये अगर तुम अपने-आप सौंदर्यकी भावना पाना चाहो — जो इस प्रकारकी जातीय रुचियोंसे स्वतंत्र हो, तो तुम्हारे अंदर वैश्व चेतना होनी चाहिये। अन्यथा तुम उसे कैसे पा सकते हो ? तुम्हारे अंदर हमेशा पसंदें बनी रहेंगी। चाहे वे सक्रिय और सचेतन पसंदें न हों, वे अवचेतन पसंदें होती हैं, सहज वृत्ति होती है। इसलिये सब रूपोंसे मुक्त सच्चे सौंदर्यको जाननेके लिये सब रूपोंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊपर उठना होगा। और एक बार तुम उसे सब रूपोंके परे जान लो तो तुम उसे जिस किसी रूपमें भी, किसी भी तरह पहचान सकोगे उदासीन दृष्टिसे। और यह चीज बहुत मजेदार हो उठती है।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ५; प्रश्न और उत्तर, १९५३)

चैत्यपुरुष, कामना, आन्तरिक तपस्या

"...चैत्य पुरुषको जाग्रत और सामने रखो": "सामने" का क्या मतलब है, मधुर मां?

इसका मतलब है कि उसे चेतनाके सामने रखो, पीछे धकेलने और पृष्ठभूमिमें रखनेकी जगह, जहांसे वह कभी-कदास ही दिखायी दे; उसे चेतनाके ठीक सामने रखो, सक्रिय चेतनामें रखो। हर हालतमें, तुम्हें यह चाहना चाहिये और यह करनेकी कोशिश करनी चाहिये।

"कामना — शक्तिको नीचे खींचनेकी ओर ले जाती है।" इसका क्या मतलब है?

तुम्हारे अंदर दिव्य ज्योति, दिव्य ज्ञान और सब तरहकी चीजोंके लिये अभीप्सा है। अब, अगर तुम्हारी अभीप्साके साथ कामना मिल जाय तो केवल अभीप्सा करने और उत्तरके लिये प्रतीक्षा करनेकी जगह, तुम खींचना शुरू करोगे, तुम उन्हें अपनी ओर उस तरह खींचोगे जैसे आदमी अपनी कामनाकी चीजोंको खींचता है। तो दिव्य शक्ति, दिव्य प्रकाश, दिव्य चेतना और दिव्य सत्यके लिये अपनी अभीप्साके उत्तरकी प्रतीक्षा करनेकी जगह, तुम उन्हें यूं, अपनी ओर बड़ी अहंकारमय गतिके साथ खींचते हो, मानों कोई रस्सी या कोई और चीज खींच रहे हो। इस तरह उत्तरमें कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी चीज आ सकती है। उदाहरणके लिये सच्चा प्रकाश होनेकी जगह, झूठा प्रकाश आ सकता है जो तुम्हें धोखा देनेके लिये चमकदार रूप धारण कर लेगा; सच्ची शक्तिकी जगह, विरोधी प्राणमय शक्ति आ सकती है जो तुमपर अधिकार करना चाहती है। मतलब यह कि जब तुम्हारे अंदर अभीप्सा हो तो अच्छा यही है कि उसमें कोई कामना न मिलने पाये, क्योंकि कामनाएं हमेशा सारी चीजको बिगाड़ देती हैं।

"आंतरिक तपस्या"का ठीक-ठीक अर्थ क्या है?

आंतरिक तपस्या? इसका मतलब है चरित्रके लिये, सत्ताकी मनोवैज्ञानिक गतिविधिको बदलनेके लिये, यथार्थतः आवेगोंको जीतनेके लिये, अहंकारपर विजय पानेके लिये, भयोंसे पिंड छुड़ानेके लिये की गयी तपस्या। यही आंतरिक तपस्या है।

बाह्य तपस्या है संन्यासियों या हठयोगियोंकी तपस्या; योगके लिये बाह्य साधनोंका उपयोग करना बाह्य तपस्या है। लेकिन आंतरिक तपस्यामें अपने चरित्रपर ध्यान दिया जाता है और उसे बदलनेकी कोशिश की जाती है।

मधुर मां, इच्छा करने (willing) और कामना करने (desiring) में क्या फर्क है?

वे दोनों एक ही चीज बिल्कुल नहीं हैं। जब तुम देखते हो कि कोई चीज की जानी चाहिये, उदाहरणके लिये, तुम्हें लगे कि यह करना अच्छा है—अपनी बुद्धिकी बात लो, तुम्हारी बुद्धि निश्चय करती है कि यह करना चाहिये, तो तुम्हारी इच्छा काम करना शुरू करती है, और तुमसे वह सब करवाती है जो इसके लिये जरूरी है। तुम्हारी इच्छा एक कार्यकारी शक्ति है जिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि या किसी उच्चतर शक्तिकी सेवामें रहना चाहिये। यह एक समन्वित और व्यवस्थित चीज है जो एक योजनाके अनुसार पूर्णतः नियंत्रित ढंगसे यथार्थ रूपमें काम करती है।

कामना एक आवेग है। वह तुम्हें पकड़ लेती है . . . यह जरूरी नहीं है कि वह तुम्हें किसी सचेतन विचारके साथ पकड़ती हो। यह एक ऐसा आवेग है जो तुम्हें किसी चीजपर अधिकार करनेके लिये धकेलता है। तुम अपनी इच्छाको, कामनाकी सेवामें लगा सकते हो, पर कामना इच्छा नहीं है। कामना एक आवेग है। ऐसे लोग होते हैं जो कामनासे भरे होते हैं पर उनमें इच्छा नहीं होती। हम कह सकते हैं कि कामनाएं उन्हें खा डालती हैं; पर इससे कुछ नहीं होता, क्योंकि उनमें कामनाओंको पूरा करनेकी इच्छा-तक नहीं होती। अधिकतर लोग उनके पास जो थोड़ी-बहुत इच्छा-शक्ति होती है उसे अपनी कामनाकी सेवामें लगा देते हैं। लेकिन इच्छा एक शक्ति है जिसमें व्यवस्था करनेकी क्षमता होती है और उसे जिस किसी उद्देश्यके लिये काममें लाया जा सकता है। जब तुम्हारे अंदर इच्छा-शक्ति हो तो (यहां कुछ शब्द सुनायी नहीं दिये) . . . किसी निश्चित उद्देश्यके लिये। यह है इच्छा।

तुम्हें कामनाको इच्छा न समझ लेना चाहिये। कामना एक आवेग है, वह तुम्हें पकड़ लेती है, जकड़ लेती है, और अगर तुम कामनाको अपनी मरजीके अनुसार करने दो तो वह तुमसे कुछ भी करवा लेती है और वह तुम्हारी इच्छाका उपयोग करती है। लेकिन कामना साधारणतः उग्र, आवेगमय और कुछ समयके लिये होती है। ऐसा बहुत कम होता है कि वह लंबे समयतक रहे; उसके अंदर सतत प्रयासके लिये न तो उपादान होता है, न व्यवस्था। जब कोई कामना तुम्हें आ पकड़ती है तो वह तुमसे कुछ भी करवा सकती है — लेकिन करवायेगी आवेगमें, किसी पद्धतिके अनुसार नहीं।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ६; प्रश्न और उत्तर, १९५४; २४ नवंबर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्म-योग

श्रीअरविंदाश्रममें कामपर बहुत जोर दिया जाता है। हमारी आध्यात्मिक यात्राके लिये कर्म-योगका इतना अधिक महत्त्व क्यों है?

योगकी सभी राहें मनुष्यको उच्चतर चेतना और भगवान्‌के साथ ऐक्यकी ओर ले जाती हैं। कर्म-योग भी उनमेंसे एक है। यह किसी हालतमें भक्ति-योग या ज्ञान-योगसे कम नहीं है।

यह मानना एक बहुत बड़ी गलती है कि कर्म हमेशा बंधन ही होता है। नहीं, माताजी और श्रीअरविंदके अनुसार, कर्म हमें बंधनसे मुक्त करने और भगवान्‌के पास ले जानेका बड़ा अच्छा उपाय हो सकता है, सब कुछ इसपर निर्भर है कि हम किस भावसे करते हैं।

अगर हम कामनाके वश, स्वार्थके लिये — चाहे वह पेट भरनेके लिये हो, धन इकट्ठा करनेके लिये हो या परोपकारीकी पदवी पानेके लिये हो — कर्म करते हैं, उसमें बंधे रहते हैं या उसके द्वारा अपनी निचली वृत्तियोंसे बंधे रहते हैं, तो वह कर्म-बंधन होता है।

लेकिन अगर हमारा कर्म अहं और उसकी कामनाओंसे मुक्त हो, अगर हम कामको इस रूपमें करें कि यह भगवान्‌का काम है और वे ही हमारेद्वारा काम करवाते हैं, तो यह काम ऊपर उठनेमें बहुत मदद देता है।

लेकिन हां, यह जरूरी है कि हम अपनी वासनाओं, अपनी दुर्बलताओंकी जिम्मेदारी भगवान्‌पर डालनेकी कोशिश न करें। हमने ऐसे लोग देखे हैं जो काममें भूल करनेपर, समयपर न पहुंचनेपर और अपनी इसी प्रकारकी अन्य त्रुटियोंपर कह देते हैं: "यह भगवान्‌की मरजी है।" यह उचित नहीं है।

एक कहानी प्रसिद्ध है। किसीने एक बहुत सुन्दर बाग लगाया और बड़े उत्साहके साथ लोगोंको बुला-बुलाकर दिखाना शुरू किया। बागकी प्रशंसा सुन-सुनकर उसका अहं और भी फूलने लगा। इंद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवताने सोचा : 'इसका उद्धार करना चाहिये।' वे एक बूढ़े ब्राह्मण-का रूप धारण करके उस बगीचेके पास जा खड़े हुए और लगे फूलोंको सराहने।

बगीचेका मालिक आया और बड़े आदरके साथ ब्राह्मणको अंदर ले गया और बगीचेका चप्पा-चप्पा दिखाया। बगीचेमें एक जगह बंज़र पड़ी थी जहां घासका एक पत्तातक न था।

ब्राह्मणने पूछा : "यह क्या है?"

मालिकने टाल-मटोल की। ब्राह्मणका आग्रह बढ़ा। मालिक-को कहना पड़ा : "यहां गो-हत्या हो गयी थी।"

ब्राह्मणने पूछा : "इसका क्या मतलब है? गो-हत्या हुई तो किसी-ने तो की होगी, वह कौन था?"

मालिकने कहा : "इंद्रसे गो-हत्या हो गयी थी।"

ब्राह्मणने स्पष्टीकरण मांगा तो मालिक बोला : "हाथमें इंद्रका वास होता है। मेरे हाथसे गो-हत्या हो गयी थी। लेकिन हाथ-में इंद्रका वास माना जाता है, इसलिये हत्या मैंने नहीं, इंद्रने की।"

यह सुनते ही ब्राह्मण देवता अपने असली रूपमें आ गये और बोले : "वाह, यह भी ठीक है, जब तुम्हारा हाथ कुछ अच्छा काम करे तो श्रेय तुम्हें और बुरा काम करे तो मेरा दायित्व!"

तो यह है असली बात। हमें अपने जीवनको भगवान्‌की इच्छा-के अनुसार ढालनेकी कोशिश करनी चाहिये, यह नहीं कि अपने आवेशोंको, अपनी कामनाओं, वासनाओंको उनके सिरपर थोपकर अलग हो जाएं। इससे उनका कुछ न बिगड़ेगा, नुकसान हमें ही होगा।

कर्म-योगका पहला कदम है अपने मानव संकल्पका, अपनी इच्छा-शक्तिका भगवान्‌के प्रति उत्सर्ग। हम जो कुछ करते हैं इच्छा-शक्तिके करानेसे ही करते हैं, वह जिस तरफ हांकती है उसी तरफ बढ़ते हैं। वह भगवान्‌की ओर मुड़ जाय तो सब कुछ ज्यादा आसानीसे भगवान्‌की ओर मुड़ जायगा। लेकिन यह काम भी पूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरह अपने ही बल-बूतेपर नहीं होता; इसके लिये भी भगवान्‌की सहायताकी जरूरत होती है। हम जितना कर सकें, करें और बाकीके लिये उनकी सहायता मांगें तो हम ज्यादा विशाल चेतनामें पहुंच सकेंगे जहांसे हम अपनी इच्छाको भगवान्‌की इच्छाके साथ एक कर सकेंगे।

लेकिन कठिनाई यह है कि हम चाहते हुए भी यह नहीं कर पाते। हमारे अंदर कोई चीज अज्ञान, अंधकारके साथ चिपकी रहना चाहती है, एक ऐसी स्वाधीनताके लिये मतवाली होती है जो वास्तवमें बहुत बड़ा बंधन है। वह चीज समर्पण या उत्सर्गके नामसे ही चिढ़ती है और विद्रोह करनेके लिये तैयार रहती है।

हमारा मानव मन भगवान्‌के प्रति समर्पणके विरुद्ध बहुत सुन्दर और युक्तिसंगत तर्क ला खड़ा करता है और हमारे ऊपर उनकी एक मोहिनी-सी छा जाती है। सचमुच इसके पीछे और कोई नहीं, हमारा अहंकार ही होता है। सच्चा कर्म-योग तभी संभव है जब हम अहंकारकी जकड़से मुक्त होकर पहले उनके लिये, फिर, उनके यंत्र बनकर कर्म कर सकें, हमारा एक-एक, छोटा-बड़ा काम उन्हींका काम हो जाय। सच्चे भावसे किया गया हर एक काम शरीरद्वारा की गयी भगवान्‌की पूजा और आराधना है।

चैत्यकी अनुभूतियां और मानव जन्म

मधुर मां, क्या व्यक्तिका जीवन इस बातपर निर्भर होता है कि उसका चैत्य पुरुष कैसे अनुभव प्राप्त करना चाहता है?

बहुत अधिक!

मैं आज ही किसीसे इस विषयमें बात कर रही थी, और मैंने कहा कि अगर तुम अपने चैत्यके बारेमें पूरी तरह सचेतन हो सको, तो साथ-ही-साथ आवश्यक रूपसे अपने वर्तमान जीवन और इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्य जो अनुभूति प्राप्त करना चाहता है उसको जान लोगे और उसे आधे सचेतन रूपमें और आधेसे अधिक कुछ-कुछ अचेतन रूपमें पानेकी जगह, तुम उस अनुभूतिको छोटा कर सकते हो, और इस तरह सामान्य रूपमें चैत्य जिस अनुभूतिको पानेमें कई जीवन लगा देता है उसे कुछ ही वर्षोंमें पानेमें उसकी मदद कर सकते हो। मतलब यह कि यह सहायता पारस्परिक है। जब बाहरी जीवनपर चैत्यका प्रभाव हो तो वह उसमें प्रकाश, सुव्यवस्था, स्थिर शांति और भागवत संपर्कका आनंद लाता है। साथ ही, अगर भौतिक सत्ता, यानी, शरीर चेतना, यदि चैत्यके साथ तादात्म्य हो तो वह जानती है कि चैत्य सत्ता किसी प्रकारकी अनुभूति चाहती है, तो वह इस अनुभूतिको बहुत कम समयमें लानेमें सहायता कर सकती है, और इससे न केवल समयकी बचत होती है, बल्कि चैत्य इसके लिये कई जन्म लेनेसे बच जाता है। यह पारस्परिक सहायता है।

संक्षेपमें, योगका यही मतलब है। योग तुम्हें अपनी नियतिके बारेमें पूरी तरह सचेतन होनेमें सहायता देता है, यानी, इस जगत्में तुम्हारे जीवनके लक्ष्यके बारेमें, केवल वर्तमान मुहूर्तमें नहीं, भूतकालमें जो था और भविष्यमें जो होगा, उस सबके बारेमें पूरी तरह सचेतन होनेमें सहायता करता है। और इस ज्ञानके कारण तुम चेतनाकी एकाग्रताद्वारा इन सब अनुभूतियोंको बहुत कम समयमें पाकर कई जन्मोंकी बचत कर सकते हो, यानी, कुछ ही वर्षोंमें वह कर सकते हो जिसे प्राप्त करनेमें कई जीवन लग सकते थे। इन सब अनुभूतियोंके द्वारा चैत्य पुरुष अपनी पूर्ण परिपक्वता, अपनी मुक्तिकी ओर उत्तरोत्तर बढ़ता है — जिसका मतलब यह है कि फिर उसे और जन्म लेनेकी जरूरत नहीं रहती। अगर वह भौतिक जगत्में वापिस आना चाहे तो लौट आता है, क्योंकि उसे वहां कुछ काम करना होता है और वह स्वतंत्र रूपसे यहां लौटनेका निश्चय करता है। लेकिन तबतक, मुक्ति पानेतक, अपने लिये आवश्यक सभी अनुभूतियां पानेके लिये वह लौटनेको बाधित होता है। अगर ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो कि भौतिक सत्ता इतनी विकसित हो जाय, इतनी सचेतन हो कि उसमें इतनी सद्भावना हो कि वह चैत्य सत्ताके बारेमें पूरी तरह अभिज्ञ हो जाय, तो वह ऐसी परिस्थितियां पैदा कर सकती है कि चैत्य पुरुषकी परिपक्वता-प्राप्तिके लिये जरूरी सभी बाहरी अनुभूतियोंको इसी जीवनमें प्राप्त कर ले।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ६; प्रश्न और उत्तर १९५४)

आपके प्रश्न :

सृष्टि और मनुष्य

श्रीअरविंदाश्रम, पांडिचेरी-६०५००२
जुलाई १९७८

प्रिय महोदय,

जबलपुरके श्री दिलीप भट्टाचार्यने आपकी ओरसे 'एक प्रश्न पूछा है। इसका विस्तृत उत्तर पानेके लिये आपको गहरा अध्ययन करना होगा। संक्षेपमें काम-चलाऊ उत्तर सुन लीजिये :

शास्त्रोंमें कहा है कि सृष्टिकी रचना भगवान्‌की इच्छासे हुई; उन्होंने कहा : "एकोऽस्मि बहुस्याम्"। और उनकी नाभिसे कमल निकला। उस कमलसे सृष्टिके रचयिता ब्रह्मा उत्पन्न हुए। आगे चलकर कहा जाता है कि ब्रह्माके चार मानस पुत्र हुए। उनसे जब सृष्टिकी रचना करनेके लिये कहा गया तो उन्होंने इनकार कर दिया। लाचार होकर ब्रह्माने रुद्रका निर्माण कया। कहा जाता है कि रुद्रने जन्म लेते ही रोना शुरू किया था? ब्रह्माने इनसे सृष्टिकी रचना करनेके लिये कहा तो रुद्रने अपने जैसे ही क्रोधी, उन्मत्त, विकट जीवोंकी सृष्टि की। यह देख ब्रह्माको खेद हुआ।

आगे चलकर देवोंने सृष्टि बनानेमें सहायता दी। इसीलिये हम सृष्टिमें इतना वैविध्य, इतने विभिन्न स्तरके प्राणी और मनुष्यों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भी चित्र-विचित्र स्वभाव देखते हैं। भगवान् सर्वव्यापी और सर्व-शक्तिमान् हैं, किंतु उन्होंने अपने प्रत्येक प्रतिनिधिको पूरी स्वतंत्रता दी। वह स्वतंत्रता इतनी अबाध है कि अगर वे चाहें तो भगवान्-का विरोध भी कर सकते हैं, उनसे लड़ भी सकते हैं। ऐसे जीवोंको शास्त्र असुर कहते हैं। जब हम गलत कार्य करते हैं तो उसमें भी भगवान्के प्रतिनिधिका हाथ होता है, उस प्रतिनिधिका जिसने उनका सामना करनेकी ठान ली है।

मनुष्यको समझनेके लिये हमें उसके आंतरिक जीवनको गहराई-से देखना होगा। अगर हम ध्यानसे देखें तो हमारे अन्दर तीन स्पष्ट सत्ताएं दीखती हैं। एक तो वह सत्ता जिसमें शक्ति, उल्लास भावनाओंका आवेग तथा स्फूर्ति रहती है। इसे हम प्राणिक सत्ता कहते हैं। दूसरी वह सत्ता, जिसके द्वारा हम सोचते हैं, आदर्शों-की ओर मुड़ते हैं, अच्छे-बुरे, -सुन्दर-असुन्दर वगैरहका विश्लेषण करते हैं। इसे हम मानसिक सत्ता कहते हैं। और तीसरी वह सत्ता है जिसका कभी-कदास ही हमें आभास मिलता है। वह हमें उचित राहपर ले चलनेवाली, एक स्पष्ट, किंतु बहुत ही धीमी आवाजमें बोलती है। इसे हम चैत्य पुरुष या भगवान्की एक छोटी-सी चिनगारी कहते हैं।

मनुष्य साधारणतः इन तीन शक्तियोंके संघर्षका क्षेत्र बना रहता है। और, दुर्भाग्यवश, रुद्र और असुरोंकी सन्तानोंका प्रभाव मनुष्य-के ऊपर काफी प्रबल है। प्राणिक और मानसिक सत्ताएं अधिकतर इन भगवान्-विरोधी शक्तियोंके प्रभावमें रहती हैं। मनुष्यके गलत कार्योंकी प्रेरणा-शक्ति इन्हींसे आती है। हमें याद रखना चाहिये कि ये सारी शक्तियां सूक्ष्म हैं। अगर मनुष्य सतर्क रहे और बारीकीसे अपने अन्दर झांकता रहे तभी वह इन प्रभावोंको देख पायगा। जैसे भगवान्ने अपनी सर्जक शक्तियोंको स्वाधीनता दी है, उसी तरह मनुष्यको भी पूरी स्वाधीनता दी है। वह चाहे तो अमृतका पुत्र हो सकता है और चाहे तो असुरका साथी। प्रत्येक क्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सामने यह चुनाव परोक्ष रूपमें आता रहता है और अनजाने ही हम चुनाव करते रहते हैं।

अब हम उस प्रश्नपर आते हैं कि यह सारा हुआ ही क्यों? भगवान्, जो सर्वशक्तिमान् हैं, चाहते तो मात्र "सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्"की ही सृष्टि कर सकते थे। अगर ऐसा होता तो इस समय हम जो भावनाओंका संघर्ष देखते हैं, अनोखे नाटक देखते हैं, वैविध्य देखते हैं, उनमेंसे कुछ न होता, मात्र एक सपाट, सीधी लकीरका सर्जन होता। भगवान् चाहते थे एक रंग-बिरंगी, समृद्ध सृष्टि। उसकी रचनाके लिये असुर, देव, दानव, यक्ष, किन्नर, अप्सरा और भूत-प्रेत, सभीकी आवश्यकता थी। और सभीका मनुष्यके ऊपर, ज्यादा या कम, प्रभाव है।

बुरा न करनेके लिये एक ही उपाय है, वह है अपने चैत्यके साथ सम्पर्क साधना, क्योंकि वह हमें कभी गुमराह न करेगा। वह है हमारा सर्वोत्तम शुद्ध भागवत अंश। उससे नाता जोड़नेके कई उपाय हैं। एक है अभीप्सा। अभीप्सा उस तीव्र प्रार्थनाका नाम है जिसमें हम अपने लिये कोई ऐसी चीज मांगते हैं जो हमें भगवान्के नजदीक ले जाय, जैसे भक्तिकी मांग या शुद्धताकी मांग या शांतिकी मांग। दूसरा उपाय है ध्यान। ध्यान मतलब किसी एकान्त स्थलपर शान्त होकर अपने हृदयमें एकाग्र होना। अगर विचार आएं तो उनसे एक होनेकी बजाय उनको साक्षीकी तरह देखते रहना या ध्यानमें किसी मूर्तिकी कल्पना करना। कभी-कभी मंत्रका जाप भी एकाग्रता प्राप्त करनेमें सहायक होता है। तीसरा उपाय है भगवान्‌को प्रत्यक्ष मानकर सब कार्य करना या सब बातें करना, क्योंकि तब कोई अनुचित कार्य या बात कहना हमारे लिये संभव न होगा।

ये तो प्रारंभिक उपाय मात्र हैं। जैसे-जैसे हम अपने अन्दर डुबकी लगाते जाएंगे वैसे-वैसे हमें दूसरे उपाय सूझेंगे और बहुत-सी त्रुटियां भी दिखेंगी जिनसे हम पहले अनभिज्ञ थे। यह सब हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयास है। किन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण बात है भागवत कृपा। अगर भागवत करुणा बरसे तो अपने जरा-से प्रयत्नसे भी हम तर सकते हैं।

इस प्रकारके प्रश्नोंके बारेमें ज्यादा जानकारी चाहें तो अग्निशिखाका मई ७८ अंक देखें। आजकल उसमें इस प्रकारकी काफी सामग्री छप रही है।

भवदीया
(अनुबेन)

सोसायटी समाचार

दर्शन दिवस: १५ अगस्त श्रीअरविंदका जन्मदिन है। इस अवसरपर दर्शनके लिये बहुत लोग आया करते हैं। हर बारकी भांति, इस बार भी पहले श्रीअरविंदके कमरेका दर्शन हुआ और और फिर दस बजे समाधिके पास ध्यान। शामको क्रीड़ांगणमें बैंड संगीत और श्रीअरविंद तथा माताजीकी स्लाइड्सके साथ ध्यान।

वार्षिक अधिवेशन: दर्शन दिवससे पहले श्रीअरविंद सोसायटीका वार्षिक अधिवेशन हुआ। कई दृष्टियोंसे बड़ा सफल रहा। कार्यकर्ताओंका शिविर ८ से १० अगस्ततक लगा। नवजातजीने 'सत्ताके अंग', 'केंद्रकी व्यवस्था कैसे करें', 'सोसायटीका लक्ष्य', आदि, विषयोंपर प्रकाश डाला। श्री महेश्वरने 'सोसायटी केंद्र और साधना', 'सांस्कृतिक केंद्र' और 'भविष्यकी ओर गति'पर विचार व्यक्त किये।

राष्ट्रीय युवा परिषद्ने ११ अगस्तके अधिवेशनमें निश्चय किया कि १९८०के अगस्तमें एक राष्ट्रीय युवा सम्मेलन और युवा प्रशिक्षण केंद्रकी व्यवस्था की जाय। १६ से ४० के बीचकी उम्रवाला कोई भी सोसायटीका सदस्य युवा पक्षका सदस्य बन सकता है यदि वह देशके निर्माण, मानव एकता, सामाजिक रूपांतर आदि के कामोंमें हाथ बंटाना चाहे।

१२ अगस्तको सोसायटीकी राष्ट्रीय परिषद्की बैठक हुई जिसमें सोसायटीके भावी कार्यक्रमपर बातचीत हुई। ठीक किया गया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी बैठकें बहुधा होनी चाहिये। उसी दिन अंतर्राष्ट्रीय परिषद्की बैठक हुई जिसमें निश्चय किया गया कि अंतर्राष्ट्रीय विश्व विद्यालय-की स्थापनाके कामको हाथमें लिया जाय और अगस्त ८० में विश्व-सभाकी बैठक बुलायी जाय।

नारी आयोगने निश्चय किया कि माताजी और श्रीअरविन्दके प्रकाशमें गुह्य विज्ञानकी शिक्षाकी व्यवस्था की जाय और ओरोवीलके 'न्यू स्कूल'के कामको आगे बढ़ाया जाय।

वार्षिक अधिवेशनकी बैठकें आश्रम रंगशालामें १३-१४ अगस्तको हुईं। प्रधान मंत्री श्री गुरुप्रसादने माताजीके संगीतके बाद सदस्योंका स्वागत किया और पिछले वर्षकी रिपोर्ट सुनायी। सोसायटीके सभा-पति श्री नवजातने सोसायटीके लक्ष्य और उसकी ओर बढ़नके उपाय-पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज जो मिथ्यात्व सतहपर फैला हुआ और बहुत व्यापक दीखता है उससे हमें डरना न चाहिये। हमें मानव जीवनमें भागवत जीवन लानेकी कोशिश करनी चाहिये। उन्होंने संक्षेपमें सोसायटीके कार्यक्रमके बारेमें बतलाया।

श्री डाउसट और महेश्वरने भावी बालककी शिक्षा, सर्वांगीण शिक्षा और आश्रम विद्यालयके बारेमें बतलाया। कुछ विद्यार्थियोंने माता-जीकी पुस्तक 'आदर्श बालक'मेंसे कुछ भाग पढ़कर सुनाये। श्री जोसने ओरोवीलमें होनेवाले कृषि-संबंधी परीक्षणोंका विवरण दिया। न्यायमूर्ति बासकने 'श्रीअरविन्दके प्रकाशमें कानून'पर विचार व्यक्त किये। डा० नारायणने श्रीअरविन्दकी दृष्टिसे 'मजदूरोंकी समस्याका हल'पर विचार प्रकट किये। उन्होंने 'बच्चोंकी दुनिया' नामक सोसायटीकी योजना-के लिये ११ बच्चोंकी ओरसे ११०० मलयेशियन डालर भेंट किये।

'विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान' की ओरसे संस्कृत अधिवेशन बहुत सफल रहा। इसके पं० गुलाम दस्तगीर, पं० वासुदेव शास्त्री, डा. वर्णेकर, डा. सीताराम चतुर्वेदी आदि ने संस्कृतकी व्यापकता और उसके महत्त्वपर भाषण दिये। अधिवेशनने सरकारको सुझाव दिया कि

(शेष आवरण ४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ममें तुम्हारा आदर्श होना चाहिये पूर्णता, उससे कम कुछ भी नहीं। तब निश्चय ही तुम भगवान्‌के सच्चे यंत्र बन जाओगे।

— श्रीमाताजी

Space donated by

KOOVERJI DEVSHI & CO., PVT. LTD.

FIREX LEADS TO SAFETY

SAFETY LEADS TO PROSPERITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनका एक उद्देश्य होता है और वही सच्चा और स्थायी उद्देश्य है — भगवान्। उन्हींकी ओर मुड़ो और सब खालीपन चला जायगा।

—श्रीमाँ

चादर, शाल, दोशाले थोक खरीदनेके लिये पत्रव्यवहार करें:

यूनिक स्टोर्स

घास मंडी; लुधियाना

दूरभाष: २५४४७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"Each new dawn brings the possibility of new progress".

— The Mother

With Compliments from :

T A T A N A G A R
Transport Corporation

147, Mahatma Gandhi Road, CALCUTTA-700 007

BOMBAY - MADRAS - DELHI - CUTTACK

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

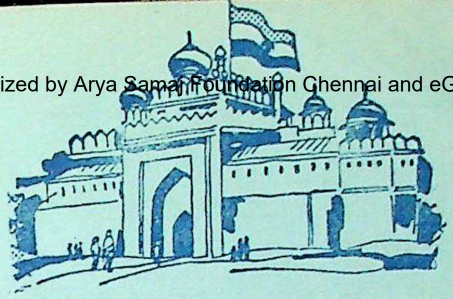

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत भाग्य विधाता

पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ संतालीस को हम भारतवासी 'अपने भाग्य विधाता' बने। स्वतंत्रता की 32वीं वर्षगांठ हमें प्रेरणा देती है कि हम :—

- ★ अपनी उपलब्धियों से दृढ़ता और प्रेरणा प्राप्त करें
- ★ अच्छे भविष्य के लिए नए प्रयास करें

स्वतंत्रता के 32 वर्षों में . . . .

- ★ हमने बाहरी खतरों से देश की अखंडता की रक्षा की है
- ★ औसत आयु बढ़ कर 32 से 52 वर्ष हो गई है
- ★ हमारा खाद्यान्न उत्पादन दुगुने से भी अधिक हुआ है
- ★ हमारा औद्योगिक उत्पादन चौगुने से भी अधिक हो गया है
- ★ विदेशी मुद्रा भंडार 5,000 करोड़ रु० से भी अधिक हो गया है

" इस बात पर गर्व किया जा सकता है कि जड़ीभूत और परावलम्बी अर्थव्यवस्था परिवर्तित कर दी गई है और इसमें अधिक स्वावलम्बन आया है"

(वर्तमान पंचवर्षीय योजना के मसौदे से)

हमें अपनी उपलब्धियों पर गर्व है आइये !
स्वतंत्रता और समृद्धि के लिए हम एक जुट हो जाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70
REGD. No. M. 8731

पांडिचेरीको फिरसे इसका पुराना नाम 'वेदपुरी' दिया जाय, संस्कृत अध्ययन-अध्यापनकी व्यवस्था बढ़ायी जाय, संस्कृत शोधकार्यको प्रोत्साहन दिया जाय और "भविष्यकी अकादमी'के लिये काम किया जाय।

आंध्र विश्व विद्यालयके भूतपूर्व उपकुलपति श्रीनिवास अयंगारने अधिवेशनका सिंहावलोकन किया।

सदस्योंने आश्रमके दैनिक जीवनमें भी भाग लिया। आश्रम विश्वविद्यालयके सांस्कृतिक कार्यक्रम और विभिन्न प्रदर्शनियोंको देखा। 'भारत निवास'में भी नृत्यका कार्यक्रम हुआ।

इसी भांति हर वर्षका वार्षिक अधिवेशन अगस्तमें हुआ करेगा। रेल कंसेशनकी भी व्यवस्था रहेगी। जिन लोगोंके पास कोई सुझाव हो वे सोसायटीको लिख भेजें।

सोसायटीके **नारी आयोग**ने सिफारिश की है कि (१) सोसायटी विद्यार्थियोंके अध्यापकों और अभिभावकोंको नजदीक लाये, (२) बच्चोंके लिये उचित वातावरण बनानेकी कोशिश करे, (३) प्राकृतिक स्वास्थ्य और स्वस्थवृत्तकी बातें बतानेके लिये कक्षाएं खोली जायं, (४) बच्चों-के विद्यालयोंके बाहर जो ऊट-पटांग खाद्य मिलते हैं उनकी जगह पोषक स्वास्थ्यकर खाद्य देनेकी व्यवस्था की जाय, आदि।

सूचना: उत्तर प्रदेशकी श्रीअरविन्द सोसायटीका नवम अधिवेशन मेरठमें १३, १४, १५ अक्तूबरको होने जा रहा है। इच्छुक सदस्य मेरठके क्षेत्रीय सचिवसे सीधा संपर्क स्थापित करें और अधिवेशनको सफल बनानेके लिये अधिक-से-अधिक सहयोग प्रदान करें।

नये प्रकाशन: डाक्टर इन्द्र सेनकी पुस्तक 'ओ सोल, माई सोल' (जिसमें उनके तीन निबंध हैं) शब्द, श्रीअरविन्दाश्रम, पांडिचेरीसे दो रुपयेमें मिल सकती है। डाक-व्यय अलग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3·11·79

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

अखिल भारतीय पत्रिका

अग्निशिखा

श्रीअरविंद सोसायटीकी मासिक पत्रिका

बर १९७९ वर्ष १०, अंक ४, पूर्णांक ११२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

श्रीअरविंदवाणी : कामना — भोजन (योगके आधार)		१
कलाका उद्देश्य		८
'श्रीमातृवाणी'से : मृत्युके बाद		१३
कुछ निजी प्रश्न		१६
कुछ निजी बातें		१९
मशीनमें चेतना		२१
महाविध्वंस — छिन्नमस्ता	नलिनीकांत गुप्त	२२
उदारता	जयदीप	२६
सोसायटी समाचार		आ० ३

कागज और छपाईका खर्च बेतहाशा बढ़ गया है। हम अक्तूबर-से चंदा बढ़ानेके लिये बाधित हो रहे हैं। अक्तूबरसे 'पुरोधा'का वार्षिक चंदा १०.०० और 'अग्निशिखा'का ८.०० हो जायेगा। आजीवन सदस्यताके लिये 'पुरोधा'के १७५.०० और 'अग्निशिखा'के १२५.०० ही रहेंगे। जो अधिक देकर पत्रिकाओंकी सहायता कर सकते हों अवश्य करें।

पत्र, चेक, ड्राफ्ट, आदि, भेजनेका पता :
संपादक अग्निशिखा, श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२

संपादक : रवींद्र
प्रकाशक : श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरी-६०५००२
मुद्रक : अमियरंजन गांगुली, श्रीअरविंद आश्रम प्रेस, पांडिचेरी-६०५००२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगके आधार

कामना–भोजन

सभी सामान्य प्राणिक गतिविधियां सच्ची सत्ताके लिये विजातीय होती हैं और बाहरसे आती हैं; ये न तो अंतरात्माकी चीजें हैं और न उसमेंसे निकलती हैं, वे सामान्य प्रकृतिकी लहरें हैं।

कामनाएं बाहरसे आती हैं, अवचेतन प्राणमें प्रवेश करती और फिर ऊपर उभरती हैं। हम कामनाके बारेमें तभी सचेतन होते हैं जब यह ऊपर सतहपर उठ आये और मनको उसका भान हो। वह हमें अपनी निजी कामना मालूम होती है, क्योंकि हम उसे प्राणसे मनमें उठते हुए अनुभव करते हैं और यह नहीं जानते कि वह बाहरसे आयी है। जो चीज प्राणकी अपनी है, जो सत्ताकी है, जो उसे जिम्मेदार बनाती है वह स्वयं कामना नहीं, बल्कि वैश्व प्रकृतिसे आनेवाली लहरों या सुझावोंकी धाराओंको प्रत्युत्तर देनेकी आदत है।

*

कामनाका परित्याग तत्त्वतः, लालसाके तत्त्वका परित्याग है। उसे चेतनामेंसे एक ऐसी विजातीय चीजके रूपमें निकाल बाहर करना है जो हमारे सच्चे रूप और आंतरिक प्रकृतिकी नहीं है। कामनाके सुझावोंमें रस लेनेसे इन्कार करना भी परित्यागका एक अंश है; अगर जिस क्रियाके लिये सुझाव दिया गया है वह उचित क्रिया नहीं है तो उससे बचना भी योग-साधनाके अंतर्गत होना चाहिये। हां, जब इसे गलत तरीकेसे, मानसिक तपस्याके सिद्धांत या कठोर नैतिक नियमके रूपमें किया जाय तो उसे दमन कहा जा सकता है। दमन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंतरिक तात्त्विक परित्यागके बीचमें वही फर्क है जो मानसिक या नैतिक संयम और आध्यात्मिक शुद्धिमें है।

जब व्यक्ति सत्य चेतनामें निवास करता है तो वह अनुभव करता है कि कामनाएं उसके बाहर हैं, और बाहरसे उसके अंदर प्रवेश करती हैं, वे वैश्व निम्न प्रकृतिसे मन और प्राणके भागोंमें आती हैं। सामान्य मानव स्थितिमें यह अनुभव नहीं होता; लोगोंको कामनाका भान तभी होता है जब वह मौजूद हो, जब वह अंदर आकर निवासस्थान पा ले या एक अभ्यासगत डेरा डाल ले और इसलिये लोग यही समझते हैं कि वह उनकी अपनी चीज है, उन्हींका एक अंश है। अतः कामनासे पिंड छुड़ानेकी पहली शर्त यह है कि सत्य चेतनाके साथ सचेतन बनो; क्योंकि इस अवस्थामें उसे निकाल बाहर करना बहुत आसान होता है, उस अवस्थाकी अपेक्षा, जब तुम्हें उसे हटानेके लिये इस तरह संघर्ष करना पड़े मानों वह तुम्हारा अपना भाग है जिसे अलग करना है। तुम्हारे अपने शरीरके अंगको काटनेकी अपेक्षा, अतिरिक्त बढ़े हुए हिस्सेको निकालना ज्यादा आसान होता है।

जब चैत्य पुरुष सामने हो, तब भी कामनासे पिंड छुड़ाना आसान होता है; क्योंकि स्वयं चैत्य पुरुषमें कोई कामना नहीं होती, उसमें केवल अभीप्साएं होती हैं, भगवान्‌की खोज और उनके लिये प्रेम होता है और सब ऐसी चीजें होती हैं जो भगवान्‌की ओर मुड़ी होती हैं या उनकी ओर ले जाती हैं। चैत्य पुरुषका हमेशा सामने रहना ही सत्य चेतनाको उभारता है और लगभग अपने-आप ही प्रकृतिकी सभी गतिविधियोंको ठीक कर देता है।

*

मांग और कामना एक ही चीजके दो अलग-अलग पहलू हैं— यह जरूरी नहीं है कि कामना कहानेके लिये भावना उत्तेजनापूर्ण या बेचैनी-भरी हो; इसके विपरीत, वह दृढ़ताके साथ जमी हुई, आग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण और आग्रहके साथ बार-बार आनेवाली हो सकती है। मांग या कामना मन या प्राणसे आती है, लेकिन चैत्य या आध्यात्मिक आवश्यकता कुछ और ही चीज है। चैत्य मांग या कामना नहीं करता — वह अभीप्सा करता है; वह अपने समर्पणके लिये शर्तें नहीं लगाता और अगर उसकी अभीप्सा तुरंत पूरी न हो जाय तो पीछे नहीं हट जाता — क्योंकि चैत्यको भगवान्पर या गुरुपर पूरा विश्वास होता है और वह 'भागवत कृपा'के ठीक समय या ठीक मूहूर्तके लिये प्रतीक्षा कर सकता है। चैत्यका अपना ही आग्रह होता है, लेकिन वह भगवान्पर नहीं, प्रकृतिपर दबाव डालता है। वहांके उन सभी दोषोंपर प्रकाशकी उंगली रखता है जो उपलब्धिके मार्गमें खड़े रहते हैं। वह अनुभूतिमें या योगकी गतिविधिमें जो कुछ मिला हुआ, अज्ञानपूर्ण या अपूर्ण है उसे छानता है और अपने-आपसे या प्रकृतिसे तबतक संतुष्ट नहीं होता जबतक कि वह उसे सब प्रकारके अहंसे मुक्त न कर ले, समर्पण पूर्ण न हो जाय, और सभी गतिविधियों-में सरलता और उचित वृत्ति न आ जाय। सारी प्रकृतिका अति-मानसीकरण संभव होनेसे पहले मन, प्राण और भौतिक चेतनामें इसे स्थापित करना जरूरी है। अन्यथा तुम्हें जो प्राप्त होता है वह न्यूनाधिक चमकीला, आधा प्रकाशमय और आधा मेघाच्छन्न रहता है। मन, प्राण या भौतिक स्तरोंपर अनुभूतियां होती हैं, लेकिन विशालतर मन या बृहत्तर प्राण या अधिक-से-अधिक मनुष्यसे ऊपर, बुद्धि और 'अधिमन'के बीचके क्षेत्रमें जहांतक मनकी पहुंच है वहांसे प्रेरणा ले-कर। ये बहुत उत्तेजक और एक हदतक संतोषजनक हो सकती हैं और उन लोगोंके लिये अच्छी हैं जो इन स्तरोंपर कुछ आध्यात्मिक सिद्धियां चाहते हैं; लेकिन अतिमानसिक सिद्धि अपनी शर्तोंमें बहुत ज्यादा कठिन और श्रमसाध्य है और सबसे कठिन चीज है उसे नीचे, भौतिक स्तरपर उतार लाना।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामनासे पूरी तरह छुटकारा पानेमें बहुत समय लगता है। लेकिन एक बार तुम उसे प्रकृतिसे बाहर कर दो और यह अनुभव कर लो कि यह एक बाहरसे आनेवाली और प्राण तथा भौतिकमें अपने पंजे गड़ानेवाली शक्ति है तो आक्रामकसे पिंड छुड़ाना ज्यादा आसान हो जायगा। तुम्हें यह अनुभव करनेकी बहुत आदत पड़ी हुई है कि वह तुम्हारा ही अंग है या तुम्हारे अंदर रोपी गयी है — इसी कारण तुम्हें उसकी गतिविधिसे निबटने और उसके ऊपर प्राचीन अधिकार-को निरस्त करनेमें अधिक कठिनाई होती है।

तुम्हें और किसी भी चीजपर भरोसा न करना चाहिये, वह चाहे कितनी भी सहायक क्यों न दीखती हो, मुख्यतः, प्रथमतः, आधार रूपमें माताजीकी 'शक्ति'पर ही भरोसा रखो। 'सूर्य' और 'ज्योति' सहायक हो सकते हैं और होंगे यदि वे सच्चे 'सूर्य' और 'ज्योति' हैं, लेकिन वे माताजीकी 'शक्ति'का स्थान नहीं ले सकते।

*

साधककी आवश्यकताएं जितनी कम हो सकती हैं उतनी कम होनी चाहिये; क्योंकि ऐसी बहुत ही कम चीजें हैं जो जीवनके लिये सच-मुच आवश्यक हैं। बाकी चीजें या तो उपयोगी हैं या जीवनकी साज-सज्जा हैं या फिर विलासकी चीजें हैं। योगको इन चीजोंको रखने या इनका भोग करनेका अधिकार, इन दोमेंसे किसी एक शर्त-पर ही हो सकता है :

१. अगर वह साधनाकालमें उनका उपयोग शुद्ध रूपसे इसलिये करता है कि अपने-आपको बिना आसक्ति और कामनाके चीजें रखने-का प्रशिक्षण दे और उनका उचित रूपसे, भागवत इच्छाके साथ सुर मिलाकर उपयोग करना, उचित व्यवहार करना, ठीक व्यवस्था, देखभाल और प्रमाणंका ख्याल रखना सीखे, या

२. अगर उसने सचमुच कामना और आसक्तिसे मुक्ति पा ली है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और चीजोंकी हानि, उनके न मिलने या उनसे वंचित हो जानेसे वह जरा भी टस-से-मस नहीं होता। अगर उसमें लोभ, कामना, मांग, अधिकार या भोगके लिये दावा, उनसे वंचित हो जानेपर चिंता, दुःख, क्रोध या चिड़ पैदा हो तो वह भावमें मुक्त नहीं है और उसके पास जो चीजें हैं उनका उपयोग उसके लिये साधना-भावके विपरीत है। अगर वह भावनामें स्वतंत्र भी हो, तो भी वह चीजोंपर अधिकार पानेके योग्य नहीं है यदि उसने चीजोंका यंत्रकी तरह, 'भागवत संकल्प'के लिये, सत्य ज्ञान और सत्य क्रियाके साथ, अपने लिये नहीं, बल्कि भगवान्में और भगवान्के लिये जीवनके लिये उपयोग करना नहीं सीखा।

*

तपश्चर्याके लिये तपश्चर्या इस योगका लक्ष्य नहीं है, लेकिन प्राण-में आत्म-संयम और भौतिकमें सुव्यवस्था उसके बहुत महत्त्वपूर्ण अंग हैं — और हमारे उद्देश्यके लिये सच्चे आत्म-संयमके अभावकी अपेक्षा तपश्चर्याकी साधना ज्यादा अच्छी है। भौतिक तत्त्वके ऊपर प्रभुत्व-का अर्थ यह नहीं कि चीजोंकी बहुतात हो और तुम उन्हें खुले हाथों फेंकते जाओ या वे जिस गतिसे आएं तुम उसी गतिसे या उस से भी अधिक तेजीके साथ उन्हें बिगाड़ते जाओ। प्रभुत्वका अर्थ है वस्तुओंका उचित और सावधानीके साथ उपयोग और उपयोगमें आत्म-संयम।

*

अगर तुम योग करना चाहते हो तो तुम्हें सभी छोटे-बड़े मामलों-में अधिकाधिक यौगिक वृत्ति अपनानी चाहिये। हमारे मार्गमें जबरदस्ती दमनकी वृत्ति नहीं, बल्कि कामनाके विषयोंके प्रति अना-सक्ति और सम भावकी वृत्ति अपनायी जाती है। जबरदस्ती दमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(उपवास इसी श्रेणीमें आता है) और स्वच्छंद उपभोग, दोनों एक ही स्तरपर हैं; दोनों अवस्थाओंमें कामना बनी रहती है; एक अवस्थामें उसे उपभोगके द्वारा पोषण मिलता है, दूसरीमें वह छिपी हुई और दमनके कारण रुष्ट और क्षुब्ध रहती है। केवल तभी जब तुम पीछे हटकर, अपने-आपको निम्न प्राणसे अलग करके, कामनाओं और मांगोंके कोलाहलको अपना माननेसे इन्कार कर दो और उन चीजोंके प्रति चेतनामें पूर्ण समता और समचित्तता पैदा कर लो, तब धीरे-धीरे स्वयं निम्न प्राण शुद्ध हो जाता है और अपने-आप अचंचल और सम बन जाता है। कामनाकी हर आती हुई लहरको इस तरह देखना चाहिये, इतनी शांति और अनुत्तेजित अनासक्तिके साथ देखना चाहिये मानों वह तुम्हारे बाहरकी चीज हो; उसे अपनी चेतनासे अस्वीकार करके निकल जाने दो और उसके स्थानपर सत्य गतिविधि और सत्य चेतनाको निरंतर स्थापित करो।

*

भोजनके साथ आसक्ति, उसके लिये लोभ और उत्सुकता और उसे जीवनमें अनुचित रूपसे महत्त्वपूर्ण बना देना योगकी भावनाके विरुद्ध है। इस बातका भान होनेमें कोई गलती नहीं है कि अमुक चीज सुस्वादु है; हां, तुम्हारे अंदर उसके लिये कोई कामना, कोई ललक न होनी चाहिये, न तो उसे पानेपर उल्लास हो और न उसके न पानेपर अप्रसन्नता या खेद। तुम्हें शांत-स्थिर और सम रहना चाहिये, जब भोजनका स्वाद अच्छा न हो या मात्रा प्रचुर न हो तो असंतुष्ट या विक्षुब्ध न होना चाहिये — आवश्यकताके अनुसार निश्चित मात्रामें खाओ, न कम, न ज्यादा। न तो उत्सुकता होनी चाहिये, न अरुचि।

हमेशा भोजनके बारेमें सोचते रहना और मनको कष्ट देना भोजनकी कामनासे पिंड छुड़ानेका बिलकुल गलत तरीका है। भोजनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्वको जीवनमें उसके उचित स्थानपर, एक छोटे-से कोनेमें रखो और उसपर नहीं, अन्य चीजोंपर ध्यान लगाओ।

*

अपने मनको भोजनके बारेमें कष्ट न दो। उसे ठीक मात्रामें लो (न बहुत ज्यादा और न बहुत कम), लोभ या अरुचिके बिना, शरीर-के पोषणके लिये माताजीकी दी हुई चीजके रूपमें उचित भावके साथ, अपने अंदर उपस्थित भगवान्को निवेदित करते हुए लो; तब वह कोई तमस् न पैदा करेगा।

*

रसका पूरी तरह दमन कर देना हमारे योगका भाग नहीं है। जिस चीजसे पिंड छुड़ाना चाहिये वह है प्राणिक कामना और आसक्ति, भोजनके लिये लोभ, पसंदका भोजन पा जानेपर खूब उल्लास और वह न मिले तो खेद और असंतोष — यह उसे बहुत ज्यादा महत्त्व देना है। और बहुत-सी बातोंकी तरह यहां भी समता तुम्हारी कसौटी है।

*

भोजन छोड़ देनेका विचार एक गलत प्रेरणा है। तुम भोजन-की थोड़ी-सी मात्राके साथ काम चला सकते हो, लेकिन अपेक्षाकृत थोड़े समयके लिये हो तो और बात है, वरना भोजनके नितांत अभावसे काम नहीं चलता। याद रखो, गीता कहती है: "योग उसके लिये नहीं है जो बहुत अधिक खाता है और न उसके लिये जो बिल्कुल नहीं खाता।" प्राणिक ऊर्जा एक चीज है — उसकी एक बहुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी मात्रा भोजनके बिना भी पायी जा सकती है और प्रायः वह उपवासके साथ बढ़ती है; लेकिन भौतिक पदार्थ, जिसके बिना जीवन अपना सहारा खो बैठता है, एक और ही श्रेणीकी चीज है।

*

न तो प्रकृतिके इस मोड़ (भोजनकी इच्छा) की अवहेलना करो और न इसे बहुत महत्त्व दो; इसे बहुत अधिक महत्त्व दिये बिना इसके साथ निबटना, इसे शुद्ध करना और इसे वशमें करना होगा। इसे जीतनेके दो तरीके हैं — एक अनासक्तिका, यह सीखो कि भोजन केवल एक भौतिक आवश्यकता तथा पेट और जिह्वाके प्राणिक संतोषकी चीज है जिसका अपना कोई महत्त्व नहीं, दूसरा तरीका यह है कि बिना आग्रह और तलाशके जो कुछ खानेको मिल जाय उसे खा लो और (लोग उसे अच्छा कहते हों या बुरा) उसमें समान-रूपसे रस लो, भोजनके लिये भोजनका रस नहीं, बल्कि वैश्व आनंद।

(अध्याय ४ से)

कलाका उद्देश्य

आजकल यह मान्यता जोरोंपर है कि कलाका, फिर चाहे वह चित्रकला हो या काव्य, संगीत हो या वास्तु, कोई उद्देश्य नहीं हो सकता। कलाकार चीजोंको जिस रूपमें देखता है, उसी रूपमें उन्हें प्रकट भी कर देता है, उसकी कलाकी तकनीकमें एक परिपक्वता हो, उसके रंगों और स्वरोंमें चटक हो, तो बस काफी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी कुछ समय पहले "कलाके लिये कला"का नारा बहुत जोरसे लगाया जाता था, आज वह नये शब्द ओढ़कर घूमता है, परंतु अब भी मौजूद है।

क्या इसका यह मतलब है कि कलाकी तकनीक ही सब कुछ है? क्या बिना सोचे-समझे लकीरें खींच देने और जहां-तहां रंग भर देनेसे ही चित्र तैयार हो जायगा? क्या सुन्दर भाषा, अच्छे शब्द-चयन, मनोहर धुनें, चमकते रंग ही काव्य, संगीत और चित्र-कलाके लिये काफी हैं?

क्या वास्तविकताओंको अभिव्यक्त करना ही कला है। तब फिर तो नगरपालिकाकी कार्रवाई, विधान-सभाओंकी चक-चक, पंचवर्षीय योजनाएं, नालियां बिछानेकी अव्यवस्था, सड़क कटनेकी कल, आदि, भी काव्यके, संगीतके या चित्रकलाके विषय हो जाएंगे।

कहा जा सकता है कि नैतिकता, दर्शन, सौंदर्य, आदि, भी कलाके विषय हो सकते हैं, परंतु शर्त यही रहेगी कि वे तकनीककी कसौटीपर पूरे उतरें। हमारी सभी मान्यताओंकी तरह यह मान्यता भी अधूरी है।

कवि या चित्रकार केवल सुन्दर शब्दोंका, आकर्षक रंगोंका उपयोग करनेके लिये लेखनी नहीं उठाता। वह किसी चीजको खोजना चाहता है, किसी अमूर्त्त चीजको मूर्त्त रूप देना चाहता है। वह चीज क्या है?

इसका एक उत्तर है: इसका असली उद्देश्य है सौंदर्यकी खोज। कलाका मुख्य लक्ष्य है सौंदर्यकी खोज और जिस किसी वस्तु, जिस किसी विषयके द्वारा सौंदर्य प्रकट हो सकता है वह कलाका विषय है। लेकिन जगत्में केवल भौतिक सौंदर्य ही तो नहीं है, नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सौंदर्य भी तो हैं। इसके उत्तरमें कहा जा सकता है कि सौंदर्यग्राही दृष्टि जिस चीजको सुन्दर माने वही कला-का विषय है और जो कुछ उसे खले वह कलाके क्षेत्रसे बाहर है। कलाका स्वयं जीवनके साथ, अपने-आपमें चीजोंके साथ शुभ, सत्य या भगवान्के साथ कोई सीधा संबन्ध नहीं है। उनका संबंध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहींतक है जहांतक वे सौंदर्यग्राही दृष्टिको संतुष्ट करते हैं। इस तरह, नगरपालिकाकी बैठकें और पंचवर्षीय योजनाएं इस क्षेत्रसे निकल जाएंगी; दार्शनिक समस्याएं और धार्मिक उपदेश इसकी गिनतीमें न आएंगे।

लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर सौन्दर्य है क्या? सौंदर्यका कितना भाग स्वयं वस्तुमें है और कितना देखनेवालेकी आंखमें? क्या हम नहीं देखते कि कलाकारकी आंख कई बार वीभत्स, भयंकर, भद्दी चीजोंमें भी कहीं-न-कहीं छिपे सौंदर्यको देख लेती है और उसे रंग-रूप या ध्वनि प्रदान करके सुन्दरकी पांतमें ला बिठाती है।

योगकी एक ऐसी स्थिति है जिसमें सभी चीजें देखनेवाली आंखको सुन्दर लगती हैं, क्योंकि वास्तवमें वे सब उसी परम सुन्दर, परम आनन्दके विभिन्न रूप हैं। बाहरी दृष्टिसे कोई चीज असुन्दर हो सकती है, पर देखनेवाली आंख उसकी सारी कुरूपताके बावजूद उसमें अपने परमप्रियकी सुन्दरताकी झलक पा लेती है।

अगर हम इन विचारोंको जरा खींच-तान कर देखें तो कह सकेंगे कि सूअर और मेंढकमें भी तो सौंदर्य विराजमान है, पंचवर्षीय योजना और राजनीतिक दलोंके घोषणा-पत्र भी सौंदर्यसे खाली नहीं हैं, अतः, वे भी काव्यके, चित्रकलाके विषय हो सकते हैं। तब तो दुनियाका कोई प्राणी, कोई वस्तु सौंदर्य-विहीन नहीं है। बात ठीक है, पर उस सौंदर्यपर परदा पड़ा है, उसे देखनेके लिये विशेष आंखें चाहिये।

तुलसीदासने राम और मंथराका, हनुमान और त्रिजटाका बहुत काव्यात्मक चित्रण किया है। काव्यकी दृष्टिसे दोनों सुन्दर बन पड़े हैं, परंतु मंथरा और त्रिजटा, आदि, के चित्रणसे रामायण नहीं बन सकती।

हम कह सकते हैं कि सिर्फ तकनीक ही कला नहीं है और इसी तरह केवल सौंदर्य भी कला रचनेके लिये काफी नहीं है। श्रीअरविंदके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार कला है सौंदर्यकी खोज और अभिव्यक्ति। हम उसपर विधि-निषेधके नियम लगाकर उसे सीमित नहीं करना चाहते ।

आगे चलकर, श्रीअरविंदके अनुसार, हम कह सकते हैं कि कला केवल तकनीक या सौंदर्यका रूप नहीं है, वह सौंदर्यकी खोज और अभिव्यक्तितक ही सीमित नहीं है, वह है सौंदर्यात्मक दृष्टि और पूर्ण आलेखनके द्वारा की गयी चेतनाकी आत्माभिव्यक्ति। कलामें केवल सौंदर्यात्मक मूल्य नहीं, बल्कि जीवन मूल्य और आध्यात्म मूल्य भी होते हैं। सच्चा कलाकार अपनी कलामें केवल अपनी चेतनाकी शक्तिको ही नहीं भरता, बल्कि उस चेतनाकी शक्तिको भी उंडेलता है जिसने ये जगत् बनाये हैं। वेदान्तके अनुसार, मौलिक रूपमें, बनानेवालेकी चेतना सब जगह समान रूपसे विद्यमान है, परंतु अभिव्यक्तिमें तो फर्क होगा ही। साधारण मनुष्यकी अपेक्षा विभूतिमें भगवान् ज्यादा स्पष्ट रूपसे प्रकट होते हैं। और फिर, चेतनामें भी श्रेणियां होती हैं। हो सकता है कि इनका असर कलाके बाह्य रूपपर न हो, पर अंतर्वस्तुमें तो फर्क होगा ही।

होमर मनुष्यके बाहरी जीवन और उसकी क्रियाओंमें सुन्दरता देखता है और उनका बहुत सुन्दर चित्रण करता है, लेकिन वहींपर उसकी सीमा आ जाती है। शेक्सपीयर उससे कुछ आगे बढ़कर प्राण-शक्तियोंको और जीवनके मूल्योंको चित्रित करता है — यह चीज होमरके बसकी न थी। लेकिन वाल्मीकि और व्यासमें हमेशा दिव्य विचार-शक्तियां और दिव्य आदर्श, जीवन और उसकी गतिविधिको सहारा देते रहते हैं। इनसे भी गहरी चीजें, उपस्थितियां अधिक आंतरिक सद्वस्तुएं, आत्मा और उसकी शक्तियां भी काव्य या कलाका विषय बन सकती हैं और उनसे कला और भी अधिक समृद्ध बन सकती है। हो सकता है कि एक कवि इन अंदरकी चीजोंको व्यक्त कर सकता हो, उसमें काव्य-प्रतिभा पिछले कवियोंके जैसी ही हो, हो सकता है कि वह शुद्ध कविकी दृष्टिसे पहले कवियोंसे महान् न हो, पर उसका काव्य विषयकी दृष्टिसे पहलेके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी भी काव्यकी अपेक्षा अधिक समृद्ध और सारगर्भित होगा।

अगर हम कलाके लिये कला या सौंदर्यके लिये कलाके नारोंमें फंसे रह जायें, तो परिणाम यह होगा कि एकदम प्रारंभिक वस्तु-पर तो जोर दिया जायगा, पर अधिक महत्त्वपूर्ण वस्तुकी अवहेलना हो जायगी। इससे कलाका क्षेत्र बहुत ज्यादा सीमित और संकुचित हो जायगा। उसमें गुप्त या प्रकट, व्यक्तिगत या वैश्व या परात्पर भगवान्की खोज और अभिव्यक्तिके लिये कोई स्थान न रहेगा।

हम अपनी दृष्टिको संकुचित न करके कह सकते हैं कि कला कलाके लिये, सुन्दरकी अभिव्यक्तिके लिये तो होनी ही चाहिये, इसमें कोई शक नहीं, पर साथ ही कला आत्माके लिये, अंतरात्मा-के लिये और उन समस्त चीजोंके लिये होनी चाहिये जिन्हें आत्मा सौंदर्यके इस माध्यमके द्वारा व्यक्त करना चाहती है। हम कह सकते हैं कि सच्ची कलामें तीन चीजें होनी चाहिये : (१) अभि-व्यक्तिके लिये उसके माध्यमकी पूर्णता, (२) सौंदर्यकी खोज और (३) अंतरात्मा और वस्तुओंके सारतत्त्व, सृजनात्मक चेतना और आनंदकी शक्तियोंकी अभिव्यक्ति। पहली दोनों चीजें तीसरीके अधीन हैं।

इस आत्माभिव्यक्तिमें भी अलग-अलग श्रेणियां और अनुक्रम हैं, जहां विस्तार है वहां ऊंचाई भी है। जहां कलाके लिये जरूरी है कि वह अधिक-से-अधिक विस्तृत क्षेत्रको अपने अंदर समोती चले, वहां उसके लिये यह भी जरूरी है कि वह ऊंचे-से-ऊंचे शिखरों-की ओर भी उठे और हमारी सौंदर्य-साधनाके साथ-साथ आध्यात्म साधनाका भी अंग बने।

(श्रीअरविंदके एक लेख 'आर्ट फार आर्टस सेक'के आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्रीमातृवाणी' से :

मृत्युके बाद

माताजी, जब कोई यहां रहता है और पूर्ण योगका अनुसरण करता है, यहां, तो . . .

"यहां रहता है" का मतलब "आश्रममें रहता है" या "कक्षामें रहता है"? कक्षामें? नहीं! (हंसी)

हम कक्षामें भी हैं और आश्रममें भी।

अच्छी बात है! तो फिर?

तो क्या यह निश्चित है कि अगले जन्ममें भी वह यहां या आश्रममें आयेगा? या किन्हीं और अनुभूतियोंके लिये कहीं और चला जायगा?

यह, यह व्यक्तियोंपर निर्भर है। पहली बात तो यह कि तुम अगला जन्म कहते किसे हो? तुम्हारा मतलब उन लोगोंसे है जिन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया और दूसरा शरीर लेंगे?

जी, हां।

यह पूरी तरह इसपर निर्भर है कि वे किन परिस्थितियोंमें मरे थे और उनकी अंतिम इच्छा क्या थी, उनके चैत्यका क्या निश्चय था। यह कोई यांत्रिक या आरोपित चीज नहीं है। यह हर एकके लिये अलग है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तुमसे कई बार कह चुकी हूं कि मृत्युके बादकी नियतिके लिये, साधारणतः, चेतनाकी अंतिम अवस्था सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण होती है, यानी, अगर मरते समय किसीके अंदर यह तीव्र अभीप्सा हो कि वह लौटकर अपना काम जारी रखे, तो उसके लिये ऐसी अवस्थाओंकी व्यवस्था कर दी जाती है। लेकिन देखो, मृत्युके उपरान्त क्या होता है इसके लिये सब प्रकारकी संभावनाएं हैं। ऐसे लोग हैं जो चैत्यमें लौट जाते हैं। मैं तुम्हें बता चुकी हूं कि बाहरी सत्ताका बना रहना बहुत ही विरल है; इसलिये हम केवल चैत्य चेतनाकी ही बात करते हैं जो हमेशा बनी रहती है। और फिर, ऐसे लोग हैं जिनका चैत्य भावी जीवनकी तैयारीके लिये, अपने प्राप्त किये अनुभवोंको आत्मसात् करनेके लिये चैत्य लोकमें चला जाता है। इसमें शतियां लग सकती हैं। यह लोगोंपर निर्भर है।

चैत्य पुरुष जितना अधिक विकसित होगा उतना ही अपनी पूर्ण परिपक्वताके नजदीक होगा, उतना ही अधिक समय उसके जन्मोंके बीच लगेगा। ऐसी सत्ताएं हैं जो एक हजार वर्ष बाद, दो हजार वर्ष बाद नया जन्म लेती हैं।

व्यक्ति जितना अधिक चैत्यके निर्माणकी प्रारंभिक अवस्थामें होगा, उतने ही नजदीक-नजदीक उसके जन्म भी होंगे; और कभी-कभी, बिल्कुल ही निचले स्तरपर, जब मनुष्य पशुके बिल्कुल नजदीक होता है तो यह यूं चलता है (संकेत), यानी, लोगोंके लिये यह असाधारण नहीं होता कि अपने बच्चोंके बच्चेके रूपमें जन्म लें, इस तरह, कुछ-कुछ इस तरह, या फिर एकदम अगली ही पीढ़ीमें। लेकिन यह हमेशा विकासके बहुत प्रारंभिक स्तरोंपर होता है, और चैत्य बहुत सचेतन नहीं होता, वह अभी निर्माणकी स्थितिमें होता है। और जैसे-जैसे वह अधिक विकसित होता जाता है, वैसे-वैसे, जैसा कि मैंने कहा, उसके जन्म एक-दूसरेसे ज्यादा दूर होते जाते हैं। जब चैत्य पुरुष पूरी तरह विकसित हो जाता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब उसे अपने विकासके लिये फिरसे धरतीपर आनेकी जरूरत नहीं रहती, जब वह पूरी तरह स्वतंत्र होता है तो उसके सामने कई विकल्प होते हैं, अगर उसे लगे कि उसका काम कहीं और है, या अगर वह शुद्ध चैत्य चेतनामें, जन्म लिये बिना रहना अधिक पसंद करे तो वह धरतीपर वापिस ही न आये; या वह जब चाहे, जैसे चाहे, जहां चाहे, पूर्ण सचेतन रूपमें जन्म ले। और फिर ऐसे हैं जो वैश्व क्रमकी शक्तियों और अधिमानसकी या कहीं और-की सत्ताओंके साथ एक हो जाते हैं जो हमेशा धरतीके वातावरण-में ही रहते हैं, और कार्यके लिये एकके बाद एक जन्म लेते ही रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि जिस क्षण चैत्य पुरुष पूर्णतया निर्मित हो जाता है और बिलकुल स्वतंत्र होता है — जब वह पूर्ण-तया निर्मित हो तो वह पूर्णतया स्वतंत्र हो जाता है —, तो वह जो करना चाहे कर सकता है, यह इसपर निर्भर है कि वह क्या चुनता है; इसलिये तुम यह नहीं कह सकते : "वह ऐसा होगा, वह वैसा होगा;" वह ठीक वही करता है जो वह करना चाहे और वह शरीरकी मृत्युके समय यह घोषणा भी कर सकता है (ऐसा हो चुका है), कि उसका अगला जन्म कैसा होगा, वह क्या करेगा, वह तभी चुन सकता है कि वह क्या करेगा। लेकिन इस स्थितिसे पहले, जो बार-बार नहीं आती — वह पूरी तरह चैत्यके विकासकी अवस्था और सत्ताकी समग्र चेतनाकी संजोयी हुई आशा-पर निर्भर है —, मानसिक, प्राणिक और भौतिक चेतना भी है, जो चैत्य चेतनाके साथ युक्त होती है; तो उस समय, मृत्युकी घड़ी-में, शरीर-त्यागके क्षण वह एक आशा, एक अभीप्सा, एक संकल्प संजोती है, और साधारणतः यही अगले जीवनका निश्चय करती है।

इसलिये तुम यह नहीं पूछ सकते : "क्या होता है और क्या करना चाहिये ?" सभी संभव चीजें होती हैं और सब कुछ किया जा सकता है।

हर एकके मनमें कोई बात होती है : वह एक सामान्य प्रश्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछता है, लेकिन उसके मनमें एक और ही प्रश्न विशेष होता है; लेकिन यह — इन चीजोंपर खुले आम बात नहीं की जा सकती।

(श्रीमातृवाणी, खण्ड ७; प्रश्न और उत्तर १९५५)

कुछ निजी प्रश्न

(माताजीके साथ पत्र-व्यवहार)

भगवान्‌की सेवा करनेके लिये मेरा प्रयास कैसे पूरा हो सकता है?

अपनी सत्ताके हर भागमें समग्र रूपसे उन्हें अधिकाधिक चाहनेसे।

आपने कहा है: "भगवान् तुम्हारे साथ तुम्हारी अभीप्साके अनुसार रहते हैं। स्वभावतः, इसका यह मतलब नहीं है कि वे तुम्हारी बाह्य प्रकृतिकी सनकके अनुसार चलते हैं — यहां मैं तुम्हारी सत्ताके सत्यकी बात कर रही हूं। और फिर, कभी-कभी वे अपने-आपसे तुम्हारी बाहरी अभीप्साके अनुसार गढ़ते हैं। अगर तुम उन भक्तोंकी तरह रहो जो मिलन और विरह, आनन्द और निराशाके बीच बारी-बारीसे रहते हैं, तो भगवान् भी तुमसे नजदीक या दूर रहेंगे, यह इसपर निर्भर है कि तुम क्या मानते हो।"
"बाह्य अभीप्सा" और "बाह्य वृत्ति" का क्या मतलब है? अच्छेसे-अच्छी बाह्य वृत्ति क्या है?

जबतक तुम अपनी भौतिक सत्ता (बाह्य सत्ता) में योग न करो, तबतक तुम अज्ञानमें रहते हो, तुम्हारी अभीप्सा भी अज्ञानमय रहती है और उसकी सद्‌भावना भी अज्ञानमय रहती है। जो भागवत उपस्थितिको बिगाड़ती और विकृत करती हैं वे सभी गतिविधियां अज्ञानमय होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसालिये शरीरके कोषाणुओंका योग अनिवार्य है।

मेरा शरीर बहुत कमजोर है, अविद्या और तमस्‌से भरा है। यह शरीर आपका अच्छा यंत्र कैसे बन सकता है?

हर कोषाणुके केंद्रमें दिव्य चेतना मौजूद रहती है। अभीप्सा और सतत आत्म-दानके द्वारा कोषाणुओंको पारदर्शक बनना चाहिये।

जगत्‌की वर्तमान स्थिति देखकर हम कह सकते हैं कि बुरे-से-बुरी स्थिति बीत चुकी है। हम उस दिनकी प्रतीक्षामें हैं जब भगवान् धरतीको अपनी भुजाओंमें ले लेंगे और धरतीका रूपांतर हो जायगा। क्या वह दिन नजदीक आ रहा है?

बहुत संभव है कि अभी जो हो रहा है वह यही है, परंतु वह मानव स्तरपर नहीं हो रहा।

भगवान्‌का एक क्षण हमारे बरसोंके समान हो सकता है।

जब मैं आपके नजदीक आना चाहता हूं तो मुझे लगता है कि मुझे अपने अहंपर विजय पानी चाहिये। लेकिन जब मैं अहंको जीतनेकी सोचता हूं तो मुझे यही दिखायी देता है कि मुझे आपके नजदीक होना चाहिये। इस पहेलीका हल क्या है?

भागवत कृपा इसे हल करेगी।

जब मैं आपको धन, आदि, कोई चीज देता हूं तो उससे खुशी होती है। जब मैं अपनी सत्ताका कोई भाग दे सकता हूं तो और भी ज्यादा खुशी होती है। लेकिन इस अनुभवके बावजूद मैं अपनी पूरी सत्ता आपको नहीं दे पाता। कैसी मूढ़ता है! मैं इसे कैसे बदलूं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम बहुत-से भागोंसे मिलकर बने हैं और अगर हम उसके बारे-में सचेतन हों तो इन सबको चैत्य पुरुषके चारों ओर या कम-से-कम केंद्रीय अभीप्साके चारों ओर मिलकर एक होना चाहिये। अगर यह एकीकरण न हो जाय तो हम विभाजनको अपने साथ लिये रहते हैं।

यह करनेके लिये प्रत्येक विचार, प्रत्येक प्रतीति, प्रत्येक संवेदन, प्रत्येक आवेग, प्रत्येक प्रतिक्रियाको प्रकट होनेके साथ-ही-साथ चेतना-में केंद्रीय सत्ता या उसकी अभीप्साके प्रति अर्पित किया जाय। जो अनुकूल हो उसे स्वीकार किया जाता है और जो अनुकूल न हो उसे अस्वीकार किया, त्यागा या रूपांतरित किया जाता है।

यह एक लंबा काम है जिसमें बरसों लग सकते हैं — लेकिन एक बार यह हो जाय तो एकीकरण सिद्ध हो जाता है और मार्ग सरल और तेज हो जाता है।

मुझे आदत है कि मैं अपने-आपको अपनी चीजोंका मालिक सम-झता हूं, इससे कैसे पिंड छुड़ाया जाय?

अगर तुम पूरी तरह भगवान्‌के हो जाओ तो तुम्हारी हर चीज भगवान्‌की होगी, ऐसी हर चीज, जो तुम्हारी भौतिक सत्ताका अंग है, भगवान्‌की होगी।

जब मैं अपने अंदर कोई दोष या त्रुटि देखता हूं तो मेरे अंदर कोई चीज उसे न्यायसंगत ठहराती है।

यह "कोई चीज" स्वमानकी अज्ञानपूर्ण कपट भावना है जिसने अभीतक यह नहीं समझा है कि अपने दोषोंको स्वीकार करना और उन्हें ठीक करना उन्हें छिपानेकी अपेक्षा (इस आशासे कि उन्हें कोई देख न पायेगा), कहीं ज्यादा उदात्त और उत्तम है।

सभी मनोवैज्ञानिक समस्याओंकी तरह, इसमें भी सचाई, पूर्ण और अटल सचाई ही, एक उपाय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ निजी बातें

(माताजीके साथ पत्र-व्यवहार)

माताजी, आपके हाथ देनेके लिये हमेशा तैयार रहते हैं; परंतु मैं काफी ग्रहणशील नहीं हूं, इसलिये एक अंश ही ले पाता हूं।

यह संसारकी स्थितिका ठीक चित्रण है। संसार इसलिये कष्ट पाता है क्योंकि वह ग्रहणशील नहीं है। अगर वह भागवत प्रेमकी ओर खुल सके तो वह भागवत आनंदमें रह सकेगा।

लेकिन इसका इलाज है:

निष्कपट और सतत अभीप्सा।

धरतीपर भगवान्‌का राज्य स्थापित करनेमें ढील किस ओरसे है? मनुष्य की ओरसे या स्वयं भगवान्‌की ओरसे?

मनुष्यको लगता है कि भगवान् धीमे हैं।

भगवान्‌की दृष्टिमें मनुष्य सचमुच धीमा है।

लेकिन इन दोनों अवस्थाओंमें शायद धीमे होनेका अर्थ एक ही नहीं है।

रूपांतरके लिये बहुत उच्च कोटिकी अभीप्सा, समर्पण और ग्रहण-शीलताकी जरूरत होती है, है न?

रूपांतरके लिये समग्र और पूर्ण समर्पणकी जरूरत होती है। क्या यही प्रत्येक सच्चे साधककी अभीप्सा नहीं है?

समग्रका मतलब है ऊपरसे नीचेकी ओर खड़ी सत्ताकी सभी अवस्थाएं, एकदम जड़ अवस्थासे लेकर सूक्ष्मतक अवस्थाओंतक।

और संपूर्णका अर्थ है क्षैतिज या पड़ी अवस्थामें सत्ताके विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या प्रायः परस्पर-विरोधी भाग जिनके मिलनेसे सत्ता बनती है (भौतिक, प्राणिक और मानसिक)।

ऐसा क्यों है कि साधारणतः आदमी जितना अमीर होता है उतना ही बेईमान भी होता है?

क्योंकि भौतिक धन विरोधी शक्तियोंके अधिकारमें है और वे अभीतक भागवत प्रभावमें नहीं आयी हैं — यद्यपि यह काम शुरू हो चुका है।

यह विजय सत्यकी विजयका अंश होगी।

धनको व्यक्तिगत संपत्ति न होकर, सबकी भलाईके लिये भगवान्‌की सेवामें लगाना चाहिये।

आपने धनके बारेमें जो कहा उसका मैंने यह मतलब समझा है कि संपत्तिके कानून बदलनेसे नहीं, आंतरिक परिवर्तनसे काम बनेगा।

निस्संदेह।

केवल मनोवैज्ञानिक परिवर्तन ही इसका समाधान है।

आदमी यह कैसे जान सकता है कि भगवान्‌के लिये धनका उपयोग क्या है?

मुझे विश्वास है कि अगर कोई मार्गपर इतना बढ़ चुका है कि वह यह जाने कि धन निर्वैयक्तिक शक्ति है और उसका उपयोग धरतीके कल्याणके लिये किया जाना चाहिये, तो वह व्यक्ति अंदरसे इतना विकसित होगा कि यह ज्ञान भी प्राप्त कर ले कि उस धनका अच्छे-से-अच्छा उपयोग क्या है।

मार्ग बहुत लंबा है, कहीं अंत ही नहीं दीखता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सच है कि मार्ग बहुत लंबा है, लेकिन जो उसका अनुसरण सचाईके साथ करते हैं उनके लिये यह सचमुच बहुत मजेदार है। तुम्हें पग-पगपर अपने प्रयासके लिये पुरस्कार मिलता है।

माताजीसे बातचीत

मशीनमें चेतना

किसीने माताजीसे पूछा: "क्या मशीनोंपर अलग-अलग आदमियोंके छूनेका अलग-अलग असर पड़ता है?

माताजीने कहा: "निश्चय ही, इससे बहुत फर्क पड़ता है। इसीलिये कहा जाता है कि मशीनका उपयोग एक ही आदमीको करना चाहिये। नाजुक मशीनोंमें एक प्रकारकी चेतना होती है। और मशीनोंमें भी चेतना होती है, पर जहाजमें यह बहुत ज्याद स्पष्ट दिखायी देती है। नाविक इस बातपर विश्वास करते हैं।

"एक जहाज था जो हमेशा बाईं ओरसे बंदरगाहमें घुसनेसे इंकार करता था। कभी-कभी उसे दाहिनी ओरसे घुसानेके लिये बड़ा लंबा चक्कर लगाना पड़ता था। मैं इस बातको अच्छी तरह जानती हूं क्योंकि मैं स्वयं उस जहाजमें बैठ चुकी हूं। उसके कप्तानने ही मुझे यह बात बतायी थी। उसने यह भी कहा था कि अगर अमुक नाविक जहाजमें होता तो जहाज बाईं ओरसे भी प्रवेश करनेके लिये तैयार हो जाता था। उस नाविककी उपस्थिति ही काफी होती थी। वह कुछ करता-धरता न था। उसके जहाजपर रहनेसे ही जहाज आज्ञाकारी बन जाता था। कप्तानने कहा: 'लोग इस बातको गप समझते हैं, परंतु यह है सत्य। हम कई बार इसकी परीक्षा कर चुके हैं।" पूछनेपर उस नाविकने कहा: 'मैं इसका कोई कारण नहीं बता सकता। मैं बस, इतना जानता हूं कि यह जहाज मुझे प्रिय है और मैं इस जहाजको प्रिय हूं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"घड़ियोंपर छोटी-छोटी शक्तियोंका बहुत असर पड़ता है। ये शक्तियां उन्हें सुस्त या तेज कर सकती हैं, उन्हें बंद भी कर सकती हैं। एक बार श्रीअरविंद टहल रहे थे। उन्होंने देखा उनके सामनेकी घड़ी बंद है। उन्होंने दूसरी घड़ी देखी, वह भी बंद, तीसरी देखी, वह भी बंद। इस तरह नौ-दस घड़ियां एक साथ बंद पड़ी थीं — और सब-की-सब ठीक एक ही समयपर। वे जरा नाराज हो गये और उन्होंने पांव पटकते हुए कहा : 'यह बड़ा बेवकूफी-भरा मजाक है, मुझे पसंद नहीं।' और लो, सभी घड़ियां एक साथ चल पड़ीं।

"बहुत अच्छी मशीनोंमें आदिम मानवकी अपेक्षा अधिक चेतना होती है। लेकिन दोनोंमें एक फर्क है : मशीन प्रगति नहीं कर सकती, जब कि मानव कर सकता है। अगर मशीन प्रगति करे भी तो उसका क्षेत्र बहुत सीमित होता है। पशुओंकी प्रगतिका क्षेत्र ज्यादा विस्तृत होता है। मेरे पास बहुत-सी बिल्लियां थीं और उन्होंने अद्‌भुत प्रगति की थी। लेकिन वे भी प्रकृतिके अनुसार चलती हैं और थोड़ी-सी प्रगति करनेमें बहुत-सा समय लग जाता है। लेकिन मनुष्य, अगर वह योग-साधनाका पथ अपना ले, तो इस प्रगतिको तेज कर सकता है और अपने अंदर उच्चतम चेतनाको उतार सकता है।"

महाविध्वंस — छिन्नमस्ता

सृष्टिका आरंभ हुआ और साथ-ही-साथ इस कहानीका भी जन्म हुआ। दिव्य-जननीकी चार शक्तियां — प्रेम, जीवन, प्रकाश, चेतना इस सृष्टिपर उतरीं। लेकिन वे जिस कार्यको सम्पादित करने आयी थीं उसे ही भूल बैठीं और क्रमशः प्रेम घृणा, जीवन मृत्यु, प्रकाश अंधकार और चेतना अचेतनामें बदल गया। सत्यकी वह बूंद जो धरापर उतरी थी उसे अन्धकारके समुद्रने लील लिया और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसीमें डूब गयी। चारों तरफ अव्यवस्था, असत्य, अन्धकारका बोल-बाला हो गया। मनुष्यको उस असत्यके सागरमें डुबकी लगाकर सत्यको बाहर निकालना है तभी वह सत्यका सच्चा मूल्य समझ सकेगा। दुर्भाग्यवश, बहुधा सागरमें गोते खाते-खाते मनुष्य अपने लक्ष्यको बिसरा बैठता है और उस अन्धकारको ही सच्चा जीवन मान लेता है; उसकी प्रगति थम जाती है। ऐसे समय असत्य और अन्धकारकी लहरें ऊंची, और ऊंची उठने लगती हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानों सत्य इस जगत्से चला। लेकिन ऐसे ही समय मनुष्यको, अपनी उंगलीका सहारा देकर भगवान् अनुसन्धानके सही पथपर ला खड़ा करते हैं ताकि वह एक बार फिर अपने लक्ष्यको देखे, उस ओर बढ़े।

ऐसा बार-बार होता आया है। तभी तो गीतामें श्रीकृष्ण भी अर्जुनसे कहते हैं—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

"जब-जब धर्मका ह्रास होता है और अधर्म ऊपर उठता है तब-तब मैं जन्म लेता हूं।"

अवतार धरतीपर भटके हुए मनुष्यको सही रास्ता सुझानेके लिये ही उतरते हैं। रास्ता प्रकाशित करते हैं। पुरानी सभी अनावश्यक और मार्गमें बाधा देनेवाली प्रत्येक वस्तुका विध्वंस करते हैं। और साथ-ही-साथ आगे आनेवाली नयी सृष्टि, नयी चेतनाका बीज भी बो जाते हैं। और युगोंसे, जब-जब पार्थिव जीवनपर किसी नयी सृष्टि या नयी चेतनाका आविर्भाव हुआ तब-तब हमेशा उसके पहले बड़ा भारी संहार, प्रलय हुआ। तब शिवका नृत्य शुरू हो जाता है।

नटराजके नर्तनके दो पहलू हैं—सर्जनका आनन्द और साथ-ही-साथ संहारका हर्ष—लास्य और ताण्डव—दोनों ही अबतक समान रूपसे आवश्यक रहे हैं।

जब-जब भगवान्ने अवतार लेकर इस धरतीके निवासियोंको उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असत्यके सागरसे उबारना चाहा तब-तब भयंकर विध्वंस हुआ। विध्वंसका अर्थ है उन वस्तुओंका विध्वंस जिन्होंने नयी चेतना, नये सत्यका स्वागत करनेसे इन्कार किया। वह सब जो नयी चेतनाके साथ सामंजस्य स्थापित न कर पाया या जिसने सहयोग देनेसे इन्कार कर दिया, उस सबको रास्तेसे अलग होना पड़ा या यूं कहें, उसे रास्तेसे हटा दिया गया, क्योंकि यह पृथ्वी निरंतर प्रगति-का सोपान है। अगर तुम इसके साथ-साथ चलनेसे इन्कार कर दोगे तो वह तुम्हें दूर छिटककर अपने रास्तेपर आगे बढ़ जायेगी।

अगर तुम पुरानी सृष्टिमें ही पड़े रहते हो या उसीसे प्रेम करते हो तो तुम्हारे लिये संहार बड़ा भयंकर और दर्दनाक साबित होगा; लेकिन अगर तुम नयी सृष्टिकी अभीप्सा करो और आगामी सृष्टिके उषाकालका अभिनन्दन करनेको प्रस्तुत हो तो तुम इसकी चाह करोगे कि विध्वंस अधिक तेजीसे हो ताकि नयी सृष्टिके लिये स्थान बने, तुम उस संहारमें आनन्द ले सकोगे — शिव तो लेते ही हैं, भागवत शक्ति भी जरूर उसमें आनन्द लेती है।

आज हम जीवनके उस मोड़पर खड़े हैं जहां एक बार फिरसे नयी सृष्टिके आविर्भावके लिये, महालक्ष्मी और महासरस्वतीके प्रवेश-के लिये महाकालीने पथकी सफाईका काम शुरू कर दिया है। यह है संहार और प्रलयका कार्य। इसके पीछे माहेश्वरीकी स्वीकृति और उनका सहारा है।

माताजीने इतने प्रेम और इतनी सावधानीसे जिस नयी सृष्टिका निर्माण किया और अब भी कर रही हैं वह आज आविर्भूत होनेके लिये, भौतिक जगत्में प्रवेश करनेके लिये हमारी देहलीपर खड़ी प्रतीक्षा कर रही है, लेकिन पृथ्वी उसके स्वागतके लिये तैयार नहीं है या यूं कहें, मनुष्य अबतक तैयार नहीं है। वह उसका स्वागत करनेसे इन्कार करता है और असत्के उसी सागरमें जीना चाहता है। उसे असत्यका यह खेल बहुत पसन्द है और वह अन्धकारसे चिपका रहना चाहता है। शायद उसकी संकुचित और बौनी प्रकृतिके लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य बहुत ज्यादा प्रकाशवान् है और इसी कारण वह नयी सृष्टिका विरोध कर रहा है और सत्यके मार्गमें अधिक-से-अधिक बाधाएं उत्पन्न कर रहा है। माताजीने असीमित प्रेमके कारण धैर्यपूर्वक जितने तत्त्वोंको सम्भव था बदला, और अंतमें जब और कुछ न हो सकता था तो उन्होंने अपने दूसरे पहलूको यह काम सौंप दिया — पुराने, बदलनेसे इन्कार करनेवाले जगत्का संहार। पृथ्वी और मानवजातिके लिये भी यह अनिवार्य था।

कार्य तेजीसे बढ़ता जा रहा है — चाहे इसे शिवका ताण्डव-नृत्य कह लो या उग्र कालीका नर्तन। संहार, विघटन, विश्लेषण, यही नर्तनके पहले परिणाम हैं और आज हम सब इसके साक्षी हैं और हर एक व्यक्ति चाहे-अनचाहे इसमें भाग ले रहा है। यह परम प्रभुका आदेश है, अतः यह होकर रहेगा। जो सत्यसे चिपके रहेंगे वे बच निकलेंगे, पर जिन्होंने असत्यके साथ नाता जोड़ा है वे नष्ट हो जायेंगे — मनुष्यको चुनाव करना ही होगा। यह चुनाव सचेतन रूपमें हो या अचेतन रूपमें।

यह एक अनिवार्य अवस्था है। अगर तुम सत्यकी अभीप्सा करते हो तो दुःखी होने और प्रलाप करनेकी कोई जरूरत नहीं।

स्वभावतः, दूसरी अवस्था उस मलबेकी सफाईकी होगी — पूरी सफाई — उस सबका विसर्जन करना होगा जो सत्यके विपरीत था, और तब रास्ता साफ हो जायगा। और केवल तभी नवीन सत्य, जो प्रतीक्षामें है, प्रवेश कर पायेगा। तभी माताजीका उद्देश्य सफल होगा।

नयी सृष्टि आ गयी है — वह धीरे-धीरे प्रकट हो रही है — इस समय जो कुछ आश्रममें और बाहर हो रहा है इसलिये हो रहा है ताकि वह शक्ति अधिक शीघ्र उतर सके। माताजी बाहरी आवरण तोड़ रही हैं ताकि वह प्रकाशित हो। जगज्जननीने देवी छिन्नमस्ताका रूप ले लिया है जो अपना ही सिर काटकर अपना रुधिरपान करती हैं। वे सभी चीजें, जिनका वे नाश कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हैं, उनकी अपनी सत्ताएं हैं — मानों वे स्वयं अपने शरीरके पुराने अनुपयोगी अवयवोंका विनाश कर रही हैं। हम श्रीअरविंदकी "भागवत मुहूर्त" की इन पंक्तियोंका स्मरण कर सकते हैं:

— "यह घड़ी प्रायः भयंकर होती है, यह आग, बवण्डर और तूफानकी न्याई है और है रुद्रका तांडव नृत्य। परंतु जो इसमें अपने उद्देश्यकी सच्चाईके बलपर खड़ा रह सकता है वही खड़ा रहेगा और चाहे वह वायुके पंखोंपर उड़ भी क्यों न जाये, फिर भी वह जरूर वापिस आ जायगा। सांसारिक बुद्धिमत्ता तुमसे अधिक कानाफूसी न कर पाये, क्योंकि यह अप्रत्याशितकी घड़ी है।"

— वंदना

(श्री नलिनी कान्त गुप्तके एक लेखके आधारपर)

उदारता

(१)

देनेका अपना ही आनंद होता है, लेकिन जिसने उस आनंदको नहीं जाना वह इस बातको समझ भी न पायेगा।

हमारे अंदर देने और इकट्ठा करनेकी वृत्तियां साथ-ही-साथ रहती हैं। अगर इकट्ठा न करें तो देंगे कहांसे? और अगर इकट्ठा ही करते रहें तो सड़ांघ पैदा हो जायगी। दोनोंमें एक संतुलन रहना चाहिये।

जब मैं बहुत छोटा था और ऐसी बातें न समझता था तबकी एक घटना सुनिये। मुझे एक खिलौना बहुत प्रिय था। मेरे साथ एक और लड़का खेलने आया। उसका मन इस खिलौनेपर लट्टू हो गया।

मैंने यह देखा तो खिलौना उसे देते हुए कहा, "इसे तुम ले लो, मेरे पास और खिलौने हैं।" उसका चेहरा खुशीसे चमक उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उसे लेकर दौड़ पड़ा मानों उसे डर हो कि कहीं मैं वापिस न मांग लूं।

हुआ भी यही। मेरे अंदरकी कंजूसी जाग पड़ी। मैंने सोचा, "इसका क्या भरोसा, आज मेरा दोस्त है, कल जाने उल्टा न हो जाय।"

मैं उसके पीछे हो लिया। मैंने रिरियाते हुए कहा, "जरा इसे वापिस कर दे। मैंने मांसे पूछे बिना तुझे दे दिया है, कहीं घर जानेपर मार न पड़े।"

लड़का बेवकूफ न था। समझ गया कि मांका डर नहीं, मेरी कंजूसी खिलौना देनेसे रोक रही है। उसने एक तेज नजर मेरे ऊपर डाली जो मेरे हृदयको बींधती हुई निकल गयी। उसकी आंखोंमें याचना, भय, अविश्वास, मेरे प्रति ग्लानिके भाव थे। उसने खिलौना वहीं धरतीपर रख दिया और यह जा, वह जा।

खिलौना तो मिल गया, लेकिन साथ ही बेचैनी भी मिली। मैं रातको बड़ी देरतक करवटें बदलता रहा। पिताजीने यह हाल देखा तो आकर मेरे पास बैठे गये और बड़े प्रेमसे सिरपर हाथ फेरते हुए बोले, "बात क्या है?"

मैं फफक पड़ा और सारी बात उगल दी। उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा, "चिंता मत कर, यह कंजूसी तेरे उदारताके कपाट खोलनेके लिये आयी थी। कल बड़ा दिन है। तेरे पास बहुत-से खिलौने हैं, तू इनमेंसे कुछ खिलौने ऐसे बच्चोंके लिये निकाल दे जिनके पास कुछ भी नहीं है।"

और मैं खुशीसे उछल पड़ा, खिलौनोंकी अलमारी खोली और सारे-के-सारे खिलौने निकालकर पिताजीके हवाले कर दिये।

वह मेरी ओर देखते रह गये। मैंने कहा, "इस देनेमें जो आनंद है वह जुटाकर रखनेमें कभी नहीं मिला। मुझे जरूरत होगी तो भगवान् और देंगे; इन्हें तो जाने ही दीजिये।"

मेरी उदारताका कपाट खुलते देख पिताजी भी आनंद-विभोर हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

हम जरा ध्यानसे देखें तो जीवनकी छोटी-छोटी घटनाएं भी हमें बहुत कुछ सिखा जाती हैं।

अब मेरी बात ही ले लीजिये। तब मैं बहुत छोटा था। मेरे पापा मुझे सैर करनेके लिये ले जाया करते थे। ओह, क्या मजा आता था उस सैर-सपाटेमें!

मेरे लिये यह केवल सैर ही नहीं, चीजें इकट्ठी करनेका अवसर भी होता था। लकड़ीके छोटे-छोटे टुकड़े, कीलें, छोटे-छोटे पत्थर और न जाने क्या-क्या, रास्तेमें जो मिल जाता उसे उठा लेता, पहले अपनी जेबें भरता, फिर पापाकी जेबोंकी बारी आती। कभी-कभी वह नाराज भी होते कि क्या ऊट-पटांग चीजें इकट्ठी कर रहा है, पर मैं किसीकी परवाह किये बिना अपनी संपत्ति बढ़ाता चला जाता था। जी चाहता था कि रास्तेमें जो कुछ दीख जाय उसे उठा लूं।

लेकिन कबतक? मेरे लोभकी एक हद होती थी। मेरे छोटे-छोटे पांव थकने लगते थे, आंखोंमें नींद भरने लगती थी और हाथोंकी पकड़ ढीली हो जाती थी; मेरी सारी संपत्ति उंगलियोंके बीचसे होकर निकल जाती थी। जेबें भी भारी होने लगती थीं और मैं उन्हें धीरे-धीरे खाली कर देता था।

आज सोचता हूं यह छोटी-सी बात सारे मानव जीवनपर लागू होती है। हम किस तरह व्यर्थके भारोंसे अपने-आपको लादते जाते हैं और फिर उनकी ओरसे विरक्त होकर मुंह मोड़ लेते हैं और दूसरी चीजोंके पीछे भागते हैं।

काश, हम आंखें खोलकर इस चीजको देख पाते और अपने-आपको व्यर्थके झंझटोंसे बचा सकते!

सरल होते हुए भी बहुत कठिन है यह।

(जयदीपके लेखोंके आधारपर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Faith and Sincerity are the twin agents of success.

THE MOTHER

With Compliments from :

TATANAGAR
Transport Corporation

147, Mahatma Gandhi Road, CALCUTTA-700 007

BOMBAY - MADRAS - DELHI - CUTTACK

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Courage and love are the only indispensable virtues; even if all the others are eclipsed or fall asleep, these two will save the soul alive.

Sri Aurobindo

★

INDIAN TEA STORAGE AGENCY

24, Ganesh Chandra Avenue, Calcutta-700 013

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो जीवन लक्ष्यहीन होता है वह सुखहीन भी होता है। तुम्हारा लक्ष्य होना चाहिये उच्च और विशाल, उदार और उन्मुक्त और फिर तुम्हारा जीवन तुम्हारे लिये और दूसरोंके लिये भी बहु-मूल्य हो जायगा।

— श्रीमां

पुस्तकालय
029502
गुरुकुल कांगड़ी वि...

सहारनपुर सर्विस स्टेशन
पैट्रोल पम्प, देहरादून रोड
सहारनपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शराब

सामाजिक अभिशाप है

यह आपके स्वास्थ्य और परिवार को बरबाद करती है

मनुष्य की और बुराइयों की अपेक्षा शराब ने कहीं ज्यादा घर उजाड़े हैं। कोई भी व्यक्ति जो 'मौज-मस्ती' या दोस्ती के नाम पर शराब पीता है विनाश के रास्ते पर पैर बढ़ाता है।

शराब आदमी को अपना गुलाम बनाती है। फिर यह आपके स्वास्थ्य को चौपट करती है। यह जिगर को बेकार एवं दिल को कमजोर करती है और खून में ज़हर घोल देती है।

शराब का गुलाम बनने से पहले ही इससे छुटकारा पाइए

समय रहते चेतिए

davp 79/221

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोसायटी समाचार

श्रीअरविंद सोसायटीकी पश्चिम बंगाल प्रादेशिक समितिने १५-१६ सितंबरको कलकत्तेमें एक आयोजन किया था जिसमें सर्वश्री नवजात, महेश्वर, हिमांशु नियोगी, हरेंद्रनाथ मजुमदार, न्यायमूर्ति बासकने 'आधुनिक कालमें श्रीअरविंदकी शिक्षा' पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। न्यायमूर्ति अमरेंद्रनाथ सेन समारोहके अध्यक्ष थे। बच्चोंके खेल-कूद और आश्रमकी फिल्मोंका भी प्रदर्शन किया गया।

'श्रीअरविंद साहित्य सेवा समिति' के तत्त्वावधानमें श्रीअरविंद सोसायटी तेनाली (आ. प्र.) ने २ सितम्बरको एक विशेष आयोजन किया जिसमें डा. श्रीनिवास आयंगरने 'माताजी और श्रीअरविंदका भावी दर्शन' पर भाषण दिया। उन्होंने बतलाया कि माताजी व श्रीअरविंद मनुष्यजातिकी अन्धकारसे प्रकाशकी ओर गतिके नेता हैं।

रानीगंज (बंगाल) में बसन्ती देवी गोयनका विद्या मंदिरमें न्याय-मूर्ति बासकने विद्यार्थियों, अध्यापकों और जनताको श्रीअरविंदका सन्देश सुनाया।

देहरादूनमें सोसायटी शाखाने एक भाषण प्रतियोगिताकी व्यवस्था की। विषय थे : भावी कलकी शिक्षा, वर्तमान स्थितिमें श्रीअरविंद-की शिक्षा, जीवनका उद्देश्य।

दिल्लीमें 'दिल्ली विश्व विद्यालय', 'जवाहरलाल नेहरु विश्व विद्यालय' और 'श्रीअरविंद केंद्र'ने मिलकर दो दिनके सेमिनारकी व्यवस्था की जिसमें विषय था : 'विश्वविद्यालय और भविष्य। इस-में उच्चतर शिक्षाके बारेमें बातचीत हुई। डा. कर्णसिंहने इसका उद्घाटन किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Registered with the Registrar of Newspapers for India
No. R. N. 18135/70

REGD. No. M. 8731

2673

079502

१५ अगस्तके समारोहके समाचार ढाका, लन्दन, जोधपुर, नाग-र जैसे दूर-दूर और पासके स्थानोंसे आये हैं।

काशीनरेश डा. विभूति नारायण सिंह, सभापति 'संस्कृत प्रतिष्ठान'-ने सोसायटीके इस यज्ञमें भाग लेनेके लिये और लोगोंसे संस्कृत-प्रेम जगानेके लिये अपील की है। यह प्रतिष्ठान संस्कृत-प्रचार और प्रसारके लिये प्रयत्नशील है। जो इसके सदस्य बनना चाहें श्रीअरविंद सोसायटी, पांडिचेरीद्वारा उससे पत्र-व्यवहार करें।

आश्रममें नवम्बर-दिसम्बरमें कई महत्त्वपूर्ण दिन आया करते हैं:

१७ नवम्बर: माताजीका शरीर-त्याग। इस दिन दर्शक माताजीके कमरेमें जा सकते हैं।

२० नवम्बर: माताजीका शरीर समाधिस्थ किया गया।

२४ नवम्बर: सिद्धि-दिवस।

१ दिसम्बर: आश्रम विद्यालयका वार्षिकोत्सव।

२ दिसम्बर: आश्रम शारीरिक प्रशिक्षणका कार्यक्रम।

५ दिसम्बर: श्रीअरविंदका शरीर-त्याग।

९ दिसम्बर: श्रीअरविंदका शरीर समाधिस्थ किया गया।

२५ दिसम्बर: ज्योति-पर्व।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri